सरमद शहीद

राधास्वामी सत्संग ब्यास

सरमद शहीद

डॉ. टी. आर. शंगारी

पी. एस. आलम

राधास्वामी सत्संग ब्यास

प्रकाशक :
जे. सी. सेठी, सेक्रेटरी
राधास्वामी सत्संग ब्यास
डेरा बाबा जैमल सिंह
पंजाब 143 204

© 2003 राधास्वामी सत्संग ब्यास
सर्वाधिकार सुरक्षित पहला संस्करण 2003

दूसरा संस्करण 2003

मुद्रक: थॉम्सन प्रैस (इंडिया) लि०

Published by:
J. C. Sethi, Secretary
Radha Soami Satsang Beas
Dera Baba Jaimal Singh
Punjab 143 204

© 2003 Radha Soami Satsang Beas
All rights reserved First edition 2003

Second edition 2003

12 11 10 09 8 7 6 5 4 3

ISBN 978-81-8256-298-1

Printed in India by: Thomson Press (India) Ltd.

विषय-सूची

प्रकाशक की ओर से 7

जीवन 9

रूहानी तालीम 37

ख़ुदावन्द करीम 39

हमा-ऊस्त 44

रब्बी-रज़ा 47

ख़ुदाई रहमत 49

गुनाहों का इक़बाल और आजिज़ी 55

ख़ुदा का इश्क़ 58

तर्के-दुनिया, हुसूले-ख़ुदा 68

ज़िन्दगी का मक़सद 74

विरह की तड़प और मिलाप का आनन्द 76

वजूद के दो पहलू 81

कामिल मुर्शिद: साक़ी 97

नाम की शराब 106

ख़ुदा का नूर और ज़िन्दा मरना 116

ज़िक्रो-तसव्वुर 120

अन्दरूनी आँख 128

गोशा-नशीनी 138

चेतावनी 142

सार 152

कलाम 155

उद्धरण 269

सहायक पुस्तकों की सूची 275

हमारे प्रकाशन 278

प्रकाशक की ओर से

'पूर्व के सन्त' पुस्तक-माला के अन्तर्गत गुरु नानक, सन्त कबीर, गुरु रविदास, सन्त तुकाराम, सन्त नामदेव, सन्त दादू दयाल, सन्त पलटू, सन्त दरिया, सन्त चरनदास, मीराबाई, हज़रत सुलतान बाहू, हाथरस के सन्त तुलसी साहिब, साईं बुल्लेशाह, गुरु अर्जुन देव, स्वामी शिवदयाल सिंह और बाबा फ़रीद के जीवन, उपदेश और रचनाओं पर आधारित पुस्तकें पहले ही प्रकाशित की जा चुकी हैं। प्रस्तुत पुस्तक सूफ़ी सन्त सरमद शहीद के जीवन, उपदेश और कलाम पर आधारित है।

सरमद औरंगज़ेब के समय का एक सूफ़ी दरवेश था। सरमद अपनी ख़ुदी, ख़ुदा में मिटाकर द्वैत से अद्वैत की घाटी में पहुँच चुका था। ख़ुदा के हर सच्चे आशिक़ की तरह सरमद काफ़िर और मोमिन, हिन्दू और मुस्लिम के बनावटी अन्तर को स्वीकार नहीं करता था। उसके लिये देश, धर्म, जाति और सम्प्रदाय आदि के आधार पर किया जानेवाला भेदभाव व्यर्थ था। वह क़ुदरत को क़ादिर का रूप समझता था। उसे हर इनसान में एक ही परमात्मा का नूर दिखाई देता था।

सरमद हर प्रकार की बाहरमुखी शरीअत से आज़ाद था और केवल ख़ुदा के सच्चे इश्क़, प्रेम या भक्ति को ही उसकी प्राप्ति का असल साधन मानता था। वह उन दरवेशों में से है, जिन्होंने शहादत का जाम पीना मंज़ूर कर लिया पर सच के साथ किसी तरह का समझौता करना मंज़ूर न किया। सरमद का सर काट दिया गया क्योंकि वह कट्टर और बेजान शरीअत के परम्परागत बन्धनों को मानने के लिये तैयार नहीं था।

सरमद का कलाम रुबाइयों की शक्ल में प्राप्त है। रुबाई चार पंक्तियों का एक छोटा-सा काव्य-रूप है, जिसमें शायर किसी एक ख़याल को प्रकट

करता है। किसी दर्शन (फ़लसफ़ा) के सभी पहलुओं को एक ही रुबाई में उजागर कर पाना असम्भव है। रुबाइयों के आधार पर सरमद के दर्शन की क्रमबद्ध व्याख्या करना एक कठिन कार्य है। इसके अलावा सरमद का कलाम मूल रूप में फ़ारसी भाषा में है। लेखकों ने बहुत परिश्रम और खोज के बाद यह पुस्तक लिखी है। आशा है कि इससे सरमद के जीवन और कलाम को समझने तथा उसके उपदेश से लाभ उठाने में सहायता मिलेगी।

सेवा सिंह,
सेक्रेटरी,
राधास्वामी सत्संग ब्यास।

डेरा बाबा जैमल सिंह
अमृतसर (पंजाब)
2003

जीवन

कामिल दरवेश की स्तुति कोई कामिल दरवेश ही कर सकता है। गुरु अर्जुन देव जी का कथन है:

साध की सोभा साध बनि आई॥[1]

हाथरस के पूर्ण सन्त हुज़ूर तुलसी साहिब ने अन्य फ़क़ीरों की तरह ही सरमद को भी सुरत-शब्द के अभ्यास द्वारा कुल-मालिक के साथ मिलाप करनेवाला कामिल दरवेश माना है:

मनसूर, सरमद, बूअली और शम्स, मौलाना हुए।
पहुँचे सभी इस राह से, जिस ने कि दिल पुख़्ता किया॥[2]

आगरा के परम सन्त हुज़ूर स्वामी जी महाराज ने जिन कामिल फ़क़ीरों के नाम गिनाये हैं, उनमें सरमद को भी शामिल किया गया है।* सरमद स्वयं अपने कलाम में अपने बारे में कहता है:

शाहो-दरवेशो क़लन्दर दीदाए
सरमदे-सरमस्तो-रुसवा रा बिबीं
ज़िन्दा-ए-कश जान नबाशद दीदाए?
गर न-दीदस्ती बिया मा रा बिबीं।[4]

---

* कुछ थोड़े-से नाम, पूरे, सच्चे सन्तों के और सच्चे साध और फ़क़ीरों के जो पिछले सात सौ वर्षों में प्रकट हुए, यहाँ लिखे जाते हैं – कबीर साहिब, तुलसी साहिब, जगजीवन साहिब, ग़रीबदास जी, पलटू साहिब, गुरु नानक साहिब, दादू जी, तुलसीदास जी, नाभा जी, स्वामी हरिदास जी और रैदास जी और मुसलमानों में शम्स तब्रेज़, मौलाना रूम, ख़्वाजा हाफ़िज़, सरमद।[3]

अर्थात् क्या तूने कभी बादशाह, दरवेश और क़लन्दर को देखा है? नहीं देखा, तो आ, मदमस्त और बदनाम सरमद को देख ले। क्या तूने किसी को बिना जान के ज़िन्दा देखा है? नहीं देखा, तो आ, मुझे देख ले।

'सरमद' का शाब्दिक अर्थ 'आदि और अन्त से रहित' है, जो अमर है वही सरमद है। जो समय-स्थान की सीमा से परे और पार है, जो अनन्त और अगम है, वह सरमद है। ऐसा केवल सृष्टि का सिरजनहार ही है या फिर वह पूर्ण मनुष्य ऐसे गुणों का धारक हो सकता है, जो अपने स्वामी, उस सिरजनहार में अभेद होकर उसका रूप हो चुका हो। 'हरि का सेवकु सो हरि जेहा॥ भेदु न जाणहु माणस देहा॥'[5] अपनी हस्ती अपने मौला में फ़ना कर चुका सच्चा दरवेश मौला का ही साक्षात् रूप होता है। रिज़वी ने सरमद की गिनती उन मस्त दरवेशों में की है, जो सदा कुल-मालिक की याद में खोये रहते हैं।[6]

सरमद ऐसी अद्‌भुत शख़्सियत का मालिक था जो बाहर से देखने में मस्त-मलंग, बेपरवाह निर्वस्त्र फ़क़ीर था, पर अन्तर में मन-इन्द्रियों को जीतकर सच्चा रूहानी शहंशाह बन चुका था। वह परम सत्य के साथ अभेद होकर और शरीअत (कर्मकाण्ड) की तंग वादी पार करके पूर्ण अद्वैत के खुले आकाशों का पक्षी बन चुका था। वह अपनी जान और अपना ईमान सबकुछ अपने सच्चे प्रियतम को सौंपकर प्रियतम का हो चुका था और जो कुछ प्रियतम का है, उस सब का मालिक बन चुका था।

सरमद आरमीनिया का यहूदी था। उसका जन्म ईरान के प्रसिद्ध व्यापार केन्द्र काशान में हुआ था। सरमद के पूर्वज किसी समय आरमीनिया के निवासी थे, लेकिन बाद में ईरान में आ बसे थे।

कुछ इतिहासकारों ने सरमद का नाम मुहम्मद सईद माना है, जो कि एक मुस्लिम नाम है। यह भी सच है कि सरमद यहूदी परिवार में पैदा हुआ था जो बाद में इसलाम में दाख़िल हुआ। इस बात को सरमद स्वयं स्वीकार करता है। वह कहता है:

> ऐ सरमद, जहान में तेरा बहुत नाम हुआ है। तू कुफ़्र को छोड़कर इसलाम की राह पर आ गया है। *(रुबाई 333)*

सरमद की जन्म-तिथि के बारे में निश्चित रूप से कुछ कहना सम्भव नहीं है। कुछ इतिहासकारों ने उसका जन्म 1618 ई. में माना है। दूसरी ओर सरमद के 1632-33 ई. में व्यापार के लिये हिन्दुस्तान पहुँचने की बात कही जाती है। निश्चय ही वह 14-15 वर्ष की आयु में व्यापार के लिये यहाँ नहीं आ सकता था। यही नहीं, वह हिन्दुस्तान आने से पहले ज़िन्दगी के कई पड़ाव पार कर चुका था। वह न केवल यहूदी धर्म, ईसाई मत और इसलाम के धर्म-ग्रन्थों का अध्ययन कर चुका था, बल्कि उस समय के महान् विद्वानों – मुल्ला सदरा और मीर अबुल-क़ासिम फ़िंदर्सकी से उच्च शिक्षा भी प्राप्त कर चुका था। अपने अध्ययन और अनुभव के आधार पर वह यहूदी मत को छोड़कर इसलाम में दाख़िल हो गया था और इस बात की बड़ी सम्भावना है कि उसने ईरान में किसी कामिल मुर्शिद से आन्तरिक रूहानी साधना का भेद प्राप्त करके अभ्यास में अच्छी-ख़ासी तरक़्क़ी कर ली हो। कुछ विद्वानों का विचार है कि सरमद ने भारत पहुँचने के बाद पीर भीखन शाह या भीखा साहिब में से किसी एक को अपना मुर्शिद धारण किया। भीखा साहिब के बारे में ऐसा कहना ठीक नहीं क्योंकि उनका जन्म सरमद की शहादत (1660-61 ई.) के बहुत बाद 1713 ई. में हुआ परन्तु सरमद के पीर भीखन शाह के सम्पर्क में आने की सम्भावना को रद्द नहीं किया जा सकता क्योंकि भीखन शाह आयु में सरमद से बड़े थे और उस समय के प्रसिद्ध दरवेश भी थे। यह भी सम्भव है कि सरमद ने हिन्दुस्तान आने से पहले ईरान में ही किसी मुर्शिद की शरण प्राप्त की हो। भारत में वह जिज्ञासु के रूप में नहीं, बल्कि एक कामिल दरवेश के रूप में पहुँचा हो और उसकी आयु उस समय 40 वर्ष से भी अधिक हो तो कोई आश्चर्य की बात नहीं। इसलिये जब तक पूरे तथ्य नहीं मिलते उसकी जन्म-तिथि के बारे में कुछ न कहना ही उचित है। रिज़वी भी सरमद की जन्म-तिथि के बारे में चुप है।

बचपन में ही यहूदी परम्परा के अनुसार सरमद को यहूदी धर्म-ग्रन्थों के पाठ और व्याख्या में निपुण कर दिया गया। कहते हैं कि उसे यहूदी धर्म-ग्रन्थ 'तौरेत' ज़बानी याद हो गया था। उसे सामी धर्मों* के बारे में ज्ञान प्राप्त करने

* यहूदी मत, ईसाई मत और इसलाम को सामी (Semitic) धर्म कहते हैं।

का शौक़ था। उसने 'अंजील' और ईसाई मत के अन्य ग्रन्थों का भी गहरा अध्ययन किया, पर उसकी धर्म-ग्रन्थों के तुलनात्मक अध्ययन की चाह शान्त न हुई। इसलिये सरमद ने इसलामी और पारसी धर्म-ग्रन्थों का भी अध्ययन किया।

'दबिस्ताने-मज़ाहिब'[7] में सरमद के मुसलमान उस्तादों का हवाला देते हुए लिखा है कि सरमद ख़ुशक़िस्मत था जो उसे अरबी और फ़ारसी की शिक्षा मुल्ला सदरा और अबुल-क़ासिम फ़िंदर्सकी जैसे महान् विद्वानों और क़ाबिल उस्तादों से प्राप्त करने का अवसर मिला। मुल्ला सदरुद्दीन शीराज़ी लोगों में 'मुल्ला सदरा' के नाम से प्रसिद्ध था। वह एक महान् धार्मिक नेता और स्वतन्त्र चिन्तन वाला व्यक्ति था। इसी प्रकार अबुल-क़ासिम फ़िंदर्सकी (मृत्यु 1640 ई.) भी अपने समय का प्रसिद्ध विद्वान था।

हैनसन के अनुसार ये दोनों विद्वान न केवल इसलामी कट्टरता से मुक्त थे, बल्कि उन पर बौद्ध मत और पारसी मत का भी गहरा असर था।[8] ऐसी स्वतन्त्र विचारधारा वाले उस्तादों की संगति से सरमद की सोच का दायरा अत्यन्त विस्तृत हो गया। उसकी रूह आन्तरिक रूहानी अनुभव की प्राप्ति के लिये व्याकुल हो उठी। वह इसलाम में दाख़िल हो गया – शरीअत के ग़ुलाम तंगदिल और कट्टर मुल्लाओं के इसलाम में नहीं, बल्कि स्वतन्त्र चिन्तन वाले सूफ़ियों के इसलाम में, जो बाहरमुखी शरीअत की बजाय सदाचारिक निर्मलता और कलमे या नाम (शब्द) के अन्तर्मुख अभ्यास पर ज़ोर देता है। उसने अनेक धर्म-ग्रन्थों का अध्ययन किया, पर साथ ही दिल की किताब को पढ़ने की ओर भी पूरा ध्यान दिया। अपनी आज़ाद सोच के कारण उसने केवल इसलाम और पारसी मत का ही नहीं, बल्कि हिन्दू मत के धर्म-ग्रन्थों का भी गहरा अध्ययन किया। वास्तव में उस पर सबसे ज़्यादा प्रभाव सूफ़ी मत और सूफ़ी दरवेशों का था।

इसलाम धारण करने और हिन्दुस्तान आने से पहले सरमद काशान* में अपने पूर्वजों का व्यवसाय करता रहा। उसके हिन्दुस्तान आने का उद्देश्य

* काशान उस समय हिन्दुस्तान, ईरान और ईराक के मुख्य मार्ग पर स्थित था और व्यापार का एक प्रसिद्ध केन्द्र था।

भी व्यापार में वृद्धि और अधिक लाभ कमाना बताया जाता है। पहले वह आरमीनिया और हिन्दुस्तान तथा फिर ईरान और हिन्दुस्तान के बीच सूखे मेवों, ईरानी क़ालीनों आदि का निर्यात और हीरे-जवाहरात, सोना, चाँदी, ताँबे, पीतल के बर्तन, मलमल, रेशम आदि का आयात करता रहा। ईरान और हिन्दुस्तान का व्यापार-मार्ग सिन्ध से होकर गुज़रता था, जिस पर थट्टा* शहर व्यापार का एक केन्द्र था। व्यापार का आकर्षण सरमद को हिन्दुस्तान में थट्टा में खींच लाया।

प्रसिद्ध ऐतिहासिक पुस्तक 'इक़बाल-नामा-ए-जहांगीरी' का रचयिता मुअतमद खां, सरमद को लाहौर में 1044 हिजरी (1634-35 ई.) में मिला था। उसके लेख के आधार पर 'मजमअ-उल-अफ़क़ार' का सम्पादक लिखता है कि सरमद समुद्री मार्ग से 1042 हिजरी (1632-33 ई.) में हिन्दुस्तान में थट्टा नामक स्थान में पहुँचा।

सरमद का थट्टा पहुँचना उसके जीवन की एक बड़ी घटना सिद्ध हुई क्योंकि यहाँ उसका अपने नौजवान शिष्य अभयचन्द से मिलाप हुआ जो बाद में सारी उम्र साये की तरह अपने मुर्शिद के पीछे चलता रहा। जब सरमद पहली बार अभयचन्द को मिला तो वह एक महफ़िल में अपना कलाम सुना रहा था। अभयचन्द की आवाज़ में गहरा सोज़ और दर्द था और उसके बोलों में जादुई कशिश थी। सरमद के हृदय में अभयचन्द के प्रति प्रेम का चश्मा फूट पड़ा। अभयचन्द की ओर सरमद का गहरा झुकाव हो गया और अभयचन्द उनकी विशेष कृपा का पात्र बन गया। शुरू में अभयचन्द के माता-पिता को अपने बेटे के साथ सरमद की निकटता पसन्द न आई और उन्होंने अभयचन्द को सरमद से छिपा लिया। पर जब उन्हें सरमद की नेकदिली पर भरोसा हो गया तो उन्होंने ख़ुशी-ख़ुशी अपने बेटे को इस दरवेश की संगति का लाभ उठाने की आज्ञा दे दी।[9]

दरवेशों की रम्ज़ (भेद) को समझ पाना मुश्किल है। बाहरी तौर पर सरमद अभयचन्द की ओर खिंचा चला गया पर वास्तव में यह उसका

---

* शहर का नाम थट्टा या ठट्ठा दोनों प्रकार से लिखा जाता है।

अभयचन्द को अपनी ओर खींचने का एक ढंग था। एक सूफ़ी दरवेश लिखता है, 'इश्क़ अव्वल दर दिले-मअशूक़ पैदा मी शवद।' इश्क़ पहले प्रियतम के दिल में पैदा होता है फिर प्रेमी के दिल में। हज़रत बू अली शाह क़लन्दर कहते हैं:

गर तुरा अज़ इश्क़े-ऊ बाशद ख़बर,
अज़ तू मुशताक़ अस्त ऊ मुशताक़तर।[10]

अर्थात् अगर तुझे उसके प्यार का अहसास हो जाये तो तुझे पता लग जायेगा कि वह तुझे तुझसे भी ज़्यादा प्यार करता है।

सन्तों-महात्माओं, कामिल दरवेशों के जीवन-वृत्तान्त पढ़कर आश्चर्य होता है कि वे किस प्रकार लम्बी-लम्बी दूरियाँ तय करके अपनी रूहों के पास पहुँचते हैं और अपने शिष्यों के दिल में अपना प्यार पैदा करते हैं। रूहानियत (परमार्थ) का अटल नियम है कि जब मुरीद दिली तौर पर तैयार हो जाता है तो मुर्शिद स्वयं ही उसके पास पहुँच जाता है। इसी प्रकार सरमद अभयचन्द के पास पहुँच गया और दोनों के बीच निर्मल रूहानी प्रेम का अद्भुत रिश्ता क़ायम हो गया।

सरमद की अपने शिष्य के साथ निर्मल प्रेम की सच्चाई की पुष्टि लगभग सभी इतिहासकारों और लेखकों ने की है। सरमद का अभयचन्द के साथ वही रिश्ता था जो एक पूर्ण योगी का शिष्य के साथ[11] और एक पिता का अपने बेटे के साथ होता है। 'मजमअ-उल-अफ़क़ार'* का सम्पादक लिखता है कि सरमद के सच्चे और पवित्र प्रेम का अभयचन्द पर भी करामाती असर हुआ। मुर्शिद की सोहबत में आने के बाद शीघ्र ही उसने अपने माता-पिता से सम्बन्ध तोड़ लिया और सरमद के पास आकर उसका प्रेमी शिष्य हो गया।

सरमद से मिलने से पहले भी अभयचन्द का निजी जीवन अत्यन्त आदर्शवादी था। उसके मन में आत्मिक ज्ञान की तीव्र इच्छा थी। शायरी का

---

* 'मजमअ-उल-अफ़क़ार' की एकमात्र दुर्लभ हस्तलिखित पाण्डुलिपि बांकीपुर (पटना) की पब्लिक लायब्रेरी में सुरक्षित है।[12]

शौक़ उसे बचपन से ही था और उसकी रचनाओं में रूहानियत की चमक थी। सरमद के थट्टा पहुँचने तक वह सभाओं, महफ़िलों आदि का शृंगार बन चुका था। सरमद के आगमन और मिलाप ने सोने पर सुहागे का काम किया। उसके अन्दर रूहानियत की ज्वाला प्रचण्ड थी जो उसके जीवन और कलाम को प्रकाशमय करने लगी। मुर्शिद के प्रेम ने उसे मुर्शिद का ही रूप बना दिया।

'दबिस्ताने-मज़ाहिब'[13] के अनुसार अभयचन्द ने अपने मुर्शिद की सहायता से बहुत-से आध्यात्मिक साहित्य का गहरा अध्ययन किया। सरमद ने उसे यहूदी-बाइबल (Old Testament) के पहले पाँच अध्याय और यहूदी भजन (Psalms) पढ़ाये। 'दबिस्तान' में बाइबल के पहले अध्याय (Genesis) का जो फ़ारसी अनुवाद दिया गया है, वह अभयचन्द की क़लम का ही करिश्मा है। प्रो. असीरी ने उसके कलाम[14] में से, जो समय के मलबे के नीचे दबकर रह गया है, नीचे लिखे शेर का हवाला दिया है जिसमें उसके उच्च और पवित्र रूहानी भावों की झलक स्पष्ट दिखाई देती है:

> हम मुतीअ-ए-फ़ुरक़ानम हम केशिशे-रुहबानम,
> रब्बिये यहूदानम काफ़िरम मुस्लमानम।[15]

अर्थ: मैं क़ुरान का फ़रमांबरदार (आज्ञाकार) हूँ, मैं ईसाई मत का पैरोकार या अनुयायी हूँ, मैं यहूदियों का वायज़ (उपदेशक) हूँ, मैं काफ़िर हूँ, मुसलमान भी हूँ।*

गुरु और शिष्यों या पीरों और मुरीदों की प्रीति विश्व भर में प्रसिद्ध है। भाई गुरदास प्रियतम और प्रेमी की प्रीति को जगत प्रसिद्ध बताते हैं। यह प्रेम सभी पापों, वासनाओं, कामनाओं और सांसारिक इच्छाओं को नष्ट कर देता है और सदा निभता है:

> पीर मुरीदां पिरहड़ी गावनि प्रभाती।[17]

---

* हैनसन ने इसका अंग्रेज़ी में अनुवाद इस प्रकार किया है: I am all things, a child of heaven and hell; a monk, priest and Rabbi, Moslem and infidel.[16]

पीर मुरीदां पिरहड़ी सब पाप पणट्ठे।[18]

पीर मुरीदा पिरहड़ी उह निबहै नाले।[19]

एक-दो वर्ष थट्टा में रहने के बाद सरमद लाहौर आ गया। 'दबिस्तान' का रचयिता मुअतमद खां, सरमद को 1634 ई. में मिला, पर अपने वर्णन में वह यह नहीं बताता कि सरमद लाहौर में कितना समय रहा। मुअतमद खां यह अवश्य लिखता है कि लाहौर वासियों में सरमद बड़ा लोकप्रिय था। हर विचार के लोग उसे घेरे रहते थे। वह लिखता है कि मैं सरमद को लाहौर के एक बाग़ में मिला। उस समय उसके नंगे बदन पर लम्बे घुँघराले बाल उगे हुए थे। वह बड़े प्रवाह के साथ शेर कहता था और शुद्ध फ़ारसी बोलता था।

इस बात का भी कोई प्रमाण नहीं मिलता कि लाहौर में निवास के समय सरमद की भेंट शाहजहाँ के साथ हुई थी या नहीं। यद्यपि शाहजहाँ के दरबारियों के सरमद की सोहबत में आने के प्रमाण मिलते हैं। लाहौर में निवास के समय सरमद की चर्चा शाहजहाँ तक अवश्य पहुँची होगी।

1634-35 ई. में सरमद लाहौर में ही था। उसके बाद 1646 ई. तक उसके बारे में कुछ पता नहीं चलता, क्योंकि वह 1646 ई. में हैदराबाद पहुँचा था। प्रोफ़ेसर असीरी के कथनानुसार इस बात का भी कहीं वर्णन नहीं मिलता कि सरमद लाहौर से हैदराबाद के सफ़र के दौरान दिल्ली या आगरा ठहरा। अगर उस समय वह दिल्ली ठहरा भी हो तो भी वह बादशाह या शहज़ादा दारा की नज़रों में नहीं आया था, जब कि दारा स्वयं सूफ़ी विचारों का था और हर सूफ़ी, सन्त और साधु की तलाश में रहता था। अगर दारा उस समय सरमद को दिल्ली में मिला होता तो सम्भव है कि वह अपनी रचना 'स्कीनतुल-औलिया' में इस बात का संकेत अवश्य करता। यह रचना उसने 1049 हिजरी (1638 ई.) में पूरी की थी। इसलिये सम्भव है कि दारा की सरमद से भेंट सरमद के हैदराबाद से दिल्ली लौटने पर ही हुई हो, जब वह सरमद का क़द्रदान और अनन्य भक्त बन गया।[20]

जब सरमद हैदराबाद गया तो उस समय अब्दुल्ला क़ुतुबशाह (मृत्यु 1083 हिजरी, 1672 ई.) गोलकुण्डा का बादशाह था और शेख़ मुहम्मद खां

उसका वज़ीरे-आज़म (प्रधानमन्त्री) था। 'दबिस्ताने-मज़ाहिब' के लेखक के हवाले से पता चलता है कि बादशाह और वज़ीर दोनों ही सरमद की बड़ी इज़्ज़त करते थे।*

हैदराबाद में सरमद की मजलिस रोज़ लगती थी। उसके श्रद्धालु प्रतिदिन उसके दर्शन के लिये आते थे। सरमद भरी महफ़िल में अपनी रुबाइयाँ सुनाता, जिनसे आध्यात्मिक ज्ञान, विषय-वासना के त्याग की शिक्षा मिलती और इस संसार की धन-दौलत, मान-बड़ाई, मित्रों-रिश्तेदारों की नश्वरता का पता चलता था। लोग उसके दीवाने थे। सरमद की प्रसिद्धि क़ुतुबशाह के राज्य से बाहर भी दूर-दूर तक फैल गई थी। लोग उसे एक कामिल दरवेश मानते थे और उसके निर्वस्त्र रहने को दरवेशों वाली बेपरवाही समझते थे।

हैदराबाद में कुछ समय बिताने के बाद सरमद दिल्ली लौट आया। हैदराबाद में वह कितने समय तक रहा या वहाँ से दिल्ली कब आया, इस बारे में कोई जानकारी नहीं मिलती। रिज़वी के अनुसार वह 1654 ई. में दिल्ली आ गया था। उस समय तक सरमद भारत में एक सूफ़ी दरवेश और स्वतन्त्र विचारों वाले चिन्तक के रूप में ख्याति प्राप्त कर चुका था।

प्रतीत होता है कि सरमद को इस बात का ज्ञान था कि वह हैदराबाद से दिल्ली अपने अन्तिम पड़ाव या क़त्लगाह की ओर जा रहा है और वहीं उसने सदा के लिये महबूबे-हक़ीक़ी (प्रभु-प्रियतम) में अभेद होना है। उसे पता था कि वह अत्तार की तरह जल्लाद के रूप में ख़ुदा को अपने सम्मुख देखनेवाला था या मंसूर की तरह शहादत का पद प्राप्त करनेवाला था। वह इस निकट आ रही घटना की ओर इस प्रकार संकेत करता है :

> मा सरे-ख़ुद रा चू कोह ओ ज़ेरे-पा दानिस्ता एम,
> शहरे-दिहली रा बसाने-कर्बला दानिस्ता एम।

---

* वह लिखता है कि 1649 ई. में वह हैदराबाद में सरमद की उस मजलिस में उपस्थित था, जिसमें सरमद ने मीर जुमला को उच्च पद का आशीर्वाद दिया था और उसके लिये प्रार्थना की थी। फ़क़ीर सरमद की यह दुआ सच्ची सिद्ध हुई। मीर जुमला मुग़ल सरकार का नौकर हो गया और बाद में बंगाल का सूबेदार नियुक्त हुआ।[21]

रफ़्ता मनसूर अज़ कज़ा ओ रफ़्त सरमद नीज़ हम,
दारहा रा अज़ अता-ए-किब्रिया दानिस्ता एम।[22]

भाव: हमने अपने सिर को पहाड़ के नीचे देखा है। हमने दिल्ली शहर को कर्बला* के समान पाया है। मौत आई और मंसूर चला गया। सरमद भी जाने वाला ही है। हमने फाँसियों को ख़ुदा की बख़्शिश समझा है।

दिल्ली पहुँचने से पहले ही सरमद वहाँ प्रसिद्ध हो चुका था। दिल्ली निवासी उसके आने और उसके दीदार के लिये बेचैन थे। कहते हैं कि दिल्ली पहुँचते ही लोगों की भीड़ सरमद को देखने के लिये उमड़ पड़ी। बरनीअर, जो कि एक फ्राँसीसी इतिहासकर था, सरमद के दिल्ली आवास के समय वहीं था। उसने सरमद को कई बार दिल्ली की गलियों में नंगे फिरते देखा था।[23] उसके अनुसार सरमद को औरंगज़ेब के फ़रमानों या धमकियों की कोई परवाह नहीं थी।[24]

सरमद की प्रसिद्धि सारे शहर में फैल गई। बादशाह के दरबारी, अमीर और दूसरे बड़े लोग भी सरमद के दीदार के लिये आने लगे। शाहजहाँ और शहज़ादा दारा शिकोह भी सरमद के श्रद्धालुओं में शामिल थे। दारा प्रसिद्ध क़ादिरी दरवेश मुल्लाशाह बदख़शी का शिष्य था,[25] पर वह हज़रत मियां मीर आदि दूसरे सूफ़ियों का भी बहुत सम्मान करता था। वह सरमद को भी एक कामिल दरवेश के रूप में देखता था। दारा अक़सर सरमद के दरबार में हाज़िर होता और वह चाहता था कि उसके पिता शहंशाह शाहजहाँ को भी इस कामिल दरवेश के दीदार का फ़ख़्र हासिल हो।

दारा के निकट भविष्य में बादशाह बनने की सम्भावना थी। शहज़ादे का सरमद जैसे फ़क़ीर के पास जाना ऐसे था जैसे दुनियावी राज और ताज दरवेशी के दरबार की हाज़िरी भर रहे हों। इससे दारा और सरमद की दोस्ती सारे देश में मशहूर हो गई, लेकिन यह प्रसिद्धि बाद में दोनों के लिये जानलेवा सिद्ध हुई। जब औरंगज़ेब बादशाह बना तो उसने सबसे पहले अपने विरोधियों में से दारा और सरमद को मौत के घाट उतारने का फ़ैसला किया।

* ईराक़ में उस जगह का नाम जहाँ युद्ध में इमाम हुसैन ने शहादत पाई थी।

शाहजहाँ के आगरा चले जाने के बाद और औरंगज़ेब की धक्केशाही के कारण भाइयों में तख़्त हासिल करने के लिये आपसी युद्ध शुरू हो गया। शुजाअ* ने दारा के बेटे सुलेमान शिकोह को हरा दिया और औरंगज़ेब और मुराद† ने मिलकर दारा का पीछा किया। दारा बेचारा दुःखों और तकलीफ़ों के कारण स्थान-स्थान पर भटकता रहा। फ़ौजी सरदार मलिक जीवन ने उसे गिरफ़्तार करके औरंगज़ेब के सुपुर्द कर दिया। औरंगज़ेब ने अपने दस्तूर के अनुसार शरई अदालत से दारा के विरुद्ध कुफ्र का फ़तवा हासिल करके दारा को मौत के घाट उतार दिया।

दारा की भारतीय दर्शन और आध्यात्मिक साहित्य में विशेष रुचि थी। यह रुचि भी उसकी मौत का कारण बनी। सरमद की संगति ने दारा को असल इनसान बना दिया था। दारा आदर से सरमद को पीरो-मुर्शिद कहकर बुलाता था और अपनी तकलीफ़ें उन्हें सुनाता था। सरमद को लिखे गए उसके एक पत्र का अनुवाद इस प्रकार है:

दारा बनाम सरमद

पीरो मुर्शिद:

मैं रोज़ आपके दीदार का इरादा करता हूँ पर यह पूरा नहीं होता। अगर असल में 'मैं', 'मैं' ही हूँ तो मेरा यह इरादा पूरा क्यों नहीं होता और अगर 'मैं' 'कुछ नहीं', तो मेरा क़सूर ही क्या है? अगर हज़रत हुसैन का क़त्ल ख़ुदा की मर्ज़ी से हुआ तो यज़ीद बीच में कौन है? और अगर यह क़त्ल ख़ुदा की रज़ा से नहीं हुआ, तो फिर इस बात का क्या मतलब रह गया कि 'ख़ुदा जो कुछ चाहता है, करता है।' जब रसूले-ख़ुदा हज़रत मुहम्मद साहिब काफ़िरों के ख़िलाफ़ चढ़ाई करते थे,

* शाहजहाँ के बेटे और औरंगज़ेब और दारा के भाई।

† हज़रत मुहम्मद साहिब का नाती।

तो इसलाम की फ़ौजों को हार का मुँह क्यों देखना पड़ता था? विद्वान कहते हैं कि यह एक सबक़ था, पर जो लोग ख़ुद कामिल (पूर्ण) हों, उनके लिये सबक़ (शिक्षा) की क्या ज़रूरत है?

दारा इस कामिल दरवेश से अपने संशय निवृत्त करवाता था। उसके कई भ्रम मिट गए, सरमद ने उसे केवल अपने महबूब (ख़ुदा) की याद में लीन रहने का पाठ पढ़ाया। सरमद ने दारा के उपरोक्त पत्र का उत्तर केवल दो वाक्यों में दे दिया:

मेरे अज़ीज़ दोस्त, जो कुछ हमने पढ़ा, भूल गए, सिवाय अपने महबूब के ज़िक्र (सिमरन) के, जिसमें हम हमेशा मग्न रहते हैं।

सरमद के इस उत्तर पर यह शेर ठीक जँचता है:

मा क़िस्सा-ए-सिकंदर ओ दारा न ख़्वांदा एम,
अज़ मा बजुज़ हिकायते-मिहरो-वफ़ा मपुर्स।[26]

यानी हमने सिकन्दर और दारा का क़िस्सा नहीं पढ़ा। हमसे मुहब्बत के सिवाय और कुछ न पूछ।

दारा का दरबार दरवेशों, सूफ़ियों और विद्वानों से भरा रहता था। दारा उनके साथ ज्ञान-चर्चा करता और उनके वचनों से आनन्दित होता। उसे राजपाट के काम-काज की चिन्ता न होती। इस संगति और राज-प्रबन्ध की ओर से लापरवाही की उसे भारी क़ीमत चुकानी पड़ी। शाहजहाँ के बीमार पड़ने और आगरा के क़िले में क़ैद किये जाने पर हालात पूरी तरह बदल गए। औरंगज़ेब ने अपनी राजनीतिक शक्ति से तख़्त पर क़ब्ज़ा कर लिया।

राजनीति में दारा औरंगज़ेब के लिये भाई न होकर, बादशाहत का एक दावेदार और विरोधी था। दारा को ठिकाने लगाने के बाद ईर्ष्यालु विरोधियों ने औरंगज़ेब को सरमद को ख़त्म करने के लिये भड़काया। उन्होंने औरंगज़ेब को चेतावनी दी कि सरमद आज इतना मशहूर और लोकप्रिय है कि उसके एक ही इशारे पर दिल्ली के लोग बाग़ी होकर बादशाह को तख़्त से उतार

देंगे। उन्होंने यह भी चुग़ली की कि सरमद ने दारा को बादशाहत का वर दिया था। वे अज्ञानी क्या जानते थे कि सरमद ने दारा को वर तो दिया था, मगर रूहानी दुनिया की बादशाहत का, न कि इस दुनिया की नाशवान हुकूमत का।

औरंगज़ेब केवल दारा के ही विरुद्ध नहीं था। जिस किसी के भी दारा के साथ सम्बन्ध थे या जो भी दारा का हम-ख़याल था, चाहे वह सूफ़ियों के किसी सिलसिले का अनुयायी था, औरंगज़ेब ने उसे भी क़त्ल कर दिया। दारा से सम्बन्धित सभी सूफ़ी दरवेशों को ख़त्म करने के बाद औरंगज़ेब की नज़र सरमद पर थी।

सरमद की दिन-प्रतिदिन बढ़ रही ख़्याति, उसकी सभाओं में नित्य बढ़ रही रौनक़ और उसके श्रद्धालुओं की अनन्य श्रद्धा, कट्टर मुल्लाओं, मुसलमान विद्वानों और ईर्ष्यालु दरबारियों की आँखों में खटक रही थी। वे सरमद को बादशाह की नज़रों में एक ख़तरनाक बाग़ी और दोषी ठहराने लगे। सरमद के हर काम को कुफ्र (अधर्म) साबित करने लगे, ताकि कुफ्र का फ़तवा लगाकर उसे दोषी और मृत्युदण्ड का भागी सिद्ध किया जा सके। क़ाज़ी मुल्ला क़वी, सरमद का सख़्त विरोधी था। उसने अपनी सारी शक्ति सरमद के विरुद्ध लगा दी। सरमद के विरुद्ध मुल्लाओं ने तीन दोष लगाये:

1. सरमद नंगा रहता है, जो कि इसलाम के मूल सिद्धान्तों के विरुद्ध है।
2. सरमद पवित्र कलमा आधा पढ़ता है, पूरा नहीं पढ़ता। वह केवल 'ला इलाह' (कलमे का पहला भाग) ही पढ़ता है। 'ला इलाह' का अर्थ है, 'नहीं है ख़ुदा' यानी वह ख़ुदा की हस्ती से इनकार करता है, जो कि कुफ्र है।
3. सरमद हज़रत मुहम्मद साहिब की 'शबे-मेराज'* को भी नहीं मानता। 'शबे-मेराज' को हज़रत मुहम्मद साहिब अल्लाह के दीदार के लिये सातवें आसमान पर गए थे।*

---

* मेराज का अर्थ है ऊपर चढ़ना। हज़रत रसूले-ख़ुदा का सातवें आसमान पर अल्लाह के पास जाना मेराज कहलाता है। उस रात को शबे-मेराज या लैलतुल-मेराज कहते हैं।

यह दोष लगाने में एतमाद ख़ान मुल्ला क़वी का बड़ा हाथ था, जो कि औरंगज़ेब का चहेता दरबारी था।[27] उसे अपने पद का अभिमान था। वह सच्चे ज्ञानियों की बिलकुल क़द्र नहीं करता था। किसी दूसरे की प्रसिद्धि को वह सहन नहीं कर सकता था। मुल्ला क़वी और उसके चेले सरमद के ख़ून के प्यासे थे। उन्होंने बादशाह के कान भरने शुरू कर दिये। उन्होंने सरमद पर नंगे रहने का दोष लगाया। जब सरमद को इसका पता चला तो उसने कहा:

> *(ऐ औरंगज़ेब) वह ख़ुदावन्द, जिस ने तुझे शाही ताज दिया है, उसी ने हमें परेशानियों का सामान बख़्शा है। उसने जिस किसी में ऐब देखा, उसे ढकने के लिये लिबास दे दिया, पर बेगुनाहों को नग्नता की पोशाक बख़्शी।*[28]

दरवेश अपनी मौज के मालिक होते हैं। वे ख़ुदा की रज़ा के साथ जुड़े होते हैं, इसलिये वे जो ठीक समझते हैं, वही कहते और करते हैं। उन पर इस अधूरे संसार के अधूरे नैतिक क़ानून लागू करना भारी अज्ञानता है। सौ पर्दों में ढका हुआ भोगी और विकारी दुनियादार नंगा है और नग्न निर्मल साधु परमात्मा की रहमत के ऐसे सूक्ष्म रेशम से ढका होता है, जो मानवीय नज़र और पकड़ से बाहर है। इसलिये सरमद अपने निर्वस्त्र रहने का केवल यही कारण बताता था कि मेरे मौला की यही रज़ा है।

मौलाना आज़ाद ने सरमद की नग्नता को इन शब्दों में बयान किया है, 'सरमद का नंगा रहना, उसके सांसारिक व्यवहार के साथ सम्बन्ध तोड़ने का बाहरमुखी प्रतीक था और उसकी अत्यन्त ग़रीबी, उसकी नम्रता का चिन्ह थी।'[29]

विरोधियों ने सरमद के विरुद्ध यह गम्भीर दोष भी लगाया कि उसने दारा को ताजो-तख़्त मिलने का वरदान दिया था। औरंगज़ेब ने स्वयं सरमद को सम्बोधित करके पूछा कि तुमने भविष्यवाणी की थी कि शाहजहाँ के बाद दारा तख़्त पर बैठेगा, पर अब तुम्हारा प्यारा दारा कहाँ है? सरमद ने भावपूर्ण लहजे में उत्तर दिया, "ख़ुदा ने उसे लाफ़ानी तख़्त बख़्श दिया है और मेरी भविष्यवाणी ग़लत साबित नहीं हुई।"[30] सरमद ने बड़ी दिलेरी से

यह भी कहा, ''तू दारा को देख नहीं सकता, क्योंकि तूने राज्य हड़पने के लिये अपने ही भाइयों की जान ली है और घोर अत्याचार भी किये हैं।''[31]

मुल्ला, क़ाज़ी और औरंगज़ेब जानते थे कि केवल नंगा रहने के दोष पर सरमद को क़त्ल नहीं किया जा सकता। इसलिये कुछ और दोष तैयार करके सरमद को बड़े क़ाज़ी मुल्ला क़वी के समक्ष पेश किया गया। सरमद को मुल्ला क़वी और बादशाह औरंगज़ेब की बुरी नीयत का पता ही था, उसने मुल्ला की अदालत की कोई परवाह न की। उसने अपने आपको निर्दोष और बेगुनाह बताया और इन दोषों के जवाब में इतना ही कहा:

1. नंगे रहने को इसलाम में कहीं भी वर्जित नहीं किया गया। हैनसन लिखता है कि सरमद केवल दुश्मनों की नज़रों में नंगा था।[32] नंगे साधु तो दिल्ली की गलियों में फिर रहे थे पर वे दारा के साथी नहीं थे।[33] यानी सरमद के विरोधियों का असल उद्देश्य तो ईर्ष्या और बदला था, पर बहाना सरमद के नंगे रहने का बनाया गया। यों तो थट्टा, लाहौर, हैदराबाद, गोलकुण्डा और दिल्ली में उनके लम्बे निवास के दौरान हज़ारों लोग उसका उपदेश सुनने आते थे और किसी एक व्यक्ति ने भी उसके स्वभाव, व्यवहार या नंगे रहने के बारे में किसी भी अशुभ बात की कोई शिकायत नहीं की थी।
2. आधा कलमा पढ़ने के बारे में सरमद ने कहा कि बेशक मैं पाक कलमे का पहला भाग ही पढ़ता हूँ, यानी 'ला-इलाह' ही कहता हूँ (जिसका अर्थ है 'नहीं है ख़ुदा')। मेरे लिए यह ठीक ही है, क्योंकि मैंने अभी अल्लाह-तआला का दीदार नहीं किया और मुझे पूर्ण सत्य की प्राप्ति नहीं हुई। जब मैं पूरी हक़ीक़त को पा लूँगा और परमात्मा को साक्षात् देख लूँगा तो पूरा कलमा पढ़ने लगूँगा। (पूरा कलमा है – 'ला-इलाह इल्ला अल्लाह, मुहम्मद रसूल अल्ला' यानी नहीं है कोई ख़ुदा (इष्ट), सिवाय ख़ुदा के, और हज़रत मुहम्मद साहिब उस अल्लाह के रसूल हैं)। किसी को देखे बिना उसके अस्तित्व की गवाही देना, झूठी गवाही देने के तुल्य है। मैं झूठी गवाही नहीं देता।

इस पर सरमद को कलमा पढ़कर सुनाने के लिये कहा गया। सरमद 'ला इलाह' (नहीं है ख़ुदा) कहकर चुप हो गया। इन दो शब्दों के बाद उसके मुँह से एक अक्षर भी न निकला।

सरमद के इस प्रकार आधा कलमा पढ़ने को कुफ्र यानी, उसका नास्तिक होना समझा गया और इसे इक़बाले-जुर्म (अपराध स्वीकार करना) मान लिया गया। सरमद को अधर्मी और काफ़िर ठहराया गया। कुफ्र की सज़ा मौत थी। इस प्रकार सरमद को मौत का भागी बना दिया गया। ख़्वाजा हाफ़िज़ के एक शेर के अनुसार उसका जुर्म शायद यह था कि वह (ख़ुदाई) भेद ज़ाहिर कर रहा था। 'जुर्मश आं बुवद किह् असरार हवैदा मी करद।'[34]

सरमद को क़त्ल करने का फ़तवा जुमेरात (बृहस्पतिवार की शाम) को दिया गया और अगला दिन उसे जनता के सामने (सरे-आम) क़त्ल किये जाने के लिये मुक़र्रर किया गया। यह 1660-61 ई. का ख़ूनी वर्ष था।[35] सरमद के क़त्ल के लिये पूरी तैयारी की गई। सारा शहर फ़ौज के हवाले कर दिया गया और आम जनता में यह आतंक फैलाया गया कि क़ानून किसी का लिहाज़ नहीं करेगा। हिन्दुस्तान की राजधानी ने काला मातमी लिबास पहन लिया।

अगले दिन जुमे (शुक्रवार) को जामिअ मसजिद की सीढ़ियों के सामने एक चबूतरा बनाया गया, जिसने क़त्लगाह का काम देना था। दारा को तो जनता के डर से बादशाह ने जेल की काल कोठरी में मरवाया था, पर सरमद के क़त्ल के लिये शहर में मुनादी करवाई गई। जुमे के दिन जामा मसजिद में अनेक लोग एकत्र होते थे, पर इस दिन लोगों की अपार भीड़ एक भयानक दृश्य देखने के लिये मौजूद थी। वातावरण में एक ज़बरदस्त भय छाया हुआ था जिसमें सरमद के श्रद्धालुओं के दिल रो रहे थे।

सिपाहियों की हिरासत में सरमद को लाल क़िले से बाहर लाया गया। आगे-पीछे लोगों की भारी भीड़ थी। सरमद सदा की तरह निश्चिन्त और बेपरवाह था, मानो क़त्ल किए जाने के लिये नहीं, शादी करवाने के लिये जा रहा हो! वह मस्ती में रुबाइयाँ गाता चला आ रहा था। उसके चेहरे से तेज झलक रहा था। वह शान्ति और आत्म-विश्वास की मूरत था। मानो परेशानी, चिन्ता या डर का साया भी उसके पास से नहीं गुज़रा।

आख़िर सरमद को चबूतरे पर खड़ा किया गया। उसकी आँखें और बाँहें आसमान की ओर थीं। उसकी रूह शरीर के बन्धन तोड़कर सदा के लिये अपने प्रियतम की बाँहों में समा जाने के लिये व्याकुल थी।

जल्लाद नंगी तलवार लिये चबूतरे की ओर बढ़ा। नियम के अनुसार, जल्लाद ने सरमद के चेहरे को कपड़े से ढकना चाहा, पर सरमद ने मुँह ढकने से इनकार कर दिया। उसने मुस्कराते हुए जल्लाद को सम्बोधन करके कहा:

मैं तेरे क़ुर्बान, आ, आ, तू जिस रूप में भी आये, मैं तुझे पहचानता हूँ।* [36]

यह कहकर सरमद ने सिर झुका दिया। जल्लाद की तलवार के एक ही वार ने उसका सिर क़लम कर दिया।[37] 'मुआरिफ़' के अनुसार सरमद ने उस समय यह शेर ऊँची आवाज़ में पढ़ा:

शोरे शुद ओ अज़ ख़्वाबे-अदम चश्म कुशूदेम,
दीदेम किह् बाक़ी अस्त शबे-फ़ितना ग़ुनूदेम।

''इक शोर मचा और हमने ख़्वाबे-अदम† (गहरी नींद) से ज़रा जागकर देखा। हम यह देखकर फिर सो गए कि फ़साद की रात अभी बाक़ी है।''

रिज़वी के अनुसार सरमद का सूफ़ियों के 'हमा-ऊस्त या वहदतुल-वुजूद'[38] के सिद्धान्त में दृढ़ विश्वास था। सूफ़ी दरवेश कायनात में दिखाई देती अनन्त कसरत या अनेकता के पीछे एक ही वजूद या ज़ात के दर्शन करते हैं। साईं बुल्लेशाह के अनुसार परमात्मा के इश्क़ की तलवार दुई (द्वैत) का पर्दा काट देती है और सच्चे आशिक़ को हर जगह एक ख़ुदा का नूर दिखाई देता है:

इश्क़ की तेग से मूई, नहीं वोह ज़ात की दूई।[39]

---

* कहा जाता है कि नीशापुर की दुर्घटना के समय हलाकू खां का जो लश्करी (सैनिक) फ़रीदुद्दीन अत्तार को क़त्ल करने के लिये आगे बढ़ा, उसको सम्बोधित करते हुए फ़रीदुद्दीन अत्तार ने कहा: 'मेरे महबूब तू जिस भी रूप में आये, मैं तुझे पहचानता हूँ।'

† **ख़्वाबे-अदम**=प्रभु-भक्ति में लीन होने की अवस्था की तरफ़ इशारा है।

आप कहते हैं कि मारे जानेवाले हिरन में भी वही है और मारनेवाले चीते में भी वही है। नौकर और मालिक दोनों में एक ही क़ादिर (परमात्मा) का नूर समाया हुआ है। गायक भी वही है, वादक भी वही है और श्रोता भी वही है। मंसूर से अना-अल-हक़्क़ कहलवाने वाला भी वह ख़ुद है, उसको सूली पर चढ़ानेवाला भी और चढ़ाये जाने का तमाशा देखनेवाला भी वह ख़ुद है:

आपे आहू आपे चीता, आपे मारन धाया।
आपे साहिब आपे बरदा, आपे मुल्ल विकाया।[40]

आपे सुणें ते आप सुणावें, आपे गावें आप बजावें।
हत्थों कौल सरोद सुणावें, किते जाहल हो के नसदे हो।
तेरी वहदत तूएं पुचावें, अनलहक दी तार हिलावें।
सूली ते मनसूर चढ़ावें, ओथे कोल खलो के हसदे हो।
कीहनूं ला-मकानी दसदे हो।[41]

गुरु अर्जुन देव जी ने इसको 'ब्रहम गिआनी कै मित्र सत्रु समानि'[42] की अवस्था का नाम दिया है। यह वह उच्च एवं पवित्र रूहानी अवस्था है जिसमें भक्त अपनी ख़ुदी, ख़ुदा में मिटाकर उसका रूप हो जाता है। यही सूफ़ियों की फ़ना-फ़िल्ला और बक़ा-बिल्ला की अवस्था है, जिसमें सरमद समा चुका था।

'नग़माए-सरमद' के रचयिता के अनुसार सरमद ने क़त्ल किये जाने से पहले यह शेर पढ़ा:

उमरीस्त किह् आवाज़ा-ए-मन्सूर कुहन शुद,
मन अज सरे-नौ जल्वा दिहम दारो-रसन रा।[43]

यानी बहुत समय बीत गया, मंसूर का नाराए-हक़्क़ का क़िस्सा पुराना हो चुका है। मैं दोबारा सूली पर झूलने का जलवा दिखाने लगा हूँ।

औरंगज़ेब का मीर मुंशी आक़िल खां गाज़ी लिखता है कि सरमद ने क़त्ल से पहले यह शेर पढ़ा:

उरयानी-ए-तन बूद ग़ुबारे-रहे-दोस्त,
आं नीज़ ब-तेग़ अज़ सरे-मा वा करदंद।[44]
(रुबाई 136)

"मेरा नंगा जिस्म महबूब से विसाल की राह में गर्दो-ग़ुबार (रुकावट) था। जल्लाद मेरा सिर काटकर रास्ता साफ़ कर रहा है।" भाव यह है कि मिट्टी का जिस्म रूह के ख़ुदा के साथ विसाल के रास्ते में रुकावट था। जल्लाद द्वारा सिर काटे जाने पर रूह के ख़ुदा के साथ विसाल का रास्ता साफ़ हो गया।

कहा जाता है कि क़त्ल से पहले सरमद के एक दोस्त शाह अब्दुल्ला ने सरमद से कहा कि मेरे दोस्त, अभी भी जान बच सकती है। नग्नता ढक ले और कलमा पूरा पढ़। मुझे विश्वास है कि तेरी जान बख़्श दी जायेगी।[45] पर सरमद को मौत का कोई भय नहीं था।

अगर क़त्ल किये गए सरमद और क़त्ल करवानेवाले औरंगज़ेब, दोनों नामों को थोड़ी देर के लिये एक ओर रख दें, तो क़त्ल होनेवाला और क़त्ल करवानेवाला मानवता के इतिहास में सदा कारगर रहनेवाली दो शक्तियाँ हैं। एक वह शक्ति है जो इनसान को इस भ्रम-जाल में फँसाना चाहती है कि केवल किसी मज़हब में दाख़िल हो जाने से और एक विशेष प्रकार के भेष, शरीअत या कर्मकाण्ड को अपनाने से ही वह ख़ुदा की दरगाह में मंज़ूर हो सकता है। दूसरी शक्ति इस सत्य का प्रतीक है कि ख़ुदा को इश्क़ प्यारा है, भेष नहीं। गुरु नानक देव जी ने कहा था, 'हमरी जाति पति सचु नाउ,'[46] कि हमारा असल मज़हब उस सतनाम का इश्क़ है। मौलाना रूम ने कहा था, 'आशिक़ां रा मज़हबो-मिल्लत ख़ुदास्त,'[47] कि प्रभु के प्रेमियों का एकमात्र मज़हब, अपने महबूब का इश्क़ है। साईं बुल्लेशाह ने कहा था, 'इश्क़ की लग्गे राह दे नाल,'[48] कि सच्चा आशिक़ बाहरी मज़हबी नियमों के साथ नहीं बँधा होता। जब कभी परमात्मा के सच्चे प्रेमी इनसान को यह समझाने का यत्न करते हैं कि परमात्मा कर्मकाण्ड का पालन करने से नहीं मिलता है, तो पुरोहित, पादरी और मुल्ला समय के शासकों के साथ मिलकर

न केवल उनका विरोध करते हैं बल्कि उनके ख़िलाफ़ अनेक षड्‌यन्त्र भी रचते हैं। क़त्ल किये जाने से पहले प्रभु के प्रेमियों द्वारा अपनी जान पर खेलकर प्रभु-प्राप्ति की सच्ची राह रोशन कर जाने का यह सिलसिला सदा से चलता आ रहा है।

मौलाना आज़ाद लिखते हैं:

> इसलाम के तेरह सौ वर्ष के इतिहास में मुनसिफ़ों और क़ाज़ियों (धार्मिक न्यायकर्ताओं) की क़लम, म्यान से बाहर निकली तलवार की तरह चलती रही है और हज़ारों सत्य के पुजारियों के क़त्ल के लिये ज़िम्मेदार रही है। जब भी बादशाह के सिर पर क़त्ल व ख़ून का भूत सवार होता, तो फ़िक़्ह (इसलामी क़ानून) के माहिर क़ाज़ियों की क़लम और शाही सिपहसालार (सेनापति) की तलवार साथ-साथ चलती। शरीअत के विद्वानों में जो भी सत्य की रम्ज़ (इशारा) समझने लगता या हक़ीक़त का भेद पाने योग्य होता, तो मुल्ला, क़ाज़ी और शरीअत वाले उसे ठिकाने लगा देते। सत्य के पुजारियों को अनेक कष्ट सहने पड़ते और आख़िरकार जान देकर ही उनका छुटकारा होता।[49]

सरमद पर लगाये गए दोष लोगों की आँखों में धूल झोंकने के लिये थे। सरमद को सरेआम क़त्ल करने का उद्देश्य लोगों को आतंकित करना था ताकि कोई भी न तो सरमद के हक़ में आवाज़ उठा सके और न ही कोई सूफ़ी दरवेशों का पैरोकार बनने का साहस कर सके।

सरमद से पहले भी कट्टरपंथी मौलवियों और मज़हबी शासकों के हाथों शम्स तब्रेज़, मंसूर हल्लाज, फ़रीदुद्दीन अत्तार, शिहाबुद्दीन सुहरावर्दी आदि दरवेश शहादत (शहीद होने) का जाम पी चुके थे। 'सरमद भी अपनी शहादत से इतिहास के पन्नों पर अपने पद-चिन्ह सदा के लिये पत्थर पर लकीर की तरह छोड़ गया। वह सूफ़ी शहीदों की लम्बी सूची में एक और पवित्र नाम जोड़ गया।'[50]

जामा मसजिद के सामने जिस चबूतरे पर सरमद को क़त्ल किया गया था, वहाँ पर उसका मज़ार है। 'रिआज़ुल-शुअरा' के रचयिता वालिह

दाग़िस्तानी सरमद की शहादत के कुछ वर्षों बाद इस मज़ार पर गये थे। उन्होंने क़ब्र को फूलों से ढका हुआ पाया। अनेक श्रद्धालु हर रोज़ उस मज़ार पर अपनी श्रद्धा के फूल चढ़ाने आते हैं।

सरमद पूर्ण एकता की स्थिति में पहुँच चुका था, इसलिये मज़हब की तंग-दिल द्वैत से भी आज़ाद हो चुका था। उसका न कोई दुनियावी मज़हब था और न ही रस्मी धर्म। वह न मुसलमान था, न हिन्दू, न यहूदी, न तुर्की। उसका एकमात्र धर्म ख़ुदा का इश्क़ था। वह केवल अपने महबूब की राह का मुसाफ़िर था जो अपने प्रियतम से मिलाप के लिये निरन्तर चलता रहा और अन्त में उसी राह पर सब कुछ न्योछावर करके सदा के लिये ख़ुदा में समा गया। उसके लिये दोस्त और दुश्मन, मित्र और जल्लाद में कोई अन्तर नहीं था, क्योंकि सरमद की नज़र में वे दोनों ही एक हक़ीक़त के दो पहलू थे।

सरमद का क़त्ल आत्मा की नश्वर शरीर पर जीत का ख़ूबसूरत प्रमाण है। उसे न हिन्दुस्तान का बादशाह हरा सका, न मौत की रानी। ख़ुदा के आशिक़ समय-समय पर इस सत्य का प्रमाण पेश करते रहते हैं ताकि लोग यह सबक़ न भूल जायें कि शाहों की तलवार सच्चे आशिक़ों के शरीर के टुकड़े तो कर सकती है पर उनकी आत्मा को नहीं झुका सकती। आशिक़ों को अपना महबूबे-हक़ीक़ी (सच्चा प्रियतम) प्यारा है और महबूब को हक़्क़ (सत्य) प्यारा है। इसलिये आशिक़ अपने महबूब की ख़ुशी के लिये सत्य का मार्ग चुनते हैं, चाहे वह जिस्मानी मौत की गली से होकर क्यों न गुज़रता हो।

दूसरे कई दरवेशों की तरह सरमद को भी सिर्फ़ सत्य के मार्ग पर दृढ़ रहने के कारण क़त्ल कर दिया गया। परन्तु सरमद को शहंशाह औरंगज़ेब की नहीं, शहंशाहों के शहंशाह उस ख़ुदावन्द करीम की ख़ुशी दरकार थी और उसकी ख़ुशी के लिये वह कुछ भी कर सकता था। सरमद का क़त्ल शहंशाह की जीत नहीं, उसकी पराजय का प्रत्यक्ष प्रमाण था क्योंकि बहादुरी और जीत सत्य को बर्दाश्त करने में होती है, सत्य से भागने या सत्य को क़त्ल करने के यत्न में नहीं। सत्य को न तलवार काट सकती है, न पानी गला सकता है, न आग जला सकती है।

- सरमद ख़ुदा का ऐसा मस्त दरवेश था जिसने अपना सारा जीवन ख़ुदा की इबादत और लोगों को ख़ुदा की मुहब्बत का पैग़ाम देने में लगा दिया। सरमद ने अपना सफ़र दुनिया की फ़ानी धन-दौलत की सौदागरी से शुरू किया मगर जल्दी ही इससे मुँह मोड़कर ख़ुदा की मुहब्बत और उसके नाम की लाफ़ानी धन-दौलत की सौदागरी शुरू कर दी और फिर अपनी सारी ज़िन्दगी इस सौदागरी में ही लगा दी।
- सरमद ख़ुदा के इश्क़ पर दीन और दुनिया दोनों क़ुर्बान कर चुका था। न उसे दुनियावी कामयाबी और शोहरत की फ़िक्र थी और न ही उसका ध्यान बाहरमुखी शरीअत की पालना की तरफ़ था। उसका ख़याल अन्दर इस क़दर ख़ुदा के इश्क़ में जज़्ब हो चुका था कि उसे दुनिया और शरीअत तो क्या, अपने तन को ढाँपने तक की भी सुध-बुध न थी।
- सरमद सिर्फ़ एक ख़ुदावन्द करीम को अपना सच्चा हाकिम और मालिक मानता था। उसकी रूह उस सर्वशक्तिमान कुल-मालिक में खोकर दुनियावी हाकिमों के ख़ौफ़ से आज़ाद हो चुकी थी।
- सरमद की रूह जिस्मों की फ़ानी वादी को पार करके रूहों के लाफ़ानी देश में पहुँच चुकी थी। सरमद के लिये जिस्म की इतनी क़ीमत भी न थी जितनी जिस्म ढकने के लिये ओढ़नी की होती है। इसलिये उसने रूह की आज़ादी के लिये जिस्म को क़ुर्बान कर देने में पल भर की देर न की।
- सरमद कसरत या अनेकता की वादी को पार करके वहदत या एकता की वादी में पहुँच चुका था। उसे हर इनसान और हर शै में एक ख़ुदावन्द करीम का नूर दिखाई देता था। वह हिन्दू-मुसलिम, ईसाई-यहूदी, औरत-मर्द और अमीर-ग़रीब ही नहीं, नेको-बद और दोस्त-दुश्मन की द्वैत से भी ऊपर उठ चुका था। जो जल्लाद उसका सिर क़लम करने के लिये आया सरमद को उसमें भी उस ख़ुदा का नूर दिखाई दिया। उसकी रूह एक ख़ुदा के नूर से इस क़दर पुरनूर हो चुकी थी कि उसमें दुई के अन्धकार के लिये कोई जगह ही न थी।
- सरमद सिर्फ़ गुरु तेग़ बहादुर का समकालीन ही नहीं था उनकी तरह सच्चाई पर जान क़ुर्बान करने वाला पूर्ण शहीद था। इन दोनों कामिल

इनसानों ने शहादत का जाम पीना मंज़ूर कर लिया पर झूठ और ज़ुल्म के सामने सिर झुकाना मंज़ूर न किया।

- *मौत हर एक को आती है लेकिन सच्चाई की ख़ातिर शहादत देने वाले लोग विरले होते हैं। सरमद मानवता का सरताज और सरदार उन गिने-चुने पूर्ण पुरुषों में से है जो झूठ और ज़ुल्म की अँधेरी रात में रहती दुनिया तक चमकता रहने वाला प्रेम और सच का सूरज रोशन कर जाते हैं। ख़ुशक़िस्मती की बात है कि हज़रत ईसा और गुरु तेग़ बहादुर की तरह सरमद शहीद का कलाम हमारे पास मौजूद है। सरमद और उसका कलाम दोनों ही कुल-आलम को दायमी रोशनी दिखाने वाले लाफ़ानी मीनार (प्रकाश स्तम्भ) हैं। सरमद का जीवन और कलाम हमें अज्ञानता के अन्धकार को दूर करके सच्चे रूहानी ज्ञान के प्रकाश में पहुँचने की प्रेरणा भी देता है और इस रूहानी रोशनी में पहुँचने की राह भी दिखाता है।*

कलाम

पंजाब के सूफ़ी शायरों ने अधिकतर काफ़ियों, सिह-हर्फ़ियों और दोहों का प्रयोग किया है, पर फ़ारसी में कलाम कहनेवाले सूफ़ी दरवेशों ने रुबाई, मसनवी और ग़ज़ल को पहल दी है। सरमद का कलाम भी अधिकतर रुबाइयों के रूप में मिलता है। यह कलाम उसके अपने समय में ही लोगों के प्यार और आदर का पात्र बन गया था।

सरमद के मुँह से रुबाइयाँ अपने आप यूँ झरती थीं जैसे बादलों से वर्षा। ये रुबाइयाँ श्रोताओं पर जादू जैसा असर करती थीं।

'रुबाई' अरबी के 'रबअ' धातु से निकला शब्द है, जिसका अर्थ है, 'चौहरा धागा' या 'चार' की संख्या से सम्पूर्ण करना। फ़ारसी शायरी में रुबाई का अर्थ चार पंक्तियों वाली ऐसी काव्य रचना से है, जिसकी पहली, दूसरी और चौथी पंक्तियों का तुकान्त मिलता होता है। अगर चारों पंक्तियों का तुकान्त मिलता हो, तो उसे 'दो बैती' या 'तराना' भी कहते हैं।

ईरानी रुबाई के इतिहास में रूदकी (मृत्यु 925 ई.) को रुबाइयों की शुरुआत का श्रेय दिया जाता है। होमर की तरह वह एक नेत्रहीन गायक था जिसे फ़ारसी शायरी का 'अबू-अल-आबा' (पितरों का पितर) कहा जाता है। उसने सबसे पहले रुबाई को सच्चे इश्क़ और हुस्न के भावों को प्रकट करने के लिये प्रयोग किया। राबिया बसरी रूदकी की समकालीन स्त्री सूफ़ी शायरा थी। इसने भी रुबाई का प्रयोग किया। एक अन्य प्रसिद्ध रुबाईकार मुखिया सूफ़ी अबू सईद बिन अबी-अल-ख़ैर (मृत्यु 1049 ई.) था, जिसने सनाई, अत्तार, रूमी, सादी, हाफ़िज़, जामी जैसे महान् सूफ़ी चिन्तकों और कवियों को प्रेरणा दी। इसकी रचनाएँ बाद में आनेवाले सभी सूफ़ियों के लिये नमूना और आधार बनी। इसकी रुबाइयों में अत्यन्त सादगी, पवित्रता और प्रभाव शक्ति है। इसने ही सर्वप्रथम रुबाई को सूफ़ी रहस्यवाद को प्रकट करने का साधन बनाया। उमर ख़य्याम (मृत्यु 1123 ई.) प्रसिद्ध रुबाईकार था, जिसका अनुसरण सरमद ने अपना रुबाई-रूप निर्धारित करने के लिये किया। जैसे रूदकी उमर ख़य्याम का पूर्वाधिकारी था, वैसे ही सरमद उसका उत्तराधिकारी भी सिद्ध होता है। उसकी कई रुबाइयों में उमर ख़य्याम के साथ आश्चर्यजनक समानता दिखाई देती है। उमर ख़य्याम में दार्शनिक रंग अग्रिम है, जब कि सरमद में फ़क़ीराना अन्दाज़ अधिक प्रबल है। उमर ख़य्याम की तरह ही सरमद सांसारिक पदार्थों की नश्वरता पर ज़ोर देता है, पर वह साथ ही होनी या तक़दीर की अटलता पर भी बल देता है। उमर ख़य्याम भविष्य की चिन्ता छोड़कर वर्तमान क्षणों का आनन्द लेने की बात कहता है, जब कि सरमद वर्तमान जीवन को अमर-पद की प्राप्ति का साधन बनाने पर ज़ोर देता है।

सरमद ने अपनी रुबाइयों में पूर्ण अद्वैत और प्रभु की सर्वशक्तिमत्ता का वर्णन किया है। परमात्मा प्रत्येक वस्तु में समाया हुआ है और अपनी रज़ा का मालिक है। सर्वशक्तिमान होने के बावजूद वह दया-मेहर का सागर है। वह दयालु, कृपालु और बख़्शिन्द है। मुर्शिद परमात्मा का रूप होता है और परमात्मा की प्राप्ति का एकमात्र साधन भी है। सच्चा मुरीद परमात्मा और मुर्शिद को एक समझकर सदा दोनों की रज़ा में चलता है। वह धन-दौलत,

मान-सम्मान और ख़ुशी-ग़मी आदि की परवाह नहीं करता। उसकी नज़र अपने गुनाहों पर होती है या अल्लाह-तआला की रहमत पर।

यह दुनिया सुहावना बाग़ है। सूफ़ी इसे अपने मालिक से मिलने का स्थान और उम्र को अवसर समझता है। उसके मालिक का नाम-रूपी अमृत ही उसकी असल शराब है। 'साक़ी' उसका मुर्शिद है, जिसकी सच्ची प्रीति की शराब पीकर वह मस्त रहता है। पर मस्त होते हुए भी वह अपने उद्देश्य के प्रति होशियार और सावधान रहता है। वह आयु को व्यर्थ धन्धों और मोह-माया में नहीं गँवाता, बल्कि इसको प्रभु की बख़्शिश समझकर, महबूब (प्रभु-प्रियतम) से मिलाप करने का यत्न करता है। उसे दुनिया के तानों की परवाह नहीं होती। वह अपनी बड़ाई नहीं चाहता, बल्कि मालिक की बड़ाई के गुण गाता है। उसके लिये ज़िन्दगी और मौत में कोई फ़र्क़ नहीं होता। इसलिये वह शहादत का जाम भी हँसते-हँसते पी जाता है। उसे यक़ीन होता है कि वह अपने मालिक का ही अंश है और अन्त में उसे उसी में समा जाना है। वह स्वयं को प्रभु में मिटाकर अमर हो जाता है। उसका महबूब लाफ़ानी और अविनाशी है। इसलिये उस (आशिक़) की रूह भी लाफ़ानी है। वह अपने मालिक का ही रूप होता है। जब तक वह अलग है, वह मात्र बूँद है, पर उस विशाल प्रभु रूपी सागर में मिलकर वह भी उसका रूप हो जाता है। कई बार मस्ती में वह अपने दैविक असल को देखकर स्वयं सत्य का रूप होने का नारा लगा देता है, जिस कारण उसके मुँह से अपने आप 'अना-अल-हक़्क़' (मैं सत्य हूँ) निकल जाता है। वास्तव में सूफ़ी का काम केवल इस मूल सत्य को पहचानना है। वह इसी काम के लिये जीवित रहता है और इसी के लिये ही अपनी हस्ती उस लाफ़ानी हक़ीक़त में फ़ना कर देता है।

रूहानी तालीम

ख़ुदावन्द करीम

सरमद का कलाम है – ऐ सरमद, अगर वह क़ौल का पक्का है या वफ़ा निभाने वाला है तो वह ख़ुद–बख़ुद आ जायेगा; अगर वह आ सकता है तो वह ख़ुद ही आ जायेगा। तू उसकी तलाश में व्यर्थ क्यों भटकता है? चुपचाप बैठ जा। अगर वह ख़ुदा है तो ख़ुद ही चला आयेगा। *(रुबाई 75)*

फ़ारसी में प्रभु को 'ख़ुदा' कहा गया है। ख़ुदा – ख़ुद+आ के जोड़ से बना है, जो ख़ुद से है, वह ख़ुदा है। गुरु नानक साहिब ने गुरु–मन्त्र में उसे 'सैभं' अर्थात् स्वयंभू कहा है। कायनात की हर चीज़ अपनी हस्ती के लिये किसी दूसरे पर निर्भर है। ख़ुदावन्द करीम वह हक़ीक़ते–मुतलक़ (परम सत्य) है जो अपने आपसे ख़ुद है। क़ुरान शरीफ़ में लिखा है, 'वह किसी से पैदा नहीं हुआ।'[1] गुरु नानक साहिब कहते हैं, 'थापिआ न जाइ कीता न होइ॥ आपे आपि निरंजनु सोइ॥'[2] वह प्रभु न किसी दूसरे द्वारा बनाया गया है न ही किसी दूसरे ने उसकी स्थापना की है। वह ख़ुद अपने आपसे ख़ुद है और अपना आधार आप है। जो किसी दूसरे पर आधारित हो वह कभी भी गिर सकता है। वह ख़ुदा सबका आधार है और अपना आधार भी वह ख़ुद है।

हदीस क़ुदसी में ख़ुदा ने फ़रमाया है: "मैं छिपा हुआ ख़ज़ाना था, मैंने चाहा कि मैं पहचाना जाऊँ,"[3] यानी मैंने सारी कायनात पैदा की जिसका मक़सद ख़ुद को अपनी मख़लूक़ (रचना) के ज़रिये ज़ाहिर (प्रकट) करना था।

सरमद दूसरी बात यह समझाता है कि उस ख़ुदा की कोई ख़ुद तलाश नहीं कर सकता। वह ख़ुदा है इसलिये वह जिसके पास आता है ख़ुद ही आता है। मामूली अक़्ल वाला इनसान भी यह बात समझ सकता है कि जिसे हम अपनी शक्ति और बुद्धि से पकड़ सकते हैं, वह शक्ति और बुद्धि में हमसे छोटा होगा। इसी बात का दूसरा पहलू यह है कि जो शक्ति और बुद्धि में हमसे बड़ा है,

उसे हम अपनी शक्ति से नहीं पकड़ सकते। वह प्रभु "सर्वशक्तिमान है, वह सर्वज्ञाता है।"[4] वह जिसे मिला है ख़ुद मिला है और जिसे भी मिलेगा ख़ुद मिलेगा। इसलिये सरमद कहता कि अगर वह ख़ुदा है तो ख़ुद ही चला आयेगा।

सरमद एक और ख़ूबसूरत इशारा करता है – अगर उसमें वफ़ा है; अगर वह क़ौल (वचन) का पक्का है तो वह अल्लाह-तआला ख़ुद-बख़ुद चला आयेगा। कहा जाता है कि जब अल्लाह-तआला ने रूहों को अपने हुक्म से कायनात में भेजा और जब उसने इन रूहों के अन्दर अपनी जुदाई का दुःख देखा तो फ़रमाया, "क्या मैं तुम्हारा रब्ब नहीं हूँ?"[5] भाव मैं तुम्हें हमेशा के लिये अपने से जुदा नहीं कर रहा बल्कि मैं तुम्हें वापस बुला लूँगा। रूहें बेफ़िक्र होकर बोलीं "बला" (हाँ)।[6] बुल्लेशाह के कलाम में भी ऐसा ही हवाला मिलता है:

> नाल रूहां दे लारा लाया, तुसीं चलो मैं नाले आया।
> एथे परदा चा बणाया, मैं भरम भुलाया फिरदा हां।[7]

गुरु अर्जुन साहिब का भी ऐसा ही फ़रमान है :

> जिनि तुम भेजे तिनहि बुलाए सुख सहज सेती घरि आउ ॥[8]

सरमद इशारा करता कि तू कभी ख़ुद ख़ुदा की तलाश में कामयाब नहीं हो सकता। वह ख़ुदा ख़ुद अपना क़ौल पूरा करेगा और ख़ुद तेरी तलाश करेगा। सरमद का भाव है कि प्रभु की प्राप्ति, प्रभु की दया पर निर्भर है, मनुष्य के यत्न पर नहीं।

सरमद ने इस छोटे-से वाक्यांश का प्रयोग किया है 'चल बैठ' (ब-नशीं)। कहाँ बैठ? कैसे बैठ? सरमद कहता है – चुपचाप बैठ। वह इशारा करता है कि तू तन-मन को स्थिर करके उसकी याद, उसके तसव्वुर (ध्यान) में बैठ जा। तू कोशिश की वादी से सहज की वादी में चला जा। तू यत्नशील से यत्नरहित हो जा। ख़ुदा इस इन्तिज़ार में है कि इनसान कब सबकुछ उस पर छोड़े और वह ख़ुद-बख़ुद उसके पास चला आये :

> ब-नशीं अगर ऊ ख़ुदा अस्त ख़ुद मी आयद।

इस रुबाई में वफ़ा को रहमत के अर्थ में भी इस्तेमाल किया गया है। वह प्रभु दयालु है। वह सदा दया करता है और वह जिस किसी को अपने साथ मिलाता है, ख़ुद दया करके मिलाता है। क़ुरान शरीफ़ में अल्लाह-तआला ने फ़रमाया है, 'तुम अल्लाह की रहमत से ना-उम्मीद न रहो, निश्चय ही वह बख़्शिंद और मेहरबान है।'[9]

यह सरमद की सबसे ख़ूबसूरत और भेद-भरी रुबाइयों में से एक है। इसमें सरमद की कला के चिन्तन की सूक्ष्मता और ऊँचाई अपने शिखर को छूती है। इस रुबाई में सरमद ने सागर को गागर में बन्द कर दिया है। कुछ ही लफ़्ज़ों में ख़ुदा की हस्ती, ख़ुदा से मिलने के साधन और ख़ुदा से मिलाप के लिये अपनाई जानेवाली रूहानी साधना, सबका संक्षिप्त लेकिन अत्यन्त प्रभावशाली वर्णन किया है। जो कुछ सरमद ने चार पंक्तियों में कह दिया, उसकी चार सौ पन्नों में भी व्याख्या नहीं की जा सकती।

सरमद कहता है – अफ़सोस, मेरी कल्पना उसको न पकड़ सकी। बेशक इसने ऊँची से ऊँची उड़ान भरी, पर मैं अपनी ख़ाम-ख़याली (कच्ची अक़्ल) पर हैरान हुआ कि यह उसे नहीं जान सकी जो मकड़ी के जाले को शक़्ल देता है। *(रुबाई ९९)*

सरमद बहुत ख़ूबसूरत ढंग से समझा रहा है कि हम मन-बुद्धि द्वारा उस प्रभु को समझने की कोशिश करते हैं, मगर इनसान की कल्पना कभी भी उस क़ादिर और उसकी क़ुदरत को नहीं समझ सकती। इस रुबाई में सरमद 'मकड़ी के जाले को शक्ल देनेवाले' ख़ालिक़ (कर्ता) की बात करता है। सरमद समझाना चाहता है कि अगर कायनात को ध्यान से देखें तो क़ुदरत की हर चीज़ में क़ादिर की ऐसी ख़ूबसूरत कारीगरी नज़र आती है जिसको देखकर इनसान की अक़्ल दंग रह जाती है। 'मकड़ी का जाला' सिर्फ़ एक इशारा है। सरमद हमें यह समझाना चाहता है कि "क़ुदरत की हर चीज़ में कारीगरी है,"[10] बारीकी है, ख़ूबसूरती और रम्ज़ है। अगर हम क़ुदरत को ही अच्छी तरह से देखना शुरू कर दें तो हम क़ादिर की हस्ती, ताक़त (शक्ति) और फ़न (कला) के भी क़ायल हो जायेंगे।

गुरु नानक साहिब की वाणी है:

सोचै सोचि न होवई जे सोची लख वार॥
चुपै चुप न होवई जे लाइ रहा लिव तार॥[11]

यानी इनसान न तो बुद्धि या सोच-विचार द्वारा परमात्मा को जान सकता है और न ही ख़याल को ठहराकर उस प्रभु का भेद पा सकता है।

सरमद ने भी अपनी उपरोक्त रुबाई में इसी ओर इशारा किया है कि उस ख़ालिक़ की अद्‌भुत कारीगरी उसकी कायनात के कण-कण में दिखाई देती है, मगर वह ख़ुद विचार और ख़याल की पकड़ से बाहर है।

सरमद कहता है – दुनिया में जो कुछ भला-बुरा है सबकुछ ख़ुदा के हाथ में है। यह सच गुप्त हो या प्रकट, हर जगह देखा जा सकता है। अगर तू इस बात को नहीं मानता तो यह बता कि मुझमें कमज़ोरी कहाँ से आई और शैतान में ताक़त कहाँ से आई? *(रुबाई 47)*

इस रुबाई में सरमद समझाना चाहता है कि ख़ुदा सर्वशक्तिमान है। कोई दूसरा उसकी बराबरी नहीं कर सकता। कोई दूसरा न उस जैसा है, न ही हो सकता है। संसार में जो कुछ हो रहा है, उस सर्वशक्तिमान ख़ुदा के हुक्म से हो रहा है। इनसान और शैतान, भले और बुरे, व्यभिचारी और सदाचारी, बड़े से बड़े पापी और सन्त-महात्मा सभी उस सर्वशक्तिमान ख़ुदा के अधीन हैं। जो कुछ हुआ है उसकी मौज से हुआ है, जो कुछ हो रहा है उसकी मौज से हो रहा है, जो कुछ होगा उसकी मौज से होगा। गुरु अर्जुन साहिब का कथन है:

ना को मूरखु ना को सिआणा॥ वरतै सभ किछु तेरा भाणा॥[12]

अहले-इसलाम में राबिआ बसरी एक मशहूर दरवेश हुई हैं। वह बहुत ग़रीब थी। एक बार घर में रोटी के साथ खाने के लिये प्याज़ तक भी नहीं था। एक सेविका ने कहा कि इजाज़त हो तो पड़ोसियों से प्याज़ उधार ले आयें। राबिआ ने जवाब दिया, 'मैंने तो बरसों से अल्ला-तआला से यह वायदा कर रखा है कि सिवाय तेरे किसी से कुछ नहीं माँगूगी। राबिआ ने

दासी को समझाया कि पड़ोसियों को प्याज़ देनेवाला भी रब्ब है और हमें प्याज़ से महरूम रखने वाला भी रब्ब है।[13]

उपरोक्त रुबाई में सरमद इशारा करता है कि ज़ालिम को ज़ुल्म करने की ताक़त देनेवाला भी वही ख़ुदा है और नेक इनसान को ज़ुल्म सहने की ताक़त देनेवाला भी वही ख़ुदा है। इसका दूसरा पहलू यह है कि अमीरी और ग़रीबी देनेवाला भी वही ख़ुदा है। मान-अपमान देनेवाला भी वही एक ख़ुदा है। गुरु नानक साहिब अपनी प्रसिद्ध रचना 'जपुजी' में इशारा करते हैं:

> हुकमी उतमु नीचु हुकमि लिखि दुख सुख पाईअहि॥
> इकना हुकमी बखसीस इकि हुकमी सदा भवाईअहि॥[14]

आप कहते हैं कि सुख-दुःख ख़ुदा के हुक्म से मिलता है। जिनको दुनियावी या रूहानी बड़ाई मिलती है वह भी ख़ुदा के हुक्म से मिलती है और हर क़िस्म का सुख-दुःख भी ख़ुदा के हुक्म से आता है। जिन्हें ख़ुदा से विसाल की ख़ुशक़िस्मती नसीब होती है, उसके हुक्म से होती है और जो लोग ख़ुदा की जुदाई में दुनिया में भटकते रहते हैं, उनकी जुदाई और भटकन की वजह भी ख़ुदा का हुक्म है। ख़ुदा जिसे चाहता है गुमराह करता है और जो उसकी तरफ़ झुकता है, उसे अपने तक पहुँचने का रास्ता दिखाता है।[15] गुरु रामदास जी की वाणी है:

> तुधु आपि विछोड़िआ आपि मिलाइआ॥[16]

हम लोग अज्ञानतावश दुनिया को भले-बुरे या ठीक-ग़लत की दृष्टि से देखने की कोशिश करते हैं। कामिल दरवेश सृष्टि के कण-कण में एक ही सर्वशक्तिमान की रज़ा को व्यापक देखते हैं। सरमद ने रुबाइयात 281 से 287 में प्रभु की सर्वशक्तिमानता का वर्णन किया है। वह कहता है – ताक़त भी तू ही देता है, कमज़ोरी भी तू ही देता है *(रुबाई 281)*। हम अपनी ताक़त से न अच्छे बन सकते हैं न बुरे *(रुबाई 282)*। उसकी काली आँखों ने मेरे प्रकाश भरे दिन को अँधेरी रात में बदल दिया है। अन्त में जवानी और बुढ़ापा इकट्ठे हो गए हैं, क्योंकि वह सर्वशक्तिमान है *(रुबाई 283)*। मैंने बादशाहों

और भिखारियों से मदद माँगी। मैंने उन सबको देखा और आज़माया। अन्त में यही पता चला कि वह प्रभु ही सर्वशक्तिमान है *(रुबाई 284)*। अफ़सोस कि हमने तक़दीर का आसरा न लिया और अपनी कोशिशों से अपने आपको तबाह कर लिया। तू अपनी ताक़त का भ्रम छोड़ दे क्योंकि सिर्फ़ प्रभु ही सर्वशक्तिमान है *(रुबाई 285)*। मैंने अपने ही गुनाहों से अपने आपको बर्बाद कर लिया है, अब तेरी रहमत के सिवाय मेरे बचाव का कोई दूसरा ठिकाना नहीं है। यह ठीक है कि मैं कमज़ोर हूँ और शैतान ताक़तवर है मगर इस बात की मुझे कोई परवाह नहीं, क्योंकि तू सर्वशक्तिमान है *(रुबाई 286)*। चाहे मैं नेक हूँ या गुनाहों का ग़ुलाम हूँ। तू वह रहीम (करुणामय) है जो हर हाल में अपनी पनाह (शरण) में ले लेता है। हर किसी की अच्छाई-बुराई तेरे ताक़तवर हाथ में है क्योंकि तू सर्वशक्तिमान है *(रुबाई 287)*।

हमा-ऊस्त

सरमद का यह विचार पढ़ चुके हैं कि वह ख़ुदा जिसको मिलता है ख़ुद आकर मिलता है। प्रभु सर्वशक्तिमान है।[17] कोई भी उसे अपनी ताक़त से हासिल नहीं कर सकता। वह सर्वज्ञाता है।[18] कोई भी अपने ज्ञान से उससे मिलाप नहीं कर सकता है। वह आत्मा का पिता है। वह प्रेम और दया की मूर्ति है। इसलिये वह स्वयं अपनी दया द्वारा, अपने से बिछुड़ी आत्मा को अपने आपसे मिलाने का कार्य करता है। गुरु नानक साहिब फ़रमाते हैं, 'नानक सचा पातिसाहु आपे लए मिलाइ॥'[19] अन्य सन्तों-महात्माओं की तरह सरमद ने भी अपने कलाम में ख़ुदा की रहमत या प्रभु की दया के कई पहलुओं पर प्रकाश डाला है। इन गुणों के आधार पर ही सरमद ने ख़ुदा की व्यापकता पर ज़ोर दिया है।

सरमद इस बात पर ज़ोर देता है कि जो कुछ भी है सब का कर्ता वह मालिक है और सबकुछ उसमें समाया हुआ है। उसके रंग अनेक हैं पर वह एक है। सरमद बड़े सुन्दर ढंग से अनेकता के पीछे छिपी एकता का दीदार करने का सबक़ सिखा रहा है।

कभी तू सरु है, कभी सिंबल और कभी यासमीन। कभी तू पर्वत है, कभी रेगिस्तान और कभी गुलशन। कभी तू चिराग़ की रोशनी है और कभी फूलों की ख़ुशबू है। कभी तू बाग़ में है और कभी महफ़िल में है। *(रुबाई 324)*

सरमद इशारा करता है – तू सिर्फ़ मेरे मन और आत्मा के साथ ही नहीं है; तू एक ही समय में सैकड़ों जगह पर है। तू मेरे ख़याल और कल्पना से ऊपर है, तू वह है जिसे मेरी बुद्धि पकड़ नहीं सकती। *(रुबाई 295)*

सरमद बार-बार इशारा करता है कि वह प्रभु सर्वव्यापक है।[20] वह हर दिल और रचना के कण-कण में समाया हुआ है लेकिन इसके बावजूद वह अलख और अगम है। वह प्रभु मन-बुद्धि का विषय नहीं है। वह ख़याल, कल्पना, दलील और तर्क से ऊपर है। उसकी सर्वव्यापकता को महसूस किया जा सकता है मगर उसकी हस्ती को न ख़याल या कल्पना की मदद से समझा जा सकता है और न ही उसका लफ़्ज़ों में वर्णन किया जा सकता है। इनसान ख़ुदा की हस्ती पर हैरानी तो ज़ाहिर कर सकता है, मगर उसकी हस्ती को न मन-बुद्धि द्वारा समझ सकता है और न ही उसको बयान कर सकता है।

सरमद कहता है – तू दिलरुबा है, तू मनमोहन है और चित्तचोर है; तेरी दोस्ती बेमिसाल है; मैं तेरी अदा पर क़ुर्बान हूँ। तू हर जगह गुप्त भी है, प्रकट भी। तू सब जगह है, मगर कहीं भी दिखाई नहीं देता। *(रुबाई 6)*

वह फिर कहता है – वह ख़ुदा कहीं दूर नहीं रहता; वह सबके अन्दर है और बाहर भी। सच झूठ है मगर झूठ सच नहीं है। वही कायनात और इसकी हर चीज़ का स्रोत या मूल है। *(रुबाई 68)*

सरमद समझा रहा है कि दुनिया की हर चीज़ में ख़ुदा का नूर समाया हुआ है यानी "अल्लाह ही के नूर से ज़मीन और आसमान की रोशनी है।"[21] लेकिन ख़ुदा की हस्ती किसी एक चीज़ या सब चीज़ों तक सीमित नहीं है। क़तरा समुद्र से है, लेकिन समुद्र क़तरे तक महदूद (सीमित) नहीं है। वह कहता है कि दुनिया सच होने का भ्रम पैदा करती है लेकिन दरअसल झूठ है। परमात्मा दिखाई नहीं देता, इसलिये यह भ्रम पैदा होता है कि वह

है ही नहीं। लेकिन दरअसल ख़ुदा ही सच है[22] और बाक़ी सब झूठ है। गुरु साहिबान की वाणी है:

गुपतु परगटु तूं सभनी थाई॥[23]

गुरु अमरदास

सभ महि वरतै आपि निरारा॥[24]

गुरु अर्जुन देव

सरमद समझाता है – जिसे सच्ची अक़्ल, सच्चा विवेक मिल गया वह हमेशा चिन्ता के दु:खदायी दायरे से बाहर रहता है। वह मयख़ाने के कोने में यह नज़ारा देखता है कि शमा तो एक है मगर उसके अक्स (परछाइयाँ) अनेक हैं, यानी उसे हर चीज़ में एक ही नूर दिखाई देता है। *(रुबाई 180)*

यानी वह ख़ुदा सर्वव्यापक ही नहीं है, सर्वज्ञाता भी है। सरमद कहता है – मेरे पाप मेरे माथे पर साफ़ लिखे हुए हैं; तू अपनी रहमत की नज़र मुझ पर रख। तू सब भेदों को जानने वाला है। मैं गुनाहगार हूँ या परहेज़गार, तू अच्छी तरह जानता है। *(रुबाई 292)*

वह प्रभु घट-घट की जानने वाला है।[25] वह हमारे कर्मों को ही नहीं, हमारे भावों और संकल्पों को भी जानता है। उससे कुछ भी छिपा हुआ नहीं है। अगर इनसान यह छोटी-सी बात समझ ले कि प्रभु सर्वव्यापक और सर्वज्ञाता है तो उसकी ज़िन्दगी में एकदम परिवर्तन आ सकता है। हम हर प्रकार के पाप इस भ्रम में करते हैं कि हमें न कोई देखने वाला है और न ही कोई हमसे हिसाब माँगने वाला है। सरमद ख़बरदार करता है कि ख़ुदा हमारे हर काम को देख रहा है। वह अन्दर भी है, बाहर भी है; गुप्त भी है, प्रकट भी है। वह हमारे अच्छे-बुरे कर्मों को भी देखता है और वह हमारे अच्छे-बुरे संकल्पों से भी वाक़िफ़ है। उसे किसी हालत में भी धोखा नहीं दिया जा सकता।

एक बार बाबा फ़रीद ने अपने मुरीदों को नसीहत की कि तुम हर काम यह समझकर करो, जैसे कि तुम ख़ुदा को सामने देखकर वह काम कर

रहे हो। अगर ऐसा नहीं कर सकते तो कम से कम यह समझकर काम करो कि "ख़ुदा तुम्हारे हर काम को देख रहा है।"[26] कहने को तो हम भी कह देते हैं कि ख़ुदा सर्वव्यापक और सर्वज्ञ है मगर हम दिल से यह बात नहीं मानते। हमारे सामने अगर पाँच साल का बच्चा भी खड़ा हो तो हम किसी की पैंसिल तक चुराने का हौसला नहीं करते क्योंकि हमें पता है कि कोई हमें देख रहा है। अगर हम किसी बड़े के सामने खड़े हों तो और भी अधिक सावधान रहते हैं। हम ख़ुदा को हाज़िर–नाज़िर मानते हुए भी दुनिया में कौन–कौन से पाप और दुष्कर्म नहीं करते! अगर मन में यह पक्का विश्वास हो जाये कि ख़ुदा हर जगह है, वह हर चीज़ को देख रहा है और वह हमें हमारे हर कर्म का फल देगा, तो आज ही हमारी और सारे संसार की हालत बदल जायेगी।

रब्बी–रज़ा

सरमद कहता है – दुनिया में न हर जगह ज़ुल्म के निशान हैं और न ही हर जगह दया और मुहब्बत की सुगन्ध है। इस कायनात की असलियत और इसमें जो कुछ हो रहा है, इसके कारण तेरी अक़्ल से बाहर हैं। ये दोनों बातें उस ख़ुदा के अपने हाथ में हैं। *(रुबाई 10)*

सरमद समझा रहा है कि दुनिया दुई (द्वैत) का अखाड़ा है। यहाँ नेकी और बदी, मुहब्बत और नफ़रत, रहम (दया) और ज़ुल्म का ऐसा खेल खेला जा रहा है जिसे इनसानी अक़्ल नहीं समझ सकती। कायनात में जो कुछ हो रहा है वह क्यों और कैसे हो रहा है, यह सिर्फ़ वह ख़ुदावन्द करीम ही जानता है। जो कुछ हो रहा है उसकी रज़ा से हो रहा है, मगर रब्बी–रज़ा का खेल इनसानी अक़्ल से बाहर है।

हम ज़िन्दगी को बहुत छोटे–छोटे टुकड़ों में देखते हैं, हमें न तो भूत के बारे में ज्ञान है, न भविष्य का पता है और वर्तमान के बारे में भी हमें पूरी जानकारी नहीं है। सरमद अपनी दूसरी रुबाइयों में यह बात समझा चुका है कि इनसान के वजूद में वह अद्‌भुत और आश्चर्यजनक भेद छिपे हुए हैं

जिन्हें समझ सकना इनसान की बुद्धि और कल्पना के वश की बात नहीं है। मौलाना रूम कहते हैं:

पस बसूरत आलमे-सुग़रा तुई,
पस बमअनी आलमे-कुबरा तुई।[27]

ऐ इनसान, शक्ल से तू आलमे-सग़ीर (छोटा) है, मगर असल में तू आलमे-कबीर (ब्रह्माण्ड) है। आप आगे फ़रमाते हैं:

आदमी रा हस्त हिस्से-तन सक़ीम,
लेक दर बातिन यके ख़ल्क़े-अज़ीम।[28]

भाव इनसान जिस्मानी नज़रिये (दृष्टिकोण) से हक़ीर (तुच्छ) है, मगर अन्तर में आलमे-अज़ीम (ब्रह्माण्ड) है।

सरमद के कलाम में इस भाव की और भी बहुत-सी रुबाइयाँ हैं। एक अन्य रुबाई में सरमद कहता है: तू अपनी मर्ज़ी को ख़ुदा की रज़ा के अधीन कर दे और दुःख के बोझ से आज़ाद हो जा। यह ज़िन्दगी सिर्फ़ इच्छाओं का खेल है। तू इसे महबूब के साथ गुज़ार, ग़फ़लत में बर्बाद न कर। *(रुबाई 147)*

ख़ुदा की रज़ा में राज़ी रहने का यह मतलब नहीं है कि हम हाथ पर हाथ रखकर बैठ जायें, ख़ुदा की रज़ा का एक अर्थ यह है कि हम अपनी तरफ़ से पूरी कोशिश करें मगर फल की इच्छा न रखें। हमारी कोशिश को जो भी फल लगे हम ख़ुशी-ख़ुशी उसे मंज़ूर कर लें। ख़ुदा हमारा दुश्मन नहीं है जो जानबूझ कर हमें परेशान करना चाहता है। वह जो कुछ करता है उसमें हमारी भलाई छिपी होती है। इनसान के सामने ज़िन्दगी का बहुत छोटा-सा हिस्सा होता है, उसे न भूत के बारे में पता है न भविष्य के बारे में। उसे कुछ पता नहीं कि आज उसे किन कर्मों के कारण दुःख उठाने पड़ रहे हैं और किन कर्मों के कारण सुख मिल रहे हैं। दुनिया में हमें जो भी सुख-दुःख मिलते हैं ख़ुदा के हुक्म से मिलते हैं, मगर हमारे ही पूर्व के किये हुए कर्मों के हिसाब से मिलते हैं। गुरु साहिब ख़बरदार करते हैं,

'मंदा चंगा आपणा आपे ही कीता पावणा॥'[29] इसलिये सुख और दुःख, आदर और निरादर, अमीरी और ग़रीबी आदि सबको ख़ुदा की रज़ा समझकर ख़ुशी-ख़ुशी मंज़ूर कर लेना चाहिये।

रज़ा का दूसरा पहलू यह है कि हमें इस इन्तज़ार में नहीं रहना चाहिये कि जब हमारे हालात अच्छे होंगे तो हम ख़ुदा की बन्दगी या इबादत करेंगे। अगर सुखों में खोकर ख़ुदा को भुला देते हैं या दुःखों से घबराकर ख़ुदा को भूल जाते हैं तो हम कभी भी ख़ुदा की बन्दगी नहीं कर सकते। सुख और दुःख क़िस्मत का खेल है। ख़ुदा की रज़ा में राज़ी रहने का मतलब यह है कि सुख और दुःख दोनों में अडोल रहते हुए अपना ख़याल हमेशा ख़ुदा की इबादत में लगाये रखना चाहिये।

सरमद इनसान को ख़ुदा की रज़ा में रहते हुए उसके इश्क़ में मस्त रहने का सन्देश देता है। दुनिया सुख-दुःख का घर है। यहाँ कभी भी ऐसे हालात पैदा नहीं हो सकते कि इनसान हमेशा सुखी रहे। इसलिये सरमद यह पैग़ाम देता है कि सुख-दुःख से बेपरवाह होकर ख़ुदा के इश्क़ और उसकी इबादत में मस्त रहो क्योंकि "दुनिया के सुख आरज़ी (अस्थायी) हैं।"[30]

ख़ुदाई रहमत

सरमद प्रार्थना करता है – ऐ ख़ुदावन्द करीम, ऐसी रहमत कर कि मुझे किसी दूसरे के पास मदद माँगने के लिये न जाना पड़े और न ही मुझे किसी दूसरे की मुहब्बत और दोस्ती का सहारा लेना पड़े। मैं इस हमेशा बदलती रहनेवाली दुनिया के दायरे (चक्कर) में क़ैद हूँ। बिना तेरी रहमत के मैं इससे आज़ाद नहीं हो सकता। *(रुबाई 131)*

सरमद को दुनिया और इसके रिश्तों से कोई उम्मीद नहीं है। उसे ख़ुदा की रहमत के सिवाय अपनी निजात का कोई और रास्ता दिखाई नहीं देता।

सरमद कहता है – ऐ ख़ुदा, अगर कोई इनसान अपनी ज़िन्दगी को फ़ज़ूल के कार्यों की भाग-दौड़ में गँवा दे और तू उसे फिर भी मुआफ़ कर दे तो इसमें हैरानी की कोई बात नहीं है। जब ख़ुदा की रहमत उसके ग़ुस्से

से बेहद बड़ी हो और वह किसी इनसान के गुनाहों की परवाह न करे तो कोई अजीब बात नहीं है। *(रुबाई 21)*

इस रुबाई में सरमद का ख़ास अन्दाज़ नज़र आता है। उसे ख़ुदा की रहमत पर यक़ीन है। वह ख़ुदा को रहीम (दयालु) और बख़्शिन्द मानता है।[31] सरमद कहता है कि जिसकी बख़्शिश अपार हो, वह किसी के गुनाहों का क्या हिसाब रखेगा? निर्मलता के सागर को किसी के पापों की मैल की क्या परवाह? सरमद समझाना चाहता है कि इनसान की निजात (मुक्ति) उसके निर्मल कर्मों पर नहीं, ख़ुदा की रहमत (दया) पर निर्भर है।

हदीस क़ुदसी में ख़ुदा का फ़रमान है, "मेरी रहमत मेरे क़हर से पहले है।"[32] यानी मेरी रहमत मेरे ग़ुस्से पर भारी है।

मौलाना रूम कहते हैं:

बा चुनीं क़हरे किह् ज़फ़्त ओ फ़ाइक़ अस्त,
बरदे-लुत्फ़श बीं किह् बरवै साबिक़ अस्त।[33]

आप इशारा कर रहे हैं कि तू ख़ुदा के ज़बरदस्त क़हर की गर्मी की बजाय उसकी रहमत की ठण्डक को देख जो क़हर से पहले आती है।

सरमद कहता है – मैं कितनी देर तक अपने कर्मों के अंजाम (नतीजे) से डरता रहूँ? मैं कितनी देर तक अपने गुनाहों के ख़याल से ग़मगीन रहूँ। मुझे उसकी रहमत पर भरोसा है। मैं भूत, भविष्य या वर्तमान की चिन्ता क्यों करूँ? *(रुबाई 187)*

मुझे उसकी दया-मेहर का भेद समझ में आ गया है। मैंने इसे ख़ूब परखा और पहचाना है। उसकी रहमत-भरी आँख गुनाहों के हुस्न की आशिक़ है। इस सच को कभी झुठलाया नहीं जा सकता। *(रुबाई 186)*

सरमद कहता है –'चश्मे-करमश आशिक़े-हुस्ने-गुनाह अस्त।' जितना ज़्यादा माशूक़ का हुस्न होता है, उतना ज़्यादा वह आशिक़ को अपनी तरफ़ खींचता है। सरमद का भाव है कि गुनाहों का हुस्न जितना ज़्यादा होता है, गुनाह जितने ज़्यादा और बड़े होते हैं ख़ुदा की रहमत की आँख उतनी ज़्यादा उनकी तरफ़ खिंची चली जाती है।

इसी अन्दाज़ में सरमद ने कहा है – मैंने तराज़ू बनकर एक पलड़े में अपने गुनाहों को और दूसरे पलड़े में उसकी रहमत को तोला। उसकी रहमत मेरे गुनाहों से भारी निकली। इससे मुझे अपने गुनाहों पर बहुत शर्मिन्दगी हुई और मुझे पता चल गया कि गुनाह क्या होते हैं और मुआफ़ी क्या होती है। *(रुबाई 211)*

सरमद का यह अपना निराला अन्दाज़ है। वह यह कहना चाहता है कि गुनाह जितने मर्ज़ी हों, वह उसकी रहमत के सामने शर्मिन्दा हैं। साईं बुल्लेशाह ने कहा है:

> अदल करें तां जा नहीं काई फ़ज़लों बुखरा पावां।[34]

ऐ ख़ुदावन्द करीम! अगर तू इन्साफ़ करे तो मेरा कोई ठिकाना नहीं। मुझे जो भी, जब भी मिलेगा तेरी रहमत से मिलेगा, भाव इनसान की मुक्ति ख़ुदा की रहमत (दया) में है। अपने कर्मों के कारण वह मुक्त नहीं हो सकता।

सरमद विनती करता है – या रब्ब, मेरे गुनाहों का कोई अन्त नहीं है। मेरे दिल की किश्ती चकनाचूर है और भँवर (दु:ख) हज़ारों हैं। इसी कारण मैं पश्चात्ताप के सागर में डूबा हुआ हूँ। अगर तू रहमत करे तो मैं पार लग सकता हूँ। *(रुबाई 152)*

हज़रत सुलतान बाहू फ़रमाते हैं:

> फोल न काग़ज़ बदियां वाले, दर तों धक्क न मैनूं हू।
> मैं विच ऐड गुनाह न हुंदे, तूं बख़शेंदों कैनूं हू।[35]

सरमद कहता है – वह ख़ुदा मेरे गुनाहों को जानता है, लेकिन फिर भी वह मुझ पर दया करने के लिये तैयार है। मैंने उसे आशा और निराशा, डर और उम्मीद दोनों में परखा है। वह हर हालत में मेरा सबसे ज़्यादा हितकारी है। *(रुबाई 125)*

वह कहता है – ऐ ख़ुदा, जिसने अपनी आँख तेरी रहमत की तरफ़ खोल ली उसे दूसरों के ज़ुल्मो-सितम की परवाह न रही। जिसे तूने फटकारा,

दुत्कारा उसे कहीं इज़्ज़त न मिली। जिसे तूने बड़ा बनाया, वह कहीं भी छोटा न हुआ। *(रुबाई 84)*

सरमद कहता है कि ख़ुदा की रहमत उसके आशिक़ के मन में इतनी ताक़त भर देती है कि वह दुनिया के बड़े से बड़े दुःख को भी ख़ुशी-ख़ुशी सहन कर लेता है। वह कहता है कि असल बड़ाई ख़ुदा के इश्क़ में है। जिसे ख़ुदा ने प्रेम किया वह सबसे बड़ा बन गया और जिसे ख़ुदा का इश्क़ नसीब न हुआ उसे कुछ भी न मिला, भले ही उसे सारे संसार का राज-पाट क्यों न मिल जाये।

सरमद कहता है – ऐ सरमद! दया-मेहर करना परमात्मा का स्वभाव है। वह दया-मेहर किये बिना रह ही नहीं सकता। इसलिये गुनाहों और बुरे कर्मों के बारे में चिन्ता करने की कोई ज़रूरत नहीं। तू बिजली की चमक और तेज़ बारिश को देख – ख़ुदा का कोप कितना छोटा है और उसकी रहमत कितनी बड़ी है। *(रुबाई 77)*

इस रुबाई में सरमद प्रभु के दयामय स्वरूप की उपमा करता है। वह कहता है कि परमात्मा दया और क्षमा की मूर्ति है। अगर वह लोगों के गुनाह देखने शुरू कर दे तो कोई भी इनसान किसी भी हालत में बन्धन-मुक्त नहीं हो सकता। ख़ुदा किसी के गुण देखकर दया नहीं करता। जो चीज़ किसी के गुण देखकर दी जाती है, उसका वह हक़दार होता है। असल दया वह है जब किसी के गुनाहों या कमज़ोरियों के बावजूद उसे कुछ दिया जाये। मौलाना रूम की ज़बान से ख़ुदा का फ़रमान है:

> ज़ांकिह् ईं दमहाचिह् गर नालायक़ अस्त,
> रहमते-मन बर ग़ज़ब हम साबिक़ अस्त।[36]

भाव, ये मामूली बातें हालाँकि मुनासिब नहीं हैं लेकिन मेरी रहमत मेरे ग़ज़ब (ग़ुस्सा) से आगे है।

> ख़ुदा बन्दे के गुण-दोष देखकर उस पर रहम (दया) नहीं करता। वह रहम इसलिये करता है क्योंकि वह ग़ुफ़्फ़ार (बख़्शिन्द) है, रहीम (दयालु) है।[37]

सरमद का भाव यह नहीं कि हम गुनाह करते जायें। सरमद का असल भाव यह है कि इनसान को पिछले गुनाहों से घबराना नहीं चाहिये। बड़े से बड़ा पापी भी उस दयालु पिता से दया की उम्मीद रख सकता है। क़ुरान शरीफ़ में ख़ुदा का फ़रमान है, "ला-तक़नतू मिन रहमत अल्लाह"[38] यानी अल्लाह की रहमत से ना उम्मीद न रहो। इसलिये सरमद इनसान को ख़ुदा की रहमत पर भरोसा रखकर उसकी पनाह (शरण) में आने का उपदेश देता है। सरमद इशारा करता है कि ख़ुदा का क़हर बिजली की चमक की तरह पल भर का खेल है, मगर उसकी रहमत की तेज़ बारिश कभी रुकती नहीं। बिजली पल भर के लिये किसी पर गिरे, न गिरे, मगर उसकी रहमत हरएक पर बरसती है और ख़ूब बरसती है। उसकी रहमत की बारिश गुनाहों के ढेरों के ढेर साथ बहाकर ले जाती है और मुहब्बत से ख़ाली दिलों को भी मुहब्बत से लबालब भर देती है।

यहाँ सरमद ने यह गहरा राज़ भी खोला है कि बिजली की कड़क दिल को डराती है, मगर वह भी अन्धकार में प्रकाश करनेवाली है। बादल की गरज और बिजली की चमक बारिश के आने का पैग़ाम लाती है। इसी तरह ख़ुदा का क़हर, ख़ुदा की रहमत का इशारा होता है। हम पर जो मुसीबतें आती हैं, हम उन्हें ख़ुदा का क़हर समझते हैं। दरअसल यह क़हर भी मेहर से ख़ाली नहीं है। मिसाल के तौर पर जब डॉक्टर ज़ख़्म को चीरता है तो मरीज़ को बहुत तकलीफ़ महसूस होती है। लेकिन उस तकलीफ़ में मरीज़ की ही भलाई छिपी होती है। क्योंकि डॉक्टर वास्तव में ज़ख़्म को साफ़ करके उसे ठीक करना चाहता है। दवा खाने में कड़वी लगती है, पर उसका असर गुणकारी होता है। इसलिये हमें जिन बातों में ख़ुदा का क़हर मालूम होता है असल में वह ख़ुदा की रहमत है। इसी लिये स्वामी जी महाराज ने फ़रमाया, 'दुख की घड़ी ग़नीमत जानो।'[39]

सरमद विनती करता है – ऐ ख़ुदा! मुझ पर रहम कर और मुझे इस भँवर से बाहर निकाल। तू मेरी किश्ती को गुनाहों के सागर से निकालकर किनारे पर ले आ। मेरे गुनाह और तेरी रहमत बेहिसाब हैं। तेरी रहमत माप-तोल से ऊपर है। *(रुबाई 149)*

सरमद समझाना चाहता है कि हम ख़ुदाई रहमत को, जो बेहिसाब है किसी माप-तोल में नहीं बाँध सकते और न ही मन-बुद्धि से यह समझ सकते हैं कि वह ख़ुदावन्द करीम किस पर, कब, क्यों और कैसे रहमत करता है। उसने जिस पर, जब, जहाँ और जैसे रहमत करनी होती है उसका फ़ैसला वह ख़ुद करता है। हम देखते हैं कि दुनिया में कई हत्यारे, क़ातिल और महापापी अचानक सन्तों की संगति में आकर सन्त-महात्मा बन जाते हैं। कोई मन-बुद्धि या विवेक से यह बात समझ और समझा नहीं सकता कि उनका एकदम कायाकल्प कैसे हो गया। इसके विपरीत संसार के अनेक निहायत नेक-दिल और रहम-दिल इनसान ख़ुदा की मुहब्बत और ख़ुदा की बन्दगी की बात सुनने के लिये तैयार नहीं। अनेक लोग अपने रिश्तेदारों, दोस्तों, क़ौमों, मज़हबों और मुल्कों के लिये जान तक क़ुर्बान करने के लिये तैयार हो जाते हैं, मगर ख़ुदा की इबादत की बात सुनना पसन्द नहीं करते। वे ख़ल्क़े-ख़ुदा की ख़िदमत को ही ख़ुदा की बन्दगी साबित करने की कोशिश करते हैं। वे यह बात मानने के लिये तैयार नहीं होते कि ख़ुदा की बन्दगी का असल मतलब रूह को आँखों के पीछे लाकर ख़ुदा के नूर में जज़्ब करना है।

इसी बात का दूसरा पहलू यह है कि दुनिया के बेशुमार लोग जप-तप, पूजा-पाठ, दान-पुण्य, तीर्थ-व्रत, स्नान आदि अनेक प्रकार के कर्मकाण्डों के पालन और अति कठिन हठ-कर्मों के लिये तत्पर हो जाते हैं, पर अपने ध्यान को अन्दर ख़ुदावन्द करीम की दरगाह से आ रहे कलमे की आवाज़ में जज़्ब करने के लिये तैयार नहीं होते, हालाँकि यह बाक़ी सब साधनों से सहज साधन है।

इसी बात का तीसरा पहलू यह है कि कई लोग बेहद मेहनत करते हैं, मगर रूहानियत (परमार्थ) में ज़्यादा तरक़्क़ी नहीं कर पाते। कुछ लोग रूहानियत की राह में क़दम बाद में रखते हैं कि उनकी तरक़्क़ी पहले शुरू हो जाती है। गुरु नानक साहिब समझाते हैं:

दाती साहिब संदीआ किआ चलै तिसु नालि॥
इकि जागंदे ना लहन्हि इकन्हा सुतिआ देइ उठालि॥[40]

दरवेशों के समझाने का असल भाव यह है कि ख़ुदा की बन्दगी और ख़ुदा से मिलाप का आदि, मध्य और अन्त ख़ुदा की रहमत है और ख़ुदा की रहमत को मन, बुद्धि से समझ सकना और लफ़्ज़ों में बयान कर सकना असम्भव है। जिस पर ख़ुदा की रहमत होती है, उसका ख़याल ख़ुदा की तरफ़ जाता है। ख़ुदा की रहमत से ही उसका किसी कामिल मुर्शिद से मिलाप होता है और मुर्शिद उसे अपनी पनाह में लेता है। ख़ुदा की रहमत से ही ख़याल अन्दर ख़ुदा के कलमे से जुड़ता है और उसकी रहमत से ही रूह रूहानी मंज़िलों को पार करती हुई ख़ुदावन्द करीम तक पहुँचती है। इसलिये ख़ुदा की रहमत बेहिसाब और ला-बयान है। मौलाना रूम कहते हैं:

> गर बिगोयम ता क़ियामत नअते-ऊ,
> हेच आँ रा ग़ायतो-मक़तअ बजू।[41]

यानी अगर मैं क़यामत तक भी उसकी दया मेहर का वर्णन करता रहूँ तो भी मैं कामयाब नहीं हो सकता।

गुनाहों का इक़बाल और आजिज़ी

सरमद अपने कलाम में बार-बार अपने गुनाहों का इक़बाल करता है और ख़ुदा से रहमो-करम की भीख माँगता है। ऐसे वर्णन दरअसल सरमद की लासानी आजिज़ी (नम्रता) के प्रतीक हैं। इस किताब में कुछ ऐसी रुबाइयाँ भी हैं जिनमें सरमद ने ख़ुदा से विसाल की अपनी अनुपम अवस्था की ओर संकेत किया है। जब यह कामिल दरवेश ख़ुदा से मिलकर ख़ुदा का रूप हो गया तो फिर गुनाह कहाँ रह गए? यह कामिल दरवेशों का हम दुनियादारों को अपनी बात समझाने का एक अनोखा ढंग है। वे जो कुछ कहते हैं, अपने निजी अनुभव से कहते हैं। आजिज़ी कामिल दरवेश की सबसे बड़ी निशानी है। हज़रत मुहम्मद साहिब ने फ़रमाया है, "अल-फ़क्र फ़ख़री"[42] यानी ग़रीबी (मिस्कीनी) मेरे लिए फ़ख्र का सबब है। सूरदास जी का एक शब्द है:

नाथ मोहि अबकी बेर उबारो॥ टेक॥
तुम नाथन के नाथ सुवामी, दाता नाम तिहारो॥
करमहीन जनम को अंधो, मो तें कौन नकारो॥
तीन लोक के तुम प्रति-पालक, मैं तो दास तिहारो॥
तारी जाति कुजाति प्रभू जी, मो पर किरपा धारो॥
पतितन में इक नायक कहिये, नीचन में सरदारो॥
कोटि पापी इक पासँग मेरे, अजामिल कौन बिचारो॥
नाठो धरम नाम सुनि मेरो, नरक कियो हठ तारो॥
मो को ठौर नहीं अब कोऊ, अपनो बिरद सम्हारो॥
छुद्र पतित तुम तारे रमापति, अब न करो जिय गारो॥
सूरदास साचो तब माने, जो ह्वै मम निस्तारो॥[43]

आप अपने आपको कर्म-हीन, जन्म का अन्धा, सब पतितन का नायक, सब नीचों का सरदार कहते हैं। आप कहते हैं कि तराज़ू के एक पलड़े में मुझे रख दिया जाये और दूसरे पलड़े में करोड़ों पापी रख दिये जाएँ तो भी मेरा पलड़ा भारी रहेगा। आप यहाँ तक कहते हैं कि मेरा नाम सुनकर तो धर्मराय भी काँपता है क्योंकि उसके पास भी मुझ जैसे पापी को रखने के लिये कोई नरक नहीं है।

सरमद हो या सूरदास, सन्त हमारे सामने अपना उदाहरण रखकर हमें नम्रता और दीनता का पाठ पढ़ाते हैं। यह सच्ची नम्रता न केवल उनका सच्चा शृंगार होती है, बल्कि उनकी सच्ची पहचान भी यही है। आप गुरु नानक, कबीर, रविदास, मौलाना रूम, हाफ़िज़ आदि किसी भी कामिल दरवेश का कलाम पढ़ लें, हर दरवेश स्वयं को सबसे छोटा, सबसे घटिया, सबसे बड़ा गुनाहगार और पापी साबित करने की कोशिश करता है। ख़ुदा में समाकर ख़ुदा का रूप हो जाना फिर अपने आपको संसार का सबसे बड़ा गुनाहगार कहना, यह बड़ाई सिर्फ़ सन्तों-महात्माओं के हिस्से में ही आई है। गुरु अर्जुन साहिब की वाणी में ऐसी ही नम्रता नज़र आती है:

कहु नानक हम नीच करंमा॥ सरणि परे की राखहु सरमा॥[44]

दरवेशों की आजिज़ी (नम्रता) से दूसरा सबक़ यह मिलता है कि इनसान में चाहे कितने गुण क्यों न पैदा हो जायें, वह अपने गुणों के बलबूते पर नहीं, ख़ुदा की रहमत के बलबूते पर ही ख़ुदा से विसाल कर सकता है। ख़ुदा के दरवेश ख़ुदा का रूप होकर भी दम नहीं मारते और हम दुनियादार हर क़िस्म के ऐबों-गुनाहों से भरे होने के बावजूद भी हमेशा अपनी बड़ाई की डींगें हाँकते रहते हैं। मौलाना रूम कहते हैं:

फ़हमो-ख़ातिर तेज़ करदन नीस्त राह,
जुज़ शिकस्ता मी नगीरद फ़ज़ले-शाह।[45]

अर्थ: अक़्ल और तबीयत को तेज़ कर लेना रूहानी सफ़र में कारगर नहीं हो सकता। शाह (ख़ुदा) की रहमत ही आजिज़ (नम्र) की दस्तगीरी (मदद) करती है। ख़्वाजा हाफ़िज़ फ़रमाते हैं:

ज़ाहिद ग़ुरुर दाश्त सलामत नबर्दे-राह,
रिंद अज़ रहे-नियाज़ ब दारुल-सलाम रफ़्त।[46]

ज़ाहिद (परहेज़गार या तपस्वी) मग़रूर होने की वजह से मारफ़त का रास्ता सलामती से तय न कर सका। रिंद (भक्त) दीनता के कारण ख़ुदा की दया-मेहर का पात्र बनकर जन्नत, भाव अपनी मंज़िल पर पहुँच गया।

सुलतान बाहू कहते हैं, 'नील पदम तिन्हां तों सदक़े, सोन सडावण सिक्का हू।'[47] मैं उन पर अरबों बार क़ुर्बान जाता हूँ जो सोना होते हुए भी अपने आपको सिक्का ज़ाहिर करते हैं। भाव जो अपनी पाकीज़गी (पवित्रता) का दम नहीं भरते, बल्कि अपने आपको तुच्छ पेश करते हैं।

सरमद के कलाम से उपदेश मिलता है कि अपने अन्दर झाँको। जो अपने गुनाहों को देखना शुरू करेगा वह इनका प्रायश्चित भी करेगा और इनसे छुटकारा पाने की भी कोशिश करेगा। नम्रता, तोबा (प्रायश्चित्त) को जन्म देती है और प्रायश्चित निर्मलता की जननी है।

सरमद ने ख़ुदा की सर्वव्यापकता और सर्वज्ञता पर प्रकाश डाला है। वह उसकी अथाह ताक़त का ज़िक्र करता है। सरमद ख़ुदा की शक्तिशाली रज़ा,

उसके ला-बयान हुस्न और उसकी अथाह रहमत के गीत गाता है। ख़ुदा उसकी हस्ती का मरकज़ (केन्द्र) और मक़सद है। इसलिये उसने अनेक ढंग से उसकी सिफ़्तो-सना की है।

कामिल दरवेश हमारा ध्यान बार-बार ख़ुदा के अनन्त गुणों की तरफ़ खींचते हैं क्योंकि वे हमारे अन्दर उसका इश्क़ पैदा करना चाहते हैं। वे हमें दुनिया के इश्क़ से छुड़ाकर ख़ुदा के इश्क़ के रंग में रँगना चाहते हैं।

ख़ुदा का इश्क़

सरमद कहता है – इश्क़ की शराब के सुरूर (आनन्द) के सामने दूसरा कोई सुरूर नहीं है। बिना दुःख उठाये ख़ुदा से मिलाप का नशा नसीब नहीं होता। इस दुनिया के मयख़ाने में सिवाय रंजो-ग़म के और कुछ नहीं है। इसमें सुख और शान्ति का नामो-निशान तक नहीं है। *(रुबाई 113)*

फिर आगे कहता है – तुझे सच्चा सुरूर (आनन्द) सिर्फ़ ख़ुदा की मुहब्बत में मिलेगा। उसकी मुहब्बत से बड़ा कोई सुख नहीं। बिना उसकी मुहब्बत के दीन (परलोक) और दुनिया (लोक) दोनों ही नहीं मिलेंगे। *(रुबाई 265)*

हमारी क्या हालत है? कोई बीवी-बच्चों के प्यार में खोया हुआ है, कोई धन-दौलत के प्यार में खोया हुआ है तो कोई मान-बड़ाई के प्यार में। कोई एक देवता की पूजा करता है, कोई दूसरे की। कोई मूर्ति-पूजा करता है, कोई तीर्थ-स्थानों की यात्रा करता है। सब सन्तों-महात्माओं की तरह सरमद भी इनसान को हर क़िस्म की दूसरी मुहब्बत से आज़ाद करके सिर्फ़ एक ख़ुदा के इश्क़ का सबक़ पढ़ाना चाहता है। कामिल दरवेशों ने समझाया है कि उस ख़ुदावन्द करीम के बग़ैर बाक़ी जो कुछ है वह ग़ैर या पराया है। सिर्फ़ वह ख़ुदावन्द करीम अपना है। पराया न कभी अपना बना है, न ही बन सकता है। सिर्फ़ अपना ही अपना होता है और अपना बन सकता है। गुरु नानक साहिब अफ़सोस करते हैं:

सभु किछु अपना इकु रामु पराइआ॥[48]

जो वास्तव में अपना है और अपना बन सकता है, इनसान उसको भुलाकर पराये को अपना बनाने की अज्ञानता का शिकार बना हुआ है। सरमद उसे अज्ञानता की नींद से बेदार करता है कि तू सिवाय उस ख़ुदा के किसी दूसरे की मुहब्बत में फँसकर अपनी ज़िन्दगी बर्बाद मत कर।

इश्क़ इनसान के मन का स्वभाव है। इनसान प्रेम किये बिना नहीं रह सकता। मौजूदा हालत में इनसान के मन में दुनिया का प्रेम बसा हुआ है। सरमद और अन्य सब सन्त-महात्मा इस बात पर ज़ोर देते हैं कि प्रेम सिर्फ़ प्रेम से ही कट सकता है। हम मन को दुनिया के प्रेम में से ज़बरदस्ती नहीं निकाल सकते। जब मन में ख़ुदा का इश्क़ घर कर लेता है तो इसमें से संसार का प्रेम अपने आप ही निकल जाता है। जितनी देर लड़की की शादी नहीं होती, उसके मन में माता-पिता, भाई-बहनों और सखियों-सहेलियों का प्रेम समाया रहता है। लेकिन जब उसकी शादी हो जाती है और उसके मन में पति का प्रेम पैदा हो जाता है तो आहिस्ता-आहिस्ता उसके मन से माता-पिता, सगे-सम्बन्धियों का प्रेम घटता जाता है। जिस तरह संसार का प्रेम जीवात्मा को संसार से बाँधकर रखता है, उसी तरह ख़ुदा का इश्क़ इसे ख़ुदा से जोड़कर संसार के प्रेम से मुक्त कर देता है।

सूफ़ी दरवेशों, सन्तों-महात्माओं और हठ-मार्गी, त्याग-मार्गी और शरीअत में विश्वास रखने वाले लोगों में बुनियादी फ़र्क़ ही यह है कि वे लोग ज़बरदस्ती मन को दुनिया में से निकालने की कोशिश करते हैं जब कि सन्त-महात्मा मन को ख़ुदा के इश्क़ का जाम (सुधा-रस) पिलाकर इसे संसार से उपराम करने का उपदेश देते हैं। जिसे हीरे-जवाहरात मिल जाते हैं वह कौड़ियों की ओर ध्यान नहीं देता। लेकिन बिना कोई बड़ी चीज़ हासिल किये छोटी चीज़ का त्याग कठिन ही नहीं, असम्भव है। सन्त चरनदास जी कहते हैं:

> प्रेम छुड़ावे जगत सूं, प्रेम मिलावे राम।
> प्रेम करे गति और ही, ले पहुँचे हरि धाम।[49]

आप विस्तारपूर्वक समझाते हैं:

जिन्हैं हरि भक्ति पियारी हो।
मात पिता सहजै छुटैं छुटैं सुत अरु नारी हो॥
लोक भोग फीके लगैं सम अस्तुति गारी हो॥
हानि लाभ नहिं चाहिए सब आसा हारी हो॥
जग सूँ सुख मोरै रहै करैं ध्यान मुरारी हो॥
जित मनुवाँ लागो रहै भइ घट उँजियारी हो॥
गुरु सुकदेव बताइया प्रेमी गति भारी हो॥
चरनदास चारौ बेद सूँ औरै कछु न्यारी हो॥[50]

दुनिया में दो क़िस्म के इनसान हैं। एक वे जो इस दुनिया, इसकी धन-दौलत, रिश्तों-नातों, मान-बड़ाई या हुकूमत से प्यार करते हैं। दूसरे वे हैं जो उस ख़ुदा से मुहब्बत करते हैं। दुनियादार, दुनिया को सुख-शान्ति और बड़ाई का स्रोत समझकर दुनिया की तरफ़ दौड़ता है। वह दुनिया का बनकर रहता है और दुनिया को अपना बनाना चाहता है। ख़ुदा का आशिक़, ख़ुदा और सिर्फ़ ख़ुदा से इश्क़ करता है और सिर्फ़ ख़ुदा को ही अपना बनाना चाहता है। दुनियादार का दीन और ईमान दुनिया होती है जब कि ख़ुदा का आशिक़ ख़ुदा के सिवाय किसी दूसरी चीज़ के इश्क़ को कुफ़्र (अधर्म) समझता है। सरमद दुनिया का नहीं, ख़ुदा का आशिक़ था। वह इनसान को बार-बार झूठी दुनिया के झूठे इश्क़ की दलदल में फँसने से ख़बरदार करता है और उसे सच्चे ख़ुदा से सच्चा इश्क़ करने की नसीहत देता है।

मुईनुद्दीन चिश्ती ख़ुदा के इश्क़ का ज़िक्र करते हुए फ़रमाते हैं:

मरा दर दिल बग़ैर अज़ दोस्त चीज़े दर नमी गुंज्जद,
बख़ल्वत ख़ाना-ए-सुल्तान कसे दीगर नमी गुंज्जद।[51]

मेरे दिल में मेरे दोस्त के सिवाय किसी और चीज़ के लिये कोई जगह नहीं है। मेरे दिल में ख़ुदा के सिवाय और कोई नहीं बसता।

मौलाना रूम भी अपने कलाम में अल्लाह के इश्क़ का हवाला देते हुए फ़रमाते हैं:

> दर दिले-आशिक़ बजुज़ मअशूक़ नीस्त,
> दरमियां शां फ़ारिक़ो-मफ़रूक़ नीस्त।[52]

आशिक़ के दिल में सिवाय माशूक़ के किसी दूसरे के लिये कोई जगह नहीं होती। दोनों के बीच में न तो कोई जुदा करनेवाला होता है, न ही जुदाई का सबब होता है।

सरमद कहता है – तू वह महबूब है जिसके इश्क़ में आशिक़ों का रंग पीला पड़ जाता है। तेरे ख़ौफ़ो-जलाल से चीते भी काँपते हैं। सख़्त दिल से कोई सख़्त जान ही टकरा सकता है, क्योंकि पत्थर को सिर्फ़ पत्थर ही तोड़ सकता है। *(रुबाई 118)*

इस रुबाई में सरमद की शख़्सियत का ख़ास रंग झलकता है। कामिल दरवेशों ने मुहब्बत के जोश में अपने महबूब को कई ताने दिए हैं और उससे छेड़छाड़ की है। इस रुबाई में सरमद ख़ुदा को 'पत्थर दिल महबूब' कह रहा है। यह उसकी मुहब्बत की इन्तिहा है कि वह अपने महबूब को पत्थर दिल कहता है। आशिक़ चाहता है कि महबूब का दिल जल्दी से जल्दी पिघल जाये और माशूक़ है कि वह आशिक़ को तड़पा-तड़पा कर उसकी जान ले लेता है। महबूब की मुहब्बत में आशिक़ों के रंग पीले पड़ जाते हैं। इश्क़ की वादी में क़दम रखने से पहले वे शेर और चीते की तरह होते हैं, मगर जब दिल में इश्क़ घर कर लेता है तो वे महबूब के डर से थर-थर काँपते हैं। पत्थर दिल बनने से सरमद का यह भाव है कि जब तक आशिक़ का इरादा और कोशिश पर्वत की तरह अडिग और अडोल नहीं हो जाता, वह महबूब की मंज़िल तक पहुँचने की उम्मीद नहीं कर सकता। पत्थर मुर्दा या बेजान होता है। सरमद इशारा कर रहा है कि जब तक आशिक़ दुनिया की तरफ़ से मुर्दा या बेजान नहीं हो जाता तब तक वह उस बेपरवाह और अलबेले महबूब के दिल को नहीं पिघला सकता। हज़रत बू अली क़लन्दर कहते हैं:

नफ़ी गरदाँ अज दिले-ख़ुद मा सिवा,
ता नगुंज्जद दर दिलत ग़ैर अज ख़ुदा।[53]

ऐ इनसान, तू अपने दिल से हर तरह की सोच और ख़याल को निकाल दे ताकि तेरे दिल के अन्दर ख़ुदा के सिवाय किसी दूसरे के लिये कोई जगह न रहे।

सरमद फिर कहता है – दुनियादार मेरा बुरा चाहने वाले हैं। दुनिया में सच्चे दोस्त बहुत कम हैं। जिनके दिल दुनिया की ख़्वाहिशों से भरे हुए हैं, वे मौज में हैं मगर ख़ुदा के प्यारे हमेशा दु:खों और चिन्ताओं में ग्रस्त रहते हैं। *(रुबाई 106)*

सूफ़ी दरवेशों ने अपने इश्क़ में ख़ुदा को सबसे बड़ा हासिद (ईर्ष्यालु) कहा है। वह महबूबे-हक़ीक़ी यह बर्दाश्त नहीं करता कि जिसे मैं प्यार करूँ वह किसी दूसरे की मुहब्बत में खोया रहे बल्कि अल्लाह तो इस (जुर्म) को मुआफ़ ही नहीं करता कि उसके साथ किसी दूसरे को शरीक किया जाये।[54]

वह अपने सच्चे आशिक़ों को आहोज़ारी (विलाप) देता है, बेइज़्ज़ती देता है, ग़रीबी और रुसवाई देता है क्योंकि वह उनका ख़याल हर तरफ़ से निकालकर अपनी तरफ़ लगाना चाहता है।

सरमद का कलाम है – बेशक सैकड़ों दोस्त मेरे दुश्मन बन गए लेकिन उस एक (ख़ुदा) की दोस्ती से मेरे दिल को राहत मिली। मैं कसरत (अनेकता) को छोड़कर वहदत (एकता) में आ गया हूँ। मैं उसका हो गया हूँ और वह मेरा हो गया है। *(रुबाई 103)*

सरमद समझा रहा है कि दुनियादारों की दोस्ती पल भर में दुश्मनी में बदल जाती है। वह महबूबे-हक़ीक़ी सच्चा दोस्त है। उसका इश्क़ इनसान को उसका रूप बना देता है जिससे वह सारी कायनात का सच्चा दोस्त बन जाता है।

सरमद समझाता है – ऐ ज़ाहिद (परहेज़गार या तपस्वी), तू मेरे सामने नसीहतें पेश न कर। मेरे दिल का बर्तन इश्क़ की आग से उबल रहा है। तू समझदारी से काम ले और अच्छी तरह से देख कि मेरे दिल के मयख़ाने में इश्क़ का जाम छलक रहा है। *(रुबाई 169)*

वह समझा रहा है कि शरीअतों, कर्मकाण्डों और हठ-कर्मों में विश्वास करनेवाले ज़ाहिद (तपस्वी) ख़ुदा के आशिक़ों की हालत नहीं समझ सकते। वे उन पर मज़हबी क़ानूनों की पाबन्दियाँ लागू करना चाहते हैं। इसके विपरीत ख़ुदा के आशिक़, उसके इश्क़ और उसके नाम के जाम भर-भर कर पीते हैं। उनका मन इश्क़ की शराब से लबालब होता है, उनके अन्दर ख़ुदा के इश्क़ की मस्ती होती है। वे शरीअत की बनावटी हदबन्दियों में क़ैद नहीं रह सकते। साईं बुल्लेशाह अपने कलाम में कहते हैं:

इश्क़ हक़ीक़ी ने मुट्ठी कुड़े, मैनूं दस्सो पिया का देस।
मापयां दे घर बाल इयाणी, प्रीत लगा कर लुट्टी कुड़े।
मनतक मअने कंनज़ कदूरी, मैं पढ़-पढ़ इलम विगुची कुड़े।
नमाज़ रोज़ा ओह्नां की करना, जिन्हां प्रेम सुराही लुट्टी कुड़े।
बुल्ला शौह दी मजलस बह के, सभ करनी मेरी छुट्टी कुड़े।[55]

आप समझाते हैं कि जो ख़ुदा के इश्क़ में खो जाते हैं वे शरीअत यानी बाहरमुखी कर्मकाण्डों से बेनियाज़ हो जाते हैं। 'नमाज़ रोज़ा ओह्नां की करना, जिन्हां प्रेम सुराही लुट्टी कुड़े।' जिन्होंने इश्क़ की सुराही से जाम भर-भर कर पिये, उनके लिये शरीअत की कोई क़ीमत न रही। जिनका उस महबूबे-हक़ीक़ी से विसाल हो गया, वे हर क़िस्म के बाहरी कर्मकाण्ड की क़ैद से आज़ाद हो गए।

सरमद का मत है – तू महबूब की मुहब्बत की शराब लगातार पिये जा। तू दो रोज़ा ज़िन्दगी के बदले अपना ईमान (धर्म) न बेच। अगर तूने दुनियावी ख़्वाहिशों की आग को न बुझाया तो यह प्रचण्ड ज्वाला बन जायेगी (और तुझे फ़ना कर देगी)। *(रुबाई 171)*

इस रुबाई में सरमद उस महबूबे-हक़ीक़ी के तसव्वुर (ध्यान) की मदद से इश्क़ की शराब पीने की नसीहत करता है। वह समझाना चाहता है कि जिस तरह दुनियावी ख़्वाहिशों की आग ख़ुदा के इश्क़ को फ़ना कर देती है। उसी तरह सिर्फ़ ख़ुदा के इश्क़ की आग ही दुनियावी ख़्वाहिशों को जलाकर ख़ाक कर सकती है। ख़्वाजा हाफ़िज़ फ़रमाते हैं:

यार मफ़रोश बदुनिया कि बसे सूद नकरद,
आंकिह् यूसुफ बज़रे-नासरा बफ़रोख़्ता बूद।[56]

दुनिया के बदले महबूब को न बेच क्योंकि जिसने यूसुफ़ को खोटे सोने के बदले बेचा था उसे कोई लाभ नहीं हुआ।

सरमद कहता है – तू लम्बे चोले का शौक़ छोड़ दे क्योंकि यह ग़लत तरीक़ा है। इस क़िस्म का दिखावा बिलकुल फ़ुज़ूल है। तू महबूब की मुहब्बत की डोर पकड़कर रख। यह माला और जनेऊ फ़ुज़ूल हैं। *(रुबाई 172)*

इस रुबाई में सरमद सूफ़ियों, मुसलमानों और हिन्दुओं के बाहरमुखी पहरावे को व्यर्थ बताता है। सूफ़ी और योगी गले में लम्बी कफ़नी पहनते हैं। वे हाथ में तसबीह (माला) पकड़ते हैं। हिन्दू गले में जनेऊ डालते हैं। इसी तरह बाक़ी सब धर्मों के लोग किसी न किसी बाहरमुखी भेष पर ज़ोर देते हैं। सरमद समझाता है कि हर क़िस्म के भेष का सम्बन्ध शरीर से है। रूह को ख़ुदा से बाँधने का साधन माला का धागा नहीं, ख़ुदा के इश्क़ की डोरी है। इसलिये ख़ुदा के इश्क़ या ख़ुदा की बन्दगी की डोरी कभी नहीं छोड़नी चाहिये।

क़ुरान शरीफ़ में फ़रमाया है, "जो कुछ मैं तुमसे कहता हूँ, ध्यान से सुनो। हम ही तुम्हारे अल्लाह हैं, हमारे सिवाय कोई इष्ट नहीं, हमारी ही इबादत करो और हमारे ही नाम का ज़िक्र (सिमरन) करो।"[57]

सरमद कहता है – प्रेम की पीड़ा का वरदान कामी पुरुष को नहीं दिया जाता। मक्खी को परवाने की तड़प नहीं दी जाती। महबूब से विसाल के लिये सारी ज़िन्दगी ख़र्च हो जाती है, लेकिन यह लाफ़ानी दौलत हर किसी को नहीं बख़्शी जाती। *(रुबाई 94)*

यह सरमद की अति सूक्ष्म और भेद भरी रुबाइयों में से एक है। सरमद कहता है कि ख़ुदा अपने इश्क़ का दर्द और तड़प किसी विरले सच्चे आशिक़ को ही बख़्शता है। दुनियावी भोगों-वासनाओं का रसिया इनसान इस दौलत से महरूम रहता है, उसे इश्क़ के दर्द की दौलत नहीं मिलती। कबीर साहिब का कथन है:

काम काम सब कोइ कहै, काम न चीन्है कोय।
जेती मन की कल्पना, काम कहावै सोय॥[58]

माया कामिनी है। माया की कामना रखने वाला व्यक्ति कामी पुरुष है। जिसके हृदय में माया रूपी कामिनी की कामना समाई हुई है, उसके हृदय में प्रभु के सच्चे प्रेम की तड़प पैदा नहीं हो सकती। माया के लिये तड़पने वाला व्यक्ति कामी है और प्रभु के लिये तड़पने वाला व्यक्ति प्रेमी है।

सरमद इसी बात को आगे बढ़ाते हुए कहता है कि मक्खी को परवाने की तड़प नहीं दी जाती। माया रूपी गन्दगी के ढेर पर बैठा इनसान मक्खी के समान है और प्रभु के प्रेम में तड़पने वाला इनसान परवाने के समान है। कबीर साहिब लिखते हैं:

कबीर पापी भगति न भावई हरि पूजा न सुहाइ।
माखी चंदनु परहरै जह बिगंध तह जाइ॥[59]

मक्खी सुगन्धि की नहीं, दुर्गन्धि की आशिक़ होती है। मायावी वृत्ति वाला व्यक्ति प्रभु-प्रेम की सुगन्धि का नहीं, माया की दुर्गन्धि का आशिक़ होता है। माया का मतवाला जिस्मों, भोगों और मान-बड़ाइयों का मतवाला होता है। वह स्वार्थी होता है, त्यागी नहीं। वह सिर्फ़ लेना जानता है, देना नहीं, जब कि ख़ुदा का आशिक़ उस परवाने की तरह होता है जो प्रियतम रूपी प्रकाश में जल मरता है। वह अपने आपको महबूब पर फ़िदा कर देता है। वह ख़ुदी (हौंमैं) को ख़ुदा में फ़ना कर देता है। सरमद इशारा करता है कि ऐसा आशिक़ जो सबकुछ खो देता है, वह सबकुछ पा लेता है। उसे उस महबूबे-हक़ीक़ी के विसाल की वह लाफ़ानी और लासानी दौलत मिल जाती है जिसका दुनिया में कोई मुक़ाबला नहीं है। सरमद कहता है कि महबूब से विसाल के लिये सारी ज़िन्दगी ख़र्च हो जाती है। जिसके दिल में जब एक बार ख़ुदा का इश्क़ पैदा हो जाता है तो फिर वह ज़िन्दगी भर कभी चैन से नहीं बैठ सकता। वह महबूबे-हक़ीक़ी उसकी सोच और ध्यान का मरकज़ (केन्द्र) बन जाता है, उसकी जान और रूह बन जाता है। ऐसा आशिक़ अपने ख़याल को हर तरफ़ से निकालकर अपने महबूब से मिलाप की मंज़िल की ओर बढ़ता चला जाता

है। वह दायें-बायें नहीं देखता और न ही फिर पीछे पलटकर देखता है। वह अपनी सारी ज़िन्दगी उस महबूबे-हक़ीक़ी से विसाल के लिये ख़र्च कर देता है। सरमद का भाव है कि जब तक किसी के दिल में परवाने जैसी तड़प पैदा नहीं होती, जब तक कोई अपना ख़याल हर तरफ़ से निकालकर अपने प्रियतम पर केन्द्रित नहीं करता और जब तक कोई अपना सारा जीवन उस एक की प्राप्ति के लिये दाँव पर नहीं लगाता, तब तक उसे ख़ुदा के मिलाप की अमर और अथाह दौलत नसीब नहीं हो सकती। बू अली क़लन्दर भी कहते हैं:

हिम्मते-परवाना बीं ऐ बे-ख़बर,
सोज़ चूँ परवाना ता याबी ख़बर।[60]

ऐ बेख़बर, परवाने की हिम्मत देख और परवाने की तरह जल ताकि तू अपने आपसे ख़बरदार हो जाये। यानी ख़ुद को पहचान ले।

सरमद कहता है – मेरे महबूब ने मुझे अपना इश्क़ बख़्शकर मेरा रुतबा बुलन्द कर दिया। इस तरह उसने मुझे दुनिया के एहसानों से बेनियाज़ (बेपरवाह) कर दिया। जब मैं शमा की तरह महफ़िल में जला तो इस जलन ने मुझे इलाही-राज़ (भेद) का महरम (वाक़िफ़कार) बना दिया। *(रुबाई 124)*

सरमद इशारा कर रहा है कि ख़ुदा की सबसे बड़ी बख़्शिश उसका इश्क़ है। वह जिस पर ख़ुश होता है उसे अपनी मुहब्बत की दौलत से मालामाल कर देता है। ख़ुदा का आशिक़ दुनिया का मुहताज नहीं रहता। जिसके अन्दर ख़ुदा के इश्क़ की शमा जलती है उसे ख़ुदा की हस्ती का राज़ (भेद) भी मालूम हो जाता है। सरमद समझा रहा है कि सबसे बड़ी दौलत ख़ुदा का इश्क़ है और उसकी हस्ती को जानने का ज़रिया भी उसका इश्क़ ही है। सरमद एक अन्य रुबाई में कहता है:

चूँ शमअ क़रारे-सोख़्तन ता न दिही,
सर रिश्ता-ए-रौशनी बदस्तत न दिहन्द।[61]

यानी जब तक तू ख़ुदा के इश्क़ में शमा की तरह नहीं जलेगा, तुझे बातिनी नूर (अन्तर का प्रकाश) हासिल नहीं होगा।

गुरु गोबिन्द सिंह का फ़रमान है:

साचु कहौ सुन लेहु सभै जिन प्रेम किओ तिन ही प्रभु पाइओ॥[62]

मौलाना रूम कहते हैं:

इल्लते-आशिक़ ज़ि इल्लतहा जुदास्त,
इश्क़ उस्तुरलाबे-असरारे-ख़ुदास्त।[63]

यानी आशिक़ की बीमारी सब बीमारियों से जुदा है। इश्क़ ख़ुदा के भेदों का उस्तुरलाब* है।

सरमद कहता है – तेरे बिना मेरा कोई और दोस्त नहीं है। मेरे दिल में न गुलशन की तड़प है न बहार की। बस तू ही मेरे ख़यालों का मरक़ज़ (केन्द्र) है और सिवाय तेरे इश्क़ और तेरे चाँद से मुखड़े के मुझे कोई दूसरी चीज़ पसन्द नहीं है। *(रुबाई 112)*

ख़ुदा और ख़ुदा का इश्क़ सरमद के कलाम की धुरी है। सरमद ने जो कुछ लिखा है, ख़ुदा के इश्क़ में और ख़ुदा के इश्क़ की ख़ातिर लिखा है। उसने ख़ुद ख़ुदा के इश्क़ द्वारा ख़ुदा से विसाल किया और दुनिया को भी ख़ुदा के इश्क़ का लाफ़ानी और लासानी पैग़ाम दिया। ख़ुदा का इश्क़ सरमद और उसके कलाम की रूह है। ख़ुदा का इश्क़ सरमद के कलाम का ताना-बाना है। इस इश्क़े-हक़ीक़ी के बिना न तो सरमद के बारे में सोचा जा सकता है न उसके कलाम के बारे में।

ख़्वाजा हाफ़िज़ भी कहते हैं:

फ़ाश मीगोयम व अज़ ग़ुफ़्ताए-ख़ुद दिल्शादम,
बंदा-ए-इश्क़म व अज़ हर दो जहान आज़ादम।[64]

मैं सरेआम कहता हूँ और अपने कहे पर ख़ुश हूँ कि मैं इश्क़ का ग़ुलाम हूँ और दोनों जहानों से आज़ाद हूँ।

---

* उस्तुरलाब एक यन्त्र है जिससे सितारों की गर्दिश (चाल), सूर्य आदि की ऊँचाई देखी जाती है।

तर्के-दुनिया, हुसूले-ख़ुदा

(दुनिया का त्याग, ख़ुदा की प्राप्ति)

सरमद के कलाम में दुनिया के त्याग और ख़ुदा के इश्क़ का भाव भरा पड़ा है। सरमद कहता है :

1. दुनिया और दुनियादारों से डर; जितना ज़्यादा इनमें फँसेगा उतना ज़्यादा दुःख पायेगा; मैंने दुनिया की बहारें भी देखी हैं, पतझड़ भी देखे हैं, गुलशन में खिलने वाले हर फूल में एक सबक़ छिपा है। यहाँ जो भी फूल खिलता है, जल्दी ही मुरझा जाता है। *(रुबाई 60)*
2. बेशक दुनिया रूपी बाग़ का हर फूल और काँटा ख़ुशनुमा लगता है, मगर बिना महबूब के दिल दुःखी रहता है। पोस्त का फूल मेरे दिल के ख़ून की तरह लाल रंग का है मगर इसकी ख़ूबसूरती इस पर लगे काले दाग़ के कारण है। *(रुबाई 61)*
3. जिसका ध्यान ख़ुदा में है, उसका हाल अच्छा है, उसका आग़ाज़ (आरम्भ) अच्छा है, उसका अंजाम (अन्त) अच्छा है। मैं कहता हूँ कि तू अपने आपको दुनिया से न जोड़, दुनिया का मोह जितना कम हो उतना ही अच्छा है। *(रुबाई 66)*
4. ये मुल्क, शहर, पर्वत और रेगिस्तान कुछ नहीं हैं। दुनिया और इसकी चटक-मटक, इसका अच्छा-बुरा कुछ भी नहीं है। तू सबकुछ छोड़कर ख़ुदा का हो जा; दीन और दुनिया की चाह कुछ भी नहीं है। *(रुबाई 73)*
5. दुनिया के त्याग से आत्मा को शान्ति मिलती है और जीते-जी गंजे-निहां (गुप्त ख़ज़ाना) हासिल हो जाता है। अगर दुनिया को त्याग दिया जाये तो इस ज़िन्दगी के तूफ़ानी समुद्र में से ही वह नाम रूपी गौहरे-नायाब (दुर्लभ हीरा) मिल जाता है जिसकी यहाँ किसी को क़द्र नहीं है। *(रुबाई 86)*
6. अगर तेरे दिल में पल-भर के लिये ख़ुदा के इश्क़ का दर्द पैदा हो जाये तो समझ ले कि तुझे सारी दुनिया का सुख मिल गया; अगर

तेरे दिल की अँगूठी पर ख़ुदा की मोहर लग जाये तो समझ ले कि सारा जहान तेरे हुक्म में आ गया है। *(रुबाई 87)*

7. तू दुनिया की चाह मत कर, यह रूह की दुश्मन है, इसका भारी बोझ दिल को दबा लेता है; अक़्ल का तराज़ू हाथ में लेकर इसे समझदारी से तोलना मुनासिब है। *(रुबाई 97)*
8. वे मूर्ख हैं, जो अल्लाह से बेख़बर हैं और दुनिया की धन-दौलत के लिये एक-दूसरे से ईर्ष्या करते हैं। तू दुनियादारों की दोस्ती पर भरोसा न कर, वे इस पल-भर की ज़िन्दगी में भी एक-दूसरे की जान के दुश्मन बने हुए हैं। *(रुबाई 105)*
9. दुनियादार सोने-चाँदी के पुजारी हैं; वे ख़ुदा से ग़ाफ़िल हैं और एक-दूसरे की जान के दुश्मन हैं। हरएक की तक़दीर पहले लिखी जा चुकी है फिर भी वे ख़ुदा द्वारा किसी दूसरे पर की गई बख़्शिश को देखकर जलते हैं। *(रुबाई 116)*
10. मैंने तुझे बता दिया है कि दुनिया का फ़िक्र करना फ़ुजूल है, तू इसके पहाड़ों और रेगिस्तानों की सैर से ख़ुश न हो। दुनिया एक मृगतृष्णा है, यह समुद्र में उठी लहरों और पानी के बुलबुलों के समान है। *(रुबाई 227)*
11. मैं कहता हूँ कि अगर तू अक़्लमन्द और बहादुर है तो दुनियादारों का एहसान न उठा; मैंने तुझे बता दिया है कि मकड़ी के जाले पर तस्वीर बनाना बेकार है। *(रुबाई 228)*
12. या ख़ुदा! मुझे तेरी वहदत (एकता) की क़सम है कि दुनिया में मेरा कोई साथी नहीं है; मैं अकेला हूँ और सिर्फ़ अनक़ा* मेरा साथी है। *(रुबाई 197)*

---

* अनक़ा एक काल्पनिक पक्षी है जिसे फ़ारसी में 'सीमुर्ग़' भी कहते हैं। यह हमेशा आकाश में उड़ान भरता रहता है। हिन्दी में इसे 'राजहंस' कहते हैं। सूफ़ी साहित्य में इस पक्षी की उपमा मुर्शिदे-कामिल से की जाती है। सरमद इशारा करता है कि मैंने दुनियादारों की संगति पूरी तरह त्याग दी है; मैं सिर्फ़ ऐसे कामिल दरवेशों की संगति में रहता हूँ जिनकी रूह हमेशा ऊँचे रूहानी मण्डलों में उड़ान भरती है।

हम वहाँ होते हैं, जहाँ हमारा मन होता है। हम उसके साथ होते हैं जिसके साथ हमारा मन होता है। जिसका मन ख़ुदा में है, वह महफ़िल में भी तनहा है। जिसका मन दुनिया में है वह तनहा होते हुए भी महफ़िल में है।

सरमद कहता है:

1. (मेरे महबूब) बेशक तू बहुत निर्दयी और दु:ख देनेवाला है, फिर भी तू मेरा सबसे ज़्यादा हमदर्द और वफ़ादार है। मैंने दुनिया में पूरी तरह आज़मा कर देखा है कि जहाँ भी कोई दु:खी दिल होता है, तू उसका सहारा बन जाता है। *(रुबाई 325)*
2. मैंने इस निकम्मी दुनिया में ढूँढ़कर देखा है; मुझे अच्छे-बुरे दोनों क़िस्म के लोग मिले, मैंने सबको आज़माया मगर तेरे बिना कोई मेरा मददगार न बना। *(रुबाई 3)*
3. सरु की तरह ऊँचे क़द वाले और चाँदी जैसे सफ़ेद रंग वाले लोग सच्चे दोस्त नहीं हैं। तू उस ख़ुदा को अपना दोस्त बना जो हमेशा तेरी मदद करे और तेरी हर ज़रूरत को पूरा करे। *(रुबाई 48)*
4. बेशक सैकड़ों दोस्त मेरे दुश्मन बन गए, लेकिन उस एक (ख़ुदा) की दोस्ती से मेरे दिल को राहत मिली। मैं कसरत (अनेकता) को छोड़कर वहदत (एकता) में आ गया हूँ। मैं उसका हो गया हूँ और वह मेरा हो गया है। *(रुबाई 103)*
5. तू ही सबको सुख-दु:ख देनेवाला है और तू ही मुझे चिन्ता से मुक्त करनेवाला है। मैंने सबको आज़माया है, लेकिन कोई भी तुझ जैसा रहम दिल (दयालु) नहीं है। *(रुबाई 218)*
6. ऐ मेरे दोस्त, इस दुनिया में सिर्फ़ तू ही मेरा सच्चा हमदर्द है; तू इस ग़रीब की हालत को ख़ूब जानता है। मैंने सबको आज़माकर देखा है। बेसहारों का तू ही सच्चा साथी और सहारा है। *(रुबाई 316)*

उपरोक्त रुबाइयों से स्पष्ट है कि सरमद को दुनिया और दुनियादारों से कोई उम्मीद नहीं है। वह सिर्फ़ ख़ुदा को ही सच्चा दोस्त, सच्चा साथी,

सच्चा हमदर्द और सच्चा सहारा मानता है। क़ुरान शरीफ़ में लिखा है, "वह (ख़ुदा) तुम्हारी रूह के अन्दर है, मगर तुम देखते नहीं।"[65]

ख़्वाजा हाफ़िज़ कहते हैं:

यार बा मास्त रोज़ो-शब हाफ़िज़,
हमचू जाने किह् हस्त दर रगो-पै।[66]

ऐ हाफ़िज़! वह दोस्त (ख़ुदा) दिन-रात उस जान की तरह जो हमारी रगों और पट्ठों में है, हमारे साथ-साथ है।

दुनिया का कोई दोस्त हर वक़्त, हर हालत में और हर जगह इनसान का सच्चा सहारा नहीं बन सकता। दुनिया भी फ़ानी है, दुनियादार भी फ़ानी हैं। न वे पायेदार (स्थायी) हैं न इनकी दोस्ती पायेदार है। बू अली शाह क़लन्दर ख़बरदार करते हैं:

उमरे-तू बाशद मिसाले-आबे-जू,
आब रफ़्ता बाज़ कै आयद ब-जू।[67]

ऐ इनसान, तेरी उम्र नहर के पानी की तरह है। गुज़रा हुआ पानी नहर में दोबारा कब आता है। आप आगे कहते हैं:

हरिचह् मी बीनी ब गिरदाबे-जहाँ,
चूँ हबाब अज़ चश्मे-तू गरदद निहाँ।[68]

जो कुछ तू दुनिया के भँवर में देखता है, बुलबुले की तरह आँख से ओझल हो जायेगा।

दुनिया और इसके रिश्ते अधूरे हैं। इनकी दोस्ती भी अधूरी है। यहाँ हर जगह ख़ुदग़र्ज़ी का बोलबाला है। यहाँ प्रेम के पर्दे में नफ़रत और दोस्ती के पर्दे में दुश्मनी पलती है। बहुत-से दरवेशों ने दुनिया की तुलना एक ऐसी वेश्या से की है जो हरएक के साथ प्रेम का नाटक करती है, मगर दिल से किसी की नहीं बनती। सरमद ने भी इशारा किया है कि दुनिया हर किसी की वफ़ादार होने का स्वाँग रचती है, पर वास्तव में यह

न कभी किसी की बनी है और न बन ही सकती है। बू अली क़लन्दर कहते हैं :

> दाद यारी हम चू कस रा पीरे-ज़ाल,
> करद ऊरा दर दो आलम पायमाल।[69]

इस बूढ़ी दुनिया ने जब भी किसी इनसान की मदद की, उसको दोनों जहानों में इसने ख़राब किया।

एक महात्मा के वचन हैं, 'जगत की झूठी देखी प्रीत।'[70] सच्चा दोस्त वह होता है जो बिना ग़र्ज़ के प्यार करता है, जो हर हालत में प्यार करता है, जो अच्छाई-बुराई की परवाह किये बिना प्यार करता है और जो हर प्रकार की क़ुर्बानी देकर प्यार की रीति निभाता है। वरना "दुनिया तो सिर्फ़ धोखे की पूँजी है।"[71]

सरमद इनसान को बार-बार ख़बरदार करता है कि ऐसा सच्चा दोस्त, मददगार या महबूब एक ख़ुदावन्द करीम है। इनसान को सच्चा सुख और सच्ची शान्ति उस महबूबे-हक़ीक़ी के प्रेम और मिलाप से ही मिल सकती है। सरमद ही नहीं, दुनिया के सब दरवेशों ने दुनिया की मुहब्बत त्यागकर ख़ुदा से मुहब्बत करने का पैग़ाम दिया है। इस पैग़ाम से ग़लत मतलब नहीं निकालना चाहिये। दुनिया की मुहब्बत को तर्क करने का यह मतलब हरगिज़ नहीं है कि ख़ुदा की बन्दगी के लिये घर-गृहस्थ, बाल-बच्चों, मित्रों-सम्बन्धियों और दूसरी दुनियावी ज़िम्मेदारियों को तर्क (त्याग) कर देना चाहिये। इसका यह मतलब भी नहीं है कि हम घर-बाहर का त्याग करके जंगलों-पहाड़ों या गुफाओं आदि में जाकर बस जायें। मुहब्बत का तअल्लुक़ दिल से होता है, जिस्म से नहीं। हो सकता है कि एक इनसान दुनिया को त्यागकर जंगलों में चला जाये लेकिन उसके मन में दुनिया की मुहब्बत बसी रहे। इसी तरह यह भी मुमकिन है कि कोई इनसान दुनिया में हो मगर उसका मन दुनिया में न हो। बाबा फ़रीद का एक श्लोक है :

> फरीदा पाड़ि पटोला धज करी कंबलड़ी पहिरेउ॥
> जिन्ही वेसी सहु मिलै सेई वेस करेउ॥[72]

मैं अपना रेशमी लिबास फाड़कर फ़क़ीरों वाली कम्बली पहनने के लिये तैयार हूँ और ऐसा पहरावा पहनने के लिये तैयार हूँ जिससे मेरा प्यारे प्रियतम से मिलाप हो जाये।

इससे अगले श्लोक में आप कहते हैं:

> काइ पटोला पाड़ती कंबलड़ी पहिरेइ॥
> नानक घर ही बैठिआ सहु मिलै जे नीअति रासि करेइ॥[73]

आप कहते हैं कि प्रियतम से मिलाप के लिये रेशमी लिबास फाड़कर फ़क़ीरों वाली गुदड़ी पहनने की ज़रूरत नहीं है। इसके लिये घर-गृहस्थ को त्यागकर जंगलों, पहाड़ों और बियाबानों में भटकने की भी ज़रूरत नहीं है। आप कहते हैं, 'घर ही बैठिआ सहु मिलै जे नीअति रासि करेइ।' अगर नीयत ठीक हो जाये, अगर मन सीधा हो जाये, अगर मन का मुँह दुनिया की बजाय ख़ुदा की तरफ़ हो जाये और मन में दुनिया के इश्क़ के बजाय ख़ुदा का इश्क़ पैदा हो जाये तो घर-गृहस्थी या दुनिया की सब ज़िम्मेदारियाँ पूरी करते हुए भी उस सच्चे प्रियतम से मिलाप किया जा सकता है। तराज़ू का वह पलड़ा नीचे झुकता है जिसमें भारी चीज़ पड़ी हो। क़ुरान शरीफ़ में "ला इलाह इल्ल अल्लाह हू"[74] का उपदेश दिया गया है, जिसका अर्थ है – नहीं है कोई ख़ुदा, ख़ुदा के सिवाय। यानी एक ख़ुदा के अलावा किसी दूसरे की पूजा करना गुनाह या कुफ़्र है। इसका मतलब यह है कि जिस इनसान के मन में उस एक महबूबे-हक़ीक़ी के अलावा किसी दूसरी चीज़ का प्यार समाया हुआ है वह काफ़िर है और जिसका मन उस एक के इश्क़ से लबालब भरा हुआ है वही सच्चा मोमिन या मुसलमान है। मोमिन या मुसलमान होना किसी ख़ास शरीअत के पालन तक सीमित नहीं है, बल्कि 'अपने आपको अल्लाह की रज़ा के अधीन कर देना ही (सच्चा) मज़हब है।'[75] इसका सम्बन्ध दिल की मुहब्बत, दिल की चाह या दिल की तड़प से है। जिसका दिल ख़ुदा के लिये तड़पता है, वह मोमिन है और जिसका दिल ख़ुदा के बजाय किसी दूसरी चीज़ के लिये तड़पता है, वह काफ़िर है। इसलिये तर्के-दुनिया का मतलब दुनिया का त्याग नहीं, दुनिया की मुहब्बत का त्याग है।

एक सूफ़ी का कथन है :

> पुरसंद इश्क़ चीस्त बिगो तर्के-इख़्तियार,
> हर कू ज़ि इख़्तियार नरुस्त इख़्तियार नीस्त॥[76]

यानी जो लोग पूछते हैं कि इश्क़ किसे कहते हैं, उनसे कह दो कि इश्क़ का मतलब दुनिया के सब इख़्तियार खो देना और ख़ुदा के इश्क़ के सिवाय दुनिया के हर धन्धे को छोड़ देना है।

ज़िन्दगी का मक़सद

सरमद कहता है :

1. लोग दुनिया के बाग़ की सैर करके यहाँ से गुज़र गए। उन्होंने कुछ फूल इकट्ठे किये और कुछ काँटे और यहाँ से चले गए। यह इनसानी वजूद सिर से पाँव तक एक रहस्य है; अफ़सोस है उन पर जो बिना इसको समझे यहाँ से गुज़र गये। *(रुबाई 39)*
2. तूने देखा है कि सुख-दुःख का सिलसिला कितनी जल्दी गुज़र गया; तुझे जिसका डर था वह कितनी जल्दी गुज़र गया। सावधान हो कि ज़िन्दगी के जो दो-चार दिन बचे हैं यूँ ही न चले जायें और नफ़ा, नुक़सान में न बदल जाये। *(रुबाई 45)*
3. दुनिया की चाह छोड़ दे, यह चाह झूठी है इसकी क़ीमत एक तिनके के बराबर भी नहीं। बिना ख़ुदा के दीदार के दीन (धर्म) बन्धन है। मुझे हर पल तेरे मिलाप की चाह रहती है। तू अन्दर बैठा है तो मेरा तुझे एक बार पुकारना ही काफ़ी है। *(रुबाई 46)*

हज़रत बू अली क़लन्दर कहते हैं :

> हस्त दुनिया पीरे-ज़ालो-पुर-फ़रेब,
> मी कुनद पीरो-जवां रा ना शकेब।

दाद यारी हम चू कस रा पीरे-ज़ाल,
करद ऊरा दर दो आलम पायमाल।
आतिशे अज़ दूर चूँ गुलशन बुवद,
दर हक़ीक़त सर बसर गुलख़न बुवद।
कोर गरदद रौशने-चश्मे-यक़ीन,
बस्ता गरदद बअद अज़ां दरहा-ए-दीन।
चंद दर कसरत नमानी ख़्वेश रा,
यक ज़मां दर ख़ाना-ए-वहदत बया।[77]

दुनिया बूढ़ी औरत की तरह मकरो-फ़रेब से भरी हुई है। बूढ़े और नौजवान दोनों को बेसब्र बनाती है। इस बूढ़ी दुनिया ने जिस इनसान की मदद की उसके लोक और परलोक बर्बाद हो गए। आग दूर से देखने पर बाग़ जैसी दिखाई देती है। लेकिन वह दरअसल बिलकुल भट्ठी जैसी होती है। इससे यक़ीन की रौशन आँख अन्धी हो जाती है। इसके बाद इनसान के लिये दीन (परलोक) के दरवाज़े बन्द हो जाते हैं। तू कब तक कसरत (अनेकता यानी दुनिया) में अपने आपको देखता रहेगा। बिना देर किये इसे छोड़कर वहदत (एकता यानी ख़ुदा) के घर में आ जा।

सरमद समझाना चाहता है कि इनसानी ज़िन्दगी और दीन (धर्म) का असल मक़सद ख़ुदा का विसाल है। जिसने यह मक़सद पूरा न किया वह साँसों की पूँजी बर्बाद करके चला गया। उसे नुक़सान ही रहा कुछ नफ़ा न हुआ। सरमद कहता है कि जिसने यह एक बात (हर्फ़) समझ ली, उसने सबकुछ समझ लिया; जिसने यह बात न समझी उसने कुछ न समझा। जिसे यह ज्ञान हो गया वही सच्चा ज्ञानी है, जिसे यह ज्ञान न हुआ वह निपट अज्ञानी है।

तर्के-दुनिया (दुनिया का त्याग) और हुसूले-ख़ुदा (ख़ुदा को हासिल करना) सरमद की हस्ती और उसके कलाम का दो-हर्फ़ी सार है। इनसानी ज़िन्दगी का असल मक़सद ख़ुदा से विसाल है। सरमद ने बार-बार इनसान को यह मक़सद पूरा करने की नसीहत की है।

विरह की तड़प और मिलाप का आनन्द

सरमद कहता है – उस ख़ूबसूरत ऊँचे क़द वाले महबूब ने मुझे कहीं का नहीं छोड़ा। उसने अपनी शराबी आँखों से मुझे मदमस्त कर दिया है। वह मेरे बग़ल में है और मैं उसकी तलाश में भटक रहा हूँ; उस चित्तचोर मनमोहन ने मुझे सिर से पाँव तक नंगा कर दिया है। *(रुबाई 19)*

सरमद इशारा कर रहा है कि दरअसल रूह ख़ुदा से इश्क़ नहीं करती, बल्कि ख़ुदा अपने हुस्नो-जमाल (सुन्दरता) से रूह को अपनी तरफ़ खींचता है। वह जिस इनसान के अन्दर अपनी तड़प पैदा करता है, उसे अपना दीवाना बना लेता है और वह बेतहाशा उसकी तरफ़ खिंचा चला जाता है। लेकिन हैरत (आश्चर्य) तो इस बात पर है कि वह महबूब उसके अन्दर है और इनसान उसकी तलाश में बाहर भटकता रहता है।

बू अली क़लन्दर कहते हैं:

यार दर तू पस चिराई बेख़बर
यार दर ख़ुद तू चिह् गरदी दर-ब-दर।[78]

तेरा महबूब तुझमें है लेकिन तू इस बात से बेख़बर है। तेरा महबूब तेरे अन्दर है, फिर तू किस लिये दर-दर की ठोकरें खा रहा है।

क़ुरान शरीफ़ में आता है:

वह ख़ुदा तुम्हारे अन्दर है, पर तुम देखते नहीं।[79]

सरमद कहता है – सरमद वह जिस्म है जिसकी जान या रूह किसी और के हाथ में है। सरमद वह तीर है जिसका कमान किसी और के हाथ में है। उसने चाहा था कि आदमी बनकर आज़ाद हो जाये मगर वह ऐसी गाय बन गया जिसकी रस्सी किसी और के हाथ में है। *(रुबाई 28)*

यहाँ भी सरमद यह इशारा कर रहा है कि ख़ुदा का आशिक़ कठपुतली है और ख़ुदा इसे इश्क़ का नाच नचाने वाला पुतलीगर है। वह ख़ुद ही रूह

के अन्दर अपने मिलाप की तड़प पैदा करता है और ख़ुद ही उसे अपनी मुहब्बत का नाच नचाता है।

ख़्वाजा हाफ़िज़ नसीहत करते हैं:

आशिक़ शौ वरना रोज़े कारे-जहाँ सर आयद,
ना-ख्वांदा नक़शे-मक़सूद अज़ कारगाहे-हस्ती।[80]

ऐ इनसान, तू ख़ुदा का आशिक़ बन, वरना एक दिन दुनिया में तेरा काम यानी वक़्त ख़त्म हो जायेगा और तुझे अपने असल मक़सद को पूरा किये बिना, भाव ख़ुदा से इश्क़ किये बिना, यहाँ से जाना पड़ेगा।

हज़रत सुलतान बाहू भी ऐसी ही नसीहत करते हैं:

कर इबादत पच्छोतासें, उमरां चार दिहाड़े हू।
थी सौदागर कर लै सौदा, जां तक हट्ट न ताड़े हू।
जे जाणें दिल ज़ौक मनेसी, मौत मरेंदी धाड़े हू।[81]

ऐ इनसान, बन्दगी कर वरना आख़िरी वक़्त पछताना पड़ेगा। ज़िन्दगी बहुत थोड़े दिनों की है। सौदागर बन और इस काया की दुकान बन्द होने से पहले ख़ुदा के इश्क़ का सौदा ख़रीद ले। तू यह अच्छी तरह जान ले कि मौत जो हर वक़्त सिर पर मँडरा रही है कभी भी तुझ पर धावा बोल सकती है, इसलिये तू दिलो-जान से ख़ुदा की इबादत में लग जा।

1. सरमद फ़रियाद करता है, ऐ पर्दे के पीछे छिपे महबूब! तू पर्दे से बाहर आ। मैंने हर जगह तेरी तलाश की है; मैं तुझे अपनी बाँहों में लेने के लिये बेचैन हूँ; तू कब तक अपने आपको छिपाये रखेगा। *(रुबाई 4)*
2. कोई दुनिया से ख़ुश है तो कोई दीन (धर्म) से; मैं दोनों से छुटकारा पाना चाहता हूँ। मैं सिर्फ़ यह चाहता हूँ कि तू मुझे अपने इश्क़ का सबक़ पढ़ा दे और पर्दे से बाहर आकर अपना जलवा दिखा दे। *(रुबाई 5)*

सरमद आगे कहता है :

1. बेशक दुनिया रूपी बाग़ का हर फूल और काँटा ख़ुशनुमा लगता है मगर बिना महबूब के दिल दुःखी रहता है। *(रुबाई 61)*
2. मेरा महबूब मेरी तरफ़ ध्यान नहीं देता, मैं क्या करूँ? मेरे दिल की आहें उस पर कोई असर नहीं करतीं, मैं क्या करूँ? वह हमेशा मेरे दिल में रहता है लेकिन फिर भी मेरे दुःख को नहीं समझता, मैं क्या करूँ? *(रुबाई 192)*

इन सब रुबाइयों में सरमद यह इशारा करता है कि वह महबूब (ख़ुदा) ख़ुद ही इनसान के अन्दर अपने इश्क़ का जज़्बा पैदा करता है और ख़ुद ही उसे जुदाई की आग में जलाता है। जिसके अन्दर उस महबूबे-हक़ीक़ी (सच्चे प्रीतम) का इश्क़ पैदा हो जाता है, उसे महबूब के सिवाय और कुछ नहीं भाता। उसकी सोच, कल्पना और हस्ती महबूब के गिर्द ही घूमती है।

ख़ुदा का आशिक़ दीनो-दुनिया से बेनियाज़ होता है। वह किसी भी तरह की शरीअत का पाबन्द नहीं होता। उसकी हस्ती का महवर (धुरी), उसका दीनो-ईमान उसका महबूब होता है। शेख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी सच्चे आशिक़ की हालत यूँ बयान करते हैं :

तवाफ़े-कअबा कुन हाजी मरा बगुज़ार दर कूइयश,
किह् हज्जे-अकबरे-आशिक़ तवाफ़े-कूए-दिलदार अस्त।
तुरा यक हज्ज बुवद साले वले दर कूए यारे-मा,
गुज़ारद हर जमां हज्जे कसे कू आशिक़े-ज़ार अस्त।[82]

ऐ हाजी, (हज्ज करनेवाले), तू काअबा का तवाफ़ (परिक्रमा) कर और मुझे मेरे महबूब की गली में छोड़ दे क्योंकि आशिक़ों का हज्जे-अकबर (बड़ा हज्ज) महबूब की गली (के चक्कर काटने) में है। तेरा हज्ज साल में एक बार होता है जब कि आशिक़ों का हज्ज महबूब की गली में हर वक़्त जारी रहता है।

सरमद कहता है – जब से तेरा इश्क़ और तेरा ख़याल मेरे दिल में समाया है, मेरा दिल खिलकर गुलशन बन गया है। मेरे ख़याल बदल गये हैं, मेरी सोच बदल गई है। जब अर्थ ही न रहा तो शब्द कहाँ रह गया। *(रुबाई 257)*

सरमद समझा रहा है कि ख़ुदा का इश्क़ आशिक़ का कायाकल्प कर देता है। जैसे अर्थ के बिना शब्द मुर्दा होता है, इसी तरह महबूब के बिना आशिक़ की हस्ती अर्थहीन है। महबूब का इश्क़ उसके दिल को गुलशन बना देता है जिसमें रंग-बिरंगे फूल खिलते हैं।

सरमद ने सिर्फ़ इश्क़ में जुदाई की तड़प का ही ज़िक्र नहीं किया। उसने विसाल (मिलाप) के सुरूर (आनन्द) की भी ख़ूबसूरत तस्वीर खींची है। वह कहता है:

मेरा महबूब से पल भर के लिये भी जुदा होना मुमकिन नहीं है। इस मिलाप को लफ़्ज़ों में बयान करना नामुमकिन है। वह समुद्र है, मैं प्याला हूँ और समुद्र को प्याले में डाल सकना नामुमकिन है। *(रुबाई 55)*

मौलाना रूम कहते हैं:

इश्क़ अंदर फ़ज़लो-इल्मो-दफ़्तरो-औराक़ नीस्त,
हर चिह् गुफ़्तो गोइ ख़ल्क़ अस्त आं रहे-उश्शाक़ नीस्त।[83]

हर चिह् गुफ़्ती या शुनीदी पूस्त बूद,
लैस लुब्बुल-इश्क़े-सिर्रे-क़द फ़शा।[84]

इश्क़ का बयान इल्मो-हुनर, साईंस, किताबों और पन्नों में नहीं है। जो कुछ भी लोगों ने कहा-सुना है वह आशिक़ों की सही हालत की तस्वीर-कशी (चित्र-चित्रण) नहीं है।

जो कुछ (इश्क़ के बारे) कहा और सुना गया है वह सिर्फ़ छिलका है। इश्क़ का मग़ज़ (गुद्दा) एक राज़ (गुप्त भेद) है जो खोला नहीं जा सकता। आप आगे फ़रमाते हैं:

ऐ आंकिह् शुनीदी सुख़ने-इश्क़, बिबीन इश्क़,
कू हालत बशुनीदा ओ कू हालते-दीदा।[85]

जिसने इश्क़ के बारे में सुना, वह इश्क़ को देखे। उसे मालूम हो जायेगा कि जो कुछ सुना है, देखा नहीं और जो देखा है, सुना नहीं।

आप फिर फ़रमाते हैं:

दर न-गुंज्जद इश्क़ दर गुफ़्तो-शुनीद,
इश्क़ दरयाए अस्त क़अरश नायदीद।
क़तराहा-ए-बहर रा नतवां शुमुर्द,
हफ़्त दरया पेशे-आं बहर अस्त ख़ुर्द।[86]

यानी इश्क़ की असलियत बयान से बाहर है। इश्क़ वह दरिया है जिसकी गहराई का अन्दाज़ा नहीं हो सकता। समुद्र के क़तरों को गिना नहीं जा सकता। इश्क़ के समुद्र के सामने सातों दरिया छोटे हैं।

सरमद दूसरी रुबाइयों में इशारा करता है: जैसे शब्द और अर्थ अलग नहीं हो सकते, उसी तरह मैं और वह महबूब अलग नहीं हो सकते। आँख और बीनाई (देखने की शक्ति) दो प्रतीत होती हैं मगर असल में दो नहीं हैं। जैसे फूल और ख़ुशबू को अलग नहीं किया जा सकता, वैसे ही मैं और वह एक हैं। *(रुबाई 157)*

मेरा मन सदा उसमें समाया रहता है। यह उसके साथ ऐसे एक हो गया है जैसे गुलाब और उसकी ख़ुशबू। जो कुछ बर्तन में होता है वही बाहर निकलता है, मेरे मन की सुराही से उसके प्रेम की शराब छलक रही है। *(रुबाई 67)*

सरमद कहता है – ख़ुदा का शुक्र है कि महबूब ने मुझ पर रहमत की है। हम जो पौधा लगाते हैं अन्त में उसे फल भी लगता है। मैंने इश्क़ के बाग़ से एक फूल चुन लिया है। *(रुबाई 209)*

इन सब रुबाइयों से पता चलता है कि सरमद जुदाई के रेगिस्तान को पार करके ख़ुदा से मिलाप के सागर का तैराक बन गया है। जिस ख़ुदा ने उसके अन्दर अपने इश्क़ का बीज बोया, उसी ने इसे फलदार पेड़ भी बनाया। मंज़िल पर पहुँचने के लिये सरमद को लम्बा सफ़र तय करना पड़ा और अनगिनत दुःखों, मुसीबतों का सामना करना पड़ा, परन्तु अन्त में उसे महबूब से विसाल के सुरूर का आबे-हयात (अमृत) भी पीने को मिला।

ख़ुदा के फ़ज़ल से सरमद दुई (द्वैत) की आग में से गुज़रकर वहदत (अद्वैत, एकता) के हक़ीक़ी सुरूर (परम आनन्द) की अजर, अमर वादी में प्रवेश कर गया। इसी सिलसिले में मौलाना रूम फ़रमाते हैं:

> पेश आमद दर रहश दो वादी, यक आतिश बूद यकेश गुलगून।
> आवाज़ आमद किह् रौ दर आतिश, ता याफ़्त शवी बगुलिस्तां हून।
> वर ज़ि आंकिह् बगुलिस्तां दर आई, ख़ुद रा बीनी दर आतिशो-तून।
> बर पुश्त फ़लक परे चू ईसा, व-अंदर बालाए फ़िरो चू क़ारून।[87]

इश्क़ की राह में दो वादियाँ तय करनी होंगी – एक आग-भरी, दूसरी फूलों-भरी। एक आवाज़ कहती है, "आग में कूद जा ताकि तू फूलों के आरामदेह बाग़ (महबूब के मुक़ाम) में दाख़िल हो जाये। अगर तू फूलों की वादी (दुनिया के ऐशो-इशरत) में क़दम रखेगा तो तू अपने आपको आग की भट्टी (दोज़ख़) में पायेगा। या तो ईसा की तरह उड़ान भर और जन्नत यानी महबूब के मुक़ाम में पहुँच जा, वरना तू क़ारून* की तरह दोज़ख़ की गहराइयों में गिर जायेगा।

वजूद के दो पहलू

सरमद कहता है – तू अपने आपसे नाता तोड़कर देख; इस भारी बोझ को पटककर हल्का हो जा; तू आँखें बन्द न कर, आँखें खोल; ऐ बेख़बर, तू अपने आपसे ख़बरदार हो जा। *(रुबाई 269)*

भारतीय सन्तों की तरह सूफ़ी दरवेशों ने भी इनसान को ख़बरदार किया है कि तेरी हस्ती इस फ़ानी जिस्म तक महदूद (सीमित) नहीं है। तेरा असल जिस्म के अन्दर बैठी लाफ़ानी रूह है। शरीर, आत्मा के कार्यशील

---

* **क़ारून:** मूसा की क़ौम में एक बहुत अमीर बादशाह हुआ है। क़ुरान शरीफ़ के मुताबिक़ अपने गुनाहों, ज़ुल्म और तकब्बुर (अहम्) की वजह से ज़मीन उसको निगल गई थी।
क़ुरान शरीफ़ 28:81

होने का साधन है। जिस्म की अपनी आज़ाद हस्ती नहीं है, जब कि रूह उस हक़ीक़ते मुतलिक़ (परम सत्य) का जुज़ (अंश) है। जब तक इनसान रूह को जिस्म से अलग नहीं करता, रूह अपने असल में समाकर उसका रूप नहीं बन सकती।

मौलाना रूम लिखते हैं:

> हेच कस रा ता नगरदद ऊ फ़ना,
> नीस्त रह दर बारगाहे-किबरिया।[88]

जब तक तू अपनी ख़ुदी (हौंमैं) को ख़त्म नहीं करता, तुझे ख़ुदा की बारगाह (दरबार) का रास्ता नहीं मिल सकता। मतलब यह कि अपनी हौंमैं मिटाए बग़ैर ख़ुदा से मिलाप नहीं हो सकता।

उक्त रुबाई में सरमद ने 'अपने आपसे नाता तोड़ने' की बात कही है जिसका अर्थ शरीर के नौ द्वारों के बन्धन को तोड़ना है। सरमद कहता है कि यह शरीर तेरी आत्मा पर पड़ा भारी बोझ है। 'आँखें खोलने' का भाव, अज्ञानता को त्यागकर सच्चा ज्ञान हासिल करना है और अपने आपसे ख़बरदार होने का मतलब 'अपने आपकी पहचान के ज़रिये ख़ुदा की पहचान करना है।'* सरमद बड़े सूक्ष्म ढंग से उस रूहानी अभ्यास की ओर इशारा कर रहा है जिसमें साधक ख़ुदा के नाम के ज़िक्र (सिमरन) और तसव्वुर (ध्यान) द्वारा अपनी आत्मा को आँखों के पीछे और उनके मध्य स्थिर कर लेता है। इस तरह आत्मा के ऊपर पड़ा शरीर और इन्द्रियों का बोझ उतर जाता है। इस बोझ से मुक्त हुई आत्मा अपने अन्दर ख़ुदा के कलमे (शब्द) की आवाज़ और प्रकाश के सहारे आन्तरिक रूहानी मण्डलों में चढ़ जाती है।

ज्यों-ज्यों आत्मा ऊपर जाती है इसके ऊपर चढ़े मन, माया, कर्मों और संस्कारों के पर्दे भी उतरते जाते हैं। आत्मा अपने निज-स्वरूप को प्राप्त कर लेती है और अपने असल में समाने के क़ाबिल बन जाती है। इसे ही सरमद ने 'अपने आपसे ख़बरदार होने' का नाम दिया है।

---

* 'मन अरफ़ नफ़्सहु फ़क़द अरफ़ रब्बहु।'[89]

मौलाना रूम कहते हैं:

महरमो-ईं-होश जुज़ बे-होश नीस्त।[90]

मतलब यह कि जो दीनो-दुनिया की तरफ़ से बेहोश यानी बेख़बर है वह ही इस होश (रूहानी चेतनता) का वाक़िफ़ है।

अपने आपकी पहचान के उपरोक्त अभ्यास को ही सन्तों-महात्माओं और पीरों-फ़क़ीरों ने 'ख़ुदी' को छोड़कर ख़ुद को पहचानने का नाम दिया है। इसे नफ़्स को तर्क करके अपने इलाही-वजूद को हासिल करने का नाम दिया गया है।

सरमद कहता है – मैं ख़ुद सुलतान हूँ। मैं रोटियों के लिये घटिया लोगों की मिन्नत क्यों करूँ? मेरा नफ़्स (मन) कुत्ता है और मैं कुत्ते को ज़ंजीर डालने वाला हूँ। मैं इस कुत्ते की ख़ातिर कुत्ते पालने वालों का मुहताज क्यों बनूँ? *(रुबाई 194)*

इस रुबाई में सरमद अपनी हस्ती के दोनों पहलुओं पर रोशनी डालता है। मन या नफ़्स वह कुत्ता है जो हमेशा दुनिया के पदार्थों और इन्द्रियों के भोगों के लिये भौंकता रहता है। सरमद कहता है कि मैंने इस कुत्ते को ज़ंजीर डाली हुई है। जब तक इनसान नफ़्स रूपी कुत्ते के अधीन रहता है, वह अपनी असल रूहानी सल्तनत से बेख़बर रहता है। जब इनसान इस कुत्ते को ज़ंजीर डाल लेता है तो वह दुनियावी चीज़ों का भिखारी बना रहने की बजाय रूहानी सल्तनत का सुलतान बन जाता है।

सरमद ने ऊपर कहा है – मैं कुत्ते पालने वालों का मुहताज क्यों बनूँ? उसका इशारा उन दुनियादारों की तरफ़ है जो मन के अधीन हैं। वे जो कुछ करते हैं, मन के कहे करते हैं। वे मन की इच्छाओं को पूरा करने की कोशिश करते हैं। जो भी भोग-पदार्थ मन माँगता है वे इसे देते रहते हैं। मगर मन रूपी कुत्ता सांसारिक भोगों से कभी तृप्त नहीं होता इसलिये मन के अधीन चलने वाले लोग अन्ततः भोगों की अग्नि में जलकर मर जाते हैं। सरमद कहता है कि मैं मन के कुत्ते को पालने वाला नहीं, इसे वश में करने (ज़ंजीर डालने) वाला हूँ। सरमद का भाव है कि जो व्यक्ति

मन-इन्द्रियों का ग़ुलाम बनकर बेतहाशा दुनिया के भोगों की तरफ़ दौड़ता है, वह कभी भी रूहानी तरक़्क़ी नहीं कर सकता। रूहानी तरक़्क़ी के लिये मन को वश में करना ज़रूरी है और मन को वश में करने के लिये उन कामिल दरवेशों की संगति ज़रूरी है जिन्होंने मन को वश में कर लिया है। स्वामी जी महाराज कहते हैं:

बड़ा बैरी यह मन घट में। इसी का जीतना कठिना॥
पड़ो तुम इसही के पीछे। और सबही जतन तजना॥[91]

आप ख़बरदार करते हैं कि बाहर बैठे दुश्मन से बचाव करना आसान है लेकिन मन रूपी दुश्मन अन्दर घात लगाकर बैठा है। रूहानी तरक़्क़ी के लिये इनसान को जो भी कोशिश करनी है, मन रूपी दुश्मन को क़ाबू करने के लिये करनी है। आप कहते हैं, 'जिन्हों ने मार मन डाला। उन्हीं को सूरमा कहना॥'[92] क़ौमों, मज़हबों, मुल्कों की जंग जीतना बहादुरी नहीं है। जंगलों, पहाड़ों में भटकते फिरना और अनेक प्रकार के हठ-कर्मों के द्वारा अनेक प्रकार के कष्ट सहना बहादुरी नहीं है। सच्ची बहादुरी मन को वश करने में है। स्वामी जी महाराज आगे कहते हैं, 'हार जब जाय मन तुझ से। चढ़ा दे सुर्त को गगना॥'[93] रूह की आन्तरिक चढ़ाई जब भी शुरू होती है मन को वश में करने से होती है। इसलिये सरमद मन रूपी कुत्ते को ज़ंजीर डालने की नसीहत कर रहा है।

मौलाना रूम कहते हैं:

शुद ख़रे-नफ़्से-तू बर मेख़श ब-बंद।[94]

यानी, तेरा गधा-मन क़ाबू से बाहर हो गया है। इसको खूँटे से बाँधकर रख। आप एक और जगह कहते हैं:

ईं सगे-नफ़्से-तुरा ज़िन्दा मख़ाह,
कू अदुव्वे-जाने-तुस्त अज़ देर गाह।[95]

ऐ इनसान, ख़बरदार हो जा और नफ़्स रूपी कुत्ते को ज़िन्दा न छोड़, क्योंकि यह मुद्दत (जन्म-जन्मान्तरों) से तेरी जान का दुश्मन बना हुआ है।

गुरु नानक साहिब ने इसे ही 'मनि जीतै जगु जीतु'[96] का नाम दिया है। हज़रत बू अली क़लन्दर कहते हैं:

गर तू मर्दे नफ़्स काफ़िर रा बकुश।[97]

अर्थात् अगर तू मर्द है तो अपने काफ़िर नफ़्स (मन) को मार डाल।

सरमद एक और रुबाई में कहता है, 'बा नफ़्से-सितमगार बजंगम हर दम।' मेरी ज़ालिम नफ़्स के साथ दिन-रात जंग जारी है। मैं मगरमच्छ की तरह नफ़्स को निगल जानेवाला हूँ। मैं वह चीता हूँ जो लोभ और मोह रूपी लोमड़ी को खा जाता है। *(रुबाई 185)*

सरमद का भाव है कि सोई हुई आत्मा बेबस और बेसहारा है। नफ़्स या मन उसे हमेशा परेशान रखता है। जब रूहानी अभ्यास द्वारा आत्मा जाग उठती है तो इसे अन्दर ख़ुदा के कलमे (शब्द) की अथाह शक्ति मिल जाती है। फिर यह मगरमच्छ और चीते की तरह शक्तिशाली हो जाती है। जैसे मगरमच्छ साबुत मछली को निगल जाता है और चीता झट से छलाँग लगाकर अपने शिकार को झपट लेता है, इसी तरह जाग्रत आत्मा मन को पूरी तरह वश में कर लेती है।

हज़रत बू अली क़लन्दर कहते हैं:

दस्ते-हिम्मत रा बर अफ़राज़े-बलन्द,
नफ़्स रा चूँ सैद आरद दर कमन्द।[98]

ऐ इनसान! तू हिम्मत का हाथ बुलन्द करके रूहानी अभ्यास से नफ़्स को शिकार की तरह अपने जाल में फँसा ले।

सरमद कहता है – तू ख़ुदी (हौंमैं) को छोड़ दे, इस तरह तू जंग या अशान्ति से अमन (शान्ति) में आ जायेगा। तू काँटा न बना रह, गुलशन बन। तू इस ज़ालिम नफ़्स को दुश्मन न समझ। ऐ दोस्त, तू ख़ुद अपना दुश्मन बन जा। *(रुबाई 272)*

कामिल दरवेशों ने इशारा किया है कि जब तक मन आत्मा पर हावी रहता है, तब तक यह आत्मा का सबसे बड़ा दुश्मन है। लेकिन जब यह

आत्मा के वश में आ जाता है तो यह आत्मा का वफ़ादार दोस्त बन जाता है। बहुत-से दरवेशों ने नफ़्स की दुश्मनी को दोस्ती में बदलने का उपदेश दिया है। 'ख़ुद का दुश्मन बनने' का मतलब ख़ुदी (हौंमैं) को ख़त्म करना है। हज़रत सुलतान बाहू का कलाम है:

ओहो नफ़्स असाडा बेली, जो नाल असाडे सिद्धा हू।
जो कोई उसदी करे सवारी, नाम अल्ला उस लद्धा हू।
ज़ाहिद आबिद आण निवाए, जिथ टुकड़ा वेखे थिद्धा हू।
राह फ़क़र दा मुशकल बाहू, घर मां न सीरा रिद्धा हू।[99]

आप कहते हैं कि हमारे कहने में चलने वाला मन हमारा सच्चा मित्र है। मन बहुत ताक़तवर और चतुर है। मन बड़े-बड़े तपस्वियों और भक्तों को भी लोभ में डालकर अपने अधीन कर लेता है। ख़ुदा उसी को मिलता है जो मन पर सवारी करता है। मन को मारकर सच्चे फ़क़ीर बनना मामूली बात नहीं है।

कामिल फ़क़ीर समझाते हैं कि मुँहज़ोर नफ़्स से बड़ा दुश्मन कोई नहीं है और वश में कर लिये गए नफ़्स से वफ़ादार दोस्त कोई नहीं है। इसी लिये स्वामी जी महाराज ने फ़रमाया है, 'मन बैरी को मीत कर॥'[100] नफ़्स की दुश्मनी को दोस्ती में बदलने का एक ही ढंग है – रूहानी अभ्यास द्वारा मन और आत्मा को आँखों के पीछे एकाग्र करके ख़ुदा के कलमे (नाम) से जोड़ना। सरमद ने उस कलमे को शराब का नाम दिया है। शराबी, शराब में मदहोश होकर हर तरफ़ से बेनियाज़ हो जाता है। जिसे अन्दर ख़ुदा के नाम की शराब मिल जाती है, वह नफ़्स की मार से ऊपर उठ जाता है।

मौलाना रूम कहते हैं:

बादा-ए-उमी अज़ बरूँ, बादा-ए-आरिफ़ अज़ दरूँ।[101]

जाहिल लोग बाहर (दुनिया) की शराब पीते हैं, ख़ुदा के बन्दे अपने अन्तर में (नाम की) शराब पीते हैं।

कामिल फ़क़ीर समझाते हैं कि मन लज़्ज़त का आशिक़ है। जब तक इसे इन्द्रियों के भोगों से बढ़िया लज़्ज़त नहीं मिलती, यह कभी वश में नहीं आ

सकता। ख़ुदा का कलमा सुख-शान्ति और आनन्द से भरपूर है। संसार की लज़्ज़तें कलमे की लज़्ज़त का मुक़ाबला नहीं कर सकती। जब तक मन को कलमे की लज़्ज़त नहीं मिलती, इसे कभी भी दुनिया के पदार्थों और इन्द्रियों के भोगों की तरफ़ दौड़ने से रोका नहीं जा सकता। जब इसे अन्दर ख़ुदा के कलमे का रस प्राप्त हो जाता है तो यह दुनियावी पदार्थों और इन्द्रियों के भोगों की तरफ़ आँख उठाकर भी नहीं देखता।

मौलाना रूम कहते हैं:

हर किरा जामा ज़ि इश्क़े चाक शुद,
ऊ ज़ि हिर्सो-ऐब कुल्ली पाक शुद।[102]

जिसका जामा (इनसानी जिस्म) इश्क़ ने चाक (फाड़) कर दिया, वह लालच और ऐब (बुराई) से पाक (पवित्र) हो गया। मतलब यह कि जिसके अन्दर इश्क़ का जज़्बा पैदा हो गया वह हर तरह की मैल से साफ़ हो गया।

सरमद कहता है – अगर तुझे ख़ुद से प्यार है तो ख़ुद का दुश्मन बन जा। दिल से दुनिया की ख़्वाहिशों को निकाल दे ताकि दिल में अमन-शान्ति हो जाये। यह ज़ालिम नफ़्स तुझ पर ज़ुल्म कर रहा है। तू इस काँटे को निकालकर गुलशन बन जा। *(रुबाई 278)*

इस रुबाई में भी सरमद ने यह समझाने की कोशिश की है कि जब तक इनसान आत्मा को मन के पंजे से आज़ाद नहीं करता, वह न तो ख़ुद को पहचान सकता है और न ही ख़ुदा को पहचान कर हमेशा के लिये शान्ति प्राप्त कर सकता है।

इश्क़ की क़त्लगाह में सिर्फ़ नेक आशिक़ों को ही क़त्ल किया जाता है। कमज़ोर और क्रोधी इनसान इश्क़ में पूरे नहीं उतरते और उनकी परवाह नहीं की जाती। तू सच्चा आशिक़ है तो मौत से न डर क्योंकि जो पहले ही मर चुका है, उसे मारा नहीं जाता। *(रुबाई 119)*

मौलाना रूम कहते हैं:

आशिक़ां रा कार नबुवद बा वुजूद।[103]

आशिक़ों को वजूद (शरीर) से कोई वास्ता नहीं होता क्योंकि:

बंदे-हस्ती नीस्त हर कू सादिक़ अस्त।[104]

सच्चा आशिक़ वुजूद का पाबन्द यानी ग़ुलाम नहीं है। मतलब यह कि वह तो पहले ही अपनी हस्ती को ख़ुदा में फ़ना (लीन) कर चुका होता है।

गुरु नानक साहिब कहते हैं:

जउ तउ प्रेम खेलण का चाउ॥
सिरु धरि तली गली मेरी आउ॥[105]

सच्चा आशिक़ वह है जो ख़ुदी को ख़ुदा पर क़ुर्बान कर देता है। सरमद इशारा करता है कि जो लोग इश्क़ में कमज़ोर हैं, उन्हें इश्क़ की शहादत का जाम नहीं मिलता। मगर जो ख़ुदी को फ़ना कर चुके हैं, वे पहले ही मुर्दा हो चुके हैं, उन्हें दोबारा नहीं मारा जा सकता।

मौलाना रूम कहते हैं:

अज़ ख़ुदी बगुज़र किह् ता याबी ख़ुदा,
फ़ानी-ए-हक्क़ शौ किह् ता याबी बक़ा।[106]

ऐ इनसान, तू ख़ुदी (हौंमैं) को छोड़ दे ताकि तू ख़ुदा को हासिल कर ले। तू ख़ुदा में अपने आपको लीन कर दे ताकि तू अमर हो जाये।

कुछ धर्मों में जानवरों की बलि दी जाती है। बलि ज़िन्दा जानवर की दी जाती है, मुर्दा जानवर की नहीं। सरमद इशारा करता है कि जो इनसान जीते-जी मर चुका है और जिसने अपनी ख़ुदी को ख़ुदा में फ़ना कर दिया, वह मौत के डर से हमेशा के लिये आज़ाद हो जाता है। क़ुरान शरीफ़ में ख़ुदा ने फ़रमाया है, "मर जाओ ताकि फिर ज़िन्दा कर दिए जाओ।"[107]

सरमद कहता है – ऐ ज़ालिम नफ़्स (मन), तू क्या-क्या ज़ुल्म करेगा? क्या तू मुझे ख़लक़े-ख़ुदा (परमात्मा की रचना) से दूर ही रखेगा? क्या तू हमेशा मेरे साथ दुश्मनी करेगा और जंग जारी रखेगा? भूले से ही सही, कभी तो मेरे साथ अमन क़ायम कर। *(रुबाई 121)*

सरमद ख़बरदार करता है कि नफ़्स (मन) ही इनसान का सबसे बड़ा दुश्मन है। नफ़्स ही इनसान को ख़लक़े-ख़ुदा की सच्ची मुहब्बत से दूर रखता है, जब तक ज़ालिम नफ़्स की दुश्मनी दोस्ती में नहीं बदलती और जब तक मन वश में नहीं आता, न तो इनसान अच्छा इनसान बन सकता है और न ही ख़ुदा का सच्चा आशिक़ बन सकता है।

मौलाना रूम कहते हैं:

> नफ़्स कुश्ती बाज़ रस्ती ज़ि एतिज़ार,
> कस तुरा दुश्मन न मानद दर दयार।[108]

अगर तूने अपने नफ़्स को मार डाला तो हर क़िस्म की बहानेबाज़ी से छूट जायेगा और दुनिया में तेरा कोई भी दुश्मन न रहेगा।

सरमद कहता है – मेरा नफ़्स (मन) ही ज़ालिम शैतान है। यह बात किसी से छिपी हुई नहीं है, साफ़ ज़ाहिर है। सरमद, तू ख़ुद ही शैतान है, शैतान को बुरा क्यों कहता है? शैतान तो ख़ुद तेरे शैतानी भरे ख़यालों पर हैरान है। *(रुबाई 53)*

कहा जाता है कि आदम ने शैतान के बहकावे में आकर ख़ुदा की हुक्म-उदूली की थी।[109] इसी तरह यह भी कहा जाता है कि शैतान या काल इनसान को गुमराह करके ख़ुदा से दूर रखने की कोशिश करता है।[110] सरमद बहुत ख़ूबसूरत अन्दाज़ में कहता है कि ऐ इनसान! शैतान कहीं बाहर नहीं है, तेरे अन्दर बैठा नफ़्स (मन) ही तुझे गुमराह करनेवाला तेरा असल दुश्मन है।

मौलाना रूम कहते हैं कि नफ़्स तेरे जिस्म के घर में बड़ी शान से पल रहा है:

> नफ़्स अन्दर ख़ानाए-तन नाज़नीन।[111]

यानी जब तक तू मन के कहने में है, तू शैतान का रूप है। सच्ची बात तो यह है कि जब तू मन के अधीन है तो तू शैतान से भी बुरा है। शैतान तो अपने मालिक का हुक्म मान रहा है, वह जो कुछ करता है मालिक के हुक्म से करता है, इसलिये वह शैतान नहीं है। असल शैतान तो तू है जो अपने

मालिक का हुक्म भूल गया है। क़ुरान शरीफ़ में रोज़े-मीसाक का ज़िक्र आता है, "जब ख़ुदा ने रूहों से पूछा कि क्या मैं तुम्हारा रब्ब नहीं हूँ?" रूहों ने जवाब दिया, "हाँ, बेशक तू ही हमारा ख़ुदा है।"[112] इसका असल भाव यह है कि सिर्फ़ एक ख़ुदा की बन्दगी, इबादत या इश्क़ ही रूह का असल धर्म है। क़ुरान शरीफ़ में फ़रमाया है, "उस इनसान से किस का दीन (धर्म) बेहतर हो सकता है जिसने अल्लाह के आगे अपना सिर झुका दिया।"[113] इस धर्म का पालन न करना, ख़ुदा के हुक्म की ख़िलाफवर्ज़ी (अवहेलना) है। जो ख़ुदा का हुक्म नहीं मानता उससे बड़ा शैतान कौन हो सकता है?

सरमद कहता है – मैं फ़ना हो चुका हूँ। मुझे मालूम नहीं है कि बक़ा (अमरत्व) क्या है? मैं जलता हुआ कोयला हूँ, मुझे मालूम नहीं कि धुआँ क्या है। मैंने अपना दिल दे दिया है, अपनी रूह दे दी है, ज़िन्दगी दे दी है, ईमान दे दिया है। मैंने ऐसा सौदा किया है कि जिसमें यह मालूम नहीं कि नफ़ा क्या मिला है। *(रुबाई 69)*

सरमद यह ख़ूबसूरत इशारा कर रहा है कि जो अपनी हस्ती को ख़ुदा में फ़ना कर देता है, उसे दीन-दुनिया की कोई ख़बर नहीं रहती। फिर वह पल-पल उसके इश्क़ में सुलगता रहता है। वह जिस्म और जान से बेनियाज़ हो जाता है। वह नफ़े और नुक़सान से ऊपर उठ जाता है। आशिक़ ख़ुदा के इश्क़ में नूर ही नूर बन जाता है। इश्क़ सिर्फ़ देना जानता है, लेना नहीं। लोग तो मन्दिरों-मसजिदों में मादी (सांसारिक) चीज़ों का चढ़ावा चढ़ाते हैं, सच्चा आशिक़ ख़ुद को ही महबूब पर क़ुर्बान कर देता है। बिना ख़ुदी को ख़ुदा में फ़ना किये लाफ़ानी ज़िन्दगी (अमर जीवन) हासिल कर सकना नामुमकिन (असम्भव) है।

सरमद नसीहत करता है – ख़ुदी (हौंमैं) से गुज़र जा ताकि तू दीन (ख़ुदा) के क़रीब पहुँच जाये। यही सब कर्मों से ऊँचा कर्म है। इससे दोनों जहानों में तेरे नाम का सिक्का चलेगा और सारी दुनिया पर तेरी हुक़ूमत हो जायेगी। *(रुबाई 128)*

सरमद का कलाम है – ऐ ज़ाहिद (तपस्वी), ख़ुदा की क़सम तू बहुत कम-अक़्ल है। तू तपस्या और पाखण्ड को छोड़ दे। सुराही और जाम

(प्याला) दोनों हक़ीक़त से लबालब हैं। उनमें तत्त्व और सूरत (रूप) दोनों भरे हुए हैं। *(रुबाई 167)*

इस रुबाई में सरमद ने फ़ारसी के पाँच बहुत महत्त्वपूर्ण शब्दों, 'हक़ीक़त', 'आईना', 'जाम', 'सूरत' और 'मअना', का प्रयोग किया है। वह समझाना चाहता है कि सुराही (ख़ुदा या मुर्शिद) और जाम (मुरीद) दोनों में एक ही हक़ीक़त जल्वागर है। 'मअना' का अर्थ सार-वस्तु या मूल तत्त्व है और 'सूरत' का अर्थ रूप, शक्ल या आकार है। सरमद समझाता है कि रूह और जिस्म दोनों का आधार और स्रोत वह एक ही हक़ीक़त (ख़ुदा) है। सरमद ज़ाहिद को ख़बरदार करता है कि हौंमैं, पाखण्ड और दिखावे से कुछ हासिल नहीं होगा। हक़ीक़त को जानने के लिये ख़ुदी को ख़ुदा में फ़ना करना ज़रूरी है।

एक सूफ़ी फ़क़ीर कहता है:

> बे फ़नाए-ख़ुद मुयस्सर नीस्त दीदारे-शुमा,
> मीफ़िरोशद ख़्वेश रा अव्वल ख़रीदारे-शुमा।[114]

यानी अपनी ख़ुदी (हौंमैं) को फ़ना किये बिना कोई भी इनसान ख़ुदा का दीदार हासिल नहीं कर सकता। जो भी कोई ख़ुदा को खरीदना चाहता है उसको चाहिये कि वह पहले अपनी ख़ुदी को बेच दे। हज़रत बू अली क़लन्दर कहते हैं:

> चूँ बमानी बा ख़ुदा याबी विसाल,
> ख़्वेश रा गुम साज़ ऐ साहिबे-कमाल।[115]

जब तू ख़ुदा के पास पहुँच जायेगा तो तुझे उसके विसाल का सरूर हासिल होगा। इसलिये तू अपनी हौंमैं को मिटा दे।

सरमद कहता है – अगर तू चाहता है कि पत्थर से ठोकर न खाये तो ख़ुदी को छोड़ दे और ख़ुदी की राह पर मत चल। तू मन की कामनाओं के अधीन न हो और ज़ालिम नफ़्स से जंग करने के लिये हमेशा तैयार रह। *(रुबाई 174)*

इस रुबाई में सरमद ने इनसान को ख़ुदी (हौंमैं) तर्क (त्याग) करने की नसीहत की है। वह समझाता है कि मान और अहंकार ख़ुदा के रास्ते में सबसे बड़े पत्थर हैं। ख़ुदा से विसाल की मंज़िल पर पहुँचने के लिये नफ़्स या मन को वश में करना ज़रूरी है।

वह कहता है – महबूब को पाना इतना आसान नहीं है। तू हरएक ख़याल को दिल से निकाल दे। उसके सिवाय तेरे दिल में जो भी दूसरी चीज़ है वह तेरे और उसके दरमियान एक पर्दा है। *(रुबाई 150)*

सरमद समझा रहा है कि इनसान और ख़ुदा के दरमियान सिर्फ़ ख़ुदी या द्वैत का पर्दा है। यह पर्दा हटा दिया जाये तो उसे अपने अन्दर ही महबूब का दीदार हो जाता है। ख़्वाजा हाफ़िज़ कहते हैं :

जमाले-यार नदारद नक़ाबो-पर्दा वले,
गुबारे-रह बनिशाँ ता नज़र तवानी करद।[116]

यानी महबूब (ख़ुदा) का हुस्न पर्दा और नक़ाब नहीं रखता, लेकिन तू रास्ते का ग़ुबार (दुई) मिटा दे ताकि तुझे उसका दीदार हो जाये।

सरमद इशारा करता है – तूने ख़ुदी (हौंमैं) को न छोड़ा और जिस चीज़ से तुझे असल नफ़ा होना था तूने उसकी तरफ़ ध्यान न दिया। अगर तू दोनों जहान लेना चाहता है तो सिर्फ़ एक (ख़ुदा) का हो जा। उस एक तरफ़ (ख़ुदा) को छोड़कर किसी दूसरी तरफ़ न जा। *(रुबाई 162)*

क़ुरान शरीफ़ में भी आता है, "ख़ुदा के साथ दूसरा इष्ट न बनाओ।"[117] भाव सिवाय एक ख़ुदा के दूसरा कोई भी तुम्हारी भक्ति के क़ाबिल नहीं है। सरमद समझा रहा है कि असल लाभ हौंमैं के त्याग में है। जो सिर्फ़ इस दुनिया का बना रहा, उसके दीन और दुनिया दोनों बर्बाद हो गए। जो सिर्फ़ एक ख़ुदा का हो गया उसके दीन और दुनिया सफल हो गए। बिना एक का हुए कोई कभी रूहानियत में ऊँचा नहीं उठ सकता।

वह प्रभु मन्दिरों-मसजिदों में नहीं रहता। वह ज़मीन और आसमान में हर जगह समाया हुआ है। सारा संसार उसके नाम का दीवाना है। अक़्लमन्द वही है जो उसका दीवाना हो गया। *(रुबाई 50)*

क़ुरान शरीफ़ में फ़रमाया है, "अल्लाह ही का है पूर्व और पश्चिम, तो जिधर भी मुँह करो उधर ही अल्लाह को देखोगे।"[118] "बल्कि जो कुछ आसमान और ज़मीन में है, सब उसके अधीन है।"[119]

सरमद ने ख़ुदा को 'गंजे-निहां' और 'गौहरे-नायाब' कहा है। *(रुबाई 86)* 'गंजे-निहां' का अर्थ है छिपा हुआ ख़ज़ाना। कई दूसरे सूफ़ी दरवेशों ने भी ख़ुदा को 'गंजे-मख़्फ़ी' कहा है। 'गंजे-मख़्फ़ी' का अर्थ भी छिपा हुआ ख़ज़ाना है। 'गौहरे-नायाब' का अर्थ है दुर्लभ हीरा। प्रभु के नाम का अमूल्य रत्न मनुष्य के अन्दर है, पर वह गुप्त है। दु:ख की बात है कि संसार में इस दुर्लभ रत्न की किसी को परवाह नहीं। भीखा जी कहते हैं:

> भीखा भूखा को नहीं, सबकी गठरी लाल।
> गिरहा खोल न जानई, तां ते भए कंगाल॥[120]

गुरु रामदास जी कहते हैं:

> घरि रतन लाल बहु माणक लादे॥
> मनु भ्रमिआ लहि न सकाईऐ॥[121]

शरीर रूपी घर के अन्दर प्रभु और उसके नाम के अमोलक ख़ज़ाने मौजूद हैं, लेकिन इनसान कंगालों की तरह बाहर भटकता है। सूफ़ी-सन्तों ने इस छिपे-ख़ज़ाने को आबे-हैवाँ या आबे-हयात (अमृत) भी कहा है। भाई नन्दलाल गोया कहते हैं:

> आबे-हैवाँ अंदरूने-ख़ाना हस्त,
> लेक बे हादी जहाँ बेगाना हस्त।[122]

आबे-हयात (अमृत) तो घर (इनसानी जिस्म) के अन्दर है, मगर दुनिया बिना मुर्शिद के बाहर भटकती है।

सरमद कहता है – तेरा दिल समुद्र है। तूने तैराक बनना है तो इस समुद्र का तैराक बन। इस तरह तू सात समुद्रों का तैराक बन जायेगा। तेरी हस्ती

के समुद्र में सबकुछ मौजूद है, तू चाहे तो तूफ़ान बन जा, चाहे तो लंगर* बन जा। *(रुबाई 311)*

सरमद इशारा करता है कि इनसान का जिस्म मिट्टी-पानी की बनी हुई कच्ची दीवार नहीं है। ख़ुदावन्द करीम ने इसे ऐसी कारीगरी से बनाया है कि जो कुछ सारी कायनात में रखा है, वह जिस्म के अन्दर भी रख दिया है। इनसान का मन वह समुद्र है जिसमें ग़ोता लगाने से सारी कायनात किताब की तरह रूह की आँख के सामने खुल जाती है। काम, क्रोध आदि के तूफ़ान भी मन में ही उठते हैं और पूर्ण शान्ति भी मन के अन्दर ही प्राप्त होती है। जो इनसान किसी कामिल दरवेश की हिदायत (शिक्षा) के अनुसार मन में ग़ोता लगाता है वह त्रिकालदर्शी हो जाता है। उसका मन पूरी तरह ठहर जाता है और उसके अन्दर दिव्य आनन्द के भण्डार खुल जाते हैं। हज़रत सुलतान बाहू कहते हैं:

दिल दरिया समुंदरों डूंघे, कौण दिलां दी जाणे हू।
विच्चे बेड़े, विच्चे झेड़े, विच्चे वंझ मुहाणे हू।
चौदां तबक़ दिले दे अंदर, तंबू वांगण ताणे हू।
जोई दिल दा महरम होवे, सोई रब्ब पछाणे हू।[123]

किसी सूफ़ी ने सात विलायतों या सात समुद्रों का ज़िक्र किया है तो किसी ने चौदह तबक़ों (चौदह भवनों) का ज़िक्र किया है। सब सूफ़ी दरवेश यह समझाना चाहते हैं कि आलमे-कबीर (macrocosm) यानी ब्रह्माण्ड आलमे-सग़ीर (microcosm) यानी पिण्ड या जिस्म में समाया हुआ है। हज़रत सुलतान बाहू ने इशारा किया है कि सिर्फ़ कायनात ही नहीं, वह क़ादिर भी इस वजूद के अन्दर है। इसी तरह बहरे-हस्ती (भवसागर) से पार जाने का साधन कलमा या शब्द और इस समुद्र से पार ले जानेवाला मुर्शिद भी मन के अन्दर है। शर्त सिर्फ़ एक है, 'जोई दिल दा महरम होवे।' 'महरम' का

---

* लोहे की ज़ंजीर या रस्सा जो किश्ती ठहराने के लिये किसी भारी चीज़ के साथ किनारे पर बाँध देते हैं।

अर्थ है वाक़िफ़कार या भेद जानने वाला। जिन्हें मन रूपी समुद्र के अन्दर डुबकी लगाने की युक्ति मालूम हो, उन्हें अपने अन्दर ही सबकुछ मिल जाता है। जिन्हें यह युक्ति मालूम नहीं, वह बाहर भटकते रहते हैं, उन्हें कुछ भी प्राप्त नहीं होता। ख़्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती फ़रमाते हैं:

> आबे-हैवां अस्त अन्दर ज़ुल्मते-हस्तीए-तू,
> माहीए शौ, ख़्वेश रा दर आबे-हैवानी फ़िगन।[124]

ऐ इनसान, तेरे वजूद के अँधेरे में आबे-हयात (अमृत) मौजूद है। तू मछली बन जा और ख़ुद को आबे-हयात (के सागर) में डाल दे।

सरमद कहता है – जिसने हक़ीक़त का भेद पा लिया, वह आकाश से ज़्यादा विशाल हो गया। मुल्ला कहता है, 'अहमद आसमान पर गया।' सरमद कहता है, 'नहीं! आसमान अहमद पर उतर आया।' *(रुबाई 126)*

यह सरमद की सबसे सूक्ष्म और सुन्दर रुबाइयों में से एक है। इसमें उसने रूहानियत का बहुत गहरा राज़ (भेद) बयान किया है। 'हक़ीक़त का भेद' जानने से भाव ख़ुदा का विसाल है। इसलाम और सूफ़ी विचारधारा में ख़ुदा को सच और बाक़ी हर चीज़ को झूठ माना गया है। सूफ़ी रूहानी तरक़्क़ी के चार पड़ाव मानते हैं – शरीअत, तरीक़त, मारफ़त और हक़ीक़त। हक़ीक़त का अर्थ ख़ुदा रूपी सच में समाकर उसका रूप हो जाना है। सरमद समझा रहा है कि मुल्लाओं का ख़याल है कि हज़रत मुहम्मद साहिब आसमान पर गए पर मैं कहता हूँ कि आसमान हज़रत मुहम्मद साहिब पर उतर आया। अपने ख़याल की प्रौढ़ता के लिये सरमद यह सबूत देता है कि जिसमें सारी कायनात समा गई वह सारी कायनात से बड़ा हो गया। 'आसमान के अहमद पर उतर आने' से सरमद का यह मतलब है कि हज़रत मुहम्मद ख़ुदा में समाकर ख़ुद ख़ुदा हो गए। इसलिये सारी कायनात भी उनमें समा गई। बजाय यह कहने के कि वे आसमान पर गए यह कहना बेहतर है कि आसमान उन पर उतर आया।

कट्टरपंथी मुल्लाओं ने इस रुबाई को सरमद के ख़िलाफ़ इस्तेमाल किया। उन्होंने कहा कि सरमद ने कुफ़्र का कलमा कहा है। रूहानी

नज़रिये से देखा जाये तो सरमद ने अपने अछूते अन्दाज़ में हज़रत मुहम्मद साहिब की जो बड़ाई की है, उससे ज़्यादा उनकी बड़ाई की ही नहीं जा सकती। सरमद यह इशारा कर रहा है कि ख़ुदावन्द करीम ने हज़रत मुहम्मद साहिब को अपने साथ मिलाकर अपना रूप बना लिया था।

इस रुबाई की इन पंक्तियों पर ख़ास ध्यान देने की ज़रूरत है:

हरकस किह् सिर्रे-हक़ीक़तश बावर शुद,
ऊ पहन तर अज़ सिपिहर पहनावर शुद।

सरमद इशारा करता है कि जो कोई भी हक़ीक़त का भेद पा लेता है वह सारी कायनात से बड़ा हो जाता है। सरमद का भाव है कि ख़ुदा ने हर इनसान में ख़ुदा में समाकर ख़ुदा हो जाने की ताक़त रखी है। जो कोई, जब कभी, जहाँ भी अपनी रूह को ख़ुदा की इबादत के ज़रिये ख़ुदा में जज़्ब कर देता है, वह ख़ुद ख़ुदा हो जाता है। इनसान बाहर से देखने में ख़ाकी है। यह कहने को मिट्टी का पुतला है लेकिन इसके अन्दर उस ख़ुदावन्द करीम का नूर समाया हुआ है। सबसे बड़ी बात यह है कि उस ख़ुदा ने हर इनसान में यह ख़ूबी रखी है कि वह अपनी रूह को उसमें जज़्ब करके ख़ाकी से नूरी और फ़ानी से लाफ़ानी हो जाये। ख़ुदा ने इसके लिये कोई ख़ास मज़हब, मुल्क या क़ौम अख़्तियार करने या छोड़ने की शर्त नहीं लगाई। दुनिया के हर इनसान में आत्मा को परमात्मा में लीन करने की योग्यता रखी गई है। यही इनसानी हस्ती का सबसे अधिक आश्चर्यजनक भेद है।

एक फ़क़ीर कहता है:

तू जुज़्वी व हक़्क़ कुल्ल अस्त,
अन्देशाए-कुल्ल कुनी कुल्ल बाशी।[125]

तू ख़ुदा का जुज़ (अंश) है। अगर तू कुल भाव ख़ुदा में समाने का यत्न करे तो ख़ुदा ही बन जाये।

कामिल मुर्शिद: साक़ी

सरमद कहता है – तू कौसर के साक़ी से गुलाबी रंग की शराब हासिल कर। बुढ़ापे और कमज़ोरी की उम्र में सुख-आराम और अमन-चैन देनेवाला शराब का प्याला हासिल कर। तू कब तक दुनिया का क़ैदी बना रहेगा? ख़ुदा की रहमत से दुनिया के बन्धनों से छुटकारा पा ले। *(रुबाई 23)*

कौसर से भाव हौज़े-कौसर या अमृत के सरोवर से है। सूफ़ी दरवेशों और सन्तों-महात्माओं ने तीसरे रूहानी मण्डल में स्थित शब्द या नाम के भण्डार को हौज़े-कौसर (अमृत का सरोवर), चश्मा-ए-आबे-हयात (अमृत का स्रोत), अमृतसर, मानसरोवर आदि नामों से पुकारा है। सरमद का भाव है कि मुर्शिद का होना काफ़ी नहीं है। मुर्शिद वह होना चाहिये जो हौज़े-कौसर की शराब पीता हो और हौज़े-कौसर की शराब पिला सकता हो। जो चश्मा-ए-आबे-हयात से वाक़िफ़ नहीं है, वह कामिल मुर्शिद नहीं है। जो ख़ुद ख़ाली है, उससे कुछ हासिल नहीं होगा। ज़ाहिर है कि सरमद मुर्शिद की ज़रूरत पर भी ज़ोर दे रहा है और यह बात भी समझा रहा है कि शब्द-स्वरूपी, शब्द-अभ्यासी यानी शब्द की कमाई करने और शब्द की कमाई का भेद समझाने वाला दरवेश ही कामिल मुर्शिद है।

मयख़ाने (मधुशाला) में शराब का जाम (प्याला) पिलाने वाले को 'साक़ी' कहा जाता है। सूफ़ी दरवेशों ने ख़ुदा के इश्क़, ख़ुदा की इबादत, ख़ुदा के कलमे या नाम की शराब पिलाने वाले कामिल दरवेश या मुर्शिद को 'साक़ी' कहकर पुकारा है। क़ुरान शरीफ़ में भी ख़ुदा को "सक़ा" यानी साक़ी कहा गया है। "उनका परवरदिगार उनको पाकीज़ा (पवित्र) शराब पिलवायेगा।"[127] मयख़ाने में साक़ी बाहरी शराब का जाम पिलाता है। मुर्शिद अपने मुरीद को उसके अन्दर ख़ुदा के कलमे के अथाह भण्डार से दिन-रात जाम भरकर पीने की युक्ति सिखाता है। मुर्शिद अपने पास से शराब नहीं देता, वह शराब का भण्डार जीव के अपने अन्दर है, मगर गुप्त है। अगर जीव ख़ुद अपने अन्दर से वह शराब हासिल कर सकता तो उसे न तो साक़ी या मुर्शिद की ज़रूरत थी और न ख़ुदा की रहमत की। सब सुखों की जननी

वह इलाही-शराब अन्दर है, मगर जीव अज्ञानतावश उसकी तलाश में बाहर भटक रहा है। मुर्शिद उसे दुनिया और जिस्म में फैली हुई रूह को आँखों के निचले भाग से समेटकर आँखों के पीछे एकाग्र या स्थिर करके अन्तर में कलमे या नाम से जोड़ने की युक्ति समझाता है।

हज़रत सुलतान बाहू कहते हैं:

> कलमे दी कल तदां पई, जद मुर्शिद कलमा दसया हू।
> सारी उमर कुफ़र विच्च जाली, बिन मुर्शिद दे दसयां हू।[128]

भाव: मुर्शिद की हिदायत के बिना कलमे और सच्ची रूहानियत का राज़ नहीं मिल सकता।

कलमा या नाम की शराब मुर्शिद की रहमत और मुर्शिद द्वारा बताई गई तरकीब के मुताबिक़ रूहानी अभ्यास करने से प्राप्त होती है। इसलिये मुर्शिद को इलाही-इश्क़ या इलाही-नाम की शराब पिलाने वाला सच्चा साक़ी कहा गया है।

उपरोक्त रुबाई में सरमद ने कुछ और भी ख़ूबसूरत इशारे किए हैं। वह एक ओर तो यह कहता है कि बुढ़ापे, कमज़ोरी और दुनिया की क़ैद से छुड़ाने वाली शराब मुर्शिद से मिलती है और दूसरी तरफ़ कहता है कि तू ख़ुदा की रहमत से दुनिया के बन्धनों से नजात हासिल कर ले। सरमद का भाव है कि कामिल मुर्शिद ख़ुदा की रहमत से मिलता है और इनसान को सब दुःखों और दुनिया के बन्धनों से छुड़ाकर परम सुख और अमर जीवन प्रदान करनेवाली कलमे या शब्द की शराब सिर्फ़ कामिल मुर्शिद ही पिला सकता है।

मौलाना रूम फ़रियाद करते हैं:

> ऐ साक़ी-ए-रूहानी, पेश आर मी जानी,
> तू चश्मा-ए-हैवानी, मा जुमला दर इस्तिस्क़ा।[129]

ऐ रूहानी साक़ी! रूहानी शराब ला। तू आबे-हयात (अमृत) है और हमारी न बुझने वाली प्यास है।

सरमद इशारा करता है – ऐ मेरे महबूब, तेरे चेहरे को देखकर ही गुलाब का फूल खिला है। यह बाहर से देखने में फूल है लेकिन इसके अन्दर दिल का ख़ून भरा हुआ है। तुझे यूसुफ़ के बाद ही आना था क्योंकि पहले पीला फूल आता है फिर लाल फूल आता है। *(रुबाई 74)*

इस रुबाई में गहरी रम्ज़ भरी हुई है। सरमद इशारा करता है कि कामिल मुर्शिद ने उस महबूबे-हक़ीक़ी का दीदार किया होता है। वह बाहर से देखने में तो महज़ ख़ूबसूरत जिस्म होता है लेकिन उसके अन्दर ख़ुदाई हक़ीक़त का ख़ून यानी ख़ुदाई नूर समाया होता है। यह क़ुदरती उसूल है कि पहले पीला और फिर लाल फूल आता है, पहले यूसुफ और फिर महबूब आता है। पीले फूल से सरमद का भाव देह-स्वरूप मुर्शिद है और सुर्ख़ फूल से भाव वह ख़ुदा है। सरमद समझाना चाहता है कि मुर्शिद ख़ुदा का रूप होता है। पहले मुर्शिद से मिलाप होता है फिर ख़ुदा से विसाल होता है।

सरमद कहता है – जब ख़ुदा ने तराज़ू के एक पलड़े में तुम्हारे ख़ूबसूरत चेहरे को रखा और दूसरे पलड़े में सूरज को, तो पहला पलड़ा भारी होने के कारण ज़मीन से न हिला जब कि दूसरा पलड़ा हलका होने के कारण आसमान पर जा पहुँचा। *(रुबाई 93)*

यहाँ सरमद अपने महबूब यानी मुर्शिद को सबसे बड़ा कह रहा है। इनसान के लिये कायनात की सबसे बड़ी चीज़ सूर्य है, लेकिन सूर्य भी मुर्शिद का मुक़ाबला नहीं कर सकता। सरमद का असल में यह भाव है कि मुर्शिद का हुस्न, मुर्शिद की ख़ूबियाँ और मुर्शिद की ताक़त बयान से बाहर है। जिस तरह सूर्य के बिना संसार में अन्धकार छा जाता है, उसी तरह मुरीद (शिष्य) के लिये सिर्फ़ मुर्शिद का वजूद ही सच्चे रूहानी ज्ञान का स्रोत है। मुरीद के लिये मुर्शिद की जो महत्ता है, उसे लफ़्ज़ों में बयान कर सकना असम्भव है।

इस बारे में मौलाना रूम कहते हैं:

> सूरतश बर ख़ाको-जान दर ला-मकां,
> ला-मकाने फ़ौक़े-वहमे-सालिकां।[130]

मुर्शिद का जिस्म तो इस दुनिया में होता है लेकिन उसकी रूह ला-मकान (रूहानी मण्डलों) की सैर करती है जो मुरीदों के मन-बुद्धि की पकड़ से परे है। एक सूफ़ी फ़क़ीर कहता है:

सूरते-इनसान ख़ुदा रा दीदा अम,
मन ख़ुदा रा आशिकारा दीदा अम।[131]

मैंने इनसान की सूरत में ख़ुदा को साफ़ अपने सामने देखा है। साईं बुल्लेशाह अपने मुर्शिद के बारे में कहते हैं:

बुल्लया इस नूं देख हमेशा एह है दरशन सांईं दा।[132]

सिर्फ़ ख़ुदा से विसाल कर चुका कामिल दरवेश या वली अल्लाह ही किसी दूसरे का ख़ुदा से मिलाप करवा सकता है। हज़रत सुलतान बाहू कहते हैं, 'मैं तां भुल्ली वैंदी बाहू, मुर्शिद राह विखाया हू।'[133]

सरमद कहता है – तू ऐसा दोस्त बना जो कभी बेवफ़ाई न करे; मुहब्बत में तेरा दिल न तोड़े; तुझे हमेशा गले लगाकर रखे; जो हमेशा तेरे साथ रहे और एक क़दम भी तुझसे जुदा न हो। *(रुबाई 115)*

इस रुबाई में एक तरह से कामिल मुर्शिद और ख़ुदावन्द करीम दोनों की तरफ़ इशारा है। मुर्शिद निराकार का ही साकार रूप है। मुर्शिद ख़ुदा में और ख़ुदा मुर्शिद में जज़्ब होता है। ऐसा कामिल मुर्शिद अपने क़ौल (वचन) का भी पक्का होता है। वह जिसे अपना दामन थमा देता है फिर उससे वह दामन नहीं छुड़ाता। वह जिसे एक बार अपनी पनाह (शरण) में ले लेता है फिर कभी उससे बेवफ़ाई नहीं करता। श्री गुरु अर्जुन देव जी लिखते हैं, 'गुरु मेरै संगि सदा है नाले॥'[134]

ऐसा मुर्शिद जिसे अपना मुरीद (शिष्य) बना लेता है उसके अन्दर अपना नूरी स्वरूप रख देता है जो पल भर के लिये भी मुरीद से जुदा नहीं होता। आप फ़रमाते हैं, 'बिखड़े दाउ लंघावै मेरा सतिगुरु॥'[135] ऐसा सतगुरु अन्दर और बाहर हर हालत में मुरीद का मददगार होता है। गुरु नानक साहिब की वाणी है, 'सजण सेई नालि मै चलदिआ नालि चलंन्हि॥ जिथै लेखा मंगीऐ तिथै खड़े दिसंनि॥'[136]

मौलाना रूम फ़रमाते हैं:

पीर रा बगुज़ीं किह् बे पीर ईं सफ़र,
हस्त बस पुर आफ़्तो-ख़ौफ़ो-ख़तर।[137]

मुर्शिद का दामन पकड़ ले क्योंकि बिना मुर्शिद के यह सफ़र मुसीबतों और ख़तरों से भरा हुआ है।

कामिल मुर्शिद हर रूहानी मंज़िल में मुरीद का हाथ थामकर रखता है। वह क़दम-क़दम पर उसकी रहनुमाई करता है और जहाँ-जहाँ कर्मों का हिसाब माँगा जाता है, वहाँ ख़ुद उसका ज़ामिन (ज़िम्मेवार) बनकर उसे वहाँ से पार ले जाता है। जिस्म मुरीद नहीं है और न ही मुर्शिद जिस्म है। मुरीद के अन्दर सोई हुई रूह असल मुरीद है और मुर्शिद के अन्दर जागी हुई रूह असल मुर्शिद है। कोई मुर्शिद जिस्मानी तौर पर हमेशा किसी मुरीद के साथ नहीं रह सकता। वह सिर्फ़ रूहानी तौर पर ही ऐसा कर सकता है।

मौलाना रूम कहते हैं:

पुर्रो-मालामाल अज़ नूरे-हक़्क़ अस्त,
जामे-तन बशिकस्त ओ नूरे-मुतलक़ अस्त।[138]

वह (मुर्शिद) अल्लाह-तआला के नूर से माला-माल है। जिस्म का जाम टूट गया है, पर वह सरासर नूर की सूरत में मुरीद के साथ है।

ख़्वाजा हाफ़िज़ कहते हैं:

ब-इश्क़ ज़िंदा बुवद जाने-मर्दे-साहिब-दिल।[139]

भाव: साहिबे-दिल (मुर्शिद) की रूह ख़ुदा के इश्क़ से ज़िन्दा हो चुकी होती है।

सरमद ख़बरदार कर रहा है कि किसी कच्चे या अधूरे मुर्शिद का मुरीद मत बनना। सिर्फ़ ऐसे कामिल दरवेश का मुरीद बनना जिसका ज्ञान सच्चा हो, जिसकी वफ़ा सच्ची हो और जो पल-पल, घड़ी-घड़ी तेरी हिफ़ाज़त (रक्षा) करने की ताक़त रखता हो।

सरमद कहता है – ऐ सरमद, तुझे उसने इश्क़ का जाम पिलाकर मदमस्त कर दिया। उसने तुझे पहले ऊँचा उठाया फिर नीचे गिरा दिया। तू चाहता था कि तू होशियार रहे और ख़ुदा की बन्दगी करे। मगर उन्होंने तुझे बेख़ुद और बुत-परस्त (मूर्ति-पूजक) बना दिया। *(रुबाई 127)*

सरमद इशारा करता है कि मुर्शिद ने इश्क़ का जाम पिलाकर उसे दीन और दुनिया से बेख़बर कर दिया। मुर्शिद के जाम ने उसे इश्क़ में ऊँचा और दुनिया में मिसकीन (दीन-हीन) कर दिया। सरमद चाहता था कि वह अक़्लमन्दी और होशियारी से ख़ुदा की इबादत करे मगर वह इश्क़ की मस्ती में बेख़ुद (मस्त) होकर मुर्शिद की मुहब्बत में खो गया। यहाँ 'बुत-परस्ती' का मतलब गुरु के देह-स्वरूप का प्रेम है। इश्क़ के जाम से भाव नाम के नशे से है। सरमद समझाता है कि अक़्लमन्दी और चालाकी से कुछ हासिल नहीं होता। जो कुछ भी मिलता है मुर्शिद से इश्क़ और उसके द्वारा पिलाये गए नाम के जाम से मिलता है।

ख़्वाजा हाफ़िज़ कहते हैं:

अज़ आस्ताने-पीरे-मुग़ां सर चिरा कशम,
दौलत दरीं सरा ओ कशायश दरीं दर अस्त।[140]

मैं पीरे-मुग़ां (साक़ी यानी मुर्शिद) की चौखट से सिर क्यों हटाऊँ, रूहानी दौलत इसी घर में है और कशिश (खींच) इसी दर में है।

सरमद कहता है – तुझे जहाँ भी गुलाब से चेहरे वाला साथी मिल जाये, तू उसके क़दमों पर सजदा कर और शुक्राने की नमाज़ गुज़ार। तू आजिज़ी (नम्रता) की शराब पी ताकि तुझे अन्त में अपनी ग़फ़लत के कारण दुःख न उठाना पड़े। *(रुबाई 155)*

'जहाँ भी' से सरमद का मतलब है कि तू मुर्शिद की क़ौम, मज़हब, मुल्क, नस्ल वग़ैरह को न देख। 'गुलाबी चेहरे' से भाव है कि मुर्शिद वह है जिसके चेहरे पर ख़ुदा का नूर जलवागर हो। सरमद ख़बरदार करता है कि ख़ुशक़िस्मती से, ख़ुदा की रहमत से अगर ऐसे मुर्शिद की सोहबत हासिल हो जाये तो तू जाति-पाँति, क़ौम, नस्ल, इल्म, अक़्ल, दौलत और पदवी का

अहंकार त्यागकर मुर्शिद की शरण में जाने की कोशिश कर। अपने आपको बिना शर्त उसके हवाले कर दे। जब मुर्शिद से ख़ुदा की इबादत का सही ढंग हासिल हो जाये तो ग़फ़लत को त्यागकर पूरी सावधानी और तन-मन से मुर्शिद द्वारा समझाये गए रूहानी अभ्यास में लग जा। नहीं तो आख़िर में पछताना पड़ेगा।

सरमद कहता है – अगर तुझे उस नाम की शराब की तलाश है जो तुझे दिली-राहत (चैन) पहुँचाये। अगर तू दुनिया से आज़ादी दिलाने वाली शराब चाहता है तो दीनो-दुनिया छोड़कर दोस्त (मुर्शिद) का दामन थाम ले और जीते-जी किसी भी हालत में उसका दामन न छोड़। *(रुबाई 293)*

सरमद कहता है – तू सांसारिक प्राप्तियों से ख़ुश न हो; मुझे इनकी कोई परवाह नहीं; साक़ी और जाम के बिना कोई सच्चा दोस्त नहीं है, तू शराब की सुराही सदा हाथ में रख। *(रुबाई 159)*

सरमद इशारा कर रहा है कि दुनिया और इसकी प्राप्तियों में सच्चा सुख नहीं है क्योंकि सिवाय ख़ुदा के दुनिया की हर चीज़ फ़ानी (नाशवान) है।[141] बिना मुर्शिद और कलमे की शराब के इनसान का कोई सच्चा साथी नहीं है। शराब की सुराही सदा हाथ में रखने से, सरमद का भाव हर पल मुर्शिद के बताये हुए ज़िक्र (सिमरन), तसव्वुर (ध्यान) और कलमे से जुड़े रहना है।

सरमद कहता है – ऐ प्यारे, इस मयख़ाने में तू उस महबूब साक़ी से दूर न जा। तू गुलाबी गालों वाले साक़ी के बिना न रह। यह जाम जिसमें सारा जहान नज़र आता है, हर किसी के लिये नहीं है। तू इस सच्चे धन से अचेत न हो। *(रुबाई 170)*

सरमद नसीहत करता है कि तू कभी भी मुर्शिद और उसकी सोहबत से दूर न हो। 'गुलाबी गालों वाले साक़ी' से भाव उस मुर्शिद से है जिसमें ख़ुदाई नूर जलवागर है। इस रुबाई में प्रयोग किये गए फ़ारसी वाक्यांश 'जामे-जहां-नुमा' का इशारा जामे-जमशीद से है जिसमें सारा जहान नज़र आता था। सरमद ने कुछ दूसरी रुबाइयों में भी कहा है कि जमशीद के प्याले में तो सिर्फ़ यह दुनिया नज़र आती थी, मुर्शिद से मिले नाम का जाम पीने

से तो दोनों जहानों की असलियत समझ आ जाती है और इनसान ज़िन्दगी और मौत की क़ैद से आज़ाद हो जाता है। मौलाना रूम फ़रमाते हैं:

जुर्रा-ए-मै रा ख़ुदा आं मी दिहद,
किह् बदू मस्त अज़ दो आलम मी रिहद।[142]

मुर्शिद यानी ख़ुदा द्वारा दिये गए शराब के एक ही घूँट से उसका मस्त (मुरीद) दोनों जहानों (ज़िन्दगी और मौत) से आज़ाद हो जाता है।

सरमद कहता है – मैं चाहता हूँ कि मेरा मुरझाया हुआ दिल गुलाब की तरह खिल जाये और मेरी रूह बुलबुल की तरह गीत गाने लगे। मुझे पतझड़ के दिनों में भी बहार का मज़ा आये और मैं गुलाब जैसे चेहरे वाले महबूब के पास बैठकर शराब का जाम पिऊँ। *(रुबाई 177)*

इस रुबाई में सरमद इशारा कर रहा है कि अगर कोई चाहता है कि उसके मुर्दा दिल में फिर से जान आ जाये, उसकी पतझड़ बहार में बदल जाये और उसकी मुर्दा रूह फिर से बुलबुल की तरह ख़ूबसूरत नग़मे गाने लगे तो उसे चाहिये कि मुर्शिद (महबूब) की सोहबत में नाम की शराब पिये। ख़िज़ाँ (पतझड़) के बहार में बदलने का मतलब यह भी है कि इस फ़ानी (नश्वर) दुनिया से छूट जाना और स्थायी जीवन पा लेना। यह मुक़ामे-हक़्क़ (सतलोक) में पहुँचकर ही सम्भव हो सकता है जहाँ रूह निरन्तर इलाही-सुरूर के जाम पीती है। फिर रूह दुःख, विनाश, परिवर्तन रूपी पतझड़ में भी ख़ुदा की सोहबत रूपी बहार का आनन्द लेती है। मौलाना रूम फ़रमाते हैं:

पायंदा शवी अज़ आं सक़ाहुम,
नै मरगो-फ़ना-ओ-इंतिक़ाले।[143]

भाव: तुम्हें अमर कर दिया जायेगा – परवरदिगार उन (रूहों) को पवित्र शराब पिलायेगा[144] – फिर न मौत होगी, न फ़ना और न ही तबदीली यानी जन्म-मरण का दुःख।

सरमद कहता है – पतझड़ में क़सम का तोड़ना मुश्किल है; साक़ी और शराब के वायदे को क़ायम रखना मुश्किल है; अगर ख़िज़ाँ में बहार

(महबूब) आ जाये तो भी क़सम को क़ायम रखना कितना मुश्किल है। *(रुबाई 182)*

सरमद यह सूक्ष्म भेद समझा रहा है कि हमेशा साक़ी और शराब का साथ निभाने की क़सम क़ायम रखना आसान नहीं है। जब दुःखों (पतझड़) की मार पड़ती है तो मुरीद का मुर्शिद और कलमे में विश्वास डोल जाता है। जब पतझड़ अचानक बहार में बदल जाये, अर्थात् ज़िन्दगी दुःखों की बजाय सुखों से भर जाये तो भी मुर्शिद और कलमे की तरफ़ ध्यान रखना मुश्किल हो जाता है। सरमद कहता है कि तू दुःखों से घबराकर मुर्शिद और कलमे का दामन न छोड़ और न ही सुखों व ऐशो-इशरत में खोकर मुर्शिद और कलमे की तरफ़ से अचेत हो। यह काम मुश्किल ज़रूर है, लेकिन रूहानियत में जब भी सफलता मिलेगी इस प्रण के पालन से ही मिलेगी।

साबत सिद्क़, क़दम अगेरे, ताईं रब्ब लभीवे हू।[145]

सरमद कहता है – हम बहुत ख़ुशक़िस्मत हैं कि यहाँ साक़ी साथ है और शराब का प्याला हाथ में है। ऐ ज़ाहिद (त्यागी), तू शराब की सुराही से नफ़रत क्यों करता है ? मेरे लिए यह हलाल है, हराम नहीं। *(रुबाई 210)*

सरमद इशारा कर रहा है कि सबसे बड़ी ख़ुशक़िस्मती यह है कि मुर्शिद और कलमे का साथ हासिल हो। बड़े-बड़े तपस्वी और त्यागी भी इस भेद को नहीं समझ सके कि जिस सुख-शान्ति की तलाश में वे जगह-जगह भटक रहे हैं और जिस ख़ुदा को पाने के लिये वे अनेक प्रकार के तप-त्याग और हठ-कर्मों का सहारा लेते हैं, वह जब भी मिलता है मुर्शिद और कलमे की सहायता से ही मिलता है। मुहम्मद साहिब हज़रत अली को नसीहत करते हैं :

या अली अज़ जुमला-ए-ताआते-राह,
बर गुज़ीं तू साया-ए-ख़ासे-इलाह।[146]

ऐ ख़ुदा के मुतलाशी (जिज्ञासु), तू हर क़िस्म के बाहरी रस्मो-रिवाज और शरीअत से ऊपर उठकर ख़ुदा के किसी ख़ास बन्दे (मुर्शिद) की पनाह ले।

सरमद कहता है – तू वहमों-भ्रमों से दुःखी न हो; तू बुरी और भली दुनिया की चिन्ता न कर, तू बिना साक़ी और जाम के किसी को दोस्त न बना। अगर दोस्त बनाने हैं तो दो-तीन से ज़्यादा न बना। *(रुबाई 277)*

सरमद समझा रहा है कि न तो इनसान के ख़याल उसके दोस्त हैं और न ही दुनियादार। इसलिये इनसान को चाहिये कि दुनियावी ख़यालों और दुनियादारों की भीड़ से मन को निकालकर ख़ुदा, ख़ुदा के कलमे (जाम) और मुर्शिद (साक़ी) को अपना सच्चा दोस्त बनाने की कोशिश करे। इस तरह सरमद इनसान को दुनियावी ख़यालों और रिश्तों की अनेकता से निकालकर ख़ुदा, कलमे और मुर्शिद की एकता में लाना चाहता है। ख़ुदा, मुर्शिद और कलमा तीन नहीं हैं, एक हैं और इस एक की मुहब्बत में ही इनसान की नजात का भेद छिपा हुआ है।

सरमद नसीहत करता है कि मन को हर क़िस्म के वहमों-भ्रमों से निकालकर और दुनिया के भले-बुरे की चिन्ता त्यागकर सिर्फ़ मुर्शिद और नाम से मुहब्बत करनी चाहिये। बिना मुर्शिद, नाम और ज़िक्रो-तसव्वुर (सिमरन और ध्यान) के कोई और चीज़ तेरी मुहब्बत के क़ाबिल नहीं है।

नाम की शराब

सरमद कहता है – ऐ बेख़बर, तू एक किताब की तरह अपनी हस्ती से अनजान है। तुझमें आयाते-इलाही (रब्बी निशानियाँ) छिपी हुई हैं यानी ख़ुदा तेरे अन्दर है मगर तू इस सच्चाई को नहीं जानता, जिस तरह प्याला अपने अन्दर पड़ी हुई शराब से बेख़बर है। *(रुबाई 24)*

सरमद इनसान को पैग़ाम देता है कि ऐ बेख़बर, तुझे अपनी हस्ती के असल जौहर की ख़बर नहीं है। मौलाना रूम फ़रमाते हैं :

> जाम अस्त तने-ख़ाकी, जान-अस्त मए-पाकी,
> जामे-दिगरम बख़्शद, क-ईं जामे-अलल दारद।[147]

यह जाम (इनसानी जिस्म) मिट्टी का बना हुआ है, मगर इसमें रूह ख़ालिस शराब है। जब यह घरौंदा टूट जायेगा तो ख़ुदा इसके बदले स्थायी ज़िन्दगी बख़्श देगा।

मतलब यह है कि तेरी ख़ुदी ने तेरे अन्दर पड़े अनमोल ख़ज़ाने को ढाँप रखा है, "ग़ाफिल अज़ गंजे किह् दर वै बुद दफ़ीं।"[148] यानी हम उस ख़ज़ाने से ग़ाफ़िल हैं जो ज़मीन (जिस्म) में दबा पड़ा है। इसलिये तू अपनी हस्ती की किताब को ध्यान से पढ़। तू अपने अन्दर झाँककर देख। जैसे ही तू अन्दर ध्यान से झाँकेगा और अपनी रूह को यकसू (एकाग्र) करके अन्दर की आँख खोलेगा, तुझे अपने अन्तर में दबा हुआ वह दुर्लभ और अमूल्य ख़ज़ाना मिल जायेगा। जब तुझे अपने अन्दर शब्द का ख़ज़ाना मिल जायेगा और परम आनन्द से भरी शब्द की शराब तेरे हाथ लग जायेगी तो तू मायावी पदार्थों और इन्द्रियों के भोगों का मुहताज नहीं रहेगा। तू भिखारी से शहंशाह बन जायेगा। सच्ची बात तो यह है कि तू ख़ुदा से मिलकर ख़ुद ख़ुदा हो जायेगा।

गुरु अर्जुन साहिब फ़रमाते हैं:

> पीऊ दादे का खोलि डिठा खजाना॥[149]

सच्ची बात तो यह है कि उस ख़ज़ाने को पाकर तू शहंशाह बन जायेगा। मतलब यह है कि तू ख़ुदा से मिलकर ख़ुद ख़ुदा हो जायेगा।

शैख़ फ़रीदुद्दीन अत्तार कहते हैं:

> तू बमअनी जाने-जुमला आलमे,
> हर दो आलम ख़ुद तुई बनिगरदमे।
> दर हक़ीक़त ख़ुद तुई, उम्मुल-किताब,
> ख़ुद ज़ि ख़ुद आयाते-हक़्क़ रा बा ज़ि याब।[150]

यानी ऐ इनसान, तू असल में सारे आलम की जान है। दोनों जहान तू ख़ुद आप है। सच तो यह है कि तू ख़ुद ही किताबों की माँ (क़ुरान) है। तेरे अन्दर अपने आप ख़ुदा की आयतें उतर रही हैं।

सरमद कहता है – ऐ परहेज़गार (ज़ाहिद, तपस्वी), तू परहेज़गारी छोड़ दे, तू शराब पी; शराब हराम नहीं, हलाल है, इसमें से हमा–ऊस्त की हालत पैदा होती है। *(रुबाई 31)*

सरमद ने अपने कलाम में बार–बार शराब का ज़िक्र किया है। इससे यह भ्रम पैदा हो सकता है कि सरमद सचमुच शराब का शौक़ीन था। मगर, दरअसल सरमद अंगूर की बेटी (बाहरी शराब) का नहीं, ख़ुदा के इश्क़, ख़ुदा के कलाम (शब्द) की शराब का मतवाला था। मौलाना रूम फ़रमाते हैं:

तुई मै, वाजिब आयद बादा ख़ुर्दन।[151]

यानी ऐ महबूब, तू शराब है, इसलिये (तेरे नाम की) शराब पीना मेरे लिए वाजिब (ज़रूरी) है। शैख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी फ़रमाते हैं:

दर हमा मज़हबो–मिल्लत मए–इश्क़स्त हलाल,
ज़ांकिह् बे ऊ नतवां दीद खुदा रा दीद।[152]

हर क़ौम और मज़हब में ख़ुदा के नाम की शराब हलाल (जायज़) है। क्योंकि इसके बग़ैर ख़ुदा का दीदार मुमकिन नहीं है।

इस इलाही कलमे, कलाम या शब्द को सूफ़ियों ने कई नामों से पुकारा है। इसे सुलतानुल–अज़कार (सिमरनों का बादशाह) कहा गया है, इसे सौते–सरमदी (अमर आवाज़) निदाए–आसमानी, निदाए–सुलतानी, ग़ैब की आवाज़ और आवाज़े–मुस्तक़ीम (सीधी आवाज़) भी कहा गया है।

सरमद ने शब्द या नाम को कौसरे–आबे–हयात या अमृत का सरोवर कहा है *(रुबाई 23)*। इसी शब्द को सौते–तअज़ीम (सत्कार योग आवाज़) भी कहा है *(रुबाई 142)*। और इसे ही आयाते–इलाही कहा है *(रुबाई 24)*। 'आयात' आयत का बहुवचन है। आयत का अर्थ है निशानी। 'इलाही' का अर्थ है दैवी या दिव्य। इसलिये सरमद ने शब्द को ख़ुदा से उतरनेवाली आयत, कलाम या कलमा कहा है। स्वामी जी महाराज ने शब्द–धुन को 'सौते–अज़ीज़' का नाम दिया है। आप कहते हैं:

हरचिह् गोयम शनौ बिगोशे-तमीज़,
रूह रा कश रसाँ ब-सौते-अज़ीज़।[153]

जो कुछ मैं कहता हूँ उसे कान देकर सुनो। अपनी रूह को खींचकर उस प्यारी आवाज़ में लगाओ। हज़रत शाह नियाज़ फ़रमाते हैं:

आलम अज़ सौते-ईं ज़ुहूर गिरिफ़त,
अज़ हुज़ूरश बिसाते-नूर गिरिफ़त।[154]

यानी सारा संसार सौत (शब्द) से ज़ाहिर हुआ है और सारा नूर उसी से प्रकट हुआ है। आप फिर फ़रमाते हैं:

हैफ़ दर बंदे-जिस्मे-दरमानी,
नशनवी सौते-पाके-रहमानी।[155]

अफ़सोस है कि जिस्म की क़ैद में बन्द होने के कारण इनसान रहमान (दयालु प्रभु) की निर्मल आवाज़ (शब्द) को नहीं सुन सकता।

ख़्वाजा हाफ़िज़ ने भी इसी बात को अपने अन्दाज़ में यूँ बयान किया है:

बनोश बादा ओ अज़मे-विसाले-जानां कुन,
सुख़न शनौ किह् ज़नंदत ज़ि बामे-अर्शे-सफ़ीर।[156]

इश्क़े-इलाही की शराब पी और महबूब (ख़ुदा) से विसाल का इरादा कर। कलमे की आवाज़ सुन जो तुझे अर्श (ऊँचे रूहानी मण्डलों) से पुकार रहा है।

मौलाना रूम कहते हैं:

हर रोज़ पंज नौबत बर दरे-ऊ,
हमी कौबंद कौसे-किबरियाई।
अगर उफ़तद बिगोशत सौते-आं क़ौस,
ज़ि किब्र ओ अज़ हसद याबे रहाई।[157]

हर रोज़ मालिक के द्वार पर पाँच नौबतें उसकी बड़ाई का नक़्क़ारा बजाती हैं। अगर उस नक़्क़ारे की आवाज़ हमारे कानों में पड़ जाये तो अहं और ईर्ष्या से छुटकारा हो जाये।

किसी महात्मा ने शब्द की एक आवाज़ का ज़िक्र किया है तो किसी ने पाँच सूक्ष्म रूहानी मण्डलों में अलग-अलग रूप में सुनाई देनेवाली शब्द की आवाज़ की ओर इशारा किया है। शब्द की आवाज़ एक ही है लेकिन अलग-अलग रूहानी मण्डलों की बनावट जुदा-जुदा होने के कारण यह आवाज़ उनमें अलग-अलग रूप में सुनाई देती है।

दुनिया के सब पीरों-फ़क़ीरों और दरवेशों ने इनसान को अपनी रूह को इस आवाज़ में जज़्ब करने का पैग़ाम दिया है। यह आवाज़ इलाही-जौहर भाव ख़ुदा की हस्ती का सार है। ख़ुदा कलमे (नाम, शब्द) का समुद्र है, पीर या साक़ी कलमे की लहर है और रूह कलमे की बूँद है। जब हम अपनी रूह रूपी बूँद को मुर्शिद रूपी लहर के हवाले कर देते हैं तो यह लहर रूह को साथ लेकर ख़ुदा रूपी समुद्र में समा जाती है।

सरमद इशारा कर रहा है कि "इसलाम में बाहरी शराब हराम है,"[158] मगर जिस शराब का वह ज़िक्र कर रहा है वह हलाल है क्योंकि उससे हर जगह उस ख़ुदावन्द करीम का नूर दिखाई देने लगता है। स्पष्ट है कि सरमद उस रूहानी शराब की तरफ़ इशारा कर रहा है जिससे रूह कसरत (अनेकता या द्वैत) से वहदत (एकता या अद्वैत) में पहुँच जाती है।

सरमद का कलाम है – ख़ुदा के नाम की शराब और जाम (प्याला) का भेद बहुत कम लोगों पर खोला जाता है। यह भेद हर मुर्दा दिल को नहीं बताया जाता। ऐ ज़ाहिद (तपस्वी), ख़ुदा की क़सम, तुझे ख़ुदा के बारे में कुछ मालूम नहीं। यह ख़याल नादान की कल्पना से परे है। *(रुबाई 54)*

इस रुबाई से भी साफ़ ज़ाहिर है कि सरमद किसी गुप्त शराब की बात कर रहा है; उस इलाही-शराब की जो ख़ुदावन्द करीम की रहमत से मिलती है और यह भेद सिर्फ़ ज़िन्दा-दिल इनसानों पर ज़ाहिर किया जाता है। जो लोग ख़ुदा की तरफ़ से बेख़बर हैं, वे मुर्दा दिल हैं। जो उसके इश्क़ और उसकी जुदाई में तड़पते हैं, वे असल में ज़िन्दा-दिल हैं और

उन्हीं पर ख़ुदाई-इश्क़ की शराब का भेद ज़ाहिर होता है। मौलाना रूम फ़रमाते हैं :

> आं शराबे-हक़्क़ ख़ितामश मुश्कनाब,
> बादा रा ख़ितमश बुवद गंदो-अज़ाब।[159]

यह ख़ालिस (पवित्र) इलाही शराब है जिसे कस्तूरी (इलाही कलमा) से मोहरबन्द किया गया है। इसे सिर्फ़ ख़ुदा के आबिद (भक्त) ही पीते हैं।[160] इसका नशा स्थायी है। इसके मुक़ाबले में दुनिया की शराब गन्दगी है जिस पर कभी न ख़त्म होनेवाले दुःखों की मोहर लगी हुई है।

सरमद कहता है – होशियार (सुचेत) वह है जो गुलाबी रंग के प्याले पीता है, उसे सब दुःखों से छुटकारा मिल जाता है। शराब पी क्योंकि 'होनी' का शिकारी तुझे अपने जाल में फँसाने के लिये तेरा पीछा कर रहा है। *(रुबाई 117)*

सरमद कहना चाहता है कि सच्चा ज्ञानी वह है जो नाम की शराब पीता है, क्योंकि इससे ही दुःखों से छुटकारा मिलता है। वह ख़बरदार करता है कि मौत का शिकारी तेरे पीछे लगा हुआ है, इसलिये तू नाम की शराब पीने (नाम की कमाई) में देरी न कर।

सरमद आगे कहता है – दोस्तो! मेरी एक बात ध्यान से सुनो। जब तक हो सके शराब के जाम (प्याले) पीते जाओ; जमशीद को जाम से ही दौलत मिली; यह सच्ची नसीहत है, इसे मत भुलाना। *(रुबाई 129)*

कहा जाता है कि सुलतान जमशीद के पास एक ऐसा प्याला था जिसमें उसे सारी दुनिया दिखाई देती थी। सरमद इशारा करता है कि जमशीद को तो जाम में बाहरी दुनिया दिखाई देती थी, तुम नाम की शराब का प्याला पियोगे तो तुम्हें सारी त्रिलोकी दिखाई देने लगेगी और तुम त्रिकालदर्शी बन जाओगे। जब तुम ख़ुदा के कलाम या नाम से जुड़ जाओगे तो समस्त खण्ड-ब्रह्माण्ड पुस्तक की तरह तुम्हारी रूह की आँख के सामने खुल जायेंगे।

सरमद कहता है – इश्क़ की शराब के सुरूर (आनन्द) के सामने दूसरा कोई सुरूर नहीं है। बिना दुःख उठाये ख़ुदा से मिलाप का नशा नसीब नहीं

होता। इस दुनिया के मयख़ाने में सिवाय रंजो-ग़म के और कुछ नहीं है। इसमें सुख-शान्ति का नामो-निशान तक नहीं है। *(रुबाई 113)*

सरमद समझाता है कि दुनिया दुःखों का घर है। यह न कभी सुखों की नगरी बनी है और न बन ही सकती है। सच्चा आनन्द ख़ुदा के विसाल में है और ख़ुदा का विसाल ख़ुदा के इश्क़ या नाम की शराब से हासिल होता है।

बादा-ए-इश्क़ अज़ ग़मे-जानाना अस्त,
हर किह् ख़ुद अज़ ख़्वेशतन बेगाना अस्त।[161]

इश्क़ की शराब से मुराद महबूब का ग़म (इश्क़) है। जिसने पी वह अपने आपको भूल गया।

सरमद कहता है – जो हर वक़्त तेरे तसव्वुर (ध्यान) में खोया रहता है, वह देखने में बेहोश नज़र आता है पर असल में बा-होश (सुचेत) होता है। इस इश्क़ का नशा निराला है, यह शराब हर दिल में है मगर दिखाई नहीं देती। *(रुबाई 123)*

इस रुबाई से साफ़ पता चलता है कि सरमद आन्तरिक शराब का ज़िक्र करता है। वह शराब हर इनसान के अन्दर है मगर दिखाई नहीं देती। बाहरी शराब पीने वाला इनसान बेहोश हो जाता है लेकिन अपने अन्दर नाम की मदिरा पीने वाला इनसान परम-चेतन अवस्था में पहुँच जाता है। इस मदिरा को पीने का सौभाग्य किसी विरले मनुष्य को ही प्राप्त होता है। ख़्वाजा हाफ़िज़ फ़रमाते हैं:

बर दरे-मैख़ाना रफ़्तन कारे-यकरगां बुबद,
ख़ुद-फ़रोशां रा बकूए मै-फ़रोशां राह नीस्त।[162]

यानी ख़ुदा के इश्क़ की शराब हर किसी को नसीब नहीं हो सकती। जहाँ उसके इश्क़ की शराब मिलती है, उस शराबख़ाने में जाना किसी पक्के इरादे और कामिल यक़ीन वाले इनसान का काम है। जिन लोगों ने अपने आपको दुनियावी चीज़ों के लिये बेच रखा है, उन्हें इस मयख़ाने का रास्ता नहीं मिलता।

सरमद कहता है – मैं ख़ुदा के साथ ज़ुहद (परहेज़गारी) का फ़रेब करूँ! ख़ुदा की क़सम, कभी नहीं। मैं ख़ुदा के सिवाय किसी और से कुछ माँगू! मेरी तौबा! मैं शहंशाह हूँ और मेरी उस 'मुल्के-फ़राग़त' (बन्धन मुक्त दुनिया) पर हुकूमत है। मैं पल भर भी शराबख़ाने से जुदा हो जाऊँ! कभी नहीं। *(रुबाई 232)*

सरमद समझा रहा है कि जो नाम के जाम भर-भर कर पीता है, उसे किसी क़िस्म की बाहरमुखी इबादत की ज़रूरत नहीं रहती। वह उस दरगाह में पहुँच जाता है जहाँ पहुँचकर किसी दूसरे के सामने हाथ फैलाने की ज़रूरत नहीं रहती। वह परिवर्तन, दुःख और विनाश के इस बन्धनकारी जगत से आज़ाद होकर उस मुल्के-फ़राग़त (बन्धनमुक्त दुनिया) या अमर दुनिया में पहुँच जाता है जहाँ दुःख, परिर्वतन और मौत का दख़ल नहीं है। मौलाना रूम कहते हैं:

> चूँ नीस्त शवी तमाम दर मै,
> आं साअते-हस्त दर कमाले।[163]

जब तुम अपने आपको ख़ुदा के नाम की शराब में जज़्ब कर दोगे तब तुम्हें वह ज़िन्दगी मिलेगी जो हमेशा क़ायम रहेगी यानी तुम जन्म-मरण के चक्कर से आज़ाद हो जाओगे। श्री गुरु गोबिन्द सिंह 'ज़फ़रनामा' में फ़रमाते हैं:

> बदिह साक़ीया साग़रे सुर्ख़ फ़ाम,
> किह् मारा बकार अस्त वक़्ते मुदाम।[164]

ऐ साक़ी, मुझे लाल रंग का प्याला दे, ताकि (उसे पीकर) मैं सदा की ज़िन्दगी हासिल कर सकूँ।

सरमद अपनी तरफ़ इशारा करता हुआ कहता है – जो भी मुझे मदमस्त शराबी कहता है वह सच कहता है; अगर कोई मुझे नेक-पाक कहता है तो यह झूठ है। *(रुबाई 29)*

सरमद कहता है – अगर तू चाहता है कि भिखारी न बना रहे और बादशाह बन जाये तो बेहतर है कि तू पारसाई (निर्मलता) का ख़याल छोड़

दे। शराब के आख़िरी क़तरे तेरे दिल (मन) को साफ़ कर देंगे। तू मयख़ाने से क़दम बाहर न रख। *(रुबाई 322)*

सरमद समझाना चाहता है कि अगर तू दर-बदर की ठोकरों से बचना चाहता है और ख़ुदा की दरगाह में पहुँचकर सच्चा बादशाह बनना चाहता है तो किसी दूसरे ढंग से मन को निर्मल करने का ख़याल छोड़ दे। मन जब भी निर्मल होगा, नाम की शराब से होगा। अगर तू मन को निर्मल करके उस परम निर्मल प्रभु में समाना चाहता है तो पल-भर के लिये भी दिल से नाम को जुदा न कर।

सरमद कहता है – वह हर जगह जहाँ से महबूब का ग़म मिलता है, सुकून भरी है। इसके बिना किसी को दुनिया में कामयाबी कैसे मिल सकती है। तू महबूब और शराब के जाम से ग़ाफ़िल न हो। अगर तू जमशीद की दौलत चाहता है तो यह जाम में है। *(रुबाई 41)*

सरमद समझा रहा है कि उस महबूबे-हक़ीक़ी के इश्क़ के बिना ज़िन्दगी किसी काम की नहीं। उस प्रियतम के प्रेम का दुःख भी सुखदायक है और दुनिया के सुख भी दुःखदायक हैं। वह नसीहत करता है कि तू सब चीज़ों को भुला दे मगर उस महबूब के इश्क़ और उसके नाम के जाम से कभी ग़ाफ़िल न हो। सुलतान जमशीद के पास ग़ैबी (रहस्यमय) दौलत थी। सरमद इशारा करता है कि तुम्हें जमशीद वाली सारी दौलत ख़ुदा के नाम के जाम से मिल जायेगी।

ख़्वाजा हाफ़िज़ कहते हैं:

> गरत हवास्त किह् चूँ जम बसिर्रे-ग़ैब रसी,
> बयाओ हमदमे-जामे जहां-नुमा मीबाश।[165]

अगर तुझे ख़्वाहिश है कि जमशीद की तरह ग़ैब (रहस्य) का भेद पा सके तो आ, और जामे-जहां-नुमा (मुर्शिद) का साथी बन जा।

सरमद कहता है – आसमान के मीना (शीशा, प्याला) से बेशुमार पत्थर गिर रहे हैं। यहाँ सुलह के पर्दे में जंग हो रही है, दोस्ती के पर्दे में दुश्मनी पल रही है। यहाँ बचाव का एक ही साधन शराब का जाम है क्योंकि पत्थर जैसा भी हो उसका शराब के प्याले पर कोई असर नहीं होता। *(रुबाई 276)*

सरमद इशारा करना चाहता है कि संसार रूपी आसमान से इनसान पर हर पल दु:खों और मुसीबतों के पत्थर गिर रहे हैं। संसार में हर तरफ़ धोखा ही धोखा है। सरमद ने दोस्ती के पर्दे में दुश्मनी की बात कही है। यह माया का देश है। माया ने क़दम-क़दम पर अनेक प्रकार के प्रलोभन रखे हैं। यहाँ अनेक प्रकार की सुन्दर वस्तुएँ और पदार्थ हैं। यहाँ बेशुमार सुन्दर शक्लें, मनोहर राग-रागिनियाँ और नाटक आदि हैं। यहाँ अनेक प्रकार के इन्द्रियों के लुभावने भोग हैं। यह सब प्रलोभन आत्मा को इस संसार में फँसाकर रखने के लिये माया द्वारा बिछाया गया महाजाल है। यह सब हमें अपने निज-घर और उसके परम आनन्द से दूर रखने के लिये माया द्वारा रचा गया चक्रव्यूह है। यह दोस्ती के पर्दे में भयंकर दुश्मनी है। इन सब धोखों से बचने का एक ही साधन ख़ुदा के इश्क़ या कलमे (नाम) की शराब है। जैसे शराबी के मन पर बाहर के हालात का कोई असर नहीं होता, उसी तरह ख़ुदा के नाम की शराब में मस्त आशिक़ दुनिया के दु:खों से बेनियाज़ होकर हमेशा ख़ुदा के विसाल में मग्न रहता है।

मौलाना रूम फ़रमाते हैं :

मस्त हमी बाश ओ मया सूए ख़ुद,
चूँ बख़ुद आई, तू मुक़ईयद शुदी।[166]

हमेशा (ख़ुदा के नाम की) शराब में मस्त रह। कभी होश में न आ। जब तू होश में आयेगा तो अपने आपको ज़ंजीरों में जकड़ा हुआ पायेगा।

सरमद कहता है – ख़ुदा की रहमत से मैं हमेशा ख़ुश रहता हूँ। मुझे जौ की रोटी में सन्तोष है और मेरा हौसला बुलन्द है। मुझे न दीन का डर है और न दुनिया का। मैं मयख़ाने के एक कोने में आज़ादी से बैठा रहता हूँ। *(रुबाई 206)*

इस रुबाई में मयख़ाने से भाव ख़ुदा की बन्दगी के लिये चुने हुए उस स्थान से है जहाँ दरवेश दीन और दुनिया से बेनियाज़ होकर, रूखी-सूखी रोटी खाकर ख़ुदा की इबादत में मस्त रहता है। सरमद ख़ुदा के इश्क़ और इबादत की शराब और उससे मिलने वाले इलाही सुरूर की तरफ़ इशारा करता हुआ हर किसी को यह सच्ची शराब पीने की प्रेरणा देता है।

सरमद एक अन्य रुबाई में कहता है:

अफ़सोस की बात है कि तू अपने आपसे आगाह (जानकार) नहीं है। तू अपना बुरा चाहने वाला है। अपना भला चाहने वाला नहीं है। तू ग़फ़लत के ख़ुमार (नशे) से बेहोश है। तू सुबह की शराब (सुबह-सवेरे उठकर नाम का रस-पान करना) से वाक़िफ़ नहीं है। *(रुबाई 304)*

उपरोक्त रुबाइयों में सरमद किस शराब की ओर इशारा कर रहा है?

1. उस शराब की ओर जो सबके अन्दर है मगर दिखाई नहीं देती।
2. उस शराब का भेद ख़ुदा की दया-मेहर से मिलता है।
3. यह भेद मुर्शिद द्वारा सिर्फ़ ख़ुशक़िस्मत जीवों को मिलता है।
4. यह शराब बेहोश नहीं करती बल्कि अन्दरूनी तौर पर बाहोश बनाती है।
5. यह शराब पीने से आत्मा अज्ञानता की नींद से बेदार होकर परम चेतन अवस्था को प्राप्त कर लेती है।
6. यह शराब सब दु:खों को दूर करनेवाली है। इसमें इलाही-सुरूर या परम आनन्द भरा हुआ है।
7. यह शराब रूह को हर क़िस्म के बन्धनों से मुक्ति दिलाने वाली है।

इन सब बातों से पता चलता है कि सरमद ख़ुदा के इश्क़ और इबादत द्वारा अन्दर कलमे या शब्द के रूप में मिलने वाली शराब की ओर इशारा कर रहा है। इसे ख़ुदा के इश्क़ की शराब कहो, इबादत की शराब कहो, कलमे या नाम की शराब कहो या इलाही शराब कहो, बात एक ही है।

ख़ुदा का नूर और ज़िन्दा मरना

सरमद कहता है – जब तक तू मरना नहीं जानता, तू असल में ज़िन्दा नहीं है। लेकिन यह दर्जा कम हिम्मत वालों को नसीब नहीं होता। जब तक तू शमा की तरह नहीं जलेगा, तुझे अन्दरूनी प्रकाश प्राप्त नहीं होगा। *(रुबाई 135)*

सरमद ने इस रुबाई में फ़ारसी शब्दों 'नीस्त' और 'हस्त' का प्रयोग किया है। 'नीस्त' का अर्थ है, फ़ना हो जाना या मर जाना। 'हस्त' का अर्थ है, ज़िन्दा हो जाना या अमर हो जाना। सरमद यहाँ यह इशारा कर रहा है कि बक़ा फ़ना में है यानी स्थायी ज़िन्दगी मौत में है। यहाँ सरमद क़ुदरती मौत की बात नहीं कर रहा। अगर क़ुदरती मौत के बाद ख़ुद-बख़ुद लाफ़ानी ज़िन्दगी मिल जाये तो इनसान को जीते-जी रूहानी अभ्यास की ज़रूरत नहीं है। सरमद इशारा कर रहा है कि जीते-जी मरने के रूहानी अभ्यास से ही अमर जीवन प्राप्त होता है। वह साफ़ तौर पर ख़बरदार करता है कि यह काम कमज़ोर इरादे और कमज़ोर हिम्मत वाले लोग नहीं कर सकते। जो ख़ुदी (हौंमैं) को फ़ना करने की हिम्मत रखता है, जो रूहानी अभ्यास द्वारा रूह को आँखों के निचले हिस्से में से समेटकर आँखों के ऊपर के हिस्से में लाकर ख़ुदा के नूर में जज़्ब करने की हिम्मत रखता है, वही जीते-जी मरकर अमर जीवन हासिल कर सकता है। क़ुरान शरीफ़ में अल्लाह का फ़रमान है, "मर जाओ, ताकि फिर ज़िन्दा कर दिये जाओ।"[167] जिस आन्तरिक नूर का सरमद ने इशारा किया है उसे ख़ुदा का नूर कहो या कलमे का नूर कहो, एक ही बात है।

सरमद ने अपने कलाम में जगह-जगह इशारा किया है कि ख़ुदा का नूर हर जगह समाया हुआ है। जैसा कि क़ुरान शरीफ़ में फ़रमाया गया है, "अल्लाह ही के नूर से ज़मीन और आसमान की रोशनी है।"[168]

सरमद कहता है – मेरे मन की लाल मणि में ख़ुदा का नूर समाया हुआ है। यही नूर समुद्र के मोती में भी है और यही पत्थर में से पैदा होनेवाली चिनगारी में भी है। कितनी विचित्र और आश्चर्यजनक लीला है कि वह नूर सबमें है लेकिन सब उससे ग़ाफ़िल हैं। *(रुबाई 44)*

मोती, पत्थर और मन तीनों में नूर की ओर इशारा करते हुए सरमद समझा रहा है कि ख़ुदा का नूर सिर्फ़ इनसान के अन्दर ही नहीं है, बेजान चीज़ें भी उस नूर से ही रोशन हैं, लेकिन हैरत (अचम्भा) तो यह है कि ख़ुदा का नूर सबमें है मगर सबके सब उससे बेख़बर हैं।

प्रश्न यह उठता है कि मन में समाये हुए नूर को कैसे ज़ाहिर किया जाये? सरमद कहता है कि इसके लिये ज़िन्दा मरना ज़रूरी है। सरमद ही

नहीं हर सूफ़ी दरवेश ने अपने कलाम में ज़िन्दा मरने की ज़रूरत पर ज़ोर दिया है। 'ज़िन्दा मरना' में एक विरोधाभास छिपा हुआ है। जो ज़िन्दा है वह मुर्दा नहीं हो सकता, जो मुर्दा है वह ज़िन्दा नहीं हो सकता। फिर इस 'ज़िन्दा मरना' का असल भाव क्या है? वास्तव में ज़िन्दा मरना वह रूहानी अभ्यास है जिसके ज़रिये अभ्यासी अपनी चेतन सत्ता को आँखों के निचले हिस्से में से समेटकर आँखों के पीछे और उनके मध्य में स्थिर कर लेता है। इसे यकसूई या समाधि की अवस्था भी कहा गया है। इसमें ज़िन्दगी और मौत का अमल (प्रक्रिया) इकट्ठा चलता है। शरीर के आँखों के निचले हिस्से में से रूह के सिमट जाने के कारण आँखों से नीचे का हिस्सा सुन्न या मुर्दा हो जाता है, परन्तु आँखों के ऊपर वाला हिस्सा जाग्रत, चेतन या ज़िन्दा होता है। हज़रत मुहम्मद साहिब हदीस में फ़रमाते हैं:

> मूतु क़ब्ल अंतमूतु।[169]

यानी मरने से पहले मरो। हकीम सनाई फ़रमाते हैं:

> बमीर ऐ दोस्त पेश अज़ मरग अगर मी ज़िन्दगी ख़्वाही।[170]

ऐ दोस्त! मरने से पहले मर जा, अगर तू ज़िन्दगी चाहता है।
गुलशने-राज़ में लिखा है:

> फ़ानी शौ अगर बक़ात बायद,
> बगुज़र ज़ि ख़ुद अर ख़ुदात बायद।[171]

अगर तू बक़ा (अमरत्व) चाहता है तो फ़ानी (मुर्दा) हो जा। अगर तू ख़ुदा से विसाल का ख़्वाहिशमन्द है तो अपनी ख़ुदी (हौंमैं) को मिटा दे।

मौलाना रूम ने हज़रत मुहम्मद साहिब के इस कथन की ओर इशारा किया है:

> बहरे-ईं गुफ़्त आं रसूले-ख़ुश प्याम,
> रम्ज़े-मूतु क़ब्ल मूतु या किराम।

हमचुनांकिह् मुर्दा अम मन क़ब्ले-मौत,
ज़-आं तरफ़ आवुर्दा अम ईं सीतो-सौत।[172]

रसूल ने इशारा देते हुए फ़रमाया है – ऐ नेक इनसानो! मरने से पहले मर जाओ। जैसा कि मैं मरने से पहले मुर्दा हूँ और उस तरफ़ (रूहानी मण्डलों) से तुम्हारे लिए (ख़ुदा का) पैग़ाम लाया हूँ।

नै चुनां मरगे किह् दर गूरे-रवी,
मरगे-तबदीली किह् दर नूरे-रवी।[173]

यह ऐसी मौत नहीं है कि तू क़ब्र में चला जाये। बल्कि यह ऐसी मौत है कि तू नूर (की दुनिया) में पहुँच जायेगा यानी जीते-जी मर कर लाफ़ानी (अमर) ज़िन्दगी हासिल कर लेगा।

सूफ़ी दरवेश समझाते हैं कि जब तक रूह आँखों के निचले हिस्से में क़ैद है, इसे हक़ीक़त (सत्य) या इलाही नूर का अनुभव नहीं हो सकता। इसे इस नूर को देखने के लिये आँखों के निचले हिस्से की क़ब्र या क़ैद से आज़ाद होकर आँखों से ऊपर के रूहानी देश में दाख़िल होना पड़ेगा। हज़रत सुलतान बाहू कहते हैं:

मर गए जो मरने थीं पहले, तिन्हां रब्ब नूं पाया हू।[174]

एक और रुबाई में सरमद नाटकीय अन्दाज़ में कहता है: मेरे इश्क़ का ढंग निराला है। मेरा हाल 'तूर के सुख़न' से जुदा है। मैं हक़ीक़त के साक्षात् दीदार का मतवाला हूँ। मेरी कल्पना और मेरा चिन्तन जुदा है। *(रुबाई 33)*

सरमद की बात समझने के लिये हज़रत मूसा की कहानी को समझना ज़रूरी है। हज़रत मूसा ने तूर पर्वत पर ख़ुदा के दीदार की प्रार्थना की तो ख़ुदा की आवाज़ आई 'लन् तरानी'[175] कि तू मेरा जलवा बरदाश्त नहीं कर सकेगा। सरमद ख़ुदा से दुआ करता है कि मेरे अन्दर जल रही इश्क़ की आग मूसा की चाह से जुदा है। मेरी बन्दगी (फ़िक्र) और मेरी रूह की उड़ान जुदा है। मैं तेरी हक़ीक़ी सूरत के अन्दरूनी दीदार का

आशिक़ हूँ। सरमद कहना चाहता है कि ख़ुदा के नूर को अपने अन्दर ज़िक्र (सिमरन) और तसव्वुर (ध्यान) के द्वारा ही देखा जा सकता है। ज़िक्र और तसव्वुर के इस रूहानी अभ्यास के ज़रिये ही रूह उड़ान भरकर उन ऊँचे मण्डलों में जा सकती है, जहाँ ख़ुदा का नूर साफ़ दिखाई देता है।

ज़िक्रो-तसव्वुर

(सिमरन और ध्यान)

सरमद कहता है – अगर तू चाहता है कि तुझ पर उसकी दया-मेहर बनी रहे और तुझे दोनों जहानों में शान्ति मिले तो तू उसके ख़याल (ध्यान) को अपनी पूँजी बना ले। तू उसके प्यार में डूबा रह क्योंकि इससे ही उस लोक (परलोक) में लाभ होगा। *(रुबाई 85)*

इस रुबाई में सरमद ने रूहानी अभ्यास में तसव्वुर (ध्यान) के महत्त्व पर ज़ोर दिया है। हम वहाँ होते हैं जहाँ हमारा ध्यान होता है। हम जिसका ध्यान करते हैं उसका ही रूप हो जाते हैं। कुल-मालिक का ध्यान ही हमारा सच्चा धर्म और सच्चा कर्म है। आज हमारी हालत यह है कि हमारा ध्यान दुनिया के शक्लों-पदार्थों में बुरी तरह फँसा हुआ है। हमारे अन्दर यह ध्यान इस क़दर घर कर चुका है कि यह ध्यान हमें बार-बार इनकी तरफ़ खींचकर ले जाता है।

संसार और इसके दुःखों से बँधे रहने का कारण ही हमारा ध्यान है। सरमद समझाता है कि अगर ख़ुदा की रहमत चाहते हो, अगर दुःखों से छुटकारा हासिल करना चाहते हो, अगर सच्चा और स्थायी सुख हासिल करना चाहते हो तो मुर्शिद के तसव्वुर (ध्यान) का व्यापार करो। यह ध्यान तुम्हें झूठी दुनिया के ध्यान से निकालकर उस सच्चे ख़ुदावन्द करीम के ध्यान में जज़्ब कर देगा। इस वक़्त तुम दुनिया के ध्यान में फँसे हुए हो। जब उस महबूबे-हक़ीक़ी के ध्यान में खो जाओगे तो उसका रूप बन जाओगे।

ख़्वाजा हाफ़िज़ कहते हैं:

दुआए-सुबहो-शामे-तू कलीदे-गंजे-मक़सूद अस्त,
बा ईं राहो-रविश मीरौ किह् बा दिलदार पैबंदी।[176]

तेरी सुबह और शाम की दुआ यानी ख़ुदा का ज़िक्र (सिमरन) और तसव्वुर (ध्यान) ख़ुदा के ख़ज़ाने की चाबी है। इसी रास्ते और लगातार ज़िक्रो-तसव्वुर से तेरा महबूबे-हक़ीक़ी से मिलाप हो जायेगा।

क़ुरान शरीफ़ में फ़रमाया है:

बेशक रात का उठना (मन को) ख़ूब ज़ेर (क़ाबू) करता है और उस वक़्त दुआ भी ठीक (दिल से) निकलती है यानी भजन-सिमरन में मन लगता है।[177]

फिर फ़रमाया है:

अपने परवरदिगार का नाम हर समय लेते (सिमरन करते) रहो और दिलो-जान से उसी के हो जाओ।[178]

सरमद का कलाम है – बिना महबूब के फ़िक्र और ख़याल के सुख नहीं मिल सकता। दुनिया की धन-दौलत और मान-बड़ाई की चिन्ता न कर। अपना दिल और जान उस दिलबर के हवाले कर दे। इस पायेदार (स्थायी) दौलत से दूर न रह। *(रुबाई ९६)*

सरमद कहता है, 'बे फ़िक्रो-ख़याले-दोस्त राहत न बुवद।' यहाँ फ़िक्र का अर्थ ज़िक्र या सिमरन है और ख़याल का अर्थ तसव्वुर या ध्यान है। वह कहता है कि तुझे जब भी सच्चा सुख मिलेगा महबूब के ज़िक्र और तसव्वुर से मिलेगा। सरमद आगे कहता है कि तू दुनिया की दौलत और मान-बड़ाई का अन्देशा छोड़ दे। 'अन्देशा' का अर्थ भी फ़िक्र, चिन्तन या ध्यान है। सरमद इशारा करता है कि दुनिया का सिमरन और ध्यान दुःखदायक है, जब कि परमात्मा के नाम का सिमरन और ध्यान सुखदायक है। सरमद अपने दिल और जान को महबूब के हवाले कर देने की नसीहत करता है। 'ख़ुद

रा ब-ख़ुदा गुज़ार ओ बगुज़र ज़ि हमा' यानी सबकुछ छोड़कर ख़ुदा का बन जा *(रुबाई 73)*। मतलब यह है कि तू महबूब के ज़िक्र और तसव्वुर में इस तरह खो जा कि तेरी रूह उसमें समाकर उसका (ख़ुदा का) रूप हो जाये। वह कहता है कि यही सच्ची दौलत है जिससे कभी बेख़बर नहीं होना चाहिये।

मौलाना रूम कहते हैं:

> सामाए-अहदे अज़ल रा याद कुन,
> रख़शाए-फ़ितरत चू दारी बाद कुन।[179]

अज़ल (आदि) के उस वादे को याद कर जो तूने ख़ुदा के साथ किया था कि मैं तुझे पल-पल याद करूँगा। तू क़ुदरती तौर पर (ज़िक्र करने की) चिनगारी (अपने दिल में) रखता है। उसको हवा दे यानी उसका लाभ उठा।

आप आगे कहते हैं:

> हर गहत निस्यिां बताज़द ज़िक्र गू,
> ता नमानद ग़ैरे-ज़िक्रो-फ़िक्रे-हू।[180]

जिस वक़्त भी भूल (ग़फ़लत) तुझ पर हमला करे, तू ज़िक्र (सिमरन) कर ताकि अल्लाह-तआला के ज़िक्रो-फ़िक्र (सिमरन और ध्यान) के सिवाय तुझे कुछ भी याद न रहे।

क़ुरान शरीफ़ में फ़रमाया गया है: "वज़कुर-रब्बक इज़ा नसीत।"[181] याद कर अपने ख़ुदा को जिस वक़्त तू भूला। मतलब यह कि उसकी याद से कभी ग़ाफ़िल न हो।

सुलतान बाहू भी कहते हैं:

> यार यगाना मिलसी तां, जे सिर दी बाज़ी लाएं हू।
> इश्क़ अल्ला विच हो मस्ताना, हू हू सदा अलाएं हू।
> नाल तसव्वर इस्म अल्ला दे, दम नूं क़ैद लगाएं हू।
> ज़ाते नाल जे ज़ाती रल्ले, तद बाहू नाम सदाएं हू।[182]

बाहू=बा+हू से बना है जिसका अर्थ है जिसके साथ हू (ख़ुदा) हो या जो हू के साथ हो। आप कहते हैं कि तेरा ख़ुदा से तभी मिलाप होगा जब तू सर की बाज़ी लगायेगा। सर की बाज़ी लगाने का यह अर्थ है कि तू ख़ुदा के इश्क़ में मस्ताना हो जा। ख़ुदा के इश्क़ में मस्ताना होने का भाव यह है कि तू साँस-साँस ख़ुदा का ज़िक्र (सिमरन) कर और ख़ुदा के इस्म यानी नाम, शब्द या कलमे के तसव्वुर (ध्यान) की मदद से अपनी रूह को आँखों के पीछे खड़ा कर ले। इस तरह तेरा ख़ुदा से विसाल हो जायेगा और तू सच्चे लफ़्ज़ों में बाहू (जो ख़ुदा से मिल चुका हो) कहलाने का हक़दार हो जायेगा।

सरमद समझाता है – आख़िरी वक़्त दुनिया तेरा साथ नहीं देगी। तू ख़ुदा की राह पर चलने की कोशिश कर। ख़ुदा ही मेहरबान महबूब है। तू पूछता है कि महबूब की मंज़िल कैसे मिलेगी? मैं कहता हूँ कि उस तक पहुँचने का यही तरीक़ा है। *(रुबाई 173)*

'ख़ुदा की राह पर चलने की कोशिश' से सरमद का इशारा ख़ुदा की मुहब्बत और इबादत की तरफ़ है। इस रुबाई को पढ़ते वक़्त उन रुबाइयों को ध्यान में रखना चाहिये जिनमें सरमद ने इस बात पर ज़ोर दिया है कि ख़ुदा की मुहब्बत, ख़ुदा की इबादत और उसके ज़िक्र (सिमरन) और तसव्वुर (ध्यान) के बिना ख़ुदा से मिलाप नामुमकिन है। यहाँ सरमद इशारा कर रहा है कि आख़िरी वक़्त दुनिया और दुनिया की मुहब्बत काम नहीं आयेगी। आख़िरी वक़्त कोई चीज़ किसी की मदद नहीं कर सकती। सिर्फ़ ख़ुदा, मुर्शिद और ख़ुदा का कलमा ही उस वक़्त सच्चे दोस्त और मददगार साबित होते हैं।

सरमद कहता है – तू अपने दिल को महबूब की याद से ख़ुश रख। इस तरह तुझे दुःखों और चिन्ताओं से छुटकारा मिल जायेगा। जो दोस्त दिन-रात तेरा साथ निभाएँ, तू ख़ुशी और ग़मी में हमेशा उन्हें याद रख। *(रुबाई 261)*

सरमद इशारा कर रहा है कि ख़ुदा का ज़िक्र और तसव्वुर मन को सच्ची शान्ति देता है। इससे इनसान दुनिया के दुःखों से ऊपर उठ जाता है। 'यारान किह् शबो-रोज़ रफ़ीक़त बूदन्द।' यानी उन दोस्तों को हमेशा याद रख जो दिन-रात तेरा साथ निभाते हैं। कोई भी इनसान दिन-रात किसी के साथ कैसे रह सकता है। सरमद का इशारा ख़ुदा और उसके नाम या ज़िक्रो-तसव्वुर

की तरफ़ है। ये इनसान के ऐसे सच्चे साथी हैं जो कभी इसका साथ नहीं छोड़ते। ये ऐसे साथी हैं जो दिन-रात और अन्दर-बाहर हमेशा इसका साथ निभाते हैं। ये ऐसे साथी हैं जो हर मुश्किल में साथ देते हैं और आख़िर इसे सब मुश्किलों और मुसीबतों से आज़ाद करके इसे अविनाशी सुखों की दुनिया में ले जाते हैं।

उपरोक्त भाव को आगे बढ़ाते हुए सरमद कहता है – मैं उस महबूब के इश्क़ के दायरे में क़ैद हूँ। हज़ार-हज़ार शुक्र है कि मैं हरदम उसकी याद में ख़ुश रहता हूँ। मेरे दिल में दीन और दुनिया की कोई ख़्वाहिश बाक़ी नहीं रही। मैंने अपने कन्धे से यह भारी बोझ उठाकर फेंक दिया है। *(रुबाई 188)*

सरमद समझा रहा है कि जो हरदम ख़ुदा के ज़िक्र (सिमरन) या ख़ुदा की याद में मस्त रहता है, वह ज़िन्दगी के हर क़िस्म के बोझ से मुक्त हो जाता है। कबीर साहिब कहते हैं:

सुमिरन से सुख होत है, सुमिरन से दुख जाय।
कह कबीर सुमिरन किये, साईं माहिं समाय॥[183]

ख़ुदा के नाम का सिमरन सब दुःखों को नाश करनेवाला है। ख़ुदा के नाम का सिमरन सब सुखों की खान है क्योंकि नाम के सिमरन द्वारा आत्मा परमात्मा में समाकर उसका रूप हो जाती है।

क़ुरान शरीफ़ में ख़ुदा का फ़रमान है:

अपने परवरदिगार को ज़ोर-ज़ोर की आवाज़ से नहीं, बल्कि अपने दिल ही में सुबह-शाम याद करते रहो।[184]

सरमद कहता है – महबूब के इश्क़ के ग़म से दिल ज़िन्दा हो जाता है। इससे लाफ़ानी ज़िन्दगी हासिल हो जाती है। अगर तू महबूब को गले लगाना चाहता है तो एक पल के लिये भी उसके ख़याल से जुदा न हो। *(रुबाई 151)*

सरमद इशारा कर रहा है कि दुनिया की मुहब्बत में खोया हुआ दिल मुर्दा है। सिर्फ़ वह दिल ज़िन्दा है जिसमें महबूब के विसाल की तड़प है। सरमद

समझा रहा है कि उस महबूबे-हक़ीक़ी से विसाल करके लाफ़ानी ज़िन्दगी हासिल करने का ज़रिया उस महबूब का ज़िक्र और तसव्वुर है। ख़ुदा के सच्चे आशिक़ को पल भर के लिये भी उसके ख़याल से जुदा नहीं होना चाहिये। जो कोई अपने आपको उसकी याद में मिटा देता है, उसे अमर जीवन हासिल हो जाता है और उसे फिर कभी भी जुदाई का ग़म नहीं सहना पड़ता।

ख़्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती फ़रमाते हैं:

विसाले-हक़्क़ तलबी हमनशीने-नामश बाश,
बिबीं विसाले-ख़ुदा दर विसाले-नामे-ख़ुदा।
यकीं बदाँ किह् तू बा हक़्क़ निशस्ताए-शबो-रोज़,
चू हमनशीने-तू बाशद ख़याले-नामे-ख़ुदा।[185]

अगर ख़ुदा का विसाल (सतपुरुष के साथ अभेद होना) चाहता है तो उसके नाम का सिमरन कर, क्योंकि ख़ुदा के नाम का विसाल (मिलाप) ख़ुदा का ही विसाल है। अगर ख़ुदा के नाम का ख़याल तेरे साथ रहेगा यानी तू ख़ुदा के ज़िक्र (सिमरन) में हरदम खोया रहेगा तो तू यक़ीन कर कि तू दिन-रात ख़ुदा के साथ है।

सरमद अपनी एक अन्य रुबाई में अलग अन्दाज़ से कहता है कि जो दिल ख़ुदा के ग़म (ज़िक्रो-तसव्वुर) में गिरफ़्तार है, वह लोक और परलोक दोनों के ग़म से आज़ाद है। मुझे हर जगह वह एक हक़ीक़त व्यापक दिखायी दी। जिस शीशे में यह परछाईं दिखायी दे वह ख़ुदा की रहमत से मिलता है। *(रुबाई 100)*

बाबा फ़रीद का श्लोक है:

बिरहा बिरहा आखीऐ बिरहा तू सुलतानु॥
फरीदा जितु तनि बिरहु न ऊपजै सो तनु जाणु मसानु॥[186]

आप कहते हैं कि जिस दिल में ख़ुदा के विसाल की तड़प नहीं है, वह श्मशान भूमि की तरह मुर्दा और मनहूस है। जिस दिल में उस महबूब के इश्क़ की तड़प है, वह शहंशाह की तरह बुलन्द है।

दोनों दरवेश यह समझाना चाहते हैं कि ख़ुदा की मुहब्बत, उसकी याद और उसके तसव्वुर से ख़ाली इनसान जिस्मानी तौर पर ज़िन्दा होने के बावजूद रूहानी तौर पर मुर्दा या लाश की तरह है। गुरु अर्जुन देव जी कहते हैं:

> अति सुंदर कुलीन चतुर मुखि डिआनी धनवंत॥
> मिरतक कहीअहि नानका जिह प्रीति नही भगवंत॥[187]

चाहे कोई कितना ही सुन्दर, ऊँचे कुल से सम्बन्ध रखने वाला, चतुर, बुद्धिमान, ज्ञानी और धनवान क्यों न हो, बिना प्रभु की प्रीति के वह चलती-फिरती लाश के समान है।

सरमद का कलाम है – अगर तू नामो-निशान यानी मान-सम्मान चाहता है तो अँगूठी के नगीने की तरह एक जगह बैठ जा। तू पद-चिन्ह की तरह अपनी जगह से न हिल। रेगिस्तान में आँधी से उड़ने वाली रेत भी होती है और एक जगह स्थिर रहनेवाले पत्थर भी होते हैं। *(रुबाई 253)*

इस रुबाई में भी सरमद बहुत सूक्ष्म ढंग से मुकम्मल यकसूई (पूर्ण एकाग्रता) या समाधि की अवस्था का वर्णन कर रहा है। वह एकान्त की भी उपमा कर रहा है और एकाग्रता की भी। वह ध्यान को नगीने, पद-चिन्ह और चट्टान की तरह अडोल या स्थिर करने की नसीहत करता है। इससे सच्ची बड़ाई हासिल होती है। यह कहने की ज़रूरत नहीं कि सरमद दुनिया की मान-बड़ाई की बात नहीं कर रहा क्योंकि उसने अपनी अनगिनत रुबाइयों में संसार की नश्वरता पर बल देते हुए इसकी हर प्रकार की बड़ाई और प्राप्ति को झूठा और व्यर्थ कहा है। यहाँ नामो-निशान यानी बड़ाई का अर्थ आत्मा के परमात्मा से मिलाप की बड़ाई है जिसका साधन पूर्ण एकाग्रता है और जो ख़ुदा के नाम के ज़िक्र (सिमरन) और तसव्वुर (ध्यान) से हासिल होती है।

सरमद कहता है – मेरा मन पीड़ा से व्याकुल था। यह सुबह-शाम दु:ख से तड़पता रहा। अचानक मेरा ख़याल उस महबूब की तरफ़ चला गया जिससे मेरे दिल पर पड़े सब बोझ उतर गये और यह फूल की तरह हल्का हो गया। *(रुबाई 216)*

सरमद समझा रहा है कि दुनिया का ख़याल और तसव्वुर इनसान के मन पर दुःखों के भारी पहाड़ रख देता है जब कि ख़ुदा का ख़याल पल भर में इनसान के बोझिल मन को फूल की तरह हल्का करके इसे ख़ुदा के इश्क़ की ख़ुशबू से भर देता है। यहाँ दुनिया के ख़याल का मतलब दुनिया की मुहब्बत है। जिस तरह दुनिया झूठी और अधूरी है, उसी तरह इस दुनिया की मुहब्बत भी झूठी और अधूरी है। ख़ुदा सच्चा और पूर्ण है, उसका तसव्वुर भी सच्चा है क्योंकि यह तसव्वुर एक दिन उस सच्चे से मिला देता है।

सरमद कहता है – मैंने ख़याल ही ख़याल में सारी दुनिया को देखा जिससे मेरा मन शान्त हो गया और इस पर अच्छे-बुरे का असर पड़ना बन्द हो गया। यह गुण मैंने शीशे से सीखा है। *(रुबाई 226)*

सरमद यहाँ यह सूक्ष्म इशारा कर रहा है कि जब ख़ुदा के ज़िक्र और तसव्वुर द्वारा मन शान्त हो जाता है, तब इनसान को अपने अन्दर सारी कायनात दिखाई देने लगती है। फिर वह द्वैत से उपर उठ जाता है। जब तक इनसान द्वैत में क़ैद है, वह अमीरी-ग़रीबी और सुख-दुःख के बन्धन में बँधा हुआ है। जब रूह ख़ुदा के ज़िक्र और तसव्वुर के ज़रिये इस फ़ानी वजूद (नश्वर शरीर) के नौ द्वार पार करके आँखों के पीछे दसवें दरवाज़े में एकाग्र और स्थिर हो जाती है, तब यह देश-काल के सब बन्धनों से आज़ाद हो जाती है। हिलते हुए शीशे में अपना चेहरा दिखाई नहीं देता। जब मन का शीशा स्थिर हो जाता है तब उसमें अपना सच्चा स्वरूप दिखाई देने लगता है, और उस सच्चे क़ादिर का जलवा भी दिखाई देना शुरू हो जाता है। सरमद समझा रहा है कि मन और आत्मा की गाँठ खोलकर अपनी आत्मा की पहचान करने और आत्मा की पहचान द्वारा परमात्मा की पहचान करने का साधन परमात्मा के नाम का सिमरन और ध्यान है। हज़रत बू अली क़लन्दर फ़रमाते हैं:

होश दर दम दार ऐ मर्दे-ख़ुदा,
यक नफ़स यक दम मबाश अज़ हक़्क़ जुदा।
चूँ शवी फ़ानी तू अज़ ज़िक्रे-ख़ुदा,
राह याबी दर हरीमे-किबरिया।[188]

ऐ ख़ुदा के बन्दे, हर वक़्त होशियार रह, दम भर के लिये भी ख़ुदा (की याद) से जुदा न हो। जब तू ख़ुदा की याद (ज़िक्र, सिमरन) से उसमें फ़ना हो जायेगा तो ख़ुदा की दरगाह का रास्ता पायेगा।

अन्दरूनी आँख

सरमद कहता है – ख़ुदा को अक़्ल, तर्क और फ़लसफ़े के ज़रिये जान सकना नामुमकिन है। उसे दिल से जान सकना और आँखों से देख सकना असम्भव है। दीवाना दिल और दीवानी आँखें उसे ढूँढने में, देखने में और जानने में हैरान–परेशान हैं। *(रुबाई 273)*

सरमद समझा रहा है कि वह परम–सूक्ष्म, परम–चेतन, परम–तत्त्व मन, बुद्धि, कल्पना और चिन्तन की पकड़ से बाहर है। न बाहरी आँखें उसे देख सकती हैं, न गोश्त का बना हुआ दिल उसे महसूस कर सकता है। हज़रत बू अली क़लन्दर कहते हैं:

गर तुरा चश्मे–महब्बत वा शवद,
बर तू आं मअशूक़े–ख़ुद शैदा शवद।
बा तू नज़दीक अस्त आं जाने–जहाँ,
दर तू चूँ जान अस्त आं जाने–निहाँ।[189]

अगर तेरी मुहब्बत की आँख यानी अन्दरूनी आँख खुल जाये तो तू देखेगा कि वह महबूबे–हक़ीक़ी तुझ पर आशिक़ है। वह सारी कायनात का महबूब (ख़ुदा) तेरे नज़दीक है और तुझमें तेरी जान की तरह छिपा हुआ है। साईं बुल्लेशाह का कलाम है:

बुल्ला शौह असां थीं वख नहीं, बिन शौह थीं दूजा कख नहीं।
पर वेखण वाली अक्ख नहीं, ताहीं जान पई दुख सैह्न्दी ए।[190]

हम ख़ुदा को अपने आपसे दूर मानते हैं और उसकी जुदाई में तड़पते हैं क्योंकि हमारे पास आन्तरिक आँख नहीं जो ख़ुदा का नूर हर जगह देख

सके। इसलिये जो इनसान बाहरी आँखों और इस गोश्त के बने दिल से उसे देखना और समझना चाहता है वह हमेशा हैरान-परेशान रहता है। अन्दरूनी हक़ीक़त को देखने के लिये अन्दरूनी आँख की ज़रूरत है। उस रूहानी सच्चाई को सिर्फ़ रूह की आँख ही देख सकती है।

एक और रुबाई में सरमद कहता है – वह महबूब कभी मेहर करता है कभी क़हर (ज़ुल्म) ढाता है। वह हर पल सैंकड़ों रंगों में ज़ाहिर होता है। तू 'आग़ोशे-नज़र' (अन्दरूनी आँख) खोलकर उससे लिपट जा। वह कभी एक क़दम भी तुझसे जुदा नहीं होता। *(रुबाई 15)*

सरमद समझा रहा है कि ख़ुदा तो हमेशा हमारे साथ है, हम ही उसके साथ नहीं हैं। जब हम इस फ़ानी दुनिया को देखने वाली बाहरी आँखों को बन्द करके आग़ोशे-नज़र (आन्तरिक आँख) खोल लेते हैं तो हम भी हमेशा के लिये उस महबूब के साथी बन जाते हैं। हज़रत बू अली क़लन्दर कहते हैं :

चश्म बंद ओ गोश बंद ओ लब ब-बंद,
गर न बीनी सिर्रे-हक़ बर मन ब-खंद।[191]

तू आँखों को बन्द कर ले, होंठों को बन्द कर ले और कानों को बन्द कर ले। अगर फिर भी तुझे ख़ुदा का भेद दिखाई न दे तो मेरी हँसी उड़ा।

आप आँखें बन्द करके ख़ुदा का राज़ देखने की बात कह रहे हैं। आपका मतलब है कि ख़ुदा का राज़ जानने के लिये अन्दरूनी आँख को खोलना ज़रूरी है। सूफ़ी दरवेशों ने इसे सुम, बकुम, उम्म का नाम दिया है। साईं बुल्लेशाह ने इस सम्बन्ध में दो तरह से इशारा किया है:

सुमन बुकमन उमीयन हो के आपणा वक्त लंघाया।[192]

नौं दरवाज़े बंद कर सोया,
दर दसवें ते आण खलोया।
कदे मंन मेरी आशनाई।[193]

रूह को ज़िक्र (सिमरन) और तसव्वुर (ध्यान) की मदद से आँखों के निचले हिस्से में से समेटकर आँखों के पीछे और दरमियान नुक़्ताए-सुवैदा में ठहराने को ही सुम, बकुम, उम्म अर्थात् दुनिया की तरफ़ से गूँगा, बहरा और अन्धा हो जाना, यानी नौ दरवाज़े बन्द करके दसवें दरवाज़े पर पहुँचने का नाम दिया गया है। जब रूह आँखों के पीछे और उनके दरमियान ठहर जाती है तो इसमें अपने अन्दर ख़ुदा के कलमे को सुनने की ताक़त (सुरत) और ख़ुदा के नूर को देखने की ताक़त (निरत) पैदा हो जाती है। अन्तर में देखने की इस ताक़त को सन्तों-महात्माओं ने अन्तर्दृष्टि, दिव्य-दृष्टि, दिव्य-चक्षु, तीसरी आँख आदि नामों से पुकारा है। इसे ही सूफ़ी दरवेशों ने चश्मे-बातिन, दीदाए-बातिन, चश्मे-ग़ैब आदि कहा है। सरमद भी उस आन्तरिक आँख को खोलकर ख़ुदा का नूर देखने की बात कहता है। ख़्वाजा हाफ़िज़ कहते हैं:

रूयश बचश्मे-पाक तवां दीद चूँ हिलाल,
हर दीदा जाए-जल्वा-ए-आं माह पारा नीस्त।[194]

महबूब (ख़ुदा) का चेहरा 'हिलाल' यानी ईद के चाँद की तरह पाक निगाह से देखा जा सकता है। हर आँख उस माह-पारे (चाँद के टुकड़े) यानी महबूब का दीदार नहीं कर सकती।

सरमद कहता है – मैंने बादे-सबा (सुबह की सुहावनी हवा) में तेरी ख़ुशबू की तलाश की; गुलशन में मेरी आँखें तेरे हसीन चेहरे को ढूँढ़ती रहीं, मगर तू मुझे कहीं न मिला। मेरा सहज ज्ञान (अन्तर्दृष्टि या ध्यान) मुझे तेरी दरगाह में ले गया। *(रुबाई ८)*

सरमद इशारा कर रहा है कि सिमरन और ध्यान के अभ्यास द्वारा वह अन्तर्दृष्टि या सहज ज्ञान प्राप्त होता है, जिससे अन्दर इलाही नूर दिखाई देता है। बाहरी आँखें इस दुनिया के नज़ारे देखने के लिये हैं। ये आँखें आन्तरिक सूक्ष्म प्रकाश को नहीं देख सकतीं। उसके लिये आत्मा की आँख खोलनी पड़ती है।

सरमद कहता है – तू लोगों का मन मोह लेने में माहिर है। तू दोस्ती और वफ़ादारी की कला में माहिर है। अन्तर में देखने वाली आँख को तू पल-पल हज़ारों शक्लों में दिखाई देता है। *(रुबाई ९)*

सरमद का भाव है कि जब हम अन्दरूनी आँख के ज़रिये ख़ुदा का दीदार कर लेते हैं तो फिर कायनात के ज़र्रे-ज़र्रे में उसका जलवा दिखाई देता है। हज़रत बू अली क़लन्दर फ़रमाते हैं:

ऊस्त दर अर्ज़ो-समा ओ लामकाँ,
ऊस्त दर हर जर्रा पैदा ओ निहाँ।
चूँ कुशाई चश्म ऐ अहले-यक़ीं,
हर तरफ़ ताबां जमाले-यार बीं।[195]

वह ख़ुदा ज़मीन, आसमान और ला-मकान यानी सारी कायनात में समाया हुआ है। वह कायनात के हर ज़र्रे-ज़र्रे में ज़ाहिर और पोशीदा (छिपा हुआ) है। जब तेरी अन्दरूनी आँख खुल जायेगी तो तू हर तरफ़ उस का नूर देखेगा।

सरमद कहता है – मेरे महबूब की रहमत से मुझे उसका दीदार हुआ। मुझे उसने अपना चेहरा दिखाया जो दोनों जहान का मालिक है। शबे-क़द्र (पवित्र रात) के इस ख़्वाब से मेरी क़ीमत बहुत बढ़ गई है। अब मुझे दुनिया जौ के दाने से भी तुच्छ दिखाई देती है। *(रुबाई 233)*

इस रुबाई में सरमद ने 'शबे-क़द्र' का इशारा दिया है। इसलाम में 'लैलतुल-क़द्र'[196] रमज़ान की वह रात है जिस रात हज़रत मुहम्मद पर क़ुरान शरीफ़ नाज़िल (उतरना) होना शुरू हुआ था। सरमद कहता है, 'इस ख़्वाब से मेरी क़ीमत बढ़ गई है।' ख़्वाब में ख़ुदा का चेहरा दिखाई देने का मतलब यकसूई, एकाग्रता या समाधि की अवस्था में ख़ुदा का दीदार होना है। जब अन्तर की आँख उस ख़ुदावन्द करीम का जलवा देखती है तो रूह की हालत बिलकुल बदल जाती है। फिर यह रूह पाक और साफ़ हो जाती है।

इनसान नासमझ और कमज़ोर है। इस समय इनसान चारों तरफ़ से दुःखों में घिरा हुआ है। जब अन्दर ख़ुदा का दीदार हो जाता है तो रूह बलवान हो जाती है, ज्ञानवान बन जाती है और आनन्द-स्वरूप बन जाती है। उसे दोनों जहान की असलियत का ज्ञान हो जाता है। पहले यह फ़ानी दुनिया ही इसका दीन-ईमान थी, फिर इसे सारी कायनात जौ के दाने से भी छोटी लगती है।

सरमद कहता है – यह झूठी दुनिया पानी का बुलबुला है। यह देखने में तूफ़ानों से भरा समुद्र लगती है लेकिन दरअसल यह नज़र का धोखा (मृग-तृष्णा) है। दिल की आँख से देखें तो नज़र आता है कि यह दुनिया सिर्फ़ एक शीशा और परछाईं है। *(रुबाई 243)*

सरमद इशारा करता है कि यह दुनिया एक भ्रम, नज़र का धोखा या मृग-तृष्णा है। इसकी असलियत पानी के बुलबुले से ज़्यादा कुछ नहीं है, लेकिन इस असलियत को वही देख सकता है जिसकी अन्दरूनी आँख खुली हो। यहाँ सरमद 'दीदा-ए-बातिन' यानी अन्दरूनी आँख की बात कर रहा है। जो लोग बाहरी आँखों से दुनिया देखते हैं, उन्हें दुनिया सच्ची लगती है लेकिन वह सच्चा ख़ुदा दिखाई नहीं देता। जो अन्दरूनी आँख खोलकर उस महबूबे-हक़ीक़ी का दीदार कर लेते हैं, उन्हें वह ख़ुदा सच और बाक़ी सबकुछ झूठ, छलावा, भ्रम या मृग-तृष्णा प्रतीत होता है। अन्दरूनी आँख खोलने की तरकीब मुर्शिद के पास है। जब तक हम किसी मुर्शिद की पनाह में जाकर उससे यह तरकीब हासिल करके, उस पर अमल करके अपनी अन्दरूनी आँख नहीं खोल लेते और हक़ीक़त का दीदार नहीं कर लेते तब तक हम दुनिया को ही सच्चा समझते हैं जो दरअसल उस हक़ीक़त यानी ख़ुदा की परछाईं है। सरमद समझाता है कि अन्तर की आँख वाले हक़ीक़त का दीदार करते हैं जब कि बाहरी आँखों से देखने वाले परछाइयों को पकड़ने में लगे हुए हैं। मौलाना रूम इस मज़मून पर रोशनी डालते हुए फ़रमाते हैं:

> चश्म रौशन कुन ज़ि ख़ाके-औलिया,
> ता बिबीनी ज़ि इब्तिदा ता इन्तिहा।[197]

तू किसी वली-अल्लाह के क़दमों की ख़ाक से अपनी आँख रोशन कर ले ताकि तू आदि से अन्त तक देख सके।

आप इसी भाव को आगे बढ़ाते हुए इशारा करते हैं कि कामिल मुर्शिद के क़दमों का सुरमा जन्म के अन्धों को भी आँखें दे देता है। आपका मतलब है कि कामिल मुर्शिद के उपदेश के मुताबिक़ ध्यान को अन्तर में एकाग्र करनेवाले व्यक्ति को अपने अन्दर कलमे या शब्द का नूर दिखाई देने लगता

है। इस तरह उसकी अज्ञानता का अन्धापन दूर हो जाता है और वह ख़ुदा रूपी हक़ीक़त को देखने के क़ाबिल बन जाता है। हज़रत बू अली क़लन्दर ख़ुदा से प्रार्थना करते हैं:

या इलाही चश्मे-बीनाई बदिह,
दर सरम अज़ इश्क़े-सौदाई बदिह।[198]

ऐ ख़ुदावन्द! मुझे अन्दरूनी आँख बख़्श दे। मेरे सिर में अपने इश्क़ का दीवानापन भर दे।

ख़्वाजा हाफ़िज़ फ़रमाते हैं:

दीदने-रूये तुरा दीदा-ए-जां मी बायद,
वीं कुजा मरतबा-ए-चश्मे-जहाँबीने-मन अस्त।[199]

तेरा नूरानी चेहरा देखने के लिये रूह की (अन्दरूनी) आँख चाहिये। मेरी दुनिया को देखने वाली बाहरी आँखों को यह रुतबा हासिल नहीं है।

सरमद कहता है – जब मैंने भेद भरे जादू के दरवाज़े को खोला तो मुझे यूँ लगा कि रात में सवेरा या अँधेरे में प्रकाश हो गया हो। जब मैं जागा और मुझे हक़ीक़त का दीदार हुआ तो मुझे पता चला कि जो कुछ है सब ख़्वाब है। *(रुबाई 189)*

हम आँखें बन्द करते हैं तो हमें अपने अन्दर अँधेरा ही अँधेरा दिखाई देता है। सरमद समझाता है कि जब अन्तर की आँख खुल जाती है तो रात सवेर में और अन्धकार प्रकाश में बदल जाता है। इस अन्दरूनी आँख में अजब जादू है। जब यह आँख अन्दरूनी हक़ीक़त को देखती है तो इसे बाहरी दुनिया सपना दिखाई देती है। जब तक वह आँख नहीं खुलती, बाहरी दुनिया सच्ची लगती है और अन्दर की दुनिया केवल सपना। जब अन्दर की आँख खुल जाती है तो बाहर की दुनिया सपने की तरह झूठी लगने लगती है।

सरमद एक अन्य रुबाई में कहता है 'अज़ दीदा-ए-दिल हुस्ने-दो आलम दीदम' कि मुझे दिल की आँख से दोनों जहान का हुस्न दिखाई दे रहा है। मैंने तराज़ू बनकर हर अच्छे और बुरे को मन में तोला जो सिर अक़्ल

से भारी है वह मन के लिए बोझ है। जिस सिर पर यह बोझ नहीं है वह आराम से है। *(रुबाई 222)*

यह दिल की आँख ही अन्तर की आँख या तीसरी आँख है। जब तक यह आँख नहीं खुलती और अन्दर के कान नहीं खुलते, हम शब्द या नाम से बेख़बर हैं। जब वह आँख खुल जाती है तब हमारे अन्दर शब्द का प्रकाश भर जाता है। जब वह कान खुलता है तो हमें हर तरफ़ शब्द की आवाज़ सुनाई देती है।

वह दूसरी रुबाई में इशारा करता है – अगर तेरा दिल (मन) समझदार हो तो तेरा अन्दर ही महबूब से मिलाप हो जायेगा। अगर तेरी आँख खुल जाये तो तुझे हर तरफ़ उसका दीदार होना शुरू हो जायेगा। अगर तेरे कान खुल जायें तो तुझे हर तरफ़ ख़ुदा का कलमा सुनाई देगा। फिर तेरी यह हालत हो जायेगी कि तेरी ज़बान से ख़ुद-बख़ुद इलाही भेद ज़ाहिर होने शुरू हो जायेंगे। *(रुबाई 49)*

सरमद नसीहत करता है कि तू अपने नासमझ मन को समझदार बना ताकि यह बाहर की दौड़-धूप छोड़कर अपने अन्दर सत्य की तलाश शुरू करे। हज़रत बू अली क़लन्दर कहते हैं:

चश्मे-दिल बकुशा जमाले-यार बीं,
हर तरफ़ हर सू रुख़े-दिलदार बीं।[200]

दिल की आँख खोल और दोस्त (ख़ुदा) का जमाल (हुस्न) देख, हर तरफ़, हर जगह महबूब का चेहरा देख। क़ुरान शरीफ़ में फ़रमाया है, 'तुम जिस तरफ़ भी मुँह करो उधर ही अल्लाह का दीदार होगा।'[201]

एक अन्य रुबाई में सरमद कहता है:

ता चश्म कुशूदी ओ बख़ुद दर निगरी।[202]

अपनी आँख खोलकर अपने आपको देख।

आँखें तो हमारी खुली हैं लेकिन ये बाहरी आँखें सिर्फ़ मायावी चीज़ों को देख सकती हैं। यह उस परम सूक्ष्म तत्त्व को नहीं देख सकतीं। इसलिये सरमद अन्दर की आँख खोलने की नसीहत करता है।

तुलसी साहिब कहते हैं:

चश्मे-दिल से देख यहाँ जो जो तमाशे हो रहे,
दिलसितां क्या क्या है तेरे दिल सताने के लिये।[203]

'चश्मे-दिल' का मतलब आन्तरिक आँख ही है।

हज़रत महमूद शबिस्तरी कहते हैं:

बर आवर पंबा-ए-पिंदारत अज़ गोश,
निदा-ए-वाहिदुल-क़हार बीनोश।[204]

दुनियावी अक़्ल की रूई का पंबा (डाट) अपने कानों से निकाल दे ताकि तू उस ताक़तवर ख़ुदा (क़हार) की आवाज़ को सुन सके।

हमारे कान खुले हैं, लेकिन हमें पल-पल ख़ुदा की दरगाह से आ रहे कलमे की आवाज़ सुनाई नहीं देती। सरमद समझाता है कि तू अपना आन्तरिक कान खोल फिर तुझे हर तरफ़ से उस कलमे की आवाज़ आती सुनाई देगी। गुरु अर्जुन देव जी लिखते हैं:

घंटा जा का सुनीऐ चहु कुंट॥
आसनु जा का सदा बैकुंठ॥[205]

जब ध्यान अन्तर में एकाग्र होता है तो चारों ओर से शब्द की अखण्ड ध्वनि आती सुनाई देती है। ख़्वाजा हाफ़िज़ कहते हैं:

कस नदानिस्त किह मंज़िलगहे-मअशूक कुजास्त,
ईं क़दर हस्त कि बांगे-जरसे मी आयद।[206]

यह तो पता नहीं है कि मेरे महबूब की मंज़िल कहाँ है। हाँ, इतना ज़रूर है कि उसकी तरफ़ से घण्टे की आवाज़ आ रही है।

मौलाना रूम कहते हैं:

गर बिगोयम शम्मा-ए-ज़ां-नग़महा,
जानहा सर बर ज़नंद अज़ दख़्महा।[207]

अगर मैं उस कलमे के नग़मे की एक छोटी-सी तान भी सुना दूँ तो मुर्दा रूहें जिस्म रूपी क़ब्र से उठकर खड़ी हो जायें।

आपका मतलब है कि इस समय हमारी रूह आँखों से निचले हिस्से की क़ब्र में दबी पड़ी है। जब यह अन्दर कलमे या शब्द से जुड़ जाती है तो इसे नई ज़िन्दगी मिल जाती है। आप हज़रत मुहम्मद के हवाले से कहते हैं :

गुफ़्त पैग़म्बर किह् आवाज़े-ख़ुदा,
मी रसद दर गोशे-मन हमचू सदा।
मुहर बर गोशे-शुमा बिनिहादे-हक्क़,
ता बा आवाज़े-ख़ुदा नारद सबक़।[208]

मुझे ख़ुदा की दरगाह से आ रही आवाज़ सुनाई देती है। ख़ुदा ने तुम्हारे कानों को बन्द किया हुआ है, इसलिये तुम्हें उस आवाज़ का इल्म नहीं है।

आप समझाना चाहते हैं कि जब तक ख़याल बाहरी कानों से ऊपर नहीं उठता और अन्तर में रूह के कान नहीं खुलते, कलमे की आवाज़ सुनाई नहीं देती। आप फिर नसीहत करते हैं :

पंबा-ए-वसवास बेरूँ कुन ज़ि गोश,
ता बिगोश्त आयद अज़ गरदूँ खरोश।
ता कुनी फ़हम आं मुअम्मा-हाश रा,
ता कुनी इदराके-रम्ज़ो-फ़ाश रा।[209]

वहम (भ्रम) की रूई अपने कान से निकाल दे ताकि तू आसमान यानी ख़ुदा की तरफ़ से आ रही (कलमे) आवाज़ को सुन सके, ताकि तू उस (ख़ुदा) के भेदों और इशारों को अच्छी तरह समझ सके।

हाथरस के सन्त तुलसी साहिब फ़रमाते हैं :

क़ुदरती काबे की तू महराब में सुन ग़ौर से।
आ रही धुर से सदा तेरे बुलाने के लिये।[210]

आपने मस्तक को क़ुदरती काबा कहा है। जब ध्यान को मस्तक के मध्य में एकाग्र और स्थिर कर लेते हैं तो ख़ुदा की दरगाह से आ रही कलमे या शब्द की आवाज़ सुनाई देने लगती है। यह आवाज़ ही रूह के ख़ुदा की दरगाह में वापस जाने का असल ज़रिया (साधन) है।

क़ुरान शरीफ़ में लिखा है कि ख़ुदावन्द करीम रूह को वापस अपने असल मुक़ाम पर आने के लिये अन्तर में लगातार पुकार रहा है।[211]

सन्तों–महात्माओं ने समझाया है कि ख़ुदा की दरगाह से आ रहे कलमे के अन्दर आवाज़ भी है और प्रकाश भी। रास्ता भूला हुआ इनसान मंज़िल की तरफ़ से आ रही आवाज़ को सुनकर और मंज़िल की तरफ़ से आ रहे प्रकाश को देखकर मंज़िल की ओर रुख़ करके मंज़िल तक पहुँच सकता है। ख़ुदा से बिछुड़ी हुई रूह के ख़ुदा के साथ दोबारा मिलाप का मार्ग और साधन ख़ुदा ने हर इनसान के अन्दर रखा हुआ है। वह साधन और मार्ग यानी सिरातल–मुस्तक़ीम (सीधा रास्ता)[212] ख़ुदा का कलमा या ख़ुदा का कलाम है। दुनिया में जब कभी, जिस किसी कामिल दरवेश ने जहाँ भी ख़ुदा से मिलाप का साधन बयान किया है उसने सिर्फ़ इस कलमे या शब्द का ही उपदेश दिया है। ख़ुदा से मिलाप का न कभी कोई दूसरा साधन हुआ है, न हो ही सकता है। यह ख़ुदा से मिलाप का ख़ुदा द्वारा ख़ुद बनाया गया सर्वव्यापक और अनादि मार्ग है, इसमें न कभी कोई तबदीली हुई है, न हो ही सकती है।

सरमद का कलाम है – वह महबूब हमेशा आँख और दिल में से गुज़रता है। हर पल, हर चीज़ में उसका जलवा दिखाई देता है। कौन ऐसा मुहब्बत का मारा हुआ नहीं है जो तेरे दीदार द्वारा ख़ुद से बेख़बर होकर हमेशा के लिये बाख़बर न हो गया हो। *(रुबाई 297)*

सरमद कहता है कि ख़ुदा तो हमेशा हाज़िर–नाज़िर है मगर उसका दीदार रूह की आँख से दिल (मन) के शीशे में होता है। जिसे रूहानी आँख मिल जाती है और जो दिल में उसका दीदार कर लेता है उसे हर चीज़ में उसका जलवा दिखाई देता है। जो अपनी तवज्जुह (ध्यान) जिस्म के नौ द्वारों में से निकालकर अन्दर यकसूई (समाधि) की अवस्था

प्राप्त कर लेता है, वह जिस्म से बेख़बर (अचेत) हो जाता है मगर उसकी रूह अन्तर में बाख़बर (सुचेत) हो जाती है। ऐसा साधक उस परम चेतन अवस्था को प्राप्त कर लेता है जिसमें उसे प्रभु का प्रकाश साक्षात् दिखाई देता है। सरमद यहाँ जीते-जी मरने की अवस्था की तरफ़ संकेत कर रहा है। जो कोई जीते-जी मर गया, वह हमेशा के लिये अमर हो गया।

सरमद कहता है – बेशक तू निगाहों से छिपा हुआ है फिर भी तू दिखाई देता है। तू इस भेद को भी जानता है। जैसे दीपाधार (फ़ानूस) में शमा जलती दिखाई देती है, इसी तरह तू इनसानी जिस्म रूपी फ़ानूस में छिपा होने के बावजूद दिखाई देता है। (315)

सरमद इशारा कर रहा है कि प्रभु गुप्त भी है, प्रकट भी है। वह अन्दर भी है और बाहर भी है।[213] जिसे देखने वाली आँख मिली है, उसे वह हर जगह दिखाई देता है, जो सिर्फ़ बाहर की आँखों से देखते हैं उन्हें वह दिखाई नहीं देता। इसलिये जब तक हमारा ख़याल बाहर की तरफ़ है हम दुनिया से जुड़े हुए हैं और उन इलाही भेदों से अनजान हैं जो हमारे वजूद के अन्दर छिपे हुए हैं। ख़्वाजा हाफ़िज़ फ़रमाते हैं :

नशवी वाक़िफ़े-यक-नुकता ज़ि असरारे वुजूद,
गर तू सर गश्ता शवी दायरा-ए-इम्कां रा।[214]

अगर तेरा ख़याल दायरा-ए इम्कां यानी दुनिया की तरफ़ घूमता रहेगा तो तू अपने वजूद (जिस्म) में छिपे हुए इलाही भेदों को नहीं जान सकेगा।

गोशा-नशीनी
(एकान्त)

सरमद ने ख़ुदा के आशिक़ को ख़ुदा की बन्दगी में कामयाबी हासिल करने के लिये गोशा-नशीनी, दुनिया से किनाराकशी करने यानी एकान्त में रहने का उपदेश दिया है। सरमद कहता है :

1. दुनियादारों की संगति छोड़कर अपने लिये एकान्त वाला कोना ढूँढ़ लो और दुनिया की नेकी-बदी से डरो। *(रुबाई 42)*
2. दु:खों, मुसीबतों और चिन्ताओं से बचना चाहते हो तो दुनियादारों से दूर रहो। दुनिया में कहीं सुख-शान्ति नहीं है। सुख-शान्ति त्याग और एकान्त में है। *(रुबाई 56)*
3. दुनिया की मुहब्बत का त्याग कर देना भला है; इस नसीहत पर अमल करने में ही भलाई है। सबकुछ छोड़कर तन्हाई में रहो। सुख-दु:ख की इस दुनिया में यही बात अच्छी है। *(रुबाई 65)*

कामिल दरवेश तन्हाई या एकान्त में रहने का उपदेश देते हैं क्योंकि हम दुनिया में जितने ज़्यादा पाँव पसारते हैं हमारा दुनिया से उतना ही लगाव बढ़ता जाता है। जितने ज़्यादा लोगों से मिलते हैं और जितना ज़्यादा संसार के धन्धों में उलझते हैं, मन उतना ज़्यादा फैलता है। ख़ुदा के आशिक़ का असल मक़सद मन को आँखों के पीछे खड़ा करके इसे अन्दर ख़ुदा के कलमे की आवाज़ और नूर में जज़्ब करना होता है। इस काम में एकान्त बहुत लाभदायक होता है। दरवेश एकान्त की ख़ातिर एकान्त नहीं माँगता, इबादत की ख़ातिर एकान्त चाहता है। ख़्वाजा हाफ़िज़ फ़रमाते हैं:

> कुंजे-उज़लत किह् तिलिस्माते-अजायब दारद,
> फ़तह आं दर नज़रे-हिम्मते-दरवेशां अस्त।[215]

एकान्त, जो अजूबों यानी रूहानियत में तरक़्क़ी का जादू रखता है, नसीब होना कामिल फ़क़ीरों की तव्वजुह और दया-मेहर पर निर्भर है।

सरमद कहता है – अगर तुझे सुख-शान्ति की चाह है और तू दु:खों से बचना चाहता है तो दुनियादारों की संगति छोड़कर एकान्त ढूँढ़ ले। दोनों जहान का सुख एकान्तवास में है। अगर मेरी बात सुनेगा तो तुझे सच्ची शान्ति नसीब होगी। *(रुबाई 240)*

तू कब तक दुनिया में सोने-चाँदी की तलाश में भटकता रहेगा। यह दुनिया मृग-तृष्णा है, यह पानी पर खींची गई लकीर है; तू नगीने की तरह एक कोने में बैठा रह। *(रुबाई 268)*

सरमद इशारा कर रहा है कि अगर ख़ुदा का आशिक़ एकान्त में बैठकर ख़ुदा की इबादत करेगा तो वह पत्थर की बजाय क़ीमती नगीना बन जायेगा। एकान्त में की गई इबादत से रूह को यकसूई (एकाग्रता) व सुकून मिलता है, इसकी अन्दरूनी रूहानी मण्डलों में परवाज़ (उड़ान) शुरू हो जाती है और अन्त में यह ख़ुदा में समाकर उसका रूप हो जाती है।

सरमद कहता है – मैं दुनिया में जो चीज़ सबसे ज़्यादा चाहता हूँ वह यह है कि मेरी रूह दुनियावी बन्धनों से आज़ाद रहे। मैं दिन-रात यही चाहता हूँ कि दुनिया और दुनियादारों से सदा बचा रहूँ। *(रुबाई 214)*

ख़्वाजा हाफ़िज़ फ़रमाते हैं:

ऐ दिल अर आबे-हयाते-अबदी मी तलबी
मंबअश ख़ाके-दरे-ख़लवते-दरवेशां अस्त।[216]

आप उपदेश देते हैं कि जो इनसान ख़ुदा से विसाल करके दायिमी ज़िन्दगी का आबे-हयात प्राप्त करना चाहता है उसे चाहिये कि दरवेशों की सोहबत में जाकर तनहाई की ज़िन्दगी बिताने की युक्ति सीखे क्योंकि ख़ुदा की बन्दगी का महल तनहाई की नींव पर खड़ा है। बिना एकान्त के ख़ुदा की बन्दगी यानी ज़िक्र (सिमरन) और तसव्वुर (ध्यान) की कल्पना ही नहीं की जा सकती।

सरमद फ़रमाता है – अगर तेरा दिल महबूब के प्यार से भरा हुआ है तो एकान्त में बैठ जा। तू चिन्ताएँ छोड़ दे और सुख की राह पर आ जा। तू बगूले (बवण्डर) की तरह बेचैन न रह बल्कि सन्तोष भरे दिल से एकान्त में जा बैठ। *(रुबाई 236)*

सरमद समझा रहा है कि दुनियादार हमेशा दुनिया के तूफ़ानों में भटकते रहते हैं जब कि ख़ुदा के आशिक़ अपने प्रियतम की याद में खोए रहते हैं। इससे उन्हें अपने अन्दर वह सच्ची शान्ति मिल जाती है जिसे बाहर हासिल करना कदापि सम्भव नहीं। सन्तों-महात्माओं ने प्रभु-भक्ति के लिये एकान्त पर बहुत बल दिया है। एकान्त से उनका भाव है कि साधक को ऐसी जगह पर भजन-सिमरन करना चाहिये जहाँ लोगों का आना-जाना न हो, शोर-

शराबा न हो और शान्तमय वातावरण हो। अभ्यास से वातावरण बनता है। और वातावरण का अभ्यास पर प्रभाव पड़ता है। क़ुरान शरीफ़ में भी इशारा किया गया है :

''बेशक रूहानी रियाज़त (भजन-सिमरन) के लिये रात को उठना नफ़्स (मन) को क़ाबू करता है और उस वक़्त दुआ भी ठीक दिल से निकलती है। दिन के समय तुम दुनिया के धन्धों में मसरूफ़ रहते हो। अपने परवरदिगार के ज़िक्र (याद, सिमरन) में हर वक़्त तन-मन से जुटे रहो।''[217]

इसलिये सरमद ने एक अन्य रुबाई *(रुबाई 304)* में प्रभात के समय को भजन-सिमरन के लिये बहुत उपयोगी बताया है। उस समय मन भी दुनिया में नहीं फैला होता, वातावरण भी शान्त होता है, पिछले दिन के झगड़े भी भूले होते हैं, नींद के बाद शरीर भी तरोताज़ा होता है। इसलिये वह समय प्रभु की भक्ति के लिये बहुत उपयोगी माना जाता है।

सरमद का कलाम है – अगर तू चाहता है कि दुनिया में तू नगीने की तरह पहचाना जाये तो तू दुनिया से किनाराकशी करके एकान्त में जा बैठ। हमने इस एकान्त जंगल में अनेक लोगों को अपना आप गँवाते देखा है। कुछ दुनिया की सर्दी से मारे गए और कुछ दीन (धर्म) की गर्मी से मारे गए। *(रुबाई 245)*

इस रुबाई में भी सरमद एकान्त की उपमा कर रहा है। वह कहता है कि जिसने दुनिया से किनाराकशी की वह ख़ुदा की बन्दगी में हीरे की तरह चमका, बाक़ी सब लोग परेशान रहे। कुछ लोग दुनिया की कठोरता से परेशान हुए और कुछ मज़हबी जुनून का शिकार हुए। जो दीन और दुनिया दोनों से दूर रहे, वे ख़ुदा के क़रीब हो गए। एक सूफ़ी फ़क़ीर का कथन है :

> ता न शूई-ए-दस्त अज़ दुनिया मियावर यादे-ए-हक्क़,
> दरी शरीअत नीस्त जायज़ बे वुज़ू करदन नमाज़।[218]

जब तक तू दुनिया से हाथ नहीं धोता, मतलब यह कि जब तक तू दुनिया से मुँह नहीं मोड़ता, तू ख़ुदा को याद नहीं कर सकता। क्योंकि शरीअत में वुज़ू के बग़ैर नमाज़ जायज़ नहीं मानी जाती, भाव कि मारफ़त की नमाज़

या नमाज़े-हक़्क़ जिसका मैं ज़िक्र करता हूँ उसके क़बूल होने का वुज़ू है दुनिया की ओर से हाथ धो लेना या उसका ख़याल दिल से निकाल देना।

चेतावनी

सरमद के कलाम से हमें पता चलता है कि वह एक तरफ़ प्रभु के प्रेम और प्रभु के मिलाप के गुण गाता है और दूसरी तरफ़ इनसान को दुनिया और इसके रिश्तों और पदार्थों की असलियत समझाने की कोशिश करता है।

वह कहता है – अगर तू किसी का भला कर सकता है तो कर, यह नेक काम है। सचमुच यह बहुत नफ़े (लाभ) वाला सौदा है। इस नसीहत को दुर्लभ हीरा समझकर गाँठ बाँध ले। तूफ़ानों से भरा ज़िन्दगी का यह समुद्र चार दिन का खेल है। *(रुबाई 43)*

एक दूसरी रुबाई में वह कहता है – तू ख़ुद को सोने-चाँदी की हवस से दूर रख ताकि तेरा उस चाँद से मुखड़े वाले महबूब से मिलाप हो जाये। क़िस्मत की डोर तेरे हाथ में नहीं है। जिसे ख़ुदा दे तू उससे हसद (ईर्ष्या) न कर। *(रुबाई 137)*

इस रुबाई में सरमद दो बातें समझा रहा है। पहली यह कि ख़ुदा को हासिल करना चाहते हो तो दुनिया की धन-दौलत की हवस छोड़ दो, दूसरी यह कि जिसे जो कुछ मिलता है, क़िस्मत में लिखे अनुसार और ख़ुदा की दया से मिलता है। इसलिये अपने भाग्य पर सन्तोष करना चाहिये और किसी से ईर्ष्या नहीं करनी चाहिये। सरमद नसीहत करता है कि तू दूसरों के गुण-दोष न देख बल्कि अपनी अच्छाइयों-बुराइयों पर ध्यान दे। अपने अन्दर झाँककर देखना सबसे बड़ी ख़ूबी है, इसलिये तू अपने अन्दर झाँककर देख, दूसरों के गुनाह न देख।

सरमद नसीहत करता है – तू अपने दिल को महबूब की मुहब्बत से ख़ुश रख। इस तरह तुझे लाफ़ानी दौलत हासिल हो जायेगी। यह वह ख़ज़ाना है जिससे आख़िरी वक़्त दुःख नहीं, सुख मिलता है। इस सौदे में नफ़ा ही नफ़ा है, कोई नुक़सान नहीं। *(रुबाई 148)*

सरमद का कलाम है – तू फ़ानी (नश्वर) दुनिया से दिल न लगा। चाहे तू राजा हो या भिखारी, तुझे सदा यहाँ नहीं रहना। ज़िन्दगी छोटी है, तू कभी ग़ाफ़िल न हो। पल भर भी महबूब के ख़याल से जुदा न हो। *(रुबाई 165)*

सरमद नसीहत करता है कि जीवन नाशवान है। संसार के सुख भी क्षणभंगुर और नाशवान हैं। अमीरी और ग़रीबी दो दिन का खेल है। यहाँ न राजा को सदा रहना है, न रंक को। पल-पल स्वासों की पूँजी घटती चली जा रही है, इसलिये ध्यान हर पल उस महबूब (ख़ुदा) की तरफ़ रहना चाहिये। सरमद ख़बरदार कर रहा है कि दुनिया का ध्यान इनसान को नश्वर दुनिया से बाँधता है और अविनाशी प्रभु का ध्यान उसे अविनाशी प्रभु से मिला देता है।

एक दूसरी रुबाई में सरमद कहता है – उस महबूब (ख़ुदा) का ख़याल अपने दिल में बसा ले। इससे तेरा नसीब आसमान तक जा पहुँचेगा। तू फ़क़ीर की यह बात याद रख। दिल से इस दुनिया (लोक) और उस दुनिया (परलोक) का ख़याल निकाल दे। *(रुबाई 248)*

वह आगे कहता है – तुझे सच्चा आनन्द केवल ख़ुदा की मुहब्बत से मिलेगा। उसकी मुहब्बत से बड़ा कोई सुख नहीं। बिना उसकी मुहब्बत के दीन (परलोक) और दुनिया (लोक) दोनों ही नहीं मिलेंगे। *(रुबाई 265)*

सरमद नसीहत करता है – दुनिया अज़ल (आदिकाल) से पानी के बुलबुलों का घर है। यह अज़ल से मृगतृष्णा के समान है। यह हमेशा ख़स्ता हाल रही है। इसमें सुधार की सख़्त ज़रूरत है। *(रुबाई 198)*

सरमद समझाना चाहता है कि दुनिया न कभी सुखों का घर बनी है, न ही बन सकती है। दुनिया वह मृगतृष्णा है जिसके पीछे भागते-भागते मनमुख लोग अपनी जान गँवा बैठे हैं। दुनिया अधूरी और नाशवान है। इसके सुख भी अधूरे और नाशवान हैं। वह प्रभु पूर्ण, अमर और अविनाशी है। केवल उसके मिलाप से ही सच्चा सुख मिल सकता है। सरमद ही नहीं, संसार के सब कामिल दरवेशों ने यह बात समझाने की कोशिश की है कि इनसान को इन्द्रियों के भोगों से मुँह मोड़कर ख़ुदा से नाता जोड़ना चाहिये। इन्द्रियों के भोग कभी आत्मिक शान्ति का स्थान नहीं ले सकते। आत्मिक शान्ति का एकमात्र स्रोत प्रभु का प्रेम और प्रभु का मिलाप है। इन्द्रियों के

भोग इनसान के सबसे बड़े दुश्मन हैं क्योंकि ये इनसान को सच्चे आत्मिक आनन्द से दूर रखते हैं।

सरमद इनसान को आगाह करता है – जिस इनसान ने ज़्यादा लालच किया उसे दुःख ही दुःख मिला। उसका बीमार दिल शरबते-दीनार* से भी राज़ी न हुआ। इस संसार में लालची आँख की प्यास कभी नहीं बुझती। लालची लोगों की दुनिया में हर जगह भरमार है। *(रुबाई 40)*

लोभ की आग का शान्त होना असम्भव है। लोभ इनसान को अशान्त रखता है। लोभी का मन बेतहाशा एक से दूसरी और दूसरी से तीसरी चीज़ की तरफ़ दौड़ता रहता है, फिर यह ख़ुदा की बन्दगी के समय अन्तर में शान्त होकर कैसे बैठ सकता है? काम, क्रोध, लोभ आदि भजन-सिमरन के सबसे बड़े शत्रु हैं।

सरमद समझाता है कि लोभ से अपमान और सन्तोष से सम्मान प्राप्त होता है। *(रुबाई 25)* जो कुछ प्रभु ने तुझे दिया है तू उसका शुक्र कर। इच्छाएँ कभी किसी की पूरी नहीं हुईं। सुख-शान्ति सन्तोष में है। *(रुबाई 26)* कबीर साहिब कहते हैं:

> चाह गई चिंता मिटी, मनुवाँ बेपरवाह।
> जिन को कछू न चाहिये, सोई साहंसाह॥[219]

सरमद हमें यह समझाना चाहता है कि जब तक हम दुनिया और दुनिया के पदार्थों की इच्छा रखते हैं और जब तक हम अपनी रूह को ख़ुदा के कलमे से नहीं जोड़ते, हम मामूली इनसान हैं। जब हम दुनियावी भोगों, पदार्थों की लालसा त्यागकर रूह को उस कलमे में लीन कर देते हैं तो हमारे अन्दर अद्भुत दैवी गुण और दैवी शक्तियाँ पैदा हो जाती हैं। फिर हम देश और काल की सीमा से ऊपर उठ जाते हैं। हम महदूद से ला-महदूद यानी सीमित से असीमित बन जाते हैं। हम अज्ञानी न रहकर सर्वज्ञाता हो जाते हैं। हमारा हर प्रकार के दुःखों से छुटकारा हो जाता है, और हम प्रेम-रूप और आनन्द-रूप हो जाते हैं। सरमद प्रेरणा दे रहा है कि उस प्रभु ने हम सबके

---
* धन-दौलत की दवा।

अन्दर इस अवस्था को प्राप्त कर सकने की शक्ति रखी हुई है। हमें अपने अन्दर इस शक्ति को विकसित और प्रफुल्लित करना चाहिये।

जब तक हमारा ख़याल आँखों से नीचे है, यह जिस्म रूह की क़ब्र है। जब ख़याल आँखों के पीछे आकर कलमे या शब्द से जुड़ जाता है तो इनसान वास्तव में इनसान कहलाने का हक़दार बन जाता है। उस हालत में यह सही अर्थों में अश्रफ़ुल-मख़्लूक़ात या सृष्टि का सरताज हो जाता है। इसके अन्दर प्रभु वाले सब गुण पैदा हो जाते हैं और यह प्रभु में समाकर उसका रूप हो जाता है।

सरमद कहता है – ऐ सरमद, तू शिकवे-शिकायतें बन्द कर; तू दोनों में से कोई भी रास्ता चुन, या तो अपने जिस्म को ख़ुदा की रज़ा के अधीन कर दे या अपनी रूह को उसकी राह में न्योछावर कर दे। *(रुबाई 134)*

एक अन्य रुबाई में सरमद ख़बरदार करता है कि तू चाहे आसमान तक ऊँचा क्यों न उठ जाये, नम्रता को अपना, क्योंकि आख़िर में तू मिट्टी में समाकर मिट्टी हो जायेगा। दुनिया की चिन्ता करना व्यर्थ है। अपना दामन लोभ से गन्दा न होने दे। *(रुबाई 291)*

सरमद इनसान को लोभ और अहंकार को त्यागकर सन्तोष और नम्रता धारण करने और दुनिया की चिन्ता त्यागकर परलोक की तरफ़ ध्यान देने की नसीहत करता है, क्योंकि इससे मलिन मन निर्मल हो जाता है और इनसान परमात्मा से विसाल करने के क़ाबिल बन जाता है।

सरमद कहता है – दुनिया में लोग रोटी के टुकड़े के लिये दोस्त बन जाते हैं। सच्चे दिल से प्रेम करनेवाला कोई दोस्त दिखाई नहीं देता। रोटी के टुकड़े के लिये दर-बदर भागने वाले कुत्ते बहुत हैं। वे दोस्त होने का दावा तो करते हैं, मगर उनकी दोस्ती में सच्चे दोस्त वाली निशानी नहीं है। *(रुबाई 107)*

सरमद समझा रहा है कि दुनिया ख़ुदग़र्ज़ लोगों से भरी पड़ी है। लोग दिखावा तो वफ़ादारी और दोस्ती का करते हैं मगर उनके अन्दर स्वार्थ भरा हुआ है। लोग लालच के शिकार हैं। जहाँ से लालच के पूरा होने की उम्मीद होती है वहाँ कुत्तों की तरह बेशर्मी से पूँछ हिलाते हुए दौड़े जाते हैं। जहाँ क़ुर्बानी और त्याग की ज़रूरत होती है वहाँ से दुम दबाकर भाग जाते हैं।

सरमद विनती करता है – या रब! तू मुझे सब्र (सन्तोष) का ख़ज़ाना बख़्श दे। मैं बहुत देर से लोभ-लालच और चिन्ता का सताया हुआ हूँ। दीन (परलोक) के बदले दुनिया का सौदा नहीं किया जा सकता। मैं हर पल इसी नफ़े और नुक़सान के बारे में सोचता रहता हूँ। *(रुबाई 190)*

सरमद इशारा कर रहा है कि सन्तोष दीन (धर्म) की नींव को पक्का करता है जब कि लोभ धर्म की जड़ काट देता है। दुनिया के भोगों और विषय-विकारों के बदले आत्मिक आनन्द को क़ुर्बान कर देना बहुत घटिया सौदा है। इस सौदे में हानि ही हानि है, लाभ कुछ नहीं।

सरमद कहता है – ऐ सरमद, तू दैरो-काबा, मन्दिर-मसजिद की बात न कर। तू इस भ्रम की वादी में मत भटक। तू शैतान से ख़ुदा की बन्दगी का सबक़ सीख। तू बिना उस एक (ख़ुदा) के किसी और को सजदा न कर। *(रुबाई 249)*

यह रुबाई जितनी ख़ूबसूरत है उतनी ही रम्ज़-भरी भी है। कहा जाता है कि जब ख़ुदा ने इनसान को बनाया तो फ़रिश्तों को उसके आगे सजदा करने के लिये कहा। बाक़ी सब फ़रिश्तों ने इनसान को सजदा किया लेकिन शैतान ने सजदा करने से इनकार कर दिया? शैतान ने ख़ुदा की हुक्म-उदूली की लेकिन किसी दूसरे के आगे सर न झुकाया।[220] सरमद बहुत ख़ुबसूरत अन्दाज़ में कहता है कि बेशक यह सबक़ शैतान ने पढ़ाया है फिर भी तू इसे हमेशा याद रख कि सिवाय उस एक ख़ुदा के दूसरी कोई चीज़ तेरी बन्दगी, इबादत या रियाज़त के क़ाबिल नहीं है। सिवाय उस दरगाह के तेरा सर किसी और दर पर नहीं झुकना चाहिये। जैसा कि क़ुरान शरीफ़ में आता है, 'ला इलाह इल्ला हुब'[221] 'नहीं है कोई ख़ुदा सिवाय ख़ुदा के।' इसका मतलब यह है कि सिवाय एक ख़ुदा के दूसरा कोई इष्ट इनसान की पूजा या इबादत के क़ाबिल नहीं है।

सरमद कहता है – ऐ मेरे प्यारे दोस्त, ख़ुदा की क़सम तू बहुत बेसमझ है। तू यहाँ चन्द साँसों का मेहमान है। अगर तू आसमान पर भी पहुँच जाये और सूरज भी बन जाये तो भी तू नाचीज़-सा ज़र्रा है। *(रुबाई 321)*

इस रुबाई में सरमद समझा रहा है कि बेसमझ इनसान अपने आपको बहुत बड़ा समझता है, उसे इस बात का एहसास नहीं कि जिस ज़िन्दगी पर वह इतराता है, वह चन्द लम्हों (थोड़े समय) की मेहमान है।

सरमद कहता है – कुछ लोग शराब पीते हैं और दिन गुज़ार देते हैं; कुछ लोग हैं कि कबाब (मांस) खाते हैं और दिन गुज़ार देते हैं। यह बेचारा सरमद है कि पानी के प्याले में रोटी का सूखा टुकड़ा भिगोकर खा लेता है और दिन गुज़ार देता है। *(रुबाई 92)*

सरमद ही नहीं दुनिया के किसी भी कामिल मुर्शिद ने न कभी ख़ुद मांस और शराब का प्रयोग किया और न कभी अपने पैरोकारों (अनुयाइओं) को इन चीज़ों के इस्तेमाल की इजाज़त दी। इन फ़क़ीरों की ज़िन्दगी सब्र, तर्क, सादगी, निर्मलता और अहिंसा के साँचे में ढली होती है। मांस-शराब के प्रयोग की तो वे कभी सपने में भी कल्पना नहीं कर सकते।

इसलाम में हदीस* के मुताबिक़ सभी नशे वाली चीज़ों (शराब वग़ैरह) के सेवन को हराम (नाजायज़) क़रार दिया गया है।[222] एक सूफ़ी फ़क़ीर कहता है:

> गुफ़ता अस्त ऊला किह् सुलताने-ज़मां,
> लहमे-ख़ुद गुफ़्ता न लहमे-दीगरां।[223]

सुलताने-ज़मां (मुहम्मद साहिब) ने क्या ख़ूब कहा है, "अपना मांस खा, न कि दूसरों का" यानी अपने नफ़्स (मन) को मार, दूसरों का मांस न खा। कबीर साहिब ख़बरदार करते हैं:

> दिन को रोजा रहत है, रात हनत है गाय।
> येह खून वह बन्दगी, कहु क्यों खुसी ख़ुदाय॥[224]

सरमद चेतावनी देता है – जितना बड़ा इनसान का लोभ होता है, उतनी ही बड़ी उसकी निराशा और असफलता होती है। पक्षी दाने के लालच में जाल में फँस जाता है। जितनी अधिक धन-दौलत होती है, उतना ज़्यादा इनसान दु:खों के जाल में फँसता है। *(रुबाई 37)*

---

* हज़रत मुहम्मद साहिब के जीवन और उपदेश से सम्बन्धित कथाओं और वचनों को हदीस कहा जाता है।

लोभी को सारे संसार की धन-दौलत और राज-पाट भी मिल जाये तो भी उसकी लालसा शान्त नहीं होती। ज़िन्दगी की डोरी बहुत छोटी है। तू लम्बी आशाएँ छोड़ दे, क्योंकि ये पिंजरे और जाल का काम करती हैं।

हदीस में कहा गया है:

> "अगर इनसान के पास दो वादियों (valleys) जितनी यानी बेशुमार धन-दौलत हो तो वह और ज़्यादा की ख़्वाहिश करेगा। इनसान का पेट सिवाय मिट्टी के किसी चीज़ से नहीं भर सकता यानी क़ब्र की मिट्टी ही उसका पेट भर सकती है।"[225]

सरमद नसीहत करता है – ऐ ग़ाफ़िल, तू सोने-चाँदी के लिये व्यर्थ परेशान है, यह झूठी ज़िन्दगी पानी के बुलबुले की तरह है। *(रुबाई 317)*

सरमद कहता है – हर कोई ख़ुदा से दीन, दौलत और चाँदी जैसे बदन और चाँद के से मुखड़े वाले ख़ूबसूरत महबूब के लिये दुआ करता है। मैं इनमें से कुछ नहीं माँगता। मैं सिर्फ़ उससे विसाल के लिये दुआ करता हूँ। *(रुबाई 132)*

वह आगे कहता है – अफ़सोस है कि तू अपनी हस्ती से बेख़बर है, और अहंकार की मदिरा के नशे से मदहोश है। आग के शोले की तरह ऊँचा न उठ, क्योंकि जो जितना ज़्यादा ऊँचा उठता है उतना ही नीचे गिरता है। *(रुबाई 323)*

ऐ इनसान! तू ज़रा सोचकर देख। तेरे सब महबूब मिट्टी में समा चुके हैं, दुनिया में चाहे कोई कितना भी ऊँचा उठ जाये, आख़िर मिट्टी में समाकर मिट्टी हो जाता है। *(रुबाई 91)*

यह ठीक है कि दुनिया में अहंकार का बोलबाला है, मगर असल बड़ाई ख़ुदी को चकनाचूर करने से ही मिलती है। सुरमा बारीक पिसकर ही आँखों तक पहुँचने की बड़ाई हासिल करता है। *(रुबाई 18)*

तू ज़रा सोचकर देख कि ज़िन्दगी का अंजाम मौत है। धन कमाने में दुःख सहना पड़ता है और इसके चले जाने पर भी दुःख होता है। धन-दौलत इनसान की बर्बादी का कारण बन जाती है। *(रुबाई 14)*

दुनियावी सुखों की लालसा बुरी है; दुनिया की धन-दौलत और मान-बड़ाई के लिये अफ़सोस करना फ़ुज़ूल है; रूह ने हमेशा जिस्म में नहीं रहना; दो रोज़ा (क्षणभंगुर) ज़िन्दगी की तमन्ना व्यर्थ है। *(रुबाई 32)*

जब दुनिया ही पायेदार (चिरस्थायी) नहीं तो दुनिया के सुख-आराम, साज़ो-सामान जिनकी मुहब्बत में इनसान दीवाना बना हुआ है, कैसे पायेदार हो सकते हैं। सच्चा सुख इन्हें छोड़ने पर ही मिलता है। मौलाना रूम फ़रमाते हैं:

> यक दो रोज़े चिह् किह् दुनिया साअत अस्त,
> हर किह् तरकश करद अंदर राहत अस्त।[226]

यह दुनिया दो दिन का खेल है, इसके त्याग से ही सच्ची ख़ुशी हासिल हो सकती है।

सरमद बार-बार चेतावनी देता है कि जीवन क्षणभंगुर है। कोई पता नहीं मौत किस वक़्त, कहाँ और किस हालत में आ जाये। इसलिये ग़फ़लत को त्यागकर ख़ुदा से मिलाप के असल मक़सद की ओर ध्यान देना चाहिये। सरमद कहता है: जिस्म की कोई बुनियाद नहीं है। यह वह शोला है जो पल-भर में बुझ जाता है। मौत के शिकारी के जाल से कोई नहीं बच सकता। *(रुबाई 57)*

तू चाहता है कि तेरी सब इच्छाएँ पूरी हो जायें। ज़रा सोचकर देख, अगर तेरी सब इच्छाएँ पूरी हो जायें, तेरा चाँद-सूरज पर हुक्म (सिक्का) चलने लगे, क़ैसर* और फ़ग़फ़ूर† जैसे सुलतान तेरे ग़ुलाम बन जायें तो भी

---

* **क़ैसर**=रूम के बादशाह का उपनाम। लातीनी भाषा में क़ैसर उस बच्चे को कहते हैं जिसकी माँ उस बच्चे को जनने के दिनों में मर जाये और फिर उस औरत का पेट चीरकर वह बच्चा निकाल लिया जाये। चूँकि रूम का पहला बादशाह ''अग़तूस'' इसी तरह पैदा हुआ था और दुनिया में उसका बड़ा नाम हुआ है, इसी कारण रूम के सारे बादशाहों को ''क़ैसर'' के नाम से पुकारा जाने लगा।

† **फ़ग़फ़ूर**=चीन के बादशाह का उपनाम। फ़ग़फ़ूर असल में फ़ग़पूर था। फ़ग का मतलब है बुत (मूर्ति) और पूर का मतलब है पिसर (बेटा)। चूँकि उसके माँ-बाप ने उसको एक बुत (मूर्ति) पर चढ़ा दिया था, इसलिये उसका यह नाम पड़ गया।

तुझे इससे कुछ हासिल न होगा, क्योंकि एक दिन तुझे दुनिया से कूच करना होगा। *(रुबाई 83)*

सरमद इनसान को ख़बरदार करता है – दुनिया में ग़फ़लत तेरी सबसे बड़ी दुश्मन है। *(रुबाई 88)* तू हर रोज़ लोभ-लालच के दरिया के भँवर में फँसा रहता है। तू ग़फ़लत की नींद में सोया रहता है। जवानी गुज़र गई है, बुढ़ापा आ पहुँचा है, अब तो ज़िन्दगी के गुलशन से कुछ लाभ उठा ले। *(रुबाई 332)*

सरमद इशारा करता है – कोशिश करने की तेरी चिन्ता राह का पत्थर (रुकावट) है। चिन्ता के जंगल में ख़ूनी चीते तेरी ताक में छिपे बैठे हैं। तक़दीर (होनी) ताक़तवर है और तदबीर (कोशिश, उपाय) कमज़ोर है। तू कमज़ोर को ताक़तवर से जंग के लिये तैयार न कर। *(रुबाई 175)*

इस रुबाई में सरमद समझा रहा है :
तदबीर कुनद बन्दा व तक़दीर नदानद,
तदबीर बतक़दीर ख़ुदावन्द नमानद।[227]

यानी इनसान कई क़िस्म की तदबीरें या योजनाएँ बनाता है और तक़दीर के बारे में नहीं जानता, लेकिन होता वही है जो ख़ुदा को मंजूर होता है।

इनसानी तदबीर कमज़ोर है और ख़ुदा की रज़ा से बनी तक़दीर बहुत ताक़तवर है। ख़ुदा की रज़ा ख़ुदा की तरह सर्वशक्तिमान है। मनुष्य की बुद्धि भी सीमित है और उसकी शक्ति भी सीमित है। ''प्रभु सर्वशक्तिमान और सर्वज्ञाता है।''[228] इनसान को चाहिये कि अपनी मंशा (इच्छा) को इलाही-रज़ा (दैवी इच्छा)के अधीन कर दे। मनुष्य की इच्छा और प्रभु की इच्छा में द्वंद्व होगा तो उसमें प्रभु की इच्छा का जीतना पूर्व निश्चित है। एक सूफ़ी दरवेश नसीहत करते हैं :

बक़ज़ा-ए-आसमानी ख़ेज़ अज़ तस्लीम चारा नीस्त।[229]

यानी तक़दीर की क़लम से लिखे लेख को क़बूल करने के सिवाय कोई चारा नहीं है।

ख़्वाजा हाफ़िज़ भी यही फ़रमाते हैं:

> रज़ा बदादह बिदिह वज़ जबीं गिरह बकुशाए,
> किह् बर मनो-तू दरे-इख़्तियार नकुशाद अस्त।[230]

तू राज़ी-ब-रज़ा रह और तक़दीर को ख़ुशी-ख़ुशी भोग ले क्योंकि तेरे पास इसके सिवाय कोई चारा ही नहीं है।

सरमद नसीहत करता है – ऐ ग़ाफ़िल, तू झूठी दुनिया की झूठी चिन्ता छोड़ दे। तू असलियत को समझ और सुबह की हवा की तरह गुलशन (सुख) और रेगिस्तान (दु:ख) से गुज़र जा। *(रुबाई 141)*

तू ज़िन्दगी भर इच्छा-तृष्णा की राह पर चलता रहा है। जब उम्र ख़त्म हो जायेगी तो फिर क्या करेगा? *(रुबाई 307)*

ऐ नादान, तू अँगूठी के नगीने की तरह नेक-नामी का इच्छुक है। तू नाम पर मरता है लेकिन फिर भी नाकाम है। तेरे पकने के दिन आ गये हैं। मगर तू अभी भी कच्चा है। तू इस ज़िन्दगी से परलोक के लिये तोशा* हासिल कर ले। *(रुबाई 160)*

सरमद कहता है – अगर तू चिन्ता से छुटकारा पाना चाहता है तो दुनिया और दुनियादारों से दूर रह। इन सबको साँपों और बिच्छुओं के समान समझ। ऐसे लोगों की सोहबत से बचकर रह। *(रुबाई 266)*

सरमद ख़बरदार कर रहा है कि दुनिया और दुनियादारों से कभी भी किसी को सुख नहीं मिला है। दुनियादार बाहर से दोस्त मालूम होते हैं, मगर अन्दर से साँपों और बिच्छुओं जैसे होते हैं।

सरमद नसीहत करता है – ऐ नादान, तेरे दिल में हमेशा दुनिया की हवस समाई रहती है। तूने ख़ुदा से कभी आक़बत (परलोक, परमार्थ) के लिये प्रार्थना नहीं की। तेरे दीनो-दुनिया दोनों बर्बाद हो जायेंगे। सिवाय पश्चात्ताप के तेरे हाथ कुछ न लगेगा। *(रुबाई 166)*

---

* **तोशा**=सफ़र में काम आने वाली रसद।

सरमद के कलाम में जो भी नसीहतें की गई हैं, उस इनसान के लिये हैं, जिसने ख़ुदा के विसाल को अपनी ज़िन्दगी का मक़सद बना लिया है। रोगी डॉक्टर के पास जाता है। डॉक्टर उसे दवा भी देता है और कुछ परहेज़ भी बताता है। बिना परहेज़ के दवाई भी असर नहीं करती। सरमद ने ख़ुदा के आबिद (भक्त) को ज़िन्दगी के सुख-दुःख तक़दीर पर छोड़कर राज़ी-ब-रज़ा रहते हुए ख़ुदा की इबादत में मग्न रहने की तालीम (उपदेश) दी है। यदि इनसान यह चाहे कि पहले ज़िन्दगी के हालात सुधर जायें और दुनिया के हर तरह के सुख मिल जायें और फिर इबादत की तरफ़ ध्यान दिया जाये तो ऐसा मौक़ा कभी नहीं आयेगा। ख़ुदा के सच्चे आबिद को नफ़्स (मन) के साथ लड़ाई लड़नी पड़ती है। उसे काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार, ईर्ष्या, द्वेष आदि का त्याग करके शील, क्षमा, सन्तोष, नम्रता, सच, त्याग, अहिंसा, सेवा आदि गुणों को ग्रहण करना पड़ता है। उसे अपना आचरण स्वच्छ बनाना पड़ता है और मन को बार-बार इन्द्रियों के भोगों, विषय-विकारों, दुनिया के व्यर्थ के धन्धों, झगड़ों आदि से निकालकर, ख़ुदा की इबादत या नाम के ज़िक्र (सिमरन) में लगाना पड़ता है जो इनसानी जिन्दगी का मक़सद है।

सार

सरमद का कलाम प्रभु और उसके इश्क़ के गिर्द घूमता है। सरमद ने प्रभु के अनन्त गुणों का वर्णन किया है। वह उसे सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञाता और सर्वव्यापक सृजनहार मानता है। उस प्रभु की रज़ा सर्वशक्तिमान है। संसार में जो कुछ हो रहा है, उसकी रज़ा के अनुसार हो रहा है। वह प्रभु दया का अनन्त सागर है और उसकी शक्तिशाली रज़ा, उसकी अपार दया का ही रूप है। आत्मा उस शक्ति-रूप, ज्ञान-रूप, आनन्द-रूप और प्रेम-रूप दयालु प्रभु का अंश है। इसके अन्दर अपने स्रोत में समाने की तड़प है और यह उसके साथ मिलाप करके ही सच्ची शान्ति प्राप्त कर सकती है।

सरमद ने मनुष्य को यह समझाया कि यह संसार क्षणभंगुर और नश्वर है। इसमें कभी किसी को सच्चा सुख प्राप्त नहीं हो सकता। वह प्रभु अमर

और अविनाशी है, आत्मा केवल उसके साथ मिलाप करके ही सच्ची शान्ति प्राप्त कर सकती है।

सरमद ने मानवता को प्रभु के प्रेम का उपदेश दिया। उसने इस बात पर बल दिया कि हम शरीअत या कर्मकाण्ड द्वारा नहीं, बल्कि इश्क़ या प्रेम द्वारा प्रभु से मिलाप कर सकते हैं।

सरमद ने प्रभु-भक्ति या नाम-भक्ति को सच्ची शराब कहा है। इन्द्रियों के भोग कभी भी सच्चे सुख और शान्ति का साधन नहीं बन सकते। सच्चा सुख केवल मुर्शिद द्वारा पिलाई जानेवाली नाम या प्रभु-भक्ति की मदिरा से ही मिल सकता है।

सरमद ने अपनी वाणी में बार-बार प्रभु-कृपा या दया पर बल दिया है। वह कहता है कि मनुष्य को अपने अवगुणों और पापों से नहीं घबराना चाहिये। प्रभु रुपी दया का सागर जीव के हर प्रकार के गुनाहों को अपने साथ बहा ले जाने का अपार सामर्थ्य रखता है।

सरमद के कलाम में उच्चकोटि की नम्रता के दर्शन होते हैं। वह अपने आपको बार-बार पापी, अपराधी, तुच्छ और निर्बल कहता है। इससे परमार्थ के सच्चे जिज्ञासु को अपने अन्दर नम्रता का गुण धारण करने की प्रेरणा मिलती है।

सरमद ने अपने कलाम में परमार्थ के सच्चे साधक को दुनिया और दुनियादारों की संगति से बचकर रहने का सुझाव दिया है। उसने किनाराकशी या एकान्त पर बल दिया है ताकि इनसान शान्ति के माहौल में ख़ुदा की बन्दगी (भक्ति) की तरफ़ पूरा ध्यान दे सके।

सरमद अपने कलाम में बार-बार चेतावनी देता है कि इनसान को दुनिया में आने के अपने असल मक़सद को पूरा करने की कोशिश करनी चाहिये। उसे अपना मन दुनिया के धन्धों और इन्द्रियों के भोगों से निकालकर, ख़ुदा की इबादत में लगाना चाहिये। मनुष्य-जन्म का कोई भरोसा नहीं है। इनसान की ज़िन्दगी पानी के बुलबुले और रात के स्वप्न की तरह है, इसलिये बिना ग़फ़लत में वक़्त बर्बाद किये, जीवन के असल उद्देश्य, जो ख़ुदा से विसाल है, को पूरा करने का यत्न करना चाहिये।

कलाम

भावार्थ सहित

1 अज़ जुर्मे-फ़ुजूँ याफ़्ता अम फ़ज़ले-तुरा,
ईं शुद सबबे-मअसीयते-बेश मरा।
हर चंद गुनाह बेश करम बेशतर अस्त,
दीदम हमा जा ओ आज़मूदम हमा रा।

ऐ ख़ुदावन्द, मेरे गुनाह हलके हैं, तेरी रहमत भारी है। मेरे गुनाह कम हैं, तेरी रहमत ज़्यादा है। यही वजह है कि मैं गुनाह पर गुनाह करता चला गया। बेशक मेरे गुनाह बड़े हैं लेकिन तेरी रहमत और भी बड़ी है। मैंने हर जगह और हर हाल में यह बात देखी और आज़माई है।

2 अज़ कारे-जहान, उक़दा कुशूदम हमा रा,
दर मिहनत ओ अंदोह, रबूदम हमा रा।
हक़्क़ दानी ओ इनसाफ़ न दीदम ज़ि कसे,
दीदम हमा रा ओ आज़मूदम हमा रा।

मैंने दुनियावी कामों में सबके मसले हल किये, सबकी समस्याएँ दूर कीं। मैंने सबका दु:ख-दर्द दूर किया, लेकिन बदले में मुझे किसी से इनसाफ़ न मिला। मैंने सबको देखा और सबको आज़माया, लेकिन किसी ने भी मेरी नेकी के बदले में मुझे नेकी न दी।

3 दर बादिया-ए-तजरिबा या रब्ब! हमा जा,
उफ़्ताद सरोकार, ब ज़िश्तो-ज़ीबा।
ग़ैर अज़ तू कसे न गश्त फ़रयाद रसम,
दीदम हमा रा ओ आज़मूदम हमा रा।

मैंने इस निकम्मी दुनिया में ढूँढ़कर देखा है; मुझे अच्छे-बुरे दोनों क़िस्म के लोग मिले और मैंने सबको आज़माया, मगर तेरे बिना कोई मेरा मददगार न बना।

(व्याख्या के लिये देखें, पृ. 67)

4 ऐ जलवागरे-निहां अयां शौ बदर आ,
दर फ़िक्र बजुस्तेम किह् हस्ती तू कुजा।
ख़्वाहम किह् दर आग़ोशो-कनारत गीरम,
ता चंद तू दर पर्दा नुमाई ख़ुद रा।

ऐ पर्दे के पीछे छिपे महबूब! तू पर्दे से बाहर आ। मैंने हर जगह तेरी तलाश की है; मैं तुझे अपनी बाँहों में लेने के लिये बेचैन हूँ; तू कब तक अपने आपको छिपाये रखेगा।

(व्याख्या के लिये देखें, पृ. 74)

5 शादी बुवद, अज़ दीन ओ ज़ि दुनिया हमा रा,
अज़ हर दो नजात दिह किह् शादी अस्त मरा।
आशुफ़्ता-ए-ख़ुद बकुन, किह् आनम हवस अस्त,
अज़ पर्दा बरूं बिया ओ ख़ुद रा बनुमा।

कोई दुनिया से ख़ुश है तो कोई दीन (धर्म) से; मैं दोनों से छुटकारा पाना चाहता हूँ। मैं सिर्फ़ यह चाहता हूँ कि तू मुझे अपने इश्क़ का सबक़ पढ़ा दे और पर्दे से बाहर आकर अपना जलवा दिखा दे।

(व्याख्या के लिये देखें, पृ. 74)

6 मशहूर शुदी ब दिलरुबाई हमा जा,
बे-मिस्ल शुदी दर आशनाई हमा जा।
मन आशिक़े-ईं तूरे-तू अम, मी बीनम,
ख़ुद रा न नुमाई ओ नुमाई हमा जा।

तू दिलरुबा है, तू मनमोहन है और चित्तचोर है; तेरी दोस्ती बेमिसाल है; मैं तेरी अदा पर क़ुर्बान हूँ। तू हर जगह गुप्त भी है, प्रकट भी। तू सब जगह है, मगर कहीं भी दिखाई नहीं देता।

(व्याख्या के लिये देखें, पृ. 43)

7 हर नेको-बदे किह् हस्त दीदम हमा रा,
हर ख़ारो-गुले किह् बुवद चीदम हमा रा।
आमद ब नज़र, अय्यारे-हर कस कमो-बेश,
बर संगे-मुहक, चू ज़र कशीदम हमा रा।

हर नेको-बद, हर अच्छा-बुरा, जो भी है मैंने देखा है। मैंने हर काँटा भी तोड़ा है और हर फूल भी चुना है। जब मैंने हर चीज़ को सोने की तरह कसौटी पर परखा तो मुझे हर चीज़ में कुछ न कुछ खोट नज़र आया।

8 अज़ बादे-सबा ख़्वास्त, दिलम बूए-तुरा,
चशमम ज़ि चमन जुस्त, गुले-रूए-तुरा।
आख़िर न अज़ीं दो-चार गश्तम न अज़ आं,
अंदेशा निशान दाद रहे-कूए-तुरा।

मैंने बादे-सबा (सुबह की सुहावनी हवा) में तेरी ख़ुशबू की तलाश की; गुलशन में मेरी आँखें तेरे हसीन चेहरे को ढूँढ़ती रहीं, मगर तू मुझे कहीं न मिला। मेरा सहज ज्ञान (अन्तर्दृष्टि या ध्यान) मुझे तेरी दरगाह में ले गया।

(व्याख्या के लिये देखें, पृ. 122)

9 करदी तू अलम ब दिलरुबाई ख़ुद रा,
हम दर फ़ने-मिहरो-आशनाई ख़ुद रा।
ईं दीदा किह् बीनास्त तमाशाई-ए-तुस्त,
हर लहज़ा बसद रंग नुमाई ख़ुद रा।

तू लोगों का मन मोह लेने में माहिर है। तू दोस्ती और वफ़ादारी की कला में माहिर है। अन्तर में देखने वाली आँख को तू पल-पल हज़ारों शक्लों में दिखाई देता है।

(व्याख्या के लिये देखें, पृ. 122)

10 हर जा किह् न याबी तू निशानी ज़ि जफ़ा,
बा मिहरो-महब्बत गुलो-बूए ज़ि वफ़ा।
अज़ ख़लक़ वज़ ख़ुलक़ ख़ुद नदानी हरगिज़,
आं हर दो बदस्ते-ऊस्त गुफ़्तम बख़ुदा।

दुनिया में न हर जगह ज़ुल्म के निशान हैं और न ही हर जगह दया और मुहब्बत की सुगन्ध है। इस कायनात की असलियत और इसमें जो कुछ हो रहा है, इसके कारण तेरी अक़्ल से बाहर हैं। यह दोनों बातें उस ख़ुदा के अपने हाथ में हैं।

(व्याख्या के लिये देखें, पृ. 45)

11 या रब्ब! ज़ि करम ब-बख़्श तक़सीर, मरा,
मक़बूल बकुन-नाला-ए-शबगीर, मरा।
मा पुर ज़ि गुनाह माजराए अस्त अजीब,
लुत्फ़े-तू कुनद चारा-ए-तदबीर, मरा।

ऐ ख़ुदावन्द करीम, ऐ दयालु प्रभु, तू रहम करके मेरे गुनाह बख़्श दे। तू मेरे काली रातों में किये गए रुदन को क़बूल कर ले। मुझ गुनाहों से भरे हुए की हालत दर्दनाक और दयनीय है। सिर्फ़ तेरी रहमत ही मेरे दुःखों की दवाई है।

12 अज़ सुहबते-हमदमां ब बाग़ो-सहरा,
ज़ौक़े-सुख़ने बूद ओ हवा-ए-मीना।
आख़िर सुख़ने मांद ओ अज़ीज़ां रफ़्तंद,
मीना-ए-फ़लक फ़गंद ऊ रा अज़ पा।

यार-दोस्त इकट्ठे हुए कहीं बाग़ में, कहीं रेगिस्तान में। उन्होंने शराब के जाम पिये। उन्होंने खूब गप्पें हाँकीं और एक-दूसरे का दिल बहलाने की कोशिश की। आख़िर में सब दोस्त जुदा हो गए। सबने अपनी-अपनी राह ली, सिर्फ़ लफ़्ज़ ख़ला (अन्तरिक्ष) में गूँजते रह गए। आसमान के शीशे ने उन सबको ख़त्म कर डाला।

13 बाज़ आ बाज़ आ ज़ि फ़िक्रे-बातिल बाज़ आ।
अज़ वहमो-ख़याले-ख़ाम ऐ दिल! बाज़ आ।
ख़ुशनूद मशौ ज़ि फ़िक्रे-दुनिया हरगिज़,
नै वसल बमांद ओ न वासिल बाज़ आ।

दुनिया के झूठे और अधूरे ख़यालों को दिल से निकाल दे। दुनियावी धन्धों में सुख न ढूँढ़। ख़बरदार! दुनिया और उसकी मुहब्बत पायेदार (स्थायी) नहीं है।

14 मर्ग अस्त दर ईं बादिया दुंबाल तुरा।
ईं अस्त मआले-कार अज़ माल तुरा।
अव्वल मिहनत ओ आख़िरश हसरत अस्त,
ईं माल कुनद हमेशा पामाल तुरा।

ज़रा सोचकर देख कि ज़िन्दगी का अंजाम मौत है। धन कमाने में दुःख सहना पड़ता है और इसके चले जाने पर भी दुःख होता है। धन-दौलत इनसान की बर्बादी का कारण बन जाती है।

(व्याख्या के लिये देखें, पृ. 139)

15 गह मिहरो-वफ़ा कुनद गहे नाज़ो-जफ़ा,
हर लहज़ा बसद रंग नुमायद ख़ुद रा।
आगोशे-नज़र कुशा किह् आयद ब कनार,
यक गाम न गरदद ज़ि तू पैवस्ता जुदा।

वह महबूब कभी मेहर करता है कभी क़हर (ज़ुल्म) ढाता है। वह हर पल सैकड़ों रंगों में ज़ाहिर होता है। तू 'आग़ोशे-नज़र' (अन्दरूनी आँख) खोलकर उससे लिपट जा। वह कभी एक क़दम भी तुझसे जुदा नहीं होता।

(व्याख्या के लिये देखें, पृ. 121)

16 अज़ मअसीयतम बेश बुवद फ़ज़ले-तुरा,
हर लहज़ा बख़ुद हिसाब दारम हमा जा।
हर चंद किह् सर ता बक़दम इस्यानम,
अज़ बख़्शिशे-तू नीस्त फ़ुज़ूँ जुर्म मरा।

तेरा रहम मेरे गुनाहों से कहीं ज़्यादा शक्तिशाली है। मैं रोज़ इसे अपने अन्दर देखता हूँ, तोलता हूँ। मैं सिर से पाँव तक गुनाहों में लथपथ हूँ, लेकिन तेरी रहमत के सामने मेरे गुनाह तुच्छ हैं।

17 गर मुत्तक़ी अम, कार ब यार अस्त मरा,
बा सुबहा-ओ-ज़ुन्नार चिह् कार अस्त मरा।
ईं ख़िरक़ा-ए-पशमीना किह् सद फ़ितना दरूस्त,
बाज़श न कशम बदोश आर अस्त मरा।

चाहे मैं तपस्वी हूँ या त्यागी, फ़क़ीर हूँ या दरवेश, मेरा सिर्फ़ अपने महबूब से वास्ता है, मुझे सिर्फ़ अपने यार से काम है। मुझे न जंजू (जनेऊ) से सरोकार है न माला से। सूफ़ियों के ऊन के चोले के पीछे सैकड़ों बुराइयाँ छिपी हुई हैं। मैं इसे कभी नहीं पहनूँगा, यह शर्मिन्दगी से भरा हुआ है।

18 हर चंद ग़ुरूर दस्तगाह अस्त ईं जा,
बर ख़ुद पेचीदन उरूज जाह अस्त ईं जा।
दर साज़ शिकस्तगी हुज़ूरे-दिगर अस्त,
अज़ सुरमा शुदन संग निगाह अस्त ईं जा।

यह ठीक है कि दुनिया में अहंकार का बोलबाला है, मगर असल बड़ाई ख़ुदी को चकनाचूर करने से ही मिलती है। सुरमा बारीक पिसकर ही आँखों तक पहुँचने की बड़ाई हासिल करता है।

(व्याख्या के लिये देखें, पृ. 139)

19 ख़ुश बालाए करदा चुनी पस्त मरा,
चश्मे-बद ओ जाम बुर्दा, अज़ दस्त मरा।
ऊ दर बग़ले-मन अस्त ओ मन दर तलबश,
दुज़दे-अजबी, बरहना करदस्त मरा।

उस ख़ूबसूरत ऊँचे क़द वाले महबूब ने मुझे कहीं का नहीं छोड़ा। उसने अपनी शराबी आँखों से मुझे मदमस्त कर दिया है। वह मेरी बग़ल में है और मैं उसकी तलाश में भटक रहा हूँ; उस चित्तचोर मनमोहन ने मुझे सिर से पाँव तक नंगा कर दिया है।

(व्याख्या के लिये देखें, पृ. 72)

20 आसूदा दमे ज़ि ख़ुद-पसंदी मतलब,
ज़ीं हिम्मेत-पस्ते-ख़ुद, बलंदी मतलब।
सौदा-ए-जहान, सूद नदारद चंदां,
नुक़्सान ब पज़ीर, सूदमंदी मतलब।

दिखावे और फ़रेब में से सुख-शान्ति की उम्मीद न रख। तेरे यत्न निकम्मे हैं, इनसे कोई ऊँची अवस्था प्राप्त होने की आशा न रख। दुनियादारी से कभी किसी को कुछ नहीं मिला। तू नुक़सान पर सब्र कर और नफ़े की उम्मीद न कर।

21 उम्रे किह् शुद अस्त सर्फ़ दर लहवो-लअब,
बे पुरसश अगर अफ़ू कुनद, नीस्त अजब।
कै ज़िश्ती-ए-अफ़आल दर आरद ब नज़र,
आं रा किह् करम बुवद फ़ुज़ूं तर ज़ि गज़ब।

ऐ ख़ुदा, अगर कोई इनसान अपनी ज़िन्दगी को फ़ुज़ूल के कार्यों की भाग-दौड़ में गँवा दे, और तू उसे फिर भी मुआफ़ कर दे तो इसमें हैरानी की कोई बात नहीं है। जब ख़ुदा की रहमत उसके ग़ुस्से से बेहद बड़ी हो और वह किसी इनसान के गुनाहों की परवाह न करे तो कोई अजीब बात नहीं है।

(व्याख्या के लिये देखें, पृ. 47)

22 कै जुर्मे-मन ओ फ़ज़्ले-तू, आयद ब हिसाब,
ईं हम चू हबाबीस्त किह् न-आयद ब हिसाब।
सर रिश्ता-ए-ईं दर कफ़े-अंदेशा-ए-कीस्त,
बे हद्दो-हिसाब कै ब-आयद ब हिसाब।

न मेरे गुनाहों का हिसाब हो सकता है, न तेरी रहमत का। समुद्र में उठने वाले बुलबुलों की तरह कौन उनकी गिनती कर सकता है, कल्पना की उड़ान वहाँ तक कैसे पहुँच सकती है? अनन्त का अन्त कैसे पाया जा सकता है, अनगिनत की गिनती कैसे की जा सकती है?

23 अज़ साक़ी-ए-कौसर, मए-गुलफ़ाम तलब,
दर पीरी-ओ-ज़ुअफ़, जामे-आराम तलब।
ता चंद गिरिफ़्तार बदुनिया बाशी,
अज़ फ़ज़्ले ख़ुदा, नजात ज़ीं दाम तलब।

तू कौसर के साक़ी से गुलाबी रंग की शराब हासिल कर। बुढ़ापे और कमज़ोरी की उम्र में सुख-आराम और अमन-चैन देनेवाला शराब का प्याला हासिल कर। तू कब तक दुनिया का क़ैदी बना रहेगा? ख़ुदा की रहमत से दुनिया के बन्धनों से छुटकारा पा ले।

(व्याख्या के लिये देखें, पृ. 92, 102)

24 ऐ बेख़बर! अज़ हस्ती-ए-ख़ुद, हमचू किताब,
दर जिल्दे-तू आयाते-इलाही ब हिजाब।
यअनी ज़ि तू हक़्क़ पदीद ओ तू अज़ असरश,
आगाह नए चू शीशा अज़ बूए-गुलाब।

ऐ बेख़बर, तू एक किताब की तरह अपनी हस्ती से अनजान है। तुझमें आयाते-इलाही (रब्बी निशानियाँ) छिपी हुई हैं, यानी ख़ुदा तेरे अन्दर है। मगर तू इस सच्चाई को नहीं जानता, जिस तरह प्याला अपने अन्दर पड़ी हुई शराब से बेख़बर है।

(व्याख्या के लिये देखें, पृ. 100-101)

25 सरमद, तू ज़ि ख़लक़ हेच यारी मतलब,
अज़ शाख़े-बरहना, साया दारी मतलब।
इज़्ज़त ज़ि क़नाअत अस्त ओ ख़्वारी ज़ि तमअ,
बा इज़्ज़ते-ख़्वेश बाश, ख़्वारी मतलब।

ऐ सरमद, तू दुनिया से सच्चे प्यार की उम्मीद न कर। बिना पत्तों का पेड़ किसी को भी साया नहीं दे सकता। लोभ से अपमान और सन्तोष से सम्मान प्राप्त होता है। सम्मान से जी, अपमान की ज़िन्दगी का तलबगार न बन।

(व्याख्या के लिये देखें, पृ. 135)

26 ऐ नफ़से-सितमगार! सरापा हसरत,
जुज़ शुकर तुरा नीस्त हज़ारां निअमत।
क़ानिअ न शुदी, गाह न गश्ती ख़ुरसंद,
दुनिया न बुवद बक़द्रे-तूले-अमलत।

ऐ मेरे ज़ालिम मन, तू नाउम्मीदी की प्रतिमा है। जो कुछ प्रभु ने तुझे दिया है, तू उसका शुक्र कर। इच्छाएँ कभी किसी की पूरी नहीं हुईं। सुख-शान्ति सन्तोष में है।

(व्याख्या के लिये देखें, पृ. 135)

27 ईं ख़िरक़ा-ए-पशमीना, किह् ज़ुन्नार दरूस्त,
मकर अस्त ओ रिया, फ़ितना-ए-बिस्यार, दरूस्त।
बर दोश मकश, दस्त बकश, ता न कशी,
ईं बारे-नदामत किह् सद आज़ार दरूस्त।

ऊन के चोले के पीछे छिपा हुआ जंजू (जनेऊ), फ़रेब और बुराई से भरा हुआ है। इसे उतार कर फेंक ताकि तुझे शर्म और बेइज़्ज़ती का दु:ख न सहना पड़े।

28 सरमद, जिस्मतो-जानश दर दस्ते-कसे अस्त,
तीरीस्त, वले कमानश दर दस्ते-कसे अस्त।
मी ख़्वास्त किह् आदम शुदा, अज़ दाम जुहद,
गावे शुद ओ रीसमानश दर दस्ते-कसे अस्त।

सरमद वह जिस्म है जिसकी जान या रूह किसी और के हाथ में है। सरमद वह तीर है जिसकी कमान किसी और के हाथ में है। उसने चाहा था कि आदमी बनकर आज़ाद हो जाये, मगर वह ऐसी गाय बन गया जिसकी रस्सी किसी और के हाथ में है।

(व्याख्या के लिये देखें, पृ. 73)

29 हर जा किह् गुले-अयाग़, ओ जोशे-चमन अस्त,
ऊ मसकने-दिल ख़ुश अस्त मा रा वतन अस्त।
गर बादा परस्त गोई, ऊरा हक़्क़ अस्त,
वर ज़ाहिदे-मुत्तक़ी बिगोई, सुख़न अस्त!

जिस बाग़ में बहार हमेशा अपने यौवन पर रहती है; जहाँ गुलाबी रंग के जाम पीने को मिलते हैं वही मेरा प्यारा निज-घर है। जो भी मुझे मद-मस्त शराबी कहता है, वह सच कहता है; अगर कोई मुझे नेक-पाक कहता है तो यह झूठ है।

(व्याख्या के लिये देखें, पृ. 107)

30 दुनिया तलबां रा किह् गमे-दीनार अस्त,
बे मिहरी-ए-शान ब यकद गर बिस्यार अस्त।
अज़ अक़रब-ओ-मार, हेच अंदेशा मकुन,
ज़ीं क़ौम हज़र बकुन किह् नेश-ओ-ख़ार अस्त!

दुनिया के मतवाले सोने-चाँदी के लिये तड़पते हैं और एक-दूसरे से दुश्मनी करने के लिये मशहूर हैं। तू साँपों और बिच्छुओं से न डर, लेकिन इन माया के प्रेमियों से डर जिनके अन्दर ज़हर और काँटे भरे पड़े हैं।

31 ज़ाहिद तू बख़ुर बादा किह् बिस्यार निकूस्त,
अज़ ख़िरक़ा बकुन कनार सद फ़ितना दरूस्त।
बे शुबहा हलाल अस्त बिगोई तू हराम,
कैफ़ियत ईं हर किह् बियायद हमा ऊस्त।

ऐ परहेज़गार (ज़ाहिद, तपस्वी), तू परहेज़गारी छोड़ दे। तू इस सूफ़ियों वाले चोले को तर्क कर त्याग दे, क्योंकि इसमें सैकड़ों बुराइयाँ छिपी हुई हैं। तू शराब पी; शराब हराम नहीं, हलाल है, इसमें से हमा-ऊस्त की हालत पैदा होती है।

(व्याख्या के लिये देखें, पृ. 102)

32 अंदेशा-ए-मालो-जाहे-दुनिया, ग़लत अस्त,
ईं वहमो-ख़यालो-फ़िक्रे-बेजा, ग़लत अस्त।
दर ख़ाना-ए-तन वतन न बाशद हरगिज़,
अज़ बहरे-दो रोज़ ईं तमन्ना, ग़लत अस्त।

दुनियावी सुखों की लालसा बुरी है; दुनिया की धन-दौलत और मान-बड़ाई के लिये अफ़सोस करना फ़ुज़ूल है; रूह ने हमेशा जिस्म में नहीं रहना; दो रोज़ा (क्षणभंगुर) ज़िन्दगी की तमन्ना व्यर्थ है।

(व्याख्या के लिये देखें, पृ. 139)

33

दर आलमे-शौक़, क़ीलो-क़ालम दिगर अस्त,
अज़ तूर सुख़न बिया, किह् हालम दिगर अस्त।
सौदा ज़दा-ए-सूरते-मअना हस्तम,
फ़िक्रम दिगर ओ राहे-ख़यालम दिगर अस्त।

मेरे इश्क़ का ढंग निराला है। मेरा हाल 'तूर के सुख़न' से जुदा है। मैं हक़ीक़त के साक्षात् दीदार का मतवाला हूँ। मेरी कल्पना और मेरा चिन्तन जुदा है।

(व्याख्या के लिये देखें, पृ. 112)

34

दुनिया ज़ि हवा-ओ-हिर्स, बिस्यार पुर अस्त,
हर जा अस्त दिले, दर ग़मे-दीनार पुर अस्त।
बीमार बसे शर्बते-दीनार कम अस्त,
ईं ख़ाना-ए-वीराना, ज़ि बीमार पुर अस्त।

यह दुनिया लोभ, कामना और विषय-वासना से भरी हुई है। यहाँ हर दिल सोने के सिक्कों के लिये तड़प रहा है। माया के मरीज़ अनगिनत हैं और सोने का शर्बत बहुत थोड़ा है। यह दुनिया उजड़ा हुआ घर है जो माया के बीमारों से भरा पड़ा है।

35

अय्यामे-शबाब, शेअरो-इनशा हुनर अस्त,
उल्फ़त ब गुलो-साक़ी-ओ-मीना हुनर अस्त।
पीरी चू रसीद, तर्के-दुनिया हुनर अस्त,
हर लहज़ा ख़्यालो-फ़िक्रे-उक़बा हुनर अस्त।

जवानी में जोश-भरी कविता का प्यार ठीक है। जवानी में फूलों, साक़ी और शराब का जाम भला है। बुढ़ापे में पहुँचकर इस लोक का त्याग और परलोक की चिन्ता भली है।

36 हर कस किह् ज़ि मै तौबा कुनद, नादान अस्त!
इनसान न तवां गुफ़्त, बिगो हैवान अस्त!
ईं सिलसिला-ए-जुंबाने-ग़मे-जानान अस्त,
हम आतिशे-अफ़सुर्दा दिलो-दामान अस्त।

मूर्ख है वह जो शराब पीना छोड़ देता है। वह इनसान नहीं, हैवान है। शराब प्रेमियों के हृदय में जुदाई की पीड़ा को प्रज्वलित करती है, यह प्रेम की बुझी हुई आग को दुबारा जला देता है।

37 आं रा किह् हवस बेश बुवद, नाकाम अस्त,
मुर्गे किह् पए दाना रवद, दर दाम अस्त।
ईं माल पुर अज़ मलाल बिस्यार ओ वबाल,
हरचंद कमो-बेश, दर ऊ आराम अस्त।

जितना बड़ा इनसान का लोभ होता है, उतनी ही बड़ी उसकी निराशा और असफलता होती है। पक्षी दाने के लालच में जाल में फँस जाता है। जितनी अधिक धन-दौलत होती है, उतना ज़्यादा इनसान दुःखों के जाल में फँसता है।

(व्याख्या के लिये देखें, पृ. 138)

38 हर किस किह् गरिफ़्तारे-हवा-ओ-हवस अस्त,
गर सलतनतश दिही, नगोयद किह् बस अस्त!
सर रिश्ता-ए-ज़िन्दगी बसे कोताह अस्त,
अज़ तूले-अमल हज़र! किह् दामो-क़फ़स अस्त।

लोभ, लालसा और कामना के जाल में फँसा हुआ इनसान हमेशा अतृप्त रहता है, भले ही उसे सारे संसार का राज्य क्यों न मिल जाये। जीवन का धागा बहुत छोटा है, इसलिये लम्बी-चौड़ी उम्मीदों को छोड़ दे। यह फन्दों और पिंजरों के समान है।

39 हर कस ब-हवस, बाग़े-जहान दीद ओ गुज़श्त,
ख़ारो-गुले-पज़मुर्दा, बहम चीद ओ गुज़श्त।
ईं सूरते-हस्ती किह् तमामश मअना अस्त,
अफ़सोस बर आं कस किह् न फ़हमीद ओ गुज़श्त।

लोग दुनिया के बाग़ की सैर करके यहाँ से गुज़र गये। उन्होंने कुछ फूल इकट्ठे किये और कुछ काँटे और यहाँ से चले गए। यह इनसानी वजूद सिर से पाँव तक एक रहस्य है; अफ़सोस है उन पर जो बिना इसको समझे, यहाँ से गुज़र गये।

(व्याख्या के लिये देखें, पृ. 71)

40 आं रा किह् हवस बेश बुवद, आज़ार अस्त,
अज़ शर्बते दीनार, दिलश बीमार अस्त।
अज़ गुरसिना चश्मी बजहान सेरी नीस्त,
ईं ताइफ़ा दीदम, हमा जा बिस्यार अस्त।

जिस इनसान ने ज़्यादा लालच किया उसे दुःख ही दुःख मिला। उसका बीमार दिल शरबते-दीनार* से भी राज़ी न हुआ। इस संसार में लालची आँख की प्यास कभी नहीं बुझती। लालची लोगों की दुनिया में हर जगह भरमार है।

(व्याख्या के लिये देखें, पृ. 134-35)

41 हर जा किह् ग़मे-यार बुवद, आराम अस्त,
बे ईं बजहान हर किह् बुवद, नाकाम अस्त।
ग़ाफ़िल न शवी ज़ि यार, ओ अज़ बादा-ए-नाब,
गर दौलते-जम मी तलबी, बा जाम अस्त!

वह हर जगह, जहाँ से महबूब का ग़म मिलता है, सुकून भरी है। इसके बिना किसी को दुनिया में कामयाबी कैसे मिल सकती है! तू महबूब और शराब के जाम से ग़ाफ़िल न हो। अगर तू जमशीद की दौलत चाहता है तो यह जाम में है।

(व्याख्या के लिये देखें, पृ. 107)

---

* धन-दौलत की दवा।

42 हर कस किह् दर ईं ज़माना दारद हिम्मत,
बायद किह् न गीरद ज़ि कसे, जुज़ इबरत!
ज़ि आमेज़िशे-ख़लक़, कुंजे-उज़लत बगुज़ीं,
वज़ नेको-बदे-जहान, तलब कुन बहशत।

दुनिया में वही ख़ुशक़िस्मत इनसान है जिसने अपने चारों तरफ़ निगाह डालकर यह सबक़ सीखा कि दुनियादारों की संगति छोड़कर अपने लिये एकान्त वाला कोना ढूँढ़ लो, और दुनिया की नेकी-बदी से डरो।

(व्याख्या के लिये देखें, पृ. 130)

43 नफ़ई ब कसे अगर रसाई, हुनर अस्त,
सूद अस्त, दर ईं सूद बख़ुद बेशतर अस्त।
ज़ीं गौहरे-नायाब न गरदी ग़ाफ़िल,
ईं बहरे-पुर-आशूबे-जहान दर गुज़र अस्त।

अगर तू किसी का भला कर सकता है तो कर, यह नेक काम है। सचमुच यह बहुत नफ़े (लाभ) वाला सौदा है। इस नसीहत को दुर्लभ हीरा समझकर गाँठ बाँध ले। तूफ़ानों से भरा ज़िन्दगी का यह समुद्र चार दिन का खेल है।

(व्याख्या के लिये देखें, पृ. 133)

44 आं शुअला किह् याक़ूते-दिलम रा रंग अस्त,
गोहर ब मुहीत अस्त ओ शरर दर संग अस्त।
ऊ दर हमा ओ अज़ ऊस्त ग़ाफ़िल, हमा ख़लक़,
ईं मअनी-ए-रंगीन, चिह् क़द्र बेरंग अस्त!

मेरे मन की लाल मणि में ख़ुदा का नूर समाया हुआ है। यही नूर समुद्र के मोती में भी है और यही पत्थर में से पैदा होनेवाली चिनगारी में भी है। कितनी विचित्र और आश्चर्यजनक लीला है कि वह नूर सबमें है लेकिन सब उससे ग़ाफ़िल हैं।

(व्याख्या के लिये देखें, पृ. 109)

45 दीदी किह् ग़मो-ऐशे-जहान, ज़ूद गुज़श्त?
चीज़े किह् दर अंदेशा-ए-तू बूद, गुज़श्त?
ईं यक दो नफ़स किह् मांद सरमाया-ए-तू,
हुशियार किह् नुक़सान नकुनी, सूद गुज़श्त।

तूने देखा है कि सुख-दुःख का सिलसिला कितनी जल्दी गुज़र गया; तुझे जिसका डर था वह कितनी जल्दी गुज़र गया। सावधान हो कि ज़िन्दगी के जो दो-चार दिन बचे हैं, यूँ ही न चले जायें और नफ़ा, नुक़सान में न बदल जाये।

(व्याख्या के लिये देखें, पृ. 71)

46 दुनिया नकुनम तलब किह् कमतर ज़ि ख़स अस्त,
बे दौलते-दीदारे-तू, ईं हम क़फ़स अस्त।
ख़्वाहाने-विसालम ओ हमीं अस्त सुख़न,
दर ख़ाना अगर कस अस्त, यक हरफ़ बस अस्त!

दुनिया की चाह छोड़ दे, यह चाह झूठी है, इसकी क़ीमत एक तिनके के बराबर भी नहीं। बिना ख़ुदा के दीदार के दीन (धर्म) बन्धन है। मुझे हर पल तेरे मिलाप की चाह रहती है। तू अन्दर बैठा है तो मेरा तुझे एक बार पुकारना ही काफ़ी है।

(व्याख्या के लिये देखें, पृ. 71)

47 हर नेको-बदी किह् हस्त, दर दस्ते-ख़ुदास्त,
ईं मअनी, पैदा-ओ-निहां, दर हमा जास्त।
बावर नकुनी अगर दर ईं जा बनिगर,
ईं ज़ुअफ़े-मन-ओ-क़ुव्वते-शैतान ज़ि कुजास्त?

दुनिया में जो कुछ भला-बुरा है, सबकुछ ख़ुदा के हाथ में है। यह सच गुप्त हो या प्रकट, हर जगह देखा जा सकता है। अगर तू इस बात को नहीं मानता तो यह बता कि मुझमें कमज़ोरी कहाँ से आई और शैतान में ताक़त कहाँ से आई।

(व्याख्या के लिये देखें, पृ. 40)

48 नै सरव क़दे किह् रूनुमायद, यार अस्त,
नै सीमबरी किह् ज़र रूबायद, यार अस्त।
आं यार गुज़ीं किह् हर चिह् ख़्वाही, बदिहद,
यारे किह् बकारे-तू बियायद, यार अस्त।

सरु की तरह ऊँचे क़द वाले और चाँदी जैसे सफ़ेद रंग वाले लोग सच्चे दोस्त नहीं हैं। तू उस ख़ुदा को अपना दोस्त बना जो हमेशा तेरी मदद करे और तेरी हर ज़रूरत को पूरा करे।

(व्याख्या के लिये देखें, पृ. 65)

49 दिल अगर दाना बुवद अंदर कनारश यार हस्त,
चश्म अगर बीना बुवद दर हर तरफ़ दीदार हस्त।
गोश अगर शिनवा शवद जुज़ ज़िक्रे-हक़्क़ कै बशिनवद,
वर ज़बान गोया बुवद दर हर सुख़न असरार हस्त।

अगर तेरा दिल (मन) समझदार हो तो तेरा अन्दर ही महबूब से मिलाप हो जायेगा। अगर तेरी आँख खुल जाये तो तुझे हर तरफ़ उसका दीदार होना शुरू हो जायेगा। अगर तेरे कान खुल जायें तो तुझे हर तरफ़ ख़ुदा का कलमा सुनाई देगा। फिर तेरी यह हालत हो जायेगी कि तेरी ज़बान से ख़ुद-बख़ुद इलाही भेद ज़ाहिर होने शुरू हो जायेंगे।

(व्याख्या के लिये देखें, पृ. 126)

50 तनहा न हमीं दैरो-हरम, ख़ाना-ए-ऊस्त,
ईं अर्ज़ो-समा तमाम काशान-ए-ऊस्त।
आलम, हमा दीवाना-ए-अफ़साना-ए-ऊस्त,
आक़िल बुवद, आं कसे किह् दीवाना-ए-ऊस्त!

वह प्रभु मन्दिरों-मसजिदों में नहीं रहता, वह ज़मीन और आसमान में हर जगह समाया हुआ है। सारा संसार उसके नाम का दीवाना है। अक़्लमन्द वही है जो उसका दीवाना हो गया।

(व्याख्या के लिये देखें, पृ. 88)

51 सद शुकर किह् दिलदार, ज़ि मन ख़ुशनूद अस्त,
हर दम ब करम, हर नफ़से दर जूद अस्त।
नुक़्सान ब मन अज़ मिहरो-महब्बत न रसीद,
सौदा किह् दिलम करद, तमामश सूद अस्त।

ख़ुदा का हज़ार शुक्र है कि मेरा महबूब मुझसे ख़ुश है। वह हमेशा दयालु है और मुझ पर रहमत और बख़्शिश कर रहा है। उसकी मुहब्बत और दोस्ती से मुझे कभी कोई नुक़सान नहीं हुआ। मेरे दिल ने ऐसा सौदा किया है जिससे हमेशा लाभ ही लाभ हुआ।

52 इनसान किह् शिकम सेरी अश अज़ यक नान अस्त,
अज़ हिर्सो-हवा, शामो-सहर, नालान अस्त।
दर बहरे-वुजूदश बनिगर तूफ़ान अस्त,
आख़िर चू हबाब, यक नफ़स, मिहमान अस्त।

इनसान को भूख मिटाने के लिये सिर्फ़ एक रोटी के टुकड़े की दरकार है, लेकिन वह दिन-रात लोभ-लालच में फँसकर चीख़ो-पुकार कर रहा है। देखो, उसकी ज़िन्दगी के समुद्र में कितने बड़े तूफ़ान उठ रहे हैं, उसकी ज़िन्दगी बुलबुले के समान है और वह यहाँ पल-भर का मेहमान है।

53 ईं नफ़्से-सितमगार बिबीं शैतान अस्त,
पैवस्ता अयान बुवद, मगो पिनहान अस्त।
इबलीस ख़ुदी, चिरा ब इबलीस बदी,
दर पेशे-ख़यालाते-तू, ऊ हैरान अस्त।

मेरा नफ़्स (मन) ही ज़ालिम शैतान है। यह बात किसी से छिपी हुई नहीं है, साफ़ ज़ाहिर है। सरमद, तू ख़ुद ही शैतान है। शैतान को बुरा क्यों कहता है? शैतान तो ख़ुद तेरे शैतानी-भरे ख़यालों पर हैरान है।

(व्याख्या के लिये देखें, पृ. 85)

54 असरारे-मै-ओ-जाम ब कस रोशन नीस्त,
ईं राज़, बहर मुर्दा दिले गुफ़्तन नीस्त।
ज़ाहिद! बख़ुदा किह् अज़ ख़ुदा बे ख़बरी,
सर रिश्ता-ए-ईं बदस्ते-हर कूदन नीस्त!

ख़ुदा के नाम की शराब और जाम (प्याला) का भेद बहुत कम लोगों पर खोला जाता है। यह भेद हर मुर्दा दिल को नहीं बताया जाता। ऐ ज़ाहिद (तपस्वी), ख़ुदा की क़सम! तुझे ख़ुदा के बारे में कुछ मालूम नहीं। यह ख़याल नादान की कल्पना से परे है।

(व्याख्या के लिये देखें, पृ. 104)

55 दूरी ए-नफ़्से मरा अज़ ऊ मुमकिन नीस्त,
ईं यक-जिहती ब गुफ़्तगू मुमकिन नीस्त।
ऊ बहर, दिलम सबू अस्त, ईं हरफ़, ग़लत,
''गुंजायशे-बहर दर सबू मुमकिन नीस्त!''

मेरा महबूब से पल भर के लिये भी जुदा होना मुमकिन नहीं है। इस मिलाप को लफ़्ज़ों में बयान करना नामुमकिन है। वह समुद्र है, मैं प्याला हूँ और समुद्र को प्याले में डाल सकना नामुमकिन है।

(व्याख्या के लिये देखें, पृ. 75)

56 ख़्वाही न कशी, रंजो-नयाबी ज़हमत,
अज़ मर्दुमे-रोज़गार बगुज़ीं उज़लत।
हर चंद किह् बर रुए-ज़मीन राहत नीस्त,
गर हस्त, हमीं अस्त, बदुनिया राहत।

दुःखों, मुसीबतों और चिन्ताओं से बचना चाहते हो तो दुनियादारोंसे दूर रहो। दुनिया में कहीं सुख-शान्ति नहीं है। सुख-शान्ति त्याग और एकान्त में है।

(व्याख्या के लिये देखें, पृ. 130)

57 ईं जिस्म, बसद क़िस्म फ़ना बुनियाद अस्त,
ईं शुअला-ए-ख़स, दर नफ़्सी बरबाद अस्त।
अज़ दामे-अजल, तुरा रहाई न बुवद,
सैदी ओ सरोकार तू बा सय्याद अस्त।

जिस्म की कोई बुनियाद नहीं है। यह वह शोला है जो पल भर में बुझ जाता है। मौत के शिकारी के जाल से कोई नहीं बच सकता।

(व्याख्या के लिये देखें, पृ. 140)

58 अज़ बहरे-दो रोज़, फ़िक्रे-दुनिया ग़लत अस्त,
दिल बस्तने-मअमूरा-ओ-सहरा ग़लत अस्त।
मानिन्दे-नसीम, हर नफ़स दर गुज़री,
ईं हिर्सो-हवा ओ ईं तमन्ना ग़लत अस्त।

इस छोटे-से जीवन के लिये दुनिया की चिन्ता करना फ़ुज़ूल है; शहरों और बियाबानों का मोह व्यर्थ है। ज़िन्दगी का हर पल हवा के झोंके की तरह बीता चला जा रहा है। तेरा लोभ-लालच फ़ुज़ूल है।

59 दुनिया तलबां रा न बराहत कार अस्त,
ता आख़िरे-दम फ़िक्रे-ज़रो-दीनार अस्त।
ईं ताइफ़ा रा ख़याले-मुर्दन नबुवद,
पैवस्ता ग़मे-सीमो-ज़रे-बिस्यार अस्त।

जिनके अन्दर दुनिया की चाह है, उन्हें कभी सच्चा चैन नहीं मिलता। वे अन्त समय तक सोने-चाँदी की चिन्ता में खोए रहते हैं। वे धन-दौलत की तृष्णा में इस तरह खो जाते हैं कि उन्हें अपनी मौत भी याद नहीं रहती।

60 अज़ मर्दुमे-दुनिया ओ ज़ि दुनिया वहशत,
हर चंद बगीरी, न कफ़ आरी राहत।
हंगामे-बहार ओ हम ख़ज़ानश दीदम,
दर बाग़े-जहान नीस्त गुले, जुज़ इबरत।

दुनिया और दुनियादारों से डर; जितना ज़्यादा इनमें फँसेगा उतना ज़्यादा दुःख पायेगा। मैंने दुनिया की बहारें भी देखी हैं, पतझड़ भी देखे हैं, गुलशन में खिलने वाले हर फूल में एक सबक़ छिपा है। यहाँ जो भी फूल खिलता है जल्दी ही मुरझा जाता है।

(व्याख्या के लिये देखें, पृ. 65)

61 हर चंद गुलो-ख़ार, दर ईं बाग़, ख़ुश अस्त,
बे यार, दिल अज़ बाग़ न अज़ राग़ ख़ुश अस्त!
चूं ख़ूने-दिलम, लाला बिबीं दर रंग अस्त,
ईं चशमो-चिराग़ नीज़, बा दाग़ ख़ुश अस्त।

बेशक दुनिया रूपी बाग़ का हर फूल और काँटा ख़ुशनुमा लगता है, मगर बिना महबूब के दिल दुःखी रहता है। पोस्त का फूल मेरे दिल के ख़ून की तरह लाल रंग का है, मगर इसकी ख़ूबसूरती इस पर लगे काले दाग़ के कारण है।

(व्याख्या के लिये देखें, पृ. 65, 74)

62 अज़ हद्दो-हिसाब, कारे-इस्यां बगुज़शत,
दर तौबा-ए-इनफ़िआले-यारां! बगुज़शत।
अज़ शामते-ग़फ़लत न रसीदम ब विसाल,
उमरम हमा दर दूरी-ए-जानां बगुज़शत।

मेरे गुनाह तोल-माप और हिसाब-किताब की सब सीमाएँ पार कर चुके हैं। मेरे पश्चात्ताप के आँसू बारिश को भी शर्मिन्दा करते हैं। मेरी बदक़िस्मती है कि मेरी ग़फ़लत और लापरवाही के कारण मेरा महबूब से विसाल न हो सका और सारी ज़िन्दगी प्रियतम की जुदाई में गुज़र गई।

63 चंदां दिले-नादान ब ग़मे-सीमो-ज़र अस्त,
कू वक़्ते-नमाज़ हम ब फ़िक्रे-दिगर अस्त!
दर वहमो-ख़याले-ईंनो-आं, बेशतर अस्त,
अज़ फ़िक्रे-मआल कारे-ख़ुद, बेख़बर अस्त।

मेरे पागल मन में सोने-चाँदी की तृष्णा इस तरह घर कर गई है कि इबादत के वक़्त भी यह दूसरी चीज़ों के ध्यान में खोया रहता है। यह कभी एक चीज़ की ओर दौड़ता है तो कभी दूसरी की तरफ़। इसे अंजाम या परलोक का भी ध्यान नहीं है।

64 हर चंद किह् अज़ जुर्म फ़ुज़ूँ इहसान अस्त,
दिल दर ग़मो-अंदेशा-ए-ईं हैरान अस्त।
अम्मा चिह् बुबद मआले-कारे किह् नशुद,
दर ख़ौफ़ो-रजा दीदा-ए-मन गिरियां अस्त।

यह ठीक है कि ख़ुदा की रहमत मेरे गुनाहों से बड़ी है लेकिन फिर भी जब मैं अपने गुनाहों की तरफ़ देखता हूँ तो मन घबराता है। जब यह सोचता हूँ कि मेरे कर्मों का क्या अंजाम होगा तो मारे डर के मेरी आँखों से आँसुओं की झड़ी लग जाती है।

65 अज़ कारे-जहान, तमाम इनकार ख़ुश अस्त,
ईं कार कुनी अगर तू, बिस्यार ख़ुश अस्त।
ख़ुद रा बकनार गीर ओ बगुज़र ज़ि हमा,
दर आलमे-तदबीर, हमीं कार ख़ुश अस्त।

दुनिया की मुहब्बत का त्याग कर देना भला है; इस नसीहत पर अमल करने में ही भलाई है। सबकुछ छोड़कर तन्हाई में रहो। सुख-दुःख की इस दुनिया में यही बात अच्छी है।

(व्याख्या के लिये देखें, पृ. 130)

66 हर कस बख़याले-ऊस्त, हालश ख़ूब अस्त,
हम अव्वल कार ओ हम मआलश ख़ूब अस्त।
बिस्यार मबंद दिल ब दुनिया, गुफ़्तम,
हर चंद किह् हस्त, इअतिदालश ख़ूब अस्त।

जिसका ध्यान ख़ुदा में है, उसका हाल अच्छा है, उसका आग़ाज़ (आरम्भ) अच्छा है, उसका अंजाम (अन्त) अच्छा है। मैं कहता हूँ कि तू अपने आपको दुनिया से न जोड़, दुनिया का मोह जितना कम हो उतना ही अच्छा है।

(व्याख्या के लिये देखें, पृ. 65)

67 वारस्ता दिलम हमेशा वाबस्ता-ए-ऊस्त,
पैवस्ता दर ईं बाग़, बरंगे-गुलो-बूस्त।
लब्रेज़े-महब्बत अस्त, मीना-ए-दिलम,
अज़ कूज़ा हमां बरूं तरावद किह् दर ऊस्त!

मेरा मन सदा उसमें समाया रहता है। यह उसके साथ ऐसे एक हो गया है जैसे गुलाब और उसकी ख़ुशबू। जो कुछ बर्तन में होता है वही बाहर निकलता है, मेरे मन की सुराही से उसके प्रेम की शराब छलक रही है।

(व्याख्या के लिये देखें, पृ. 76)

68 आं ज़ात बिरूँ ज़ि गुंबदे-अरज़क़ नीस्त,
ज़ातीस्त मुक़ईयद किह् बजुज़ मुतलक़ नीस्त।
हक़्क़ बातिल नीज़ हस्त बातिल हक़्क़ अस्त,
आं ज़ात बजुज़ मसदरे-हर-मुश्तक़ नीस्त।

वह ख़ुदा कहीं दूर नहीं रहता; वह सबके अन्दर है और बाहर भी। सच झूठ है मगर झूठ सच नहीं है। वही कायनात और इसकी हर चीज़ का स्रोत या मूल है।

(व्याख्या के लिये देखें, पृ. 43)

69 नाबूद शुदम बूद नमी दानम चीस्त,
अख़गर शुदा अम दूद नमी दानम चीस्त।
दिल दादम ओ जान दादम ओ ईमान दादम,
सूद अस्त मगर सूद नमी दानम चीस्त।

मैं फ़ना हो चुका हूँ। मुझे मालूम नहीं है कि बक़ा (अमरत्व) क्या है? मैं जलता हुआ कोयला हूँ, मुझे मालूम नहीं कि धुआँ क्या है। मैंने अपना दिल दे दिया है, अपनी रूह दे दी है, ज़िन्दगी दे दी है, ईमान दे दिया है। मैंने ऐसा सौदा किया है कि जिसमें यह मालूम नहीं कि नफ़ा क्या मिला है।

(व्याख्या के लिये देखें, पृ. 86)

70 शुद हशर कनूं, सूरे-सराफ़ील कुजास्त?
तौक़े-अदब अज़ बहरे-अज़ाज़ील कुजास्त?
अज़ बहरे-ख़राब करदने-बैतुल-लाह,
शुद फ़ील नमूदार, अबाबील कुजास्त?

क़यामत (प्रलय) का दिन आ पहुँचा है। इज़राईल का बाजा कहाँ है? शैतान की ज़ंजीरें कहाँ हैं? ख़ुदा के घर को बर्बाद करने के लिये हाथी आ पहुँचा है, चंडूल कहाँ है?

71 दिल बाज़ गरिफ़्तारे-निगारी शुदा अस्त,
अज़ फ़िक्रो-ग़मे-लाला इज़ारी शुदा अस्त।
मन पीर ओ दिलम ज़ौके-जवानी दारद,
हंगामे-ख़ज़ां जोशे-बहारी शुदा अस्त।

मेरा मन फिर उस ख़ूबसूरत महबूब के इश्क़ में खो गया है। यह उस ख़ूबसूरत चेहरे की ख़्वाहिश और ग़म में डूब गया है। मैं बूढ़ा हो चूका हूँ लेकिन मेरे मन में जवानी वाली ताक़त है और यह पतझड़ में भी बहार की तरह खिल रहा है।

72 चीज़े किह् गुज़श्तो-रफ़्त, यादश सितम अस्त,
सौदास्त किह् सरमाया-ए-ऊ रंजो-ग़म अस्त।
ईं उमरे-गिरामी ब अबस सर्फ़ मकुन,
बेश अज़ नफ़से मगीर, बिस्यार कम अस्त।

जो चीज़ खो चुकी है उसकी याद दुःखदायी है। यह वह सौदा है जिसमें दुःख ही दुःख है। तू अपनी क़ीमती ज़िन्दगी को फ़ुज़ूल बर्बाद न कर। यह ज़िन्दगी पल भर का खेल है।

73 ईं शहरो-दयारो-कोहो-सहरा हमा हेच,
दीदम तमाम ज़िश्तो-ज़ीबा हमा हेच।
ख़ुद रा बख़ुदा गुज़ार ओ बगुज़र ज़ि हमा,
ईं ख़्वाहिशो-फ़िक्रे-दीन-ओ-दुनिया हमा हेच।

ये मुल्क, शहर, पर्वत और रेगिस्तान कुछ नहीं हैं। दुनिया और इसकी चटक-मटक, इसका अच्छा-बुरा कुछ भी नहीं है। तू सबकुछ छोड़कर ख़ुदा का बन जा; दीन और दुनिया की चाह कुछ भी नहीं है।

(व्याख्या के लिये देखें पृ. 65, 114)

74 ऐ अज़ रुख़े-तू, शिगुफ़्ता ख़ातिर, गुले-सुर्ख़,
बातिन, हमा ख़ूने-दिल ओ ज़ाहिर, गुले-सुर्ख़।
ज़ि आं देर बर आमदी ज़ि यूसफ़ किह् बबाग़,
अव्वल गुले-ज़र्द आमद ओ आख़िर, गुले-सुर्ख़।

ऐ मेरे महबूब, तेरे चेहरे को देखकर ही गुलाब का फूल खिला है। यह बाहर से देखने में फूल है लेकिन इसके अन्दर दिल का ख़ून भरा हुआ है। तुझे यूसुफ़ के बाद ही आना था क्योंकि पहले पीला फूल आता है फिर लाल फूल आता है।

(व्याख्या के लिये देखें पृ. 93-94)

75 सरमद! अगरश वफ़ास्त, ख़ुद मी आयद,
गर आमदनश रवास्त, ख़ुद मी आयद।
बेहूदा चिरा दर पए ऊ मी गरदी?
बिनशीं! अगर ऊ ख़ुदास्त, ख़ुद मी आयद!

ऐ सरमद, अगर वह क़ौल का पक्का है या वफ़ा निभाने वाला है तो वह ख़ुद-बख़ुद आ जायेगा; अगर वह आ सकता है तो वह ख़ुद ही आ जायेगा। तू उसकी तलाश में व्यर्थ क्यों भटकता है? चुपचाप बैठ जा। अगर वह ख़ुदा है तो ख़ुद ही चला आयेगा।

(व्याख्या के लिये देखें, पृ. 37)

76 अय्यामे-शबाब रफ़्त ओ शैतां नरसीद,
बर दामने-मन, ग़ुबारे-इस्यां नरसीद।
पीरी चू रसीद, मअसीयत ग़श्त जवान,
दर्दे अजबी रसीद ओ दरमां नरसीद!

जवानी बीत गई है लेकिन मैं शैतान को दूर रखने में कामयाब रहा हूँ। मेरा दामन गुनाहों की मैल से साफ़ है। अफ़सोस कि बुढ़ापे में पहुँचकर मेरे गुनाह जवान हो गए। मुझे एक अजब रोग लग गया है जिसका कोई इलाज नहीं है।

77 सरमद कारे-इलाह लुत्फ़ो-करम अस्त,
अज़ मअसीअतो-स्याह कारी चिह् ग़म अस्त।
रख़्शीदने-बर्क़ बीन ओ जोशे-बारां,
रहमत चिह् फ़ुज़ूं ग़ज़ब चिह् बिस्यार कम अस्त।

ऐ सरमद, दया-मेहर करना परमात्मा का स्वभाव है। वह दया-मेहर किये बिना रह ही नहीं सकता। इसलिये गुनाहों और बुरे कर्मों के बारे में चिन्ता करने की कोई ज़रूरत नहीं। तू बिजली की चमक और तेज़ बारिश को देख। ख़ुदा का कोप कितना छोटा है और उसकी रहमत कितनी बड़ी है।

(व्याख्या के लिये देखें पृ. 50)

78 राज़ी दिले-दीवाना ब तक़दीर न शुद,
फ़ारिग़ ज़ि ख़यालो-फ़िक्रो-तदबीर न शुद।
अय्यामे-शबाब रफ़्त ओ बाक़ी अस्त हवस,
मा पीर शुदेम ओ आरज़ू पीर न शुद!

मेरे पागल मन को मेरी तक़दीर पर सन्तोष न हुआ, इसने और अधिक प्राप्त करने की ख़्वाहिश को न छोड़ा। जवानी गुज़र गई है लेकिन लोभ क़ायम है। अफ़सोस, हम बूढ़े हो जाते हैं लेकिन हमारी ख़्वाहिशें बूढ़ी नहीं होती।

79 यारान चिह् क़दर राह दो-रंगी दारंद,
मुसहफ़ ब बग़ल, दीन फ़रंगी दारंद!
पैवस्ता बहम चू मुहरहा-ए-शतरंज,
दर दिल, हमा फ़िक्रे-ख़ाना-जंगी दारंद।

इस दुनिया के साथी किस तरह दो-रंगे (दोगले) हैं। इनकी बग़ल में क़ुरान है लेकिन इनके अमल काफ़िरों जैसे हैं। शतरंज के मोहरों की तरह ये हमेशा किसी दूसरे को मात देने की ताक में लगे रहते हैं।

80 क़स्साब पिसर किह् बा मुनश कीना बुवद,
ख़्वाहम दिले-ऊ साफ़ चू आईना बुबद।
गर दस्त बमन दिहद बगीरम पायश,
वर पुश्त बमन दिहद ब अज़ सीना बुवद।

क़साई का बेटा मेरा दुश्मन बन गया है और वह भी इसलिये कि मैं चाहता हूँ कि वह अपना मन शीशे की तरह साफ़ कर ले। अगर वह मेरा हाथ पकड़ ले तो मैं उसके पाँव पकड़ लूँ। अगर वह मेरा हाथ छोड़ दे तो बेहतर है ताकि मुझे उसका नाराज़ चेहरा दिखाई न दे।

81 हर किस किह् सबाते-दहर, संजीदा बुवद,
फ़स्ले-गुलो-अय्यामे-ख़ज़ां दीदा बुवद।
मायल-नशवद ब रंगो-बूए-गुलो-मुल,
नादीदा शुमारद, आंचिह् ख़ुद दीदा बुवद।

जो कोई यह समझना चाहता है कि वक़्त पल-पल बदलता रहता है उसे यह देखने की कोशिश करनी चाहिये कि किस तरह बहार पतझड़ में बदल जाती है। गुलाब और शराब के रंग और ख़ुशबू से धोखा मत खाओ। इनको देखते हुए भी अनदेखा कर दो।

82 दर हर गुनही फ़ुज़ूद बख़्शायश वुजूद,
शर्मिन्दा ब ईं तौर ज़ि किरदार नुमूद।
ख़िज्रे-रहे-मन गुनाह शुद आख़िरकार,
ईं फ़ज़लो-करम चिह् बूद ईं जुर्म चिह् बूद।

मेरे हर गुनाह के साथ उसकी रहमत और बख़्शिश बढ़ती गई। इस तरह उसने मुझे अपने गुनाहों से शर्मिन्दा कर दिया। आख़िरकार मेरे गुनाहों ने मेरा उस्ताद बनकर मुझे यह सबक़ दिया कि गुनाह क्या होते हैं और ख़ुदा की रहमत क्या होती है।

83 दुनिया हमगी अगर बकाम तू बुवद,
वीं सिक्का-ए-मिहरो-मह, बनाम तू बुवद।
आख़िर ज़ि जहान पए बक़ा बायद रफ़्त,
गर क़ैसर ओ फ़ग़फ़ूर ग़ुलाम तू बुवद।

तू चाहता है कि तेरी सब इच्छाएँ पूरी हो जायें। ज़रा सोचकर देख। अगर तेरी सब इच्छाएँ पूरी हो जायें, तेरा चाँद-सूरज पर हुक्म (सिक्का) चलने लगे, क़ैसर और फ़ग़फ़ूर जैसे सुलतान तेरे ग़ुलाम बन जायें तो भी तुझे इससे कुछ हासिल न होगा क्योंकि एक दिन तुझे दुनिया से कूच करना होगा।

(व्याख्या के लिये देखें, पृ. 140)

84 हर कस किह् ब लुत्फ़ो-करमत दीदा कशूद,
क़हरो-ग़ज़ब ग़ैर न दानद मौजूद।
मरदूदे-तू हेच जा न गरदद मक़बूल,
मक़बूले-तू हेच गह न गरदद मरदूद।

ऐ ख़ुदा, जिसने अपनी आँख तेरी रहमत की तरफ़ खोल ली, उसे दूसरों के ज़ुल्मो-सितम की परवाह न रही। जिसे तूने फटकारा, दुत्कारा उसे कहीं इज़्ज़त न मिली। जिसे तूने बड़ा बनाया, वह कहीं भी छोटा न हुआ।

(व्याख्या के लिये देखें, पृ. 49)

85 ख़्वाही किह् ज़ि फ़ैज़त, करम वुजूद बुवद,
दर हर दो जहान, राहत ओ बहबूद बुवद।
सौदा-ए-ख़यालश, हमा सरमाया-ए-सूद,
मिहरश बगुज़ीं किह् आक़िबत सूद बुवद।

अगर तू चाहता है कि तुझ पर उसकी दया-मेहर बनी रहे और तुझे दोनों जहानों में शान्ति मिले तो तू उसके ख़याल (ध्यान) को अपनी पूँजी बना ले। तू उसके प्यार में डूबा रह क्योंकि इससे ही उस लोक (परलोक) में लाभ होगा।

(व्याख्या के लिये देखें, पृ. 113)

86 उज़लत बजहान, राहते-जान याफ़्ता शुद,
बर रूए-ज़मीन, गंजे-निहां याफ़्ता शुद।
ईं गौहर-ए-नायाब किह् हम बे क़द्र अस्त,
दर बहरे-पुर-आशूब जहान याफ़्ता शुद।

दुनिया के त्याग से आत्मा को शान्ति मिलती है और जीते-जी गंजे-निहां (गुप्त ख़ज़ाना) हासिल हो जाता है। अगर दुनिया को त्याग दिया जाये तो इस ज़िन्दगी के तूफ़ानी समुद्र में से ही वह नाम रूपी गौहरे-नायाब (दुर्लभ हीरा) मिल जाता है जिसकी यहाँ किसी को क़द्र नहीं है।

(व्याख्या के लिये देखें, पृ. 65, 88)

87 यक लहज़ा अगर दिले-हज़ीनत बदिहंद,
आसूदगी-ए-रूए-ज़मीनत बदिहंद।
गर मिहरे-ख़ुदास्त नक़्श बर ख़ातिमे-दिल,
आलम हमा दर ज़ेरे-नगीनत बदिहंद।

अगर तेरे दिल में पल-भर के लिये ख़ुदा के इश्क़ का दर्द पैदा हो जाये तो समझ ले कि तुझे सारी दुनिया का सुख मिल गया; अगर तेरे दिल की अँगूठी पर ख़ुदा की मोहर लग जाये तो समझ ले कि सारा जहान तेरे हुक्म में आ गया है।

(व्याख्या के लिये देखें, पृ. 66)

88 दर दहर, अदू मिसाले-ग़फ़लत नबुवद,
ख़्वारी बतर, अज़ ख़्वाहिशे-रिफ़अत नबुवद।
हुशियार दमे-पीरी शौ क-आख़िर वक़त,
हासिल दिगरत बजुज़ नदामत नबुवद।

दुनिया में ग़फ़लत तेरी सबसे बड़ी दुश्मन है। अगर इससे भी बड़े दुश्मन को जानना चाहता है तो वह है ऊँची पदवी की ख़्वाहिश। तू बुढ़ापे में पहुँच चुका है। अब तो होशियार हो जा, वरना सिवाय शर्मिन्दगी के कुछ भी तेरे हाथ नहीं लगेगा।

(व्याख्या के लिये देखें, पृ. 140)

89 ग़मग़ीन नशवी, गर दिले-रेशत बदिहंद,
ख़ुशनूद मशौ किह् पेश पेशत बदिहंद।
गर शुकर ब ईं दौलते-सरमद बकुनी,
पेशत बदिहंद, अज़ हमा बेशत बदिहंद।

अगर ख़ुदा ने तुझे टूटा हुआ या ज़ख़्मी दिल दिया है तो तू अफ़सोस न कर; अगर तुझे दुनिया की नियामतें मिल गई हैं तो ख़ुश न हो। तू ख़ुदा का शुक्र कर कि उसने तुझे वह लाफ़ानी दौलत दी है जो यहाँ और वहाँ, लोक और परलोक, दोनों में काम आयेगी।

90 सरमद गिला-ए-यार निको शुद किह् न शुद,
लब बेहुदा गुफ़्तार निको शुद किह् न शुद।
मिन्नत-कशे-दहर मी शवी आख़िरकार,
कारे किह् ज़ि तू कार निको शुद किह् न शुद।

सरमद, तूने अच्छा किया जो अपने महबूब के ख़िलाफ़ शिकायत नहीं की। अच्छा हुआ कि तू इस क़िस्म की बेहूदा बात से बच गया। तू वक़्त का अहसान मान कि तू बुरा काम करने से बच गया।

91 बनिगर किह् अज़ीज़ान, हमा दर ख़ाक शुदंद,
दर सैद गहे-फ़ना ब फ़ितराक शुदंद।
आख़िर हमा रा, ख़ाक नशीं बायद शुद,
गीरम किह् ब रिफ़अत हमा अफ़लाक शुदंद।

ऐ इनसान! तू ज़रा सोचकर देख। तेरे सब महबूब मिट्टी में समा चुके हैं, दुनिया में चाहे कोई कितना भी ऊँचा उठ जाये, आख़िर मिट्टी में समाकर मिट्टी हो जाता है।

(व्याख्या के लिये देखें, पृ. 138)

92 आं कस किह् शराब मी ख़ुरद मी गुज़रद,
वां कस किह् कबाब मी ख़ुरद मी गुज़रद।
सरमद बकासा-ए-गदाई नान रा,
तर करदा ब आब मी ख़ुरद मी गुज़रद।

कुछ लोग शराब पीते हैं और दिन गुज़ार देते हैं; कुछ लोग हैं कि कबाब (मांस) खाते हैं और दिन गुज़ार देते हैं। यह बेचारा सरमद है कि पानी के प्याले में रोटी का सूखा टुकड़ा भिगोकर खा लेता है और दिन गुज़ार देता है।

(व्याख्या के लिये देखें, पृ. 137)

93 ईज़िद ब तराज़ू-ए-क़दर, बा ख़ुर्शीद,
चूं जिन्स निकोई रख़्त मी संजीद।
ईं बसकिह् गिरां बूद न जुंबीद, ज़ि जा,
वां बसकिह् सुबुक बूद, ब-अफ़लाक रसीद।

जब ख़ुदा ने तराज़ू के एक पलड़े में तुम्हारे ख़ूबसूरत चेहरे को रखा और दूसरे पलड़े में सूरज को, तो पहला पलड़ा भारी होने के कारण ज़मीन से न हिला जब कि दूसरा पलड़ा हलका होने के कारण आसमान पर जा पहुँचा।

(व्याख्या के लिये देखे पृ. 94)

94 सरमद! ग़मे-इश्क़, बुलहवस रा नदिहंद,
सोज़े-दिले-परवाना, मगस रा नदिहंद।
उम्रे बायद किह् यार आयद ब कनार,
ईं दौलते-सरमद, हमा कस रा नदिहंद।

ऐ सरमद! प्रेम की पीड़ा का वरदान कामी पुरुष को नहीं दिया जाता। मक्खी को परवाने की तड़प नहीं दी जाती। महबूब से विसाल के लिये सारी ज़िन्दगी ख़र्च हो जाती है, लेकिन यह लाफ़ानी दौलत हर किसी को नहीं बख़्शी जाती।

(व्याख्या के लिये देखें, पृ. 61)

95 हर जा किह् रवी, मिहरो-वफ़ा यारे-तू बाद,
आरामो-फ़राग़त, हमा जा यारे-तू बाद।
अज़ नामा-ओ-पैग़ाम, फ़रामोश मकुन,
याद आवरी अम बकुन ख़ुदा यारे-तू बाद।

तू जहाँ भी जाये, मुहब्बत और वफ़ा तेरे साथ रहें; तू जहाँ भी जाये, हर जगह अमन-शान्ति से रहे। हमें अपने सन्देशे भेजना न भूलना, हमारे साथ जुड़े रहना। ख़ुदा हमेशा तुम्हारे साथ रहे।

96 बे फ़िक्रो-ख़याले-दोस्त, राहत न बुवद,
अंदेशा-ए-मालो-जाहो-दौलत न बुवद।
सर रिश्ता-ए-जानो-दिल ब दिलबर बसपार,
बा दौलते-पाएदार, दूरत न बुवद।

बिना महबूब के फ़िक्र और ख़याल के, सुख नहीं मिल सकता। दुनिया की धन-दौलत और मान-बड़ाई की चिन्ता न कर। अपना दिल और जान उस दिलबर के हवाले कर दे। इस पायेदार (स्थायी) दौलत से दूर न रह।

(व्याख्या के लिये देखें, पृ. 114)

97 दुनिया मतलब, दुश्मने-जां, बायद शुद,
दिल ख़स्ता-ए-ईं बारे-गिरां, बायद शुद।
अंदेशा-ए-संजीदने-ईं, दरकार अस्त,
मीज़ाने-तअम्मुल बजहां, बायद शुद।

तू दुनिया की चाह मत कर, यह रूह की दुश्मन है, इसका भारी बोझ दिल को दबा लेता है; अक़्ल का तराज़ू हाथ में लेकर इसे समझदारी से तोलना मुनासिब है।

(व्याख्या के लिये देखें, पृ. 66)

98 अय्यामे-बहार, मुत्तकी जाम कशद,
हंगामे-ख़जां, ख़ुमारे-ईं-नाम कशद।
मै नोश किह् सय्यादे-फ़लक मी गरदद,
हर रोज़ दरीं फ़िक्र, किह् दर दाम कशद।

बहार और फूलों के मौसम में परहेज़गार (संयमी) भी शराब पीने लग जाता है। पतझड़ के मौसम में वह इसके बारे में सोचकर ही मस्त हो जाता है। ऐ सरमद! ख़ुदा के नाम की शराब पी, वक़्त का शिकारी तेरा पीछा कर रहा है और हर वक़्त तुझे अपने जाल में फँसाने की ताक में है।

99 अफ़सोस किह् कुहनश ब ख़यालम न रसीद,
अंदेशा दर ईं बादिया, बिस्यार दवीद।
बर रूए-ख़याले-ख़ाम, हैरान शुदा अम,
बर पर्दा-ए-अन्कबूत, सूरत किह् कशीद?

अफ़सोस! मेरी कल्पना उसको न पकड़ सकी। बेशक इसने ऊँची से ऊँची उड़ान भरी, पर मैं अपनी ख़ाम-ख़याली (कच्ची अक़्ल) पर हैरान हुआ कि यह उसे नहीं जान सकी जो मकड़ी के जाले को शक्ल देता है।

(व्याख्या के लिये देखें, पृ. 39)

100 हर दिल किह् बदामे-ग़मे-ऊ शाद बुवद,
अज़ हर दो जहान, फ़ारिग़ो-आज़ाद बुवद।
दीदम हमा जा सूरते-मअना अस्त यके,
ईं आईना हर जा अस्त, ख़ुदा दाद बुवद।

जो दिल महबूब के ग़म (ज़िक्रो-तसव्वुर) में गिरफ़्तार है, वह लोक और परलोक दोनों के ग़म से आज़ाद है। मुझे हर जगह वह एक हक़ीक़त व्यापक दिखाई दी। जिस शीशे (दिल या मन) में यह परछाईं दिखाई दे, वह ख़ुदा की रहमत से मिलता है।

(व्याख्या के लिये देखें, पृ. 118)

101 ईं मर्दुमे-दुनिया किह् गरिफ़तारे-ग़म अंद,
दीवाना बसे दीदम ओ हुशियार कम अंद।
अज़ बहरे-दो-रोज़े-उमर अज़ शामते-नफ़्स,
दर हिर्सो-हवा असीरो-बद-ख़्वाहम अंद।

ये दुनियादार दुःखों, मुसीबतों में फँसे हुए हैं। इनमें बेहोश और पागल ज़्यादा हैं और बाहोश या समझदार कम हैं। चन्द रोज़ की ज़िन्दगी में मलिन मन के कारण, लोग कामना और ईर्ष्या के बन्धनों में जकड़े हुए हैं।

102 दुनिया ब कसे रूए फ़रागत न नमूद,
सौदास्त चुनीं ख़याले-बेहूदा चिह् सूद।
इमरोज़ चुनीं हस्त सूए दामने-तू,
ता बूद चुनीं बूद चुनीं ख़्वाहद बूद।

इस दुनिया में किसी को अमन-शान्ति नहीं मिली। इसके व्यापार से किसी को फ़ायदा नहीं हुआ। जिस तरह इसने आज तुम्हारे दामन को पकड़ा हुआ है, इसी तरह पहले इसने दूसरों के दामन को भी पकड़ा हुआ था। इसका हमेशा यही व्यवहार रहा है और यही व्यवहार रहेगा।

103 हर चंद किह् सद दोस्त बमन दुश्मन शुद,
अज़ दोस्ती-ए-यके, दिलम ऐमन शुद।
वहदत बगुज़ीदम वज़ कसरत रस्तम,
आख़िर मन अज़ ऊ शुदम, ऊ अज़ मन शुद।

बेशक सैकड़ों दोस्त मेरे दुश्मन बन गए लेकिन उस एक (ख़ुदा) की दोस्ती से मेरे दिल को राहत मिली। मैं कसरत (अनेकता) को छोड़कर वहदत (एकता) में आ गया हूँ। मैं उसका हो गया हूँ और वह मेरा हो गया है।

(व्याख्या के लिये देखें, पृ. 59, 67)

104 दीदम बसे किह् सोज़ो-हसरत बुरदंद,
सद दाग़े-हसद बख़ुद ज़ि आलम ख़ुरदंद।
अज़ बहरे-दो रोज़े-उमर अज़ दस्ते-हवस,
दिल रा ब ग़मो-दर्द बहम अफ़शुरदंद।

मैंने यहाँ से किसी को, सिवाय दुःख और अफ़सोस के, कुछ भी साथ ले जाते नहीं देखा। लोग यहाँ से ईर्ष्या और बेइज़्ज़ती की कालिख अपने साथ ले गए। इस दो दिन की ज़िन्दगी में हवस या कामना का शिकार होने के कारण उनके दिल दुःख और दर्द से चीरे गए।

105 ईं बेख़िरदां, किह् अज़ ख़ुदा बेख़बर अंद,
अज़ बहरे-ज़रो-सीम, बहम कीनावर अंद।
बर दोस्ती-ए-अहले-जहान तकिया मकुन,
अज़ बहरे-दो रोज़ दुश्मने-यक दिगर अंद।

वे मूर्ख हैं जो अल्लाह से बेख़बर हैं और दुनिया की धन-दौलत के लिए एक-दूसरे से ईर्ष्या करते हैं। तू दुनियादारों की दोस्ती पर भरोसा न कर, वे इस पल भर की ज़िन्दगी में भी एक-दूसरे की जान के दुश्मन बने हुए हैं।

(व्याख्या के लिये देखें, पृ. 66)

106 ईं मुर्दमे-दुनिया, हमा बद-ख़्वाहम अंद,
याराने-निकोकार चिह् बिस्यार कम अंद।
ख़ुशवक़्ती-ए-दिल ब बुलहवस, बिस्यार अस्त,
आंहा किह् अज़ीज़ अंद, गिरिफ़्तारे-ग़म अंद।

दुनियादार मेरा बुरा चाहने वाले हैं। दुनिया में सच्चे दोस्त बहुत कम हैं। जिनके दिल दुनिया की ख़्वाहिशों से भरे हुए हैं, वे मौज में हैं, मगर ख़ुदा के प्यारे हमेशा दु:खों और चिन्ताओं में ग्रस्त रहते हैं।

(व्याख्या के लिये देखें, पृ. 59)

107 हर कस पए नाने बजहान दोस्त बुवद,
यक दोस्त नदीदम, ज़ि जान दोस्त बुवद।
चूं सग, ज़ि पए लुक़मा बहर दर ब दवांद,
ईं अस्त निशान, किह् नामे-शान दोस्त बुवद।

दुनिया में लोग रोटी के टुकड़े के लिये दोस्त बन जाते हैं। सच्चे दिल से प्रेम करनेवाला कोई दोस्त दिखाई नहीं देता। रोटी के टुकड़े के लिए दर-बदर भागने वाले कुत्ते बहुत हैं। वे दोस्त होने का दावा तो करते हैं मगर उनकी दोस्ती में सच्चे दोस्त वाली निशानी नहीं है।

(व्याख्या के लिये देखें, पृ. 136)

108 तूले-अमले-उम्र, ब आख़िर न रसीद,
दीवाना दिलम, आक़िबते-कार न दीद।
शबहा बख़याले-ख़्वाबे-ग़फ़लत बगुज़श्त,
अकनूं चिह् कुनम किह् सुबहे-सादिक़ बदमीद।

जीवन की लम्बी आशाओं का कहीं अन्त न हुआ। मेरे अज्ञानी मन ने कभी यह न सोचा कि उसे अपने कर्मों का फल भोगना पड़ेगा। मेरी जवानी की रातें ग़फ़लत की नींद में गुज़र गईं। अब जब कि बुढ़ापे का दिन चढ़ आया है तो क्या हो सकता है?

109 गाहे किह् दिलम हिसाबे-किरदार कुनद,
चंदीं ग़मो-अंदोह बख़ुद यार कुनद।
बेश अज़ नफ़से न दीदम ईं कार कुनद,
कारे किह् नदामत दिहद, इनकार कुनद!

जब मेरा मन अपने कर्मों का हिसाब करता है तो यह दुःख और अफ़सोस से भर जाता है। लेकिन फिर भी यह बात मानने के लिए तैयार नहीं होता कि वह काम छोड़ देना चाहिये जिससे दुःख और अफ़सोस के सिवाय कुछ हाथ नहीं लगता।

110 दिल दर पए लैला सिफ़्ती, मजनूं शुद,
दर आलमे-ग़ुरबतम, वतन हामूं शुद।
दर पीरो-ओ-ज़ुअफ़, मुत्तकी गश्त जवान,
हंगामे-ख़ज़ां, जोशे-बहार अफ़ज़ूं शुद!

मेरा मन मजनूँ की तरह लैला का दीवाना हो गया है। इस हालत में घर जंगल की तरह दिखाई देता है। बुढ़ापे और कमज़ोरी में भी तपस्वी जवान हो गया, जैसे पतझड़ में फिर से बहार आ गई हो।

111 आं किस किह् तुरा ताजे-जहांबानी दाद,
मा रा हमा असबाबे-परेशानी दाद।
पोशांद लिबास, हर किरा ऐबे दीद,
बे-ऐबां रा लिबासे-उरयानी दाद!

वह ख़ुदावन्द जिसने तुझे शाही ताज दिया है, उसी ने हमें परेशानियों का सामान बख़्शा है। उसने जिस किसी में ऐब देखा उसे ढकने के लिए लिबास दे दिया, पर बेगुनाहों को नग्नता की पोशाक बख़्शी।

112 ग़ैर अज़ तू मरा यारो-निगारे न बुवद,
दिल रा हवसे-बाग़ो-बहारे न बुवद।
पैवस्ता ख़यालो-वहम अंदेशा बशवी,
जुज़ मिहरो-मह रूए-तू कारे न बुवद।

तेरे बिना मेरा कोई और दोस्त नहीं है। मेरे दिल में न गुलशन की तड़प है न बहार की। बस तू ही मेरे ख़यालों का मरक़ज़ (केन्द्र) है और सिवाय तेरे इश्क़ और तेरे चाँद से मुखड़े के, मुझे कोई दूसरी चीज़ पसन्द नहीं है।

(व्याख्या के लिये देखें, पृ. 64)

113 जुज़ बादा-ए-शौक़े-दोस्त, इशरत न बुवद,
बे दर्द कसे नश्शा-ए-वहदत न बुवद।
मैख़ाना-ए-आलम किह् पुर अज़ दर्दे-सर अस्त,
ख़ाली ज़ि ख़ुमारो-रंजो-मिहनत न बुवद।

इश्क़ की शराब के सुरूर (आनन्द) के सामने दूसरा कोई सुरूर नहीं है। बिना दुःख उठाये ख़ुदा से मिलाप का नशा नसीब नहीं होता। इस दुनिया के मयख़ाने में, सिवाय रंजो-ग़म के, और कुछ नहीं है। इसमें सुख-शान्ति का नामो-निशान तक नहीं है।

(व्याख्या के लिये देखें, पृ. 55, 105)

114 अबना-ए-ज़मां, बयक दिगर दिल तंग अंद,
पैवस्ता बख़ुद चू मुख़्तलिफ़ आहंग अंद।
क़ानूने-वफ़ा-ओ-मिहर, बरदाश्ता अंद,
दायम बमक़ामे-आशिती, दर जंग अंद।

ये दुनियादार एक-दूसरे से ईर्ष्या और दुश्मनी करते हैं। अपने आपमें खोये हुए हर कोई अपनी-अपनी तूती बजा रहा है। प्रेम और मुहब्बत को लोगों ने बिलकुल भुला दिया है। वे अमन और प्यार से रहने की बजाय सदा आपस में लड़ते-झगड़ते रहते हैं।

115 यारे बगुज़ीं किह् बेवफ़ाई न कुनद,
दिल ख़स्ता तुरा दर आशनाई न कुनद।
पैवस्ता दर आग़ोशो-कनारत गीरद,
हरगिज़ ज़ि तू यक गाम, जुदाई न कुनद।

तू ऐसा दोस्त बना जो कभी बेवफ़ाई न करे; मुहब्बत में तेरा दिल न तोड़े; तुझे हमेशा गले लगाकर रखे; जो हमेशा तेरे साथ रहे और एक क़दम भी तुझसे जुदा न हो।

(व्याख्या के लिये देखें, पृ. 95)

116 ई क़ौम किह् दर दोस्ती-ए-सीमो-ज़र अंद,
ग़ाफ़िल ज़ि ख़ुदा ओ दुश्मने-यक दिगर अंद।
हर चंद नसीबे-हमा पैवस्ता जुदा अस्त,
दर बख़्शिशे-हक़्क़, बयक दिगर कीनावर अंद!

दुनियादार सोने-चाँदी के पुजारी हैं; वे ख़ुदा से ग़ाफ़िल हैं और एक-दूसरे की जान के दुश्मन हैं। हरएक की तक़दीर पहले लिखी जा चुकी है, फिर भी वे ख़ुदा द्वारा किसी दूसरे पर की गई बख़्शिश को देखकर जलते हैं।

(व्याख्या के लिये देखें, पृ. 66)

117 हुशियार बुवद, हर किह् गुले-जाम कशद,
ख़ुद रा ज़ि ग़मो-मिहनत अय्याम कशद।
मै नोश किह् सय्यादे-फ़लक मी गरदद,
आख़िर हमा रा ज़ि हीला दर दाम कशद।

होशियार (सुचेत) वह है जो गुलाबी रंग के प्याले पीता है, उसे सब दुःखों से छुटकारा मिल जाता है। शराब पी क्योंकि 'होनी' का शिकारी तुम्हें अपने जाल में फँसाने के लिये तेरा पीछा कर रहा है।

(व्याख्या के लिये देखें, पृ. 105)

118 आनी किह् ग़मे-तू, रंग रा मी शिकनद,
ख़ूए-तू, सफ़े-पलंग रा मी शिकनद!
दिल सख़्ती-ए-तू, हरीसे-जान सख़्ती-ए-मास्त,
आंजास्त किह् संग, संग रा मी शिकनद!

तू वह महबूब है जिसके इश्क़ में आशिक़ों का रंग पीला पड़ जाता है। तेरे ख़ौफ़ो-जलाल से चीते भी काँपते हैं। सख़्त दिल से कोई सख़्त जान ही टकरा सकता है, क्योंकि पत्थर को सिर्फ़ पत्थर ही तोड़ सकता है।

(व्याख्या के लिये देखें, पृ. 58)

119 दर मस्लख़े-इश्क़, जुज़ निको रा नकुशंद,
लाग़र सिफ़तां ज़िश्त ख़ू रा नकुशंद।
तू आशिक़े-सादिक़, ज़ि कुश्तन मगरेज़,
मुरदार बुवद, हर आंकिह् ऊ रा नकुशंद!

इश्क़ की क़त्लगाह में सिर्फ़ नेक आशिक़ों को ही क़त्ल किया जाता है। कमज़ोर और क्रोधी इनसान इश्क़ में पूरे नहीं उतरते और उनकी परवाह नहीं की जाती। तू सच्चा आशिक़ है तो मौत से न डर क्योंकि जो पहले ही मर चुका है, उसे मारा नहीं जाता।

(व्याख्या के लिये देखें, पृ. 83)

120 आं रोज़ किह् जा ज़ेरे-ज़मीन ख़्वाहद बूद,
अज़ लुत्फ़े-तू या रब्ब! ब अज़ीं ख़्वाहद बूद।
बर रूए-ज़मीन, हस्त हलावत मुश्किल,
दर ज़ेरे-ज़मीन अगर चुनीं ख़्वाहद बूद।

एक दिन मुझे क़ब्र में दबा दिया जायेगा। ऐ खुदा! तेरी रहमत से शायद मुझे वहाँ कुछ चैन मिल जाये। इस ज़मीन पर तो सुकून का मिलना असम्भव है। अगर मरने के बाद भी सुकून का मिलना मुश्किल हो तो ज़िन्दा लोगों की हालत और भी ख़राब हो जायेगी।

121 ऐ नफ़्से-सितमगार, चिहा ख़्वाही करद,
अज़ ख़लक़े-ख़ुदा, बाज़ जुदा ख़्वाही करद।
पैवस्ता सरे-जंगो-ख़ुसूमत दारी,
गाहे ब ग़लत, सुलह बमा ख़्वाही करद।

ऐ ज़ालिम नफ़्स (मन), तू क्या-क्या ज़ुल्म करेगा? क्या तू मुझे ख़लक़े-ख़ुदा (परमात्मा की रचना) से दूर ही रखेगा? क्या तू हमेशा मेरे साथ दुश्मनी करेगा और जंग जारी रखेगा? भूले से ही सही, कभी तो मेरे साथ अमन क़ायम कर।
(व्याख्या के लिये देखें, पृ. 84)

122 दर माले-जहान मआल हरगिज़ न बुवद,
ईं ख़्वाबो-ख़याले-माल हरगिज़ न बुवद।
अज़ वहमो-ख़याले-ख़ाम ख़ुशदिल न शवी,
बेश अज़ अलमो-वबाल हरगिज़ न बुवद।

दुनिया की दौलत का नामोनिशान भी बाक़ी नहीं रहता। यह कल्पना और सपनों की तरह अलोप हो जाती है। दुनिया के झूठे ख़यालों और उम्मीदों से ख़ुश न हो। यह तो सिर्फ़ दुःख और चिन्ता के स्रोत हैं।

123 हर कस बख़याले-ऊ हम आग़ोश बुवद,
दीवाना नुमायद हमा सर होश बुवद।
कैफ़ियत ईं नश्शा बकस ज़ाहिर नीस्त,
ईं बादा, निहां हमा दर जोश बुवद।

जो हर वक़्त ख़ुदा के तसव्वुर (ध्यान) में खोया रहता है, वह देखने में बेहोश नज़र आता है पर असल में बा-होश होता है। इस इश्क़ का नशा निराला है, यह शराब हर दिल में है मगर दिखाई नहीं देती।

(व्याख्या के लिये देखें, पृ. 106)

124 अज़ मनसबे-इश्क़, सर फ़राज़म करदंद,
वज़ मिन्नते-ख़लक़, बे नियाज़म करदंद।
चूं शमअ, दर ईं बज़्म, गुदाज़म करदंद,
वज़ सोख़्तगी, महरमे-राज़म करदंद।

मेरे महबूब ने मुझे अपना इश्क़ बख़्शकर मेरा रुतबा बुलन्द कर दिया। इस तरह उसने मुझे दुनिया के एहसानों से बेनियाज़ (बेपरवाह) कर दिया। जब मैं शमा की तरह महफ़िल में जला तो इस जलन ने मुझे इलाही-राज़ (भेद) का महरम (वाक़िफ़कार) बना दिया।

(व्याख्या के लिये देखें, पृ. 63)

125 हर चंद किह् इस्याने-मरा मी दानद,
बर ख़्वाने-करम, हर नफ़से मी ख़्वानद।
दर ख़ौफ़ो-रजा बसे तअम्मुल करदम,
बेश अज़ हमा मायल ब करम मी मानद।

वह ख़ुदा मेरे गुनाहों को जानता है लेकिन फिर भी वह मुझ पर दया करने के लिये तैयार है। मैंने उसे आशा और निराशा, डर और उम्मीद दोनों में परखा है। वह हर हालत में मेरा सबसे ज़्यादा हितकारी है।

(व्याख्या के लिये देखें, पृ. 49)

126 हर कस किह् सिर्रे-हक़ीक़तश बावर शुद,
ऊ पहन तर अज़ सिपिहर पहनावर शुद।
मुल्ला गोयद किह् बर फ़लक शुद अहमद,
सरमद गोयद फ़लक ब अहमद दर शुद।

जिसने हक़ीक़त का भेद पा लिया, वह आकाश से ज़्यादा विशाल हो गया। मुल्ला कहता है, 'अहमद आसमान पर गया।' सरमद कहता है, 'नहीं! आसमान अहमद पर उतर आया।'

(व्याख्या के लिये देखें, पृ. 90)

127 सरमद किह् ज़ि जामे-इश्क़ मस्तिश करदंद,
बाला करदंद ओ बाज़ पस्तिश करदंद।
मी ख़्वास्त ख़ुदा परस्ती ओ हुशियारी,
मस्तिश करदंद ओ बुत-परस्तिश करदंद।

ऐ सरमद! तुझे उसने इश्क़ का जाम पिलाकर मदमस्त कर दिया। उसने पहले तुझे ऊँचा उठाया, फिर नीचे गिरा दिया। तू चाहता था कि होशियार रहे और ख़ुदा की बन्दगी करे। मगर उन्होंने तुझे बेख़ुद (अचेत) और बुत-परस्त (मूर्ति-पूजक) बना दिया।

(व्याख्या के लिये देखें, पृ. 96)

128 बगुज़र ज़ि ख़ुदी किह् दीन क़रीनत गरदद,
सर दफ़्तरे-आअमाल, हमीनत गरदद।
दर हर दो जहान, सिक्का-ए-नामत बज़नंद,
आलम हमा दर ज़ेरे-नगीनत गरदद।

ख़ुदी (हौंमैं) से गुज़र जा ताकि तू दीन (ख़ुदा) के क़रीब पहुँच जाये। यही सब कर्मों से ऊँचा कर्म है। इससे दोनों जहानों में तेरे नाम का सिक्का चलेगा और सारी दुनिया पर तेरी हुकूमत हो जायेगी।

(व्याख्या के लिये देखें, पृ. 86)

129 यारान सुख़ने अस्त, अगर गोश कुनीद,
ता दस्त रसद, साग़रे-मै नोश कुनीद।
अज़ पहलू-ए-जामे-जम बदौलत ब रसीद,
ईं हरफ़ मबादा किह् फ़रामोश कुनीद!

दोस्तो! मेरी एक बात ध्यान से सुनो। जब तक हो सके शराब के जाम (प्याले) पीते जाओ; जमशीद को जाम से ही दौलत मिली; यह सच्ची नसीहत है, इसे मत भुलाना।

(व्याख्या के लिये देखें, पृ. 105)

130 ईं मर्दुमे-दुनिया ज़ि ख़ुदा बेख़बर अंद,
हर शामो-सहर, दर तलबे-सीमो-ज़र अंद।
अज़ पहलू-ए-हमदिगर, जिगर रेश तर अंद,
हर चंद किह् चूं बादे-सबा दर गुज़र अंद।

ये दुनियादार लोग ख़ुदा से बेख़बर हैं। ये दिन-रात सिर्फ़ सोने-चाँदी के लिये रोते-तड़पते हैं। ये एक-दूसरे से मिलते भी हैं, मगर इनके मन में दुःख और रोष भरा होता है। ये यह नहीं समझते कि ज़िन्दगी हवा के झोंके की तरह झट-पट गुज़र जायेगी।

131 या रब्ब! ब कसे मरा रसाई न बुवद,
उम्मीदे-वफ़ा-ओ-आशनाई न बुवद।
दर दायरा-ए-तजरिबा, पाबंद शुदम,
ग़ैर अज़ दरे-रहमतत, रहाई न बुवद।

ऐ ख़ुदावन्द करीम, ऐसी रहमत कर कि मुझे किसी दूसरे के पास मदद माँगने के लिये न जाना पड़े और न ही मुझे किसी दूसरे की मुहब्बत और दोस्ती का सहारा लेना पड़े। मैं इस हमेशा बदलती रहनेवाली दुनिया के दायरे (चक्कर) में क़ैद हूँ। बिना तेरी रहमत के, मैं इससे आज़ाद नहीं हो सकता।

(व्याख्या के लिये देखें, पृ. 47)

132 हर कस ज़ि ख़ुदा दौलतो-दीं मी तलबद,
या सीमबरी माहे-जबीं मी तलबद।
बे चारा दिलम न आं न ईं मी तलबद,
ख़्वाहाने विसाल अस्त ओ हमीं मी तलबद!

हर कोई ख़ुदा से दीन, दौलत और चाँदी जैसे बदन और चाँद के से मुखड़े वाले ख़ूबसूरत महबूब के लिये दुआ करता है। मैं इनमें से कुछ नहीं माँगता। मैं सिर्फ़ उससे विसाल के लिये दुआ करता हूँ।

(व्याख्या के लिये देखें, पृ. 139)

133 आं कीस्त किह् ऊ ज़ुहदो-रिया नशनासद,
दर मकरो-दग़ा ख़ुदा चू मा नशनासद।
गुफ़्ते किह् मख़ुर बादा, चू मन ज़ाहिद शौ,
ईं रा ब कसे गो किह् तुरा नशनासद!

तुम दिखावे की इबादत को तपस्या कहकर किसे धोखा देने की कोशिश कर रहे हो? क्या तुम यह नहीं जानते कि ख़ुदा को हमारे धोखे और फ़रेब का पूरा ज्ञान है। तुम कहते हो कि हमारी तरह शराब भी पीते रहो और तपस्वी भी बने रहो। यह बात उससे कहो जो तुम्हारी असलियत को न जानता हो।

134 सरमद! गिला इख़्तिसार मी बायद करद,
यक कार, अज़ ईं दो कार मी बायद करद।
या तन ब रज़ाए-दोस्त मी बायद दाद,
या जान ब-रहश निसार मी बायद करद!

ऐ सरमद, तू शिकवे-शिकायतें बन्द कर; तू दोनों में से कोई भी रास्ता चुन, या तो अपने जिस्म को ख़ुदा की रज़ा के अधीन कर दे या अपनी रूह को उसकी राह में न्योछावर कर दे।

(व्याख्या के लिये देखें, पृ. 135-36)

135 ता नीस्त न गर्दी रहे-हस्तत न दिहंद,
ईं मर्तबा बा हिम्मते-पस्तत न दिहंद।
चूं शमअ क़रारे-सोख़्तन ता न दही,
सर रिश्ताए-रोशनी बदस्तत न दिहंद।

जब तक तू मरना नहीं जानता, तू असल में ज़िन्दा नहीं है। लेकिन यह दर्जा कम हिम्मत वालों को नसीब नहीं होता। जब तक तू शमा की तरह नहीं जलेगा, तुझे अन्दरूनी प्रकाश हासिल नहीं होगा।

(व्याख्या के लिये देखें, पृ. 110)

136 सरमद! मा रा ब इश्क़ रुसवा करंदद,
सरमस्तो-सरासीमा-ओ-शैदा करदंद।
उरयानी-ए-तन बूद ग़ुबारे-रहे-दोस्त,
आं नीज़ ब तेग़ अज़ सरे-मा वा करदंद!

ऐ सरमद! उसने अपने इश्क़ में मुझे बदनाम कर दिया। उसके इश्क़ की मस्ती ने मुझे दीवाना बना दिया। मेरा नंगा जिस्म महबूब से विसाल के रास्ते में एक रुकावट था। उस रुकावट को भी मुहब्बत की तलवार ने काट डाला।

137 ख़ुद रा ब कश अज़ मिहरे-ज़रो-सीम कनार,
ता माह रुख़े सीम बर आयद ब कनार।
सर रिश्ता-ए-क़िस्मत ब कफ़े-तू ख़ुद नीस्त,
आं रा कि ख़ुदा दाद, ब ओ कीना मदार।

तू ख़ुद को सोने-चाँदी की हवस से दूर रख ताकि तेरा उस चाँद-से मुखड़े वाले महबूब से मिलाप हो जाये। क़िस्मत की डोर तेरे हाथ में नहीं है। जिसे ख़ुदा दे, तू उससे हसद (ईर्ष्या) न कर।

(व्याख्या के लिये देखें, पृ. 133)

138 हरगाह बिबीनी, ज़ि कसे ऐबो-हुनर,
ऐबो-हुनरे-ख़्वेश, दर आवर ब नज़र।
ईं अस्त हुनर बिहतर अज़ीं नीस्त दिगर,
ख़ुद रा बनिगर ब ऐबे-मर्दुम मनिगर।

जब दूसरों के गुण और दोष देखते हो तो अपने गुण और दोषों को भी देखो। यह सबसे बड़ा गुण है। कोई गुण इससे बड़ा नहीं है। दूसरों के गुणों और दोषों को देखने की बजाय अपने अन्दर झाँककर देखो।

139 सर पा शुद ओ पाए सर मरा दर रहे-यार,
मन बे सरो-पा शुदम तू मअज़ूरम दार।
हुशियार बसर चगूना पोशद पा पोश,
दीवाना बसर चगूना पेचद दस्तार।

मैं अपने महबूब की राह में सिर के बल चलकर जाता हूँ। ऐ ख़ुदा! मुझे मुआफ़ कर दे, कि न मेरा सिर रहा है, न मेरे पैर। कोई अक़्लमन्द सिर पर जूते नहीं रखता और कोई पागल पगड़ी कैसे बाँध सकता है?

140 दर बहरे-वुजूद, अज़ हबाबे कम तर,
मौजे कि दरीं बहर, फ़तद हस्त ख़तर।
आईना बकफ़ बगीर ओ यकदम बनिगर,
अकसे तू, दरीं आब बमानी चिह् क़दर।

ज़िन्दगी के समुद्र में तुम छोटे-से बुलबुले के समान हो जो हर लहर से डरता है। हाथ में शीशा लेकर थोड़ी देर के लिये अपनी परछाईं देखो कि यह कब तक क़ायम रहेगी।

141 अज़ वहमो-ख़यालो-फ़िक्रे-दुनिया बगुज़र,
चूं बादे-सबा, ज़ि बाग़ो-सहरा बगुज़र।
दीवाना मशौ बरंगो-बूए-गुलो-मुल,
हुशियार बशौ, अज़ ईं हवाहा बगुज़र।

ऐ ग़ाफ़िल! तू झूठी दुनिया की झूठी चिन्ता छोड़ दे। तू असलियत को समझ और सुबह की हवा की तरह गुलशन (सुख) और रेगिस्तान (दुःख) से गुज़र जा।

(व्याख्या के लिये देखें, पृ. 141-42)

142 ऐ दोस्त! मरा ब-इल्मो-हिकमत बनिगर,
दर मिहरो-बफ़ा ओ दर महब्बत बनिगर।
मन साहिबे-मअना अम, ओ सौते-तअज़ीम,
दर मन, चू किताब हर दो सूरत बनिगर।

ऐ दोस्त! मेरे ज्ञान और मेरे विवेक को देख, तू मेरी मुहब्बत और वफ़ा को देख। मैं सच का ज्ञाता हूँ; मैं सौते-तअज़ीम (सत्कार योग आवाज़) शब्द या नाम का वाक़िफ़कार हूँ। मुझे किताब की तरह दोनों तरफ़ से पढ़।

(व्याख्या के लिये देखें, पृ. 102)

143 शर्मिंदा-ए-किरदारे-ख़ुदम शामो-सहर,
मन महरमे-ईं कारम ओ कस नीस्त दिगर।
ग़ाफ़िल हम अज़ीं लुत्फ़ ब-ईं इस्यानी,
जुर्मे-ख़ुद ओ हम फ़ज़ले-तू दारम ब नज़र।

मैं दिन-रात अपने गुनाहों को देखकर शर्मिन्दा होता हूँ। यह भेद सिर्फ़ मैं ही जानता हूँ, कोई दूसरा नहीं। अपने इन अनगिनत गुनाहों के ढेर के साथ ही मैं तेरी रहमत को भी देखता हूँ। मेरी आँख अपने गुनाहों की तरफ़ भी खुली है और तेरी रहमत की तरफ़ भी।

144 ऐ ज़ाहिदे-ख़ुद-फ़रोश हरगिज़ मग़रूर,
बायद नशवी किह् ता न गर्दी रंजूर।
गोयंद तुरा ज़ाहिद ओ हस्ती फ़ासिक़,
बर अकस नहंद नामे-ज़ंगी काफ़ूर।

ऐ अपनी बड़ाई का दिखावा करनेवाले तपस्वी! ऐसा न हो कि तुझे अन्त में पछताना पड़े। लोग तुझे तपस्वी कहते हैं, लेकिन तू अन्दर से कपटी है। लोग बदसूरत को ख़ूबसूरत कहने की ग़लती कर रहे हैं।

145 इस्याने-मन इहसाने-तू न आयद बशुमार,
बे हद्दो-हिसाब कै ब आयद बशुमार।
गर पेशे-ख़ुद ईं हिसाबे-सद-साल कुनम,
न फ़ज़ले-तू न जुर्मे-मन आयद बशुमार।

न मेरे गुनाहों का कोई अन्त है और न तेरी रहमत का। अनन्त को कैसे तोला और मापा जा सकता है। मैं सौ साल भी हिसाब लगाता रहूँ, न तेरी रहमत का हिसाब हो सकता है न मेरे गुनाहों का।

146 अज़ मर्दुमे-दुनिया, बख़ुदा गीर कनार,
ता दिल ब-कुशद अरूसे-राहत ब कनार।
सर रिश्ता-ए-इख़्तिलात, अज़ दस्त बदिह,
सरमाया-ए-आरामो-फ़राग़त बकफ़ आर।

तू दुनियादारों का साथ छोड़कर ख़ुदा की तरफ़ मुँह कर ताकि तेरे मन को शान्ति की दुलहन मिल सके। अपने सिर से रिश्तों की रस्सी उतार दे ताकि तुझे सुख-शान्ति की दौलत मिल जाये।

147 सर रिश्ता-ए-इख़्तियार, बा यार गुज़ार,
ख़ुद रा ज़ि ग़मो-मिहनते-बेहूदा बर आर।
ईं उम्रे-गिरामी किह् तमामी हवस अस्त,
बा यार बसर बिबुर ब ग़फ़लत मसपार।

तू अपनी मर्ज़ी को ख़ुदा की रज़ा के अधीन कर दे और दुःख के बोझ से आज़ाद हो जा। यह ज़िन्दगी सिर्फ़ इच्छाओं का खेल है। तू इसे महबूब के साथ गुज़ार, ग़फ़लत में बर्बाद न कर।

(व्याख्या के लिये देखें, पृ. 46)

148 दिल रा ब ख़याले-यार ख़ुशनूद बदार,
सर रिश्ता-ए-ईं दौलते-सरमद, बकफ़ आर।
गंज अस्त, किह् रंजिश न बुवद आख़िरकार,
सौदास्त किह् सूदश बुवद अफ़ज़ूं ज़ि शुमार।

तू अपने दिल को महबूब की मुहब्बत से ख़ुश रख। इस तरह तुझे लाफ़ानी दौलत हासिल हो जायेगी। यह वह ख़ज़ाना है जिससे आख़िरी वक़्त दुःख नहीं, सुख मिलता है। इस सौदे में नफ़ा ही नफ़ा है, कोई नुक़सान नहीं।

(व्याख्या के लिये देखें, पृ. 133)

149 या रब्ब ब करम मरा ज़ि गिरदाब बर-आर,
अज़ बहरे-गुनाह कश्ती-अम गीर कनार।
जुर्मे-मनो-इहसाने-तू बे हद्दो-हिसाब,
ईं तरफ़ा हिसाब अस्त कि न आयद बशुमार।

ऐ ख़ुदा! मुझ पर रहम कर और मुझे इस भँवर से बाहर निकाल। तू मेरी किश्ती को गुनाहों के सागर से निकालकर किनारे पर ले आ। मेरे गुनाह और तेरी रहमत बेहिसाब हैं। तेरी रहमत माप-तोल से ऊपर है।

(व्याख्या के लिये देखें, पृ. 51)

150 मुमकिन न बुवद किह् यार आयद ब कनार,
ख़ुद रा अज़ ख़याले-ख़ामो-अंदेशा, बर आर।
हर चीज़ किह् ग़ैरे-ऊस्त, दर सीना-ए-तुस्त,
बिस्यार हिजाबीस्त, मियाने-तू ओ यार।

महबूब को पाना इतना आसान नहीं है। तू हरएक ख़याल को दिल से निकाल दे। उसके सिवाय तेरे दिल में जो भी दूसरी चीज़ है वह तेरे और उसके दरमियान एक पर्दा है।

(व्याख्या के लिये देखें, पृ. 87)

151 दिल, अज़ ग़मे-इश्क़, जान शवद, आख़िरकार,
सर रिश्ता-ए-ईं उम्रे-अबद रा बकफ़ आर।
ख़्वाही कि नसीबे-तू शवद बोसो-कनार,
ज़िनहार, अज़ ऊ मगीर यक लहज़ा कनार!

महबूब के इश्क़ के ग़म से दिल ज़िन्दा हो जाता है। इससे लाफ़ानी ज़िन्दगी हासिल हो जाती है। अगर तू महबूब को गले लगाना चाहता है तो एक पल के लिये भी उसके ख़याल से जुदा न हो।

(व्याख्या के लिये देखें, पृ. 117)

152 या रब्ब! चिह् कुनम? गुज़श्त जुर्मम ज़ि शुमार,
कश्ती-ए-दिले-ख़स्ता, ज़ि गिरदाब बर आर।
दर बहरे ख़जालतो-नदामत ग़र्क़म,
फ़ज़्ले-तू कुनद चारा, बगीरद बकनार।

या रब्ब, मेरे गुनाहों का कोई अन्त नहीं है। मेरे दिल की किश्ती चकनाचूर है और भँवर (दुःख) हज़ारों हैं। इसी कारण मैं शर्म और पश्चात्ताप के सागर में डूबा हुआ हूँ। अगर तू रहमत करे तो मैं पार लग सकता हूँ।

(व्याख्या के लिये देखें, पृ. 49)

153 अज़ माह-रुख़ां अगर नगीरी तू कनार,
लज़्ज़त न बरी बेश्तर अज़ बोसो-कनार।
ईं सीम-बरां, शेफ़्ता-ए-सीमो-ज़र अंद,
नक़द-ए-दिलो-जान बदस्ते-ईशां मसपार!

तू चाँद जैसी शक्लों का साथ छोड़ दे क्योंकि तुझे इनके आलिंगन और चुम्बन से कुछ नहीं मिलेगा। यह चाँदी जैसे सुन्दर शरीर सिर्फ़ सोने-चाँदी के मतवाले हैं। अपनी मन-आत्मा की दौलत इनके हवाले मत कर।

154 जुर्मे-मन ओ फ़ज़ले-यार, अफ़ज़ूं ज़ि शुमार,
ईं हम चू हिसाबीस्त किह् मन दानम ओ यार।
चश्मे-करमश, आशिके-हुस्ने-गुनाह अस्त,
ज़िनहार ज़ि किरदारे-बद, अंदेशा मदार!

मेरे गुनाह अनगिनत हैं और मेरे महबूब की बख़्शिशें भी अनगिनत हैं। इनके बारे में मैं जानता हूँ या मेरा महबूब। उसकी रहमत-भरी आँख गुनाह के हुस्न की आशिक़ है। जितना बड़ा गुनाह होता है उतनी ही उसकी रहमत से भरी आँख उसकी तरफ़ खिंची चली जाती है, इसी लिये तू अपने गुनाहों को देखकर मत घबरा।

155 हर जा किह् शवद साक़ी-ए-गुलफ़ाम दो-चार,
शुकराना-ए-ईं नमाज़े-अव्वल बगुज़ार।
गाफ़िल न शवी, ज़ि नश्शा-ए-इजज़ो-नियाज़,
हुशियार, किह् आख़िर न कशी रंजे-ख़ुमार।

तुझे जहाँ भी गुलाब से चेहरे वाला साथी मिल जाये, तू उसके क़दमों पर सजदा कर और शुक्राने की नमाज़ गुज़ार। तू आजिज़ी (नम्रता) का नशा पी ताकि तुझे अन्त में अपनी ग़फ़लत के कारण दुःख न उठाना पड़े।

(व्याख्या के लिये देखें, पृ. 97)

156 चीज़े किह् दर ओ ऐब बुवद, नीस्त हुनर,
आमेज़िशे-ख़ल्क़ अस्त, बगीरश कमतर।
बिस्यारी-ए-इख़्तिलाते-मर्दुम, रंज अस्त,
गुफ़्तम बतू, हर चंद किह् कमतर, बिहतर।

जो चीज़ सबसे निकम्मी और ख़राब है वह है दुनियादारों की सोहबत। तू इससे जितना बच सकता है बच। दुनियादारों का ज़्यादा मेल-मिलाप दुःखों की जड़ है। मैंने तुम्हें बता दिया है कि दुनिया का मिलाप जितना कम हो उतना ही अच्छा है।

157 चूं मअनी ओ लफ़्ज़, मा ओ ऊ रा बनिगर,
चूं चश्मो-निगाह, जुदा ओ यक जा बनिगर।
यकदम न कसे जुदा नयाबी हरगिज़,
मानिंदे-गुलो-बूस्त बहर जा बनिगर।

जैसे शब्द और अर्थ जुदा नहीं हो सकते, उसी तरह मैं और वह महबूब जुदा नहीं हो सकते। आँख और बीनाई (देखने की शक्ति) दो प्रतीत होती हैं मगर असल में दो नहीं हैं। जैसे फूल और ख़ुशबू को अलग नहीं किया जा सकता, वैसे ही मैं और वह एक हैं।

(व्याख्या के लिये देखें, पृ. 76)

158 मन जुर्मे-ख़ुद ओ लुत्फ़े-तू दारम ब-नज़र,
पैवस्ता अज़ीं हर दो हिसाब अस्त ख़बर।
अज़ मन चिह् शुद ओ चिह् मी कुनद इहसानत?
मीज़ाने-तअम्मुल शुदा अम शामो-सहर।

मैं अपने गुनाहों और तेरी रहमत को हमेशा अपने सामने रखता हूँ। मैं कभी नहीं भूलता कि न मेरे गुनाहों की कोई सीमा है और न ही तेरी रहमत की। जो कुछ मैं कर सकता था और जो कुछ तेरी रहमत कर सकती है मैं दिन-रात दोनों के बारे में सोचकर हैरान होता हूँ।

159 दिल ख़ुश न शवी, ज़ि वसले-दुनिया हरगिज़,
मा मिहर न दारेम ज़ि आंहा हरगिज़।
जुज़ साक़ी-ओ-जाम, नीस्त ग़मख़्वार कसे,
अज़ दस्त मदिह गरदने-मीना हरगिज़।

तू सांसारिक प्राप्तियों से ख़ुश न हो; मुझे इनकी कोई परवाह नहीं; साक़ी और जाम के बिना कोई सच्चा दोस्त नहीं है, तू शराब की सुराही सदा हाथ में रख।

(व्याख्या के लिये देखें, पृ. 97-98)

160 चूं नक़्शे-नगीं, दर पए नामी तू हुनूज़,
जां मीकुनी ओ दर पए कामी तू हुनूज़।
अज़ ख़िरमने-उम्र, ख़ोशा-ए-तोशा बगीर,
हंगामे-दर ओ रसीद ओ ख़ामी तू हुनूज़।

ऐ नादान, तू अँगूठी के नगीने की तरह नेक-नामी का इच्छुक है। तू नाम पर मरता है लेकिन फिर भी नाकाम है। तेरे पकने के दिन आ गए हैं। मगर तू अभी भी कच्चा है। तू इस ज़िन्दगी से परलोक के लिये तोशा हासिल कर ले।

(व्याख्या के लिये देखें, पृ. 141)

161 अज़ बुलहवसां, काम नयाबी हरगिज़,
ज़ीं ताइफ़ा, आराम नयाबी हरगिज़।
सद साल अगर जान बकुनी हमचू नगीं,
बदनाम शवी, नाम नयाबी हरगिज़।

तुम्हें कामनाओं, विषय-वासनाओं में ग्रस्त लोगों से कुछ हासिल न होगा। तुम्हें इनमें से कभी भी शान्ति नहीं मिलेगी। चाहे तुम्हें सैकड़ों साल पत्थर की तरह घिसाया जाये, फिर भी तू बदनाम रहेगा। तुम्हें कभी भी नेकनामी नहीं मिलेगी।

162 फ़ारिग़ नशुदी ज़ि ख़ुद पसंदी हरगिज़,
आगाह नशुदी ज़ि सूद मंदी हरगिज़।
ख़्वाही दो जहान, यक तरफ़ राग़ब शौ,
ग़ैर अज़ तरफ़े तरफ़ न बंदी हरग़िज़।

तूने ख़ुदी (हौंमैं) को न छोड़ा और जिस चीज़ से तुझे असल नफ़ा होना था, तूने उसकी तरफ़ ध्यान न दिया। अगर तू दोनों जहान लेना चाहता है तो सिर्फ़ एक (ख़ुदा) का हो जा। उस एक तरफ़ (ख़ुदा) को छोड़कर किसी दूसरी तरफ़ न जा।

(व्याख्या के लिये देखें, पृ. 88)

163 जुज़ फ़ज़ले-ख़ुदा, कार न दारम हरगिज़,
अंदेशा-ए-किरदार न दारम हरगिज़।
ऊ दानद ओ इस्याने-मन ओ मग़फ़िरतश,
मन कार ब-ईं कार न दारम हरगिज़!

मुझे ख़ुदा की रहमत के सिवाय दूसरी किसी चीज़ से कोई वास्ता नहीं और न ही मुझे इस बात का डर है कि मुझे अपने गुनाहों का क्या फल मिलेगा। उस प्रभु को मेरे गुनाहों का भी पता है और अपनी रहमत का भी ज्ञान है तो फिर मैं इन दोनों में से किसी भी बात की चिन्ता क्यों करूँ।

164 ऐ दिल! ज़ि हवा-ओ-हवस, अज़ बहरे-दो-रोज़,
ख़ुद रा ओ मरा, ज़ि आतिशे-जां सोज़ मसोज़।
हंगामे-जवानी शुद ओ पीरी आमद,
ईं अतिशे-अफ़सुर्दा, बदामन मफ़रोज़।

ऐ मेरे मन, इस दो दिन की ज़िन्दगी में मुझे और अपने आपको लोभ-लालच की भयानक अग्नि में न जला। जवानी बीत गई है और बुढ़ापा आ गया है। अब तू बुझ चुकी आग को दुबारा जलाकर मेरा दामन न जला।

165 दिल शाद मशौ ज़ि दैरे-फ़ानी हरगिज़,
गर शाही ओ गर गदा, नमानी हरगिज़।
बायद किह् दर ईं दो रोज़, ग़ाफ़िल नशवी,
यक दम ज़ि ख़याले-यारे-जानी हरगिज़।

तू फ़ानी (नश्वर) दुनिया से दिल न लगा। चाहे तू राजा हो या भिखारी, तुझे सदा यहाँ नहीं रहना। ज़िन्दगी छोटी है, तू कभी ग़ाफ़िल न हो। पल भर भी महबूब के ख़याल से जुदा न हो।

(व्याख्या के लिये देखें, पृ. 133)

166 दुनिया बमुरादे-ख़्वेशतन ख़्वाही ओ बस,
उक़बा तू न करदी ज़ि ख़ुदावंद, हवस।
चूं दस्त न दुनिया ओ न उक़बा बदिहंद,
अफ़्सोस नदामत ज़ि जहान बायद ओ बस।

ऐ नादान, तेरे दिल में हमेशा दुनिया की हवस समाई रहती है। तूने ख़ुदा से कभी आक़बत (परलोक, परमार्थ) के लिये प्रार्थना नहीं की। तेरे दीनो-दुनिया दोनों बर्बाद हो जायेंगे। पश्चात्ताप के सिवाय तेरे हाथ कुछ न लगेगा।

(व्याख्या के लिये देखें, पृ. 142)

167 ज़ाहिद! बख़ुदा नीस्त तुरा बहरा ज़ि होश,
अज़ ज़ुहदो-रिया तौबा कुन ओ बादा बनोश।
लबरेज़ हक़ीक़त अस्त, आईना-ओ-जाम,
हम सूरतो-मअना अस्त दर जोशो-ख़रोश।

ऐ ज़ाहिद (तपसी), ख़ुदा की क़सम तू बहुत कम-अक़्ल है। तू तपस्या और पाखण्ड को छोड़ दे। सुराही और जाम (प्याला) दोनों हक़ीक़त से लबालब हैं। उनमें तत्त्व और सूरत (रूप) दोनों भरे हुए हैं।

(व्याख्या के लिये देखें, पृ. 86)

168 ऐ दिल! ज़ि हवा-ओ-हवस आज़ार मकश,
ईं बारे-गिरां बदोश, ज़िनहार! मकश।
उमरत न बुवद बक़दरे-तूले-अमलत,
अज़ बहरे-दो रोज़, रंज बिस्यार मकश।

ऐ मेरे मन, तू लोभ-लालच में फँसकर दुःखी न हो। तू अपने कन्धों पर यह भारी बोझ मत उठा। तेरी ज़िन्दगी तेरी हमेशा बढ़ रही उम्मीदों जैसी लम्बी नहीं हो सकती। तू इस छोटी-सी ज़िन्दगी के लिये व्यर्थ में इतने दुःख क्यों उठाता है ?

169 ज़ाहिद! ब नसीहतम तू बिस्यार मकोश,
अज़ आतिशे-इश्क़े-ऊस्त, ईं देग बजोश।
हुशियार शौ ओ बिबीं किह् ख़ुमख़ाना-ए-दिल,
अज़ बादा-ए-शौक़ कीस्त-दर जोशो-ख़रोश।

ऐ ज़ाहिद (परहेज़गार या तपस्वी), तू मेरे सामने नसीहतें पेश न कर। मेरे दिल का बर्तन इश्क़ की आग से उबल रहा है। तू समझदारी से काम ले और अच्छी तरह देख कि मेरे दिल के मयख़ाने में इश्क़ का जाम छलक रहा है।

(व्याख्या के लिये देखें, पृ. 60)

170 ऐ यार! दर ईं मैकदा, बे यार मबाश,
बे साक़ी-ए-गुलइज़ार, ज़िनहार मबाश।
ईं जामे-जहां-नुमा बहर कस नदिहंद,
ग़ाफ़िल तू अज़ ईं दौलते-बेदार मबाश।

ऐ प्यारे, इस मयकदा में तू उस महबूब साक़ी से दूर न जा। तू गुलाबी गालों वाले साक़ी के बिना न रह। यह जाम जिसमें सारा जहान नज़र आता है, हर किसी के लिये नहीं है। तू इस सच्चे धन से अचेत न हो।

(व्याख्या के लिये देखें, पृ. 98)

171 सहबा-ए-ख़याले-यार, पैवस्ता बनोश,
अज़ बहरे-दो-रोज़, दीन बदुनिया मफ़रोश।
ईं आतिशे-ख़्वाहिश किह् तू अफ़रोख़्ताए,
तूफ़ान बशवद, अगर न गरदद ख़ामोश।

तू महबूब की मुहब्बत की शराब लगातार पिये जा। तू दो रोज़ा ज़िन्दगी के बदले अपना ईमान (धर्म) न बेच। अगर तूने दुनियावी ख़्वाहिशों की आग को न बुझाया तो यह प्रचण्ड ज्वाला बन जायेगी (और तुझे फ़ना कर देगी)।

(व्याख्या के लिये देखें, पृ. 60)

172 बा ख़िरक़ा मशौ यार, ग़लत गीर, ग़लत,
ईं जुहदे-ज़ियांकार, ग़लत गीर, ग़लत।
सर रिश्ता-ए-मिहरे-यार, दर दस्त बयार,
ईं सुबहा-ओ-ज़ुन्नार, ग़लत गीर, ग़लत।

तू लम्बे चोले का शौक़ छोड़ दे क्योंकि यह ग़लत तरीक़ा है। इस क़िस्म का दिखावा बिलकुल फ़ज़ूल है। तू महबूब की मुहब्बत की डोर पकड़कर रख। यह माला और जनेऊ फ़ुज़ूल हैं।

(व्याख्या के लिये देखें, पृ. 61)

173 दुनिया नशवद आख़िरे-दम बा तू रफ़ीक़,
दर राहे-ख़ुदा कोश, रफ़ीक़ अस्त शफ़ीक़।
ख़्वाही किह् बसरे-मंज़िले-दिलदार रसी,
गुफ़्तम बतू ऐ दोस्त, हमीं अस्त तरीक़।

आख़िरी वक़्त दुनिया तेरा साथ नहीं देगी। तू ख़ुदा की राह पर चलने की कोशिश कर। ख़ुदा ही मेहरबान महबूब है। तू पूछता है कि महबूब की मंज़िल कैसे मिलेगी? मैं कहता हूँ उस तक पहुँचने का यही तरीक़ा है।

(व्याख्या के लिये देखें, पृ. 114)

174 ख़्वाही नरसद पाए तू हरगिज़ बर संग,
बगुज़र ज़ि ख़ुदी, मकुन दर ईं राह, दरंग।
पैवस्ता जुदाई बकुन अज़ ख़्वाहिशे-दिल,
बा नफ़्से-सितमगारा-ए-ख़ुद, बाश बजंग।

अगर तू चाहता है कि पत्थर से ठोकर न खाये तो ख़ुदी (हौंमैं) को छोड़ दे और ख़ुदी की राह पर न चल। तू मन की कामनाओं के अधीन न हो और ज़ालिम नफ़्स (मन) से जंग करने के लिये हमेशा तैयार रह।

(व्याख्या के लिये देखें, पृ. 87)

175 अंदेशा-ए-तदबीर तू, पाए अस्त ब संग,
दर बेशा-ए-अंदेशा, निहां अस्त पलंग।
तक़दीर, क़वी बदां ओ तदबीर, ज़ईफ़,
ईं क़ुव्वतो-ज़ुअफ़ रा मीनद अज़ बजंग!

कोशिश करने की तेरी चिन्ता राह का पत्थर (रुकावट) है। चिन्ता के जंगल में ख़ूनी चीते तेरी ताक में छिपे बैठे हैं। तक़दीर (होनी) ताक़तवर है और तदबीर (कोशिश, उपाय) कमज़ोर है। तू कमज़ोर को ताक़तवर से जंग के लिये तैयार न कर।

(व्याख्या के लिये देखें, पृ. 140)

176 दीवानगी-ए-दिलम, बुवद अक़्ले-कमाल,
आशूबे-महब्बत अस्त बेरूं ज़ि ख़याल।
गुंजाइश-ए-बहर दर सबू मुमकिन नीस्त,
हर चंद किह् गोयंद, ख़याल अस्त मुहाल।

मेरे दिल के दीवानेपन से मेरी अक़्ल की पूर्णता का पता चलता है, इश्क़ की कठिनाइयाँ कल्पना से बाहर हैं। समुद्र को प्याले में बन्द नहीं किया जा सकता। लोग ऐसी बातें बनाते तो हैं, लेकिन ऐसा कर सकना असम्भव है।

177 ख़्वाहम दिले-पज़मुर्दा, शवद ताज़ा चू गुल,
जान, नग़मा सरा बुवद, बरंगे-बुलबुल।
अय्यामे-ख़ज़ां, जोशे-बहारी बज़नम,
बा लाला रुख़े, नोश कुनम साग़रे-मुल।

मैं चाहता हूँ कि मेरा मुरझाया हुआ दिल गुलाब की तरह खिल जाये और मेरी रूह बुलबुल की तरह गीत गाने लगे। मुझे पतझड़ के दिनों में भी बहार का मज़ा आये और मैं गुलाब जैसे चेहरे वाले महबूब के पास बैठकर शराब का जाम पिऊँ।

(व्याख्या के लिये देखें, पृ. 98)

178 ईं रिश्ता-ए-तूले-अमल अज़ दिल बगुसिल,
ता दर्द ओ जहान, कुनी फ़राग़त हासिल।
ईं गुलशने-उम्र, आं क़दर नीस्त किह् हस्त,
दर बाग़े-ख़याल बूए अज़ ग़ुंचा-ए-दिल!

मन में फैल रहे लम्बी उम्मीदों के धागे को तोड़ दो ताकि तुम्हें लोक-परलोक दोनों में चैन मिले। ज़िन्दगी का बाग़ उतनी देर रहनेवाला भी नहीं है जितनी देर कल्पना के बाग़ में लगे मन के फूल की सुगन्ध रहती है।

179 ईं माले-जहान तमाम रंज अस्त ओ वबाल,
अंदेशा बकुन, बिबीं किह् वहम अस्त ओ ख़याल।
कारेकिह् अज़ अव्वल बूदश रंजो-मलाल,
माल अस्त ज़ि मिहनतश वबाल अस्त मआल।

यह दुनिया की दौलत, दु:ख और क्लेश का रूप है। ज़रा सोचकर देखो कि इसकी वास्तविकता कल्पना या भ्रम से अधिक नहीं है। धन-दौलत का मूल दु:ख और चिन्ताएँ हैं और इसका अन्त क्लेशों का बोझ है।

180 आं रा किह् बुवद बहराए अज़ अक़्लो-कमाल,
बेरूं रवद अज़ दायरा-ए-फ़िक्रे-मुहाल।
दर गोशा-ए-मैख़ाना, तमाशा बकुनद,
शमअ अस्त यके, हज़ार फ़ानूसे-ख़याल।

जिसे सच्ची अक़्ल, सच्चा विवेक मिल गया, वह हमेशा चिन्ता के दुःखदायक दायरे से बाहर रहता है। वह मयख़ाने के कोने में यह नज़ारा देखता है कि शमा तो एक है मगर उसके अक्स (परछाइयाँ) अनेक हैं यानी उसे हर चीज़ में एक ही नूर दिखाई देता है।

(व्याख्या के लिये देखें, पृ. 44)

181 ईं सहल तमन्नास्त किह् दर मौसमे-गुल,
ऊ बर ख़ुरद ओ कशम, ब सर मौसमे-गुल।
हर गाह शवद दो चार पिंदारे-बहार,
गर फ़स्ले-ख़ज़ां अस्त, ओ गर मौसमे-गुल।

मैं चाहता हूँ कि फूलों के मौसम में मेरा महबूब मुझे मिल जाये और मैं बहार का आनन्द लूँ। चाहे पतझड़ हो या बहार, जब भी वह मुझे मिल जाये, मेरे लिए वही सच्ची बहार है।

182 दर फ़स्ले ख़ज़ां, तौबा शिकस्तन, मुश्किल,
बा साक़ी-ओ-मै, अहद ब बस्तन, मुश्किल!
हंगामे-ख़ज़ां, बहार आमद ब कनार,
ज़ीं दर्दे-शिकस्तो-बस्त, रस्तन मुश्किल!

पतझड़ में क़सम का तोड़ना मुश्किल है; साक़ी और शराब के वायदे क़ायम रखना मुश्किल है; अगर ख़िज़ाँ में बहार (महबूब) आ जाये तो भी क़सम को क़ायम रखना कितना मुश्किल है।

(व्याख्या के लिये देखें, पृ. 99)

183 अज़ आक़िबते-कार, चू गश्तम ग़ाफ़िल,
शुद उम्र ब अंदोहो-ग़मे-काहिशे-दिल।
पैवस्ता बख़ुद हमीं हिकायत दारम,
जीं उम्र गिरांमाया चिह् करदी हासिल।

मैंने अपने कर्मों के अंजाम की तरफ़ ध्यान न दिया और ज़िन्दगी दुःख और पीड़ा में गुज़र गई। मैं अपने आपसे हमेशा वही पुराना सवाल पूछता हूँ कि मुझे इस अमूल्य जीवन से क्या प्राप्त हुआ।

184 अफ़सोस दर अंदेशा ओ दर फ़िक्रो-ख़याल,
सरमाया-ए-उम्र शुद ब ग़फ़लत पामाल।
अज़ फ़िक्रे-मआले-कार बे फ़िक्र शुदम,
हर फ़िक्र किह् करदेम ख़याल अस्त मुहाल।

अफ़सोस! झूठी आशाओं, निराशाओं, इच्छाओं और चिन्ताओं में ज़िन्दगी की दौलत व्यर्थ बर्बाद हो गई। मैंने अपने कर्मों के फल की ओर ध्यान न दिया और जिस चीज़ को हासिल करने की कोशिश की उसे पाना सम्भव न हो सका।

185 बा नफ़से-सितमगार ब जंगम हर दम,
दर बहरे-वुजूद ख़ुद निहंगम हर दम।
रूबाह बुवद हिर्सो-हवा दर नज़रम,
दर बेशा-ए-अंदेशा पलंगम हर दम।

मेरी ज़ालिम नफ़्स (मन) के साथ दिन-रात जंग जारी है। मैं मगरमच्छ की तरह नफ़्स को निगल जानेवाला हूँ। मैं वह चीता हूँ जो लोभ, मोह रूपी लोमड़ी को खा जाता है।

(व्याख्या के लिये देखें, पृ. 79)

186 मन मअनी-ए-इहसानो-करम, फ़हमीदम,
मीज़ाने-तअम्मुल शुदम ओ संजीदम।
चश्मे-करमश, आशिक़े-हुस्ने-गुनाह अस्त!
आंजा सुख़ने नीस्त, मुकर्रर दीदम।

मुझे उसकी दया-मेहर का भेद समझ में आ गया है। मैंने इसे ख़ूब परखा और पहचाना है। उसकी रहमत-भरी आँख गुनाहों के हुस्न की आशिक़ है। इस सच को कभी झुठलाया नहीं जा सकता।

(व्याख्या के लिये देखें, पृ. 48)

187 ता कै बदिल अंदेशा-ए-आअमाल कुनम,
ग़मगीन शवम ओ ख़याले-अहवाल कुनम।
बर फ़ज़ल कुनम तकिया ओ, अंदेशा चिरा,
अज़ माज़ी-ओ-मुस्तक़बिल ओ अज़ हाल कुनम।

मैं कितनी देर तक अपने कर्मों के अंजाम से डरता रहूँ? मैं कितनी देर तक अपने गुनाहों के ख़याल से ग़मगीन रहूँ। मुझे उसकी रहमत पर भरोसा है। मैं भूत, भविष्य या वर्तमान की चिन्ता क्यों करूँ?

(व्याख्या के लिये देखें, पृ. 48)

188 दर दायरा-ए-ख़याले-ऊ, पाबंदम,
सद शुक्र, बयादश हमा दम ख़ुरसंदम।
अज़ दामे-हवा-ओ-हवसे-दीन रस्तम,
ईं बारे-गिरां, ज़ि दोशे-दिल अफ़गंदम।

मैं उस महबूब के इश्क़ के दायरे में क़ैद हूँ। हज़ार-हजार शुक्र है कि मैं हरदम उसकी याद में ख़ुश रहता हूँ। मेरे दिल में दीन और दुनिया की कोई ख़्वाहिश बाक़ी नहीं रही। मैंने अपने कन्धे से यह भारी बोझ उठाकर फेंक दिया है।

(व्याख्या के लिये देखें, पृ. 116-17)

189 सरमद, चू तिलिस्म रा किह् दर, वा करदम,
दर शाम, दरीचा-ए-सहर, वा करदम।
हर चंद किह् ख़्वाब रा ज़ि सर, वा करदम,
दीदम हमा ख़्वाब, ता नज़र, वा करदम।

जब मैंने भेद-भरे जादू के दरवाज़े को खोला तो मुझे यूँ लगा कि रात में सवेरा या अँधेरे में प्रकाश हो गया हो। जब मैं जागा और मुझे हक़ीक़त का दीदार हुआ तो मुझे पता चला कि जो कुछ है, सब ख़्वाब है।

(व्याख्या के लिये देखें, पृ. 125)

190 या रब्ब! तू अता क़ुन ज़ि क़नाअत गंजम,
उम्रीस्त किह् अज़ हिर्सो-हवा दर रंजम।
दीन रा नतवां करद बदुनिया सौदा,
दर लहज़ा बख़ुद, सूदो-ज़ियां मी संजम।

या रब्ब! तू मुझे सब्र (सन्तोष) का ख़ज़ाना बख़्श दे। मैं बहुत देर से लोभ, लालच और चिन्ता का सताया हुआ हूँ। दीन (परलोक) के बदले दुनिया का सौदा नहीं किया जा सकता। मैं हर पल इसी नफ़े और नुक़सान के बारे में सोचता रहता हूँ।

(व्याख्या के लिये देखें, पृ. 136)

191 ख़ुद रा हमा तन, हिर्सो-हवस याफ़्ता अम,
हर चंद कम अज़ हबाब ओ ख़स याफ़्ता अम।
ईं नफ़्से-सितमगार किह् पुर अज़ शोर अस्त,
दर बहरे-वुजूद, यक नफ़स, याफ़्ता अम।

मेरा जीवन बुलबुले और घास के तिनके की तरह क्षणभंगुर है, फिर भी मैं लोभ, लालच और कामनाओं का पुतला बना हुआ हूँ। यह ज़ालिम ख़ुदी या अहम् जिसने इतना शोर मचा रखा है, ज़िन्दगी के समुद्र में एक साँस की तरह है।

192 आं शोख़, बमन नज़र नदारद चिह् कुनम?
आहे-दिले-मन, असर नदारद, चिह् कुनम?
बा आंकिह् हमेशा दर दिलम मी मांद,
अज़ हाले-दिलम ख़बर नदारद चिह् कुनम?

मेरा महबूब मेरी तरफ़ ध्यान नहीं देता, मैं क्या करूँ? मेरे दिल की आहें उस पर कोई असर नहीं करतीं, मैं क्या करूँ? वह हमेशा मेरे दिल में रहता है लेकिन फिर भी मेरे दु:ख को नहीं समझता, मैं क्या करूँ?

(व्याख्या के लिये देखें, पृ. 72)

193 चीज़े किह् गहे बकार न आयद, मा एम,
आं नख़ल कज़ू बार न आयद, मा एम।
करदेम हिसाब ओ पेश ख़ुद संजीदम,
आं ज़र्रा किह् दर शुमार न आयद मा एम!

जिन चीज़ों की कोई क़ीमत नहीं, वे हम हैं। वे पेड़ जिन्हें फल नहीं लगते, वे हम हैं। मैंने अपने आपको तराज़ू में तोलकर देखा है। जो ज़र्रे किसी गिनती में नहीं हैं, वे हम हैं।

194 सुलताने-ख़ुदम, मिन्नते-सुलतान न कशम!
अज़ बहरे-दो नान, मिन्नते-दो नान न कशम!
नफ़्से-मन सग अस्त ओ मन सगबानम,
अज़ बहरे-सगे, मिन्ते-सगबान न कशम!

मैं ख़ुद सुलतान हूँ। मैं रोटियों के लिये घटिया लोगों की मिन्नत क्यों करूँ? मेरा नफ़्स (मन) कुत्ता है और मैं कुत्ते को ज़ंजीर डालने वाला हूँ। मैं इस कुत्ते की ख़ातिर कुत्ते पालने वालों का मुहताज क्यों बनूँ?

(व्याख्या के लिये देखें, पृ. 79)

195 गर वाला-ए-दश्तो-बाग़ गोई, हस्तम,
गर शेफ़्ता-ए-अयाग़ गोई, हस्तम।
गह तालिबे-दीन ओ गाह दुनिया तलबम,
सर गश्ता-ए-ईं सुराग़ गोई, हस्तम।

तुम मुझे बाग़ और बियाबान का दीवाना कहो तो ठीक है। अगर तुम मुझे शराब का मतवाला कहो तो ठीक है। अगर तुम यह कहो कि मैं कभी इस दुनिया को पाना चाहता हूँ और कभी उस दुनिया को, तो भी ठीक है। यह भी सच है कि मैं दीन (परलोक) और दुनिया (लोक) दोनों को हासिल करना चाहता हूँ।

196 दीवाना - ए - रंगीनी - ए - यारे - दिगरम!
हैरत ज़दा-ए-नक़्शो-निगारे-दिगरम।
आलम हमा दर फ़िक्रो-ख़याल दिगर अस्त,
मन दर ग़मो-अंदेशा-ए-कारे-दिगरम!

मैं किसी और महबूब की ख़ूबसूरती (यानी ख़ुदा के हुस्नो-जमाल) का दीवाना हूँ। मैं किसी और महबूब के हार-शृंगार पर मोहित हूँ। दुनिया और चीज़ों के प्यार में मस्त है, लेकिन मैं किसी और ही चीज़ के लिये तड़प रहा हूँ।

197 अज़ अश्के-जिगर, तमाम दरया शुदा अम,
आशुफ़्ता-ओ-दीवाना-ए-सहरा शुदा अम।
अज़ सुहबते-हमदमां, ब वहदत क़सम अस्त,
तनहा शुदा अम, रफ़ीक़े-अनक़ा शुदा अम।

मेरे दिल से आँसुओं की नदी बह रही है; मैं उजाड़-बियाबान का दीवाना हो गया हूँ। ऐ ख़ुदा! मुझे तेरी वहदत (एकता) की क़सम है कि दुनिया में मेरा कोई साथी नहीं है; मैं अकेला हूँ और सिर्फ़ अनक़ा मेरा साथी है।

(व्याख्या के लिये देखें, पृ. 66)

198 ईं जोशे हबाब, अज़ क़दीम अस्त, क़दीम,
ईं नक़शे-सराब, अज़ क़दीम अस्त क़दीम।
लब तिशना-ए-तरहे-नौ अस्त, ईं कुहना रिबात,
ईं ख़ाना, ख़राब, अज़ क़दीम अस्त, क़दीम।

दुनिया अज़ल (आदि काल) से पानी के बुलबुलों का घर है। यह अज़ल से मृगतृष्णा के समान है। यह हमेशा ख़स्ता हाल रही है। इसमें सुधार की सख़्त ज़रूरत है।

(व्याख्या के लिये देखें, पृ. 134)

199 हर लहज़ा गिरिफ़्तार बसद तक़सीरम,
अज़ ख़्वाहिशे-दिल, शामो-सहर, दिलगीरम।
ख़्वाहम किह् अज़ीं दाम, रहाई बिबुरम,
तक़दीर अगर नीस्त, दरीं तदबीरम!

मैं पल-पल सैकड़ों गुनाह कर रहा हूँ और मन की इच्छाओं के कारण दुःख उठा रहा हूँ। मैं इस जाल को तोड़कर बाहर निकलना चाहता हूँ, लेकिन तक़दीर ऐसा नहीं करने देती। मैं क्या करूँ?

200 आशुफ़ता-ए-आं ज़ुलफ़े-गिरह गीर शुदम,
तदबीर न ईं बूद, ज़ि तक़दीर शुदम।
दर हल्क़ा-ए-आं-ज़ुल्फ़, असीरम करदंद,
अज़ शूमी-ए-अक़्ल, पा ब ज़ंजीर शुदम।

मैं उन घुँघराले बालों के इश्क़ में पागल हूँ। मैं ख़ुद ऐसा नहीं करना चाहता था लेकिन होनी ने मुझे ऐसा करने पर मजबूर कर दिया। महबूब ने मुझे अपनी ज़ुल्फ़ों के जाल में क़ैद कर लिया। मेरी अपनी बेसमझी के कारण मेरे पाँव में ज़ंजीरे पड़ गई हैं।

201 दर ज़ेरे-फ़लक, ऐश न करदम यकदम,
शुद उम्र गिरामी ज़ि कफ़ अज़ दर्दो-अलम।
दर दौलते-दुनिया दो तरफ़ नुक़्सान अस्त,
बिस्यारी-ए-ऊ रंज, ओ कमी, माया-ए-ग़म!

इस आसमान के नीचे यानी इस ज़मीन पर मुझे पल भर के लिये भी चैन न मिला। मेरी ज़िन्दगी दुःखों और चिन्ताओं में गुज़र गई। दुनिया की दौलत ज़्यादा हो तो भी दुःख का कारण है, कम हो तो भी दुःख का कारण है। इसमें दोनों तरह दुःख ही दुःख है।

202 अज़ करदा-ए-ख़्वेश, मुनफ़इल बिस्यारम,
उम्रीस्त किह् पैवस्ता दरीं आज़ारम।
चीज़े किह् नबायद बशवद अज़ मन, शुद,
बर फ़ज़ल नज़र बकुन, न बर किरदारम।

मैं अपने कर्मों को देखकर शर्मिन्दा होता हूँ। मैंने बहुत देर तक इन पर पश्चात्ताप किया है। मैं वह कर बैठा जो मुझे नहीं करना चाहिये था। ऐ ख़ुदा! तू मेरे कर्मों की तरफ़ न देख, अपनी रहमत की तरफ़ देख।

203 अफ़सोस किह् अज़ ख़्वाहिशे-दिल, मरदूदम,
दर राहे-ग़ुरूरे-नफ़्से-ख़ुद, पैमूदम।
चूं पीर शुदम, क़बूले-दुनिया करदम,
ईं बारे-गिरां, चिरा बख़ुद अफ़ज़ूदम?

अफ़सोस कि मैं अहम् के रास्ते पर चला और मेरे मन की इच्छाओं ने मुझे बदनाम कर दिया। बुढ़ापे में पहुँचकर मैंने दुनिया को अपना लिया। अफ़सोस! मैंने अपने सिर पर यह भारी बोझ क्यों उठा लिया?

204 मन तुख़्मे-हवस काशता अम ग़मगीनम,
सद रंग गुले-दाग़ अज़ू मी चीनम।
तूफ़ान बशवद अगर न गरदद ख़ामोश,
ईं आतिशे-ख़्वाहिश किह् बख़ुद मी बीनम।

मैं लोभ-लालच का बीज बोकर दुःखों में फँस गया। अब मैं दुःखों के रंग-बिरंगे फूल चुन रहा हूँ। मैंने अपने अन्दर कामनाओं की जो चिनगारी जला रखी है, अगर इसको न बुझाया तो यह अग्नि का तूफ़ान बन जायेगी।

205 दर मअसीयतम जवान, बज़ाहिर पीरम,
उम्रीस्त किह् पावंद ब-ईं ज़ंजीरम।
उम्मीदे-नजात अस्त ज़ि यक फ़ज़्ल, हज़ार,
हर चंद गिरिफ़्तार बसद तक़सीरम।

मैं देखने में बूढ़ा हूँ लेकिन गुनाह करने में जवान हूँ। मैं बहुत देर से इनका ग़ुलाम हूँ, मेरे गुनाह कितने भी ज़्यादा क्यों न हों, ख़ुदा की थोड़ी-सी रहमत ही मेरे सब गुनाहों से छुटकारा दिलाने के लिये काफ़ी है।

206 अज़ फ़ज़ेल-ख़ुदा, हमेशा राहत दारम,
बा नाने-जवम क़ानिअ ओ हिम्मत दारम।
नै बीम ज़ि दुनिया ओ न अंदेशा-ए-दीन,
दर गोशा-ए-मैख़ाना, फ़राग़त दारम।

ख़ुदा की रहमत से मैं हमेशा ख़ुश रहता हूँ। मुझे जौ की रोटी में सन्तोष है और मेरा हौसला बुलन्द है। मुझे न दीन का डर है और न दुनिया का। मैं मयख़ाने के एक कोने में आज़ादी से बैठा रहता हूँ।

(व्याख्या के लिये देखें, पृ. 109)

207 रंगे-गुले-अज़ गुलशने-सनअत चीदम,
मअनी-ए-गुनाहो-मग़फ़रत फ़हमीदम।
दर सूरते-इज़हार, बसे हैरानम,
आईना सिफ़त, हर चिह् किह् दीदम, दीदम।

मैंने रचना के बाग़ में से फूल की ख़ूबसूरती को चुना। इस तरह मुझे गुनाहों और गुनाहों की मुआफ़ी के भेद का पता चला। मैं हैरान हूँ कि ख़ुदा ने अपने आपको किन-किन शक्लों में प्रकट किया है। मैं शीशे की तरह हैरान होकर उसके जलवे को देखता रहता हूँ।

208 दर सोज़ो-गुदाज़हा तमाशा करदम,
यक जा, न हज़ार जा तमाशा करदम।
सर रिश्ता-ए-रौशनी, बदस्ते-दिगर अस्त,
परवाना-ओ-शमअ रा तमाशा करदम।

मैंने एक जगह पर नहीं, हर जगह पर देखा है कि इस संसार में हर जगह दुःखों और मुसीबतों का अन्धकार फैला हुआ है। मैंने परवाने और शमा को जलते हुए भी देखा है। प्रकाश का धागा किसी और के ही हाथ में है।

209 सद शुक्र किह् अज़ यार, तरहुम्म दीदम,
इहसानो-करम, बहाले-ख़ुद, फ़हमीदम।
नख़्ले किह् निशांयद, समर मी बख़्शद,
आख़िर गुले अज़ बाग़े-महब्बत चीदम।

ख़ुदा का शुक्र है कि महबूब ने मुझ पर रहमत की है। हम जो पौधा लगाते हैं अन्त में उसे फल भी लगता है। मैंने इश्क़ के बाग़ से एक फूल चुन लिया है।

(व्याख्या के लिये देखें, पृ. 76)

210 मायअम दर ईं दयार, पैवस्ता बकाम,
साक़ी बकनार अस्त मए नाब बजाम।
ज़ाहिद! चू ख़ुमे-बादा बिगोई तू हराम,
ईं बादा हलाल अस्त, नगीरम ब-हराम!

हम बहुत ख़ुशक़िस्मत हैं कि इश्क़ (प्रेम) के देश में साक़ी साथ है और शराब का प्याला हाथ में है। ऐ ज़ाहिद (त्यागी), तू शराब की सुराही से नफ़रत क्यों करता है? मेरे लिए यह हलाल है, हराम नहीं।

(व्याख्या के लिये देखें, पृ. 99-100)

211 इहसानो-करम, ज़ि जुर्म अफ़ज़ूं दीदम,
मीज़ान शुदम ओ हर दो तरफ़ संजीदम।
पेश आमद कारे-मन, नदामत शुदा अस्त,
मअनी-ए-गुनाहो-मग़फ़रत फ़हमीदम।

मैंने तराज़ू बनकर एक पलड़े में अपने गुनाहों को और दूसरे पलड़े में उसकी रहमत को तोला। उसकी रहमत मेरे गुनाहों से भारी निकली। इससे मुझे अपने गुनाहों पर बहुत शर्मिन्दगी हुई और मुझे पता चल गया कि गुनाह क्या होते हैं और मुआफ़ी क्या होती है।

(व्याख्या के लिये देखें, पृ. 48)

212 अफ़सोस किह् मख़लूक़-परस्ती करदम,
वज़ हिम्मते-पस्त, रू ब पस्ती करदम।
ईं बादा ख़ुमार दाश्त, हुशियार शुदम,
अय्यामे-शबाब बूद, मस्ती करदम।

अफ़सोस कि मैं (रचयिता की बजाय) रचना की भक्ति में खोया रहा। इस तरह मैं नीचे गिर गया और परेशान हुआ। रचना के मोह की शराब ने मुझे बेहोश कर दिया। मुझे होशियार रहना चाहिये था लेकिन मैंने अपनी सारी जवानी दुनिया के ग़लत कामों में बर्बाद कर दी।

213 बिस्यार ज़ईफ़ो–नातवान अस्त दिलम,
अज़ जौरे–ज़हानीयान बजान अस्त, दिलम।
गाहे ग़मे–दुनिया ओ गह अंदेशा–ए–दीन,
ज़ीं रह दो दिलम किह् दरमियान अस्त दिलम!

मेरा मन बहुत निर्बल है। यह दूसरों के बुरे बर्तावों से घबरा जाता है। कभी यह दुनिया के सुखों के लिये तड़पता है तो कभी इसका झुकाव परमार्थ या परलोक की तरफ़ हो जाता है। यह दो किश्तियों में सवार होना चाहता है। यह एक ही समय में दो विरोधी दिशाओं में चलना चाहता है जो कि असम्भव है।

214 चीज़ेकिह् मन अज़ जहान बजान मी तलबम,
जान रा बसलामत ज़ि जहान मी तलबम।
अज़ मर्दुमे–दुनिया ओ ज़ि दुनिया शबो–रोज़,
दीगर हवसम नीस्त, अमान मी तलबम।

मैं दुनिया में जो चीज़ सबसे ज़्यादा चाहता हूँ, वह यह है कि मेरी रूह दुनियावी बन्धनों से आज़ाद रहे। मैं दिन–रात यही चाहता हूँ कि दुनिया और दुनियादारों से सदा बचा रहूँ।

(व्याख्या के लिये देखें, पृ. 130)

215 हर शामो–सहर, दर ग़मे–अफ़आले–ख़ुदम,
दिल ख़स्ता ओ शर्मिन्दा–ए–अहवाले–ख़ुदम।
आया चिह् बुवद मआले–कारे किह् बशुद?
पैवस्ता दर अंदेशा–ए–आअमाले–ख़ुदम।

मैं हर दिन और हर रात अपने गुनाहों का पश्चात्ताप करता हूँ। मुझे अपनी हालत पर दु:ख और परेशानी होती है। पता नहीं मेरे कर्म मुझे कहाँ ले जायेंगे। मुझे हर वक़्त यह डर लगा रहता है कि मुझे इन कर्मों का क्या फल मिलेगा।

216 मिहनत बजहान कशीद बिस्यार दिलम,
हर शामो-सहर बुवद दर आज़ार दिलम।
नागाह ख़याले-यार, आमद बकनार,
ज़ीं बारे-गिरां, गश्त सुबकसार दिलम।

मेरा मन पीड़ा से व्याकुल था। यह सुबह-शाम दुःख से तड़पता रहा। अचानक मेरा ख़याल उस महबूब की तरफ़ चला गया जिससे मेरे दिल पर पड़े सब बोझ उतर गए और यह फूल की तरह हलका हो गया।

(व्याख्या के लिये देखें, पृ. 119)

217 ऐ महरमे-जानो-दिल, ब मिहरे-तू क़सम,
शर्मिन्दा-ए-किरदारे-ख़ुद ओ फ़ज़ले-तू अम।
पैवस्ता बख़ुद, हिसाब दारम हर दम,
अज़ मन इस्यां ज़ि तू हम इहसानो-करम।

ऐ मेरे महबूब, ऐ मेरे मन और आत्मा के दोस्त, मुझे तेरे प्यार की सौगन्ध कि मैं अपने गुनाहों पर और तेरी असीम बख़्शिश पर शर्मिन्दा हूँ। मैं हर वक़्त अपने अन्दर झाँककर देखता हूँ कि मैं गुनाह करता रहता हूँ और तू रहमत करता रहता है।

218 आनी किह् बदस्ते-तू बुवद शादी-ओ-ग़म,
कस नीस्त बग़ैर अज़ तू बर आरद अज़ ग़म।
दीदम हमा रा ओ आज़मूदम हमा रा,
पैवस्ता तुई साहिबे-इहसानो-करम।

तू ही सबको सुख-दुःख देनेवाला है और तू ही मुझे चिन्ता से मुक्त करनेवाला है। मैंने सबको आज़माया है लेकिन कोई भी तुझ जैसा रहमदिल (दयालु) नहीं है।

(व्याख्या के लिये देखें, पृ. 67)

219 चीदम गुले-जाम ओ सैरे-गुलशन करदम,
अज़ बाग़े-मुराद, गुल बदामन करदम।
नौ रोज़े-बहार फ़ैज़ रा सैर बकुन,
हंगामे-ख़ज़ां, मैले-शिगुफ़्तन करदम!

मैंने (दुनिया के) गुलशन की सैर की और (शराब के) गुलाबी जाम पिये। मैंने अपनी झोली सफलता के फूलों से भर ली। गुलशन में बहार के मौसम में जाना अच्छा है। अफ़सोस कि मैं पतझड़ के मौसम में भी फूलों की आशा रखता हूँ।

220 अज़ क़ूते-जिगर, हुनूज़ लख़्ती दारम,
ज़ि असबाबे-हयात, जाने-सख़्ती दारम।
आज़ादा रविश गुफ़्त दर किशवरे-फ़क्र,
गो तख़्त मबाश तीरा बख़्ती दारम।

मैंने अपने जिगर के टुकड़े खाये हैं, मगर कुछ हिस्सा बाक़ी बचा है। ज़िन्दगी के सामान में से सिर्फ़ मेरा पत्थर जैसा दिल ही बाक़ी बचा है। किसी दरवेश ने क्या ख़ूब कहा है, तख़्त या ताज (राज-सिंहासन) नहीं तो क्या हुआ बद-क़िस्मती तो मेरे साथ है।

221 पैवस्ता दरीं दयार, बा दीदा-ए-नम,
दर बहरे-ख़जालतो-नदामत, ग़रक़म।
ख़्वाहम किह् नगरदम ज़ि तू ग़ाफ़िल, यक दम,
अफ़सोस, अज़ ईं ग़फ़लते-हरदम, हरदम!

इस दुनिया में मेरी आँखें हमेशा आँसुओं से भरी रहीं और मैं शर्मिन्दगी और पश्चात्ताप के समुद्र में डूबा रहा। हे प्रभु! मैं तुझे एक पल भी भुलाना नहीं चाहता। जितनी देर तुझे भूला रहा हूँ उसके लिये शर्मिन्दा हूँ।

222 अज़ दीदा-ए-दिल, हुस्ने-दो-आलम दीदम,
मीज़ान शुदम ओ नेको-बदश संजीदम।
हर सर किह् गिरांबार बुवद, संगे-दिलस्त,
हर ख़स्ता सरे, सुबक बुवद, फ़हमीदम।

मुझे मन की आँख से दोनों जहान का हुस्न दिखाई दे रहा है। मैंने तराजू बनकर हर अच्छे और बुरे को अपने मन में तोला। जो सिर अक़्ल से भारी है वह मन के लिये बोझ है। जिस सिर पर यह बोझ नहीं है, वह आराम से है।

(व्याख्या के लिये देखें, पृ. 125)

223 बर रूए-ज़मीन अगर बमानी दो सिह दम,
मीना-ए-फ़लक गर दिहदत साग़रे-जम।
ज़िनहार! मकुन क़बूल, दिल ख़ुश नबरी,
बिस्यार ख़ुमार दारद, ईं नश्शा-ए-सम्म।

अगर दो दिन की ज़िन्दगी में तुझे तक़दीर, बादशाह जमशीद का वह प्याला भी दे दे जिसमें सारी दुनिया नज़र आती थी, तो तू उसे क़बूल न कर क्योंकि इससे दुःख और चिन्ताएँ ही मिलेंगी। यह ज़हर-भरा नशा तेरे लिए सिर-दर्द बन जायेगा।

224 हर चंद किह् चंदीं गुनाह अज़ ख़ुद दीदम,
इहसानो-करम बेश अज़-आं फ़हमीदम।
शर्मिन्दा हमीं फ़ज़लो-करम करद मरा,
मीज़ाने-तअम्मुल शुदम ओ संजीदम।

बेशक मैंने गुनाह पर गुनाह किये हैं। लेकिन फिर भी तूने खुले दिल से मुझ पर बख़्शिशें की हैं और उस दयालु प्रभु ने अपनी रहमतों से मुझे शर्मिन्दा कर दिया। मैं अपने गुनाहों और उसकी रहमतों को तराज़ू में तोलता हूँ तो सौ-सौ बार शर्मिन्दा होता हूँ।

225 ता चंद कुनम गुनाह, या रब्ब हर दम,
अज़ फ़ज़ले-तू, वज़ करदा-ए-ख़ुद मुनफ़इलम।
आया चिह् कुनद न मुत्तकी, आख़िरकार,
बिस्यारी-ए-जुर्मो-बेहयाई करदम।

ऐ ख़ुदा! मैं कब तक पल-पल पाप करता रहूँगा। मैं अपने कर्मों को देखकर तेरी रहमत से शर्मिन्दा हो रहा हूँ। कोई गुनाहगार क्या करे। पता नहीं मैं किस बेशर्मी से यह सब गुनाह करता रहा?

226 दर गोशा-ए-फ़िक्र सैरे-दुनिया करदम,
अज़ बहरे-ख़ुद, आराम मुहैया करदम।
हर नेको-बदी किह् बीनद अज़ जा न रवद,
ईं वज़अ, ज़ि आईना तमाशा करदम।

मैंने ख़याल ही ख़याल में सारी दुनिया को देखा जिससे मेरा मन शान्त हो गया। इस पर अच्छे-बुरे का असर पड़ना बन्द हो गया। यह गुण मैंने शीशे से सीखा है।

(व्याख्या के लिये देखें, पृ. 119)

227 पाबंद मशौ ब रंजे-दुनिया गुफ़्तम,
दिल शाद मकुन ब कोहो-सहरा गुफ़्तम।
आलम हमा पाबंदे-सराब अस्त, बिबीं,
ऐ जोशे-हबाबो-मौजे-दरया गुफ़्तम।

मैंने तुझे बता दिया है कि दुनिया का फ़िक्र करना फ़ुजूल है, तू इसके पहाड़ों और रेगिस्तानों की सैर से ख़ुश न हो। दुनिया एक मृगतृष्णा है, यह समुद्र में उठी लहरों और पानी के बुलबुलों के समान है।

(व्याख्या के लिये देखें, पृ. 66)

228 बायद न-कशी ज़ि ख़लक़ मिन्नत गुफ़्तम,
गर साहिबे-फ़ितरती-ओ-हिम्मत गुफ़्तम।
ईं अस्त ख़याले-ख़ाम, हरगिज़ न कशी,
बर पर्दा-ए-अन्कबूत सूरत गुफ़्तम!

मैं कहता हूँ कि अगर तू अक़्लमन्द और बहादुर है तो दुनियादारों का एहसान न उठा; मैंने तुम्हें बता दिया है कि मकड़ी के जाले पर तस्वीर बनाना बेकार है।

(व्याख्या के लिये देखें, पृ. 66)

229 उल्फ़त ब ग़मे-यार गिरिफ़्तस्त दिलम,
बर दोश, गिरां बार गिरिफ़्तस्त दिलम।
ज़ाहिद! ब नसीहतम तू बिस्यार मकोश,
दर पेश, दिगर कार गिरिफ़्तस्त दिलम।

मेरा मन अपने महबूब की मुहब्बत के ग़म में खोया हुआ है। इस ग़म के बोझ से मैं बुरी तरह दब गया हूँ। हे तपस्वी, तू अपना वक़्त मुझे उपदेश देने में ख़राब न कर। मेरे मन की नज़र किसी और ही चीज़ पर है।

230 बा फ़िक्रो-ख़याले-कस नबाशद कारम,
दर तौरे-ग़ज़ल, तरीक़े-हाफ़िज़ दारम।
अम्मा बर रुबाई अम मुरीदे-ख़य्याम,
नै जुरअ-कशे-बादा-ए-ऊ बिस्यारम।

मुझे दूसरों के नहीं, अपने ख़यालों से वास्ता है। मुझ पर हाफ़िज़ की ग़ज़लों की कला का असर है और मैंने उमर ख़य्याम जैसी रुबाइयाँ लिखी हैं, लेकिन मैंने उनके ख़यालों के नशे का घूँट नहीं पिया।

231 अज़ नक्शे-बर आब, हर चिह् गुफ़्तम, गुफ़्तम,
वज़ जोशे-हबाब, हर चिह् गुफ़्तम, गुफ़्तम।
ईं आलमे-पीरी ओ ज़बानम ख़ामोश,
अय्यामे-शबाब, हर चिह् गुफ़्तम, गुफ़्तम।

जो कुछ मैंने कहा है वह पानी पर ख़ींची गई लकीर की तरह है; जो कुछ मैंने कहा है वह पानी के बुलबुले की तरह है। अब मैं बूढ़ा हो गया हूँ और मेरे लिए और कुछ लिखना कठिन है।

232 हरग़िज़ बख़ुदा ज़ुहदे-रियाई न कुनम,
ग़ैर अज़ दरे-मअरिफ़त, गदाई न कुनम।
शाही कुनम ओ मुल्के-फ़राग़त गीरम,
पैवस्ता ज़ि मैख़ाना जुदाई न कुनम।

अगर तू चाहता है कि भिखारी न बना रहे और बादशाह बन जाये तो बेहतर है कि तू पारसाई (निर्मलता) का ख़याल छोड़ दे। शराब के आख़िरी क़तरे दिल (मन) को साफ़ कर देंगे। तू मयख़ाने से क़दम बाहर न रख।

(व्याख्या के लिये देखें, पृ. 106)

233 दीदार बमन नमूद, अज़ फ़ज़लो-करम,
शाही किह् बुवद ख़ुसरवे-आअराबो-अजम।
ईं ख़वाब शबे-क़द्र शुद ओ क़द्र फ़ुज़ूद,
दुनिया नबुवद बक़द्रे-ख़ुद दर नज़रम।

मेरे महबूब की रहमत से मुझे उसका दीदार हुआ। मुझे उसने अपना चेहरा दिखाया जो दोनों जहान का मालिक है। शबे-क़द्र (पवित्र रात) के इस ख़्वाब से मेरी क़ीमत बहुत बढ़ गई है। अब मुझे दुनिया जौ के दाने से भी तुच्छ दिखाई देती है।

(व्याख्या के लिये देखें, पृ. 123)

234 आं अस्त किह् पैवस्ता बुवद ग़मख़्वारम,
बर फ़ज़ल नज़र कुनद, न बर किरदारम।
शायद किह् नदामतम ब फ़रयाद रसद,
अज़ करदा-ए-ख़्वेश, मुनफ़इल बिस्यारम।

सिर्फ़ वह एक ख़ुदा मेरे साथ हमदर्दी से पेश आता है। वह मेरे कर्मों की तरफ़ नहीं, अपनी रहमत की तरफ़ देखता है। हो सकता है मुझे पश्चात्ताप से कुछ लाभ हो, इसी लिये मैं अपने किये हुए कर्मों पर बार-बार पश्चात्ताप करता हूँ।

235 दिल शाद बज़ी हमेशा बर रूए-ज़मीं,
कैसरौ ओ जमशीद नमांदंद, बिबीं।
गुफ़्तम बतू ईं हर्फ़, किह् आगाह शवी,
अहवाले-जहान, गाह चुनां, गाह चुनीं।

दुनिया में जब तक रहो, ख़ुश रहो। देखो, यहाँ कैखुसरो और जमशीद जैसे बादशाह भी ज़्यादा देर तक न रह सके। मैंने तुम्हें यह बात इसी लिये कही है कि तुम सावधान हो जाओ कि दुनिया की हालत हमेशा बदलती रहती है।

236 अज़ कसरते-शौक़े-दोस्त, उज़लत बगुज़ीं,
अज़ रंज बर-आ, तरीक़े-राहत बगुज़ीं।
पैवस्ता चू गरद-बाद, सर गश्ता मशौ,
यक जा बदिले-जमअ, फ़राग़त बगुज़ीं।

अगर तेरा दिल महबूब के प्यार से भरा हुआ है तो एकान्त में बैठ जा। तू चिन्ताएँ छोड़ दे और सुख की राह पर आ जा। तू बगूले (बवण्डर) की तरह बेचैन न रह बल्कि सन्तोष भरे दिल से एकान्त में जा बैठ।

(व्याख्या के लिये देखें, पृ. 131)

237 अज़ बहरे-ख़ुदा, बया ओ दिल शाद बकुन,
हर वादा किह् करदाए, हमा याद बकुन।
इनसाफ़, अज़ीज़ अस्त, फ़रामोश मकुन,
अज़ दामे-हमा बख़्वेश आज़ाद बकुन।

तुम्हें ख़ुदा की क़सम है कि तुम आकर मेरे मन को ख़ुश कर दो और अपना हर वादा पूरा कर दो। इनसाफ़ करना बहुत बड़ी बात है। तुम इसे मत भुलाओ और ख़ुद ही मुझे सब बन्धनों से आज़ाद कर दो।

238 ख़ुश आबो-हवा दीदा न बर रूए-ज़मीं,
मुश्किल किह् अगर ज़ेरे-ज़मीन अस्त चुनीं।
दर सर किह् हवाहास्त अज़ीं मअलूम अस्त,
शायद न बुवद हवा-ए-आंजा ब अज़ीं!

इस दुनिया में कभी किसी ने सुख-शान्ति नहीं देखी। अगर क़ब्र में भी ऐसी बात होगी तो कैसी बदक़िस्मती होगी। मन में इच्छाओं, तृष्णाओं की जो भीड़ जमा है उससे तो यही लगता है कि वहाँ पर भी पहुँचकर सुख नहीं मिलेगा।

239 सद रंग बुवद हमेशा अहवाले-जहां,
गह सैर-ए-बहारश कुन ओ गह सैर-ए-ख़ज़ां।
अज़ पस्तो-बलंदे-ऊ दिल आज़ुर्दा मशौ,
हम्वारा बकुन दर्द बख़ुद, हम दरमां।

दुनिया की हर चीज़ हमेशा रंग बदलती रहती है। यहाँ कभी बहार आती है तो कभी पतझड़। इसलिये क़िस्मत के उतार-चढ़ाव से दुःखी न हो। तुम आप ही अपना दुःख हो और अपना दारू भी ख़ुद हो।

240 ख़्वाही किह् शवी शाद ओ नगरदी ग़मगीं,
अज़ ख़लक़, कनारा गीर ओ तनहा बनशीं।
आसूदगी-ए-हर दो जहान अस्त हमीं,
यक हरफ़ ज़ि मन बिशनौ व राहत बगुज़ीं।

अगर तुझे सुख-शान्ति की चाह है और तू दुःखों से बचना चाहता है तो दुनियादारों की संगति छोड़कर एकान्त ढूँढ ले। दोनों जहान का सुख एकान्तवास में है। अगर मेरी बात सुनेगा तो तुझे सच्ची शान्ति नसीब होगी।

(व्याख्या के लिये देखें, पृ. 130-31)

241 ता फ़िक्रो-ख़यालश ब दिलम करद वतन,
सर ता बक़दम फ़िक्रो-ख़यालम हमा तन।
अज़ ख़ुद सुख़ने हमेशा दारम, आक़ा,
इज़हार मुहाल अस्त, हमीं अस्त सुख़न।

तेरे प्यार और तेरे ख़याल ने मेरे दिल में घर कर लिया है। इसने सिर से पाँव तक मुझे जकड़ लिया है। मैं हमेशा तेरे बारे में अपने आपसे बातें करता रहता हूँ यानी मन ही मन में तेरा ज़िक्र (सिमरन) करता रहता हूँ। मगर मुसीबत यह है कि किसी दूसरे से इसका हाल कह नहीं सकता।

242 बाबे-करमो-लुत्फ़ कशूदी बर मन,
सद रंग दिलम शिगुफ़्ता शुद रश्के-चमन।
यक फ़ज़ले-तू अज़ हज़ार न आयद ब बयान,
हर चंद ज़बान शवद बशुकरत हमा तन।

तूने मेरे लिए रहमत और बख़्शिश का दरवाज़ा खोल दिया है। मेरे मन में सैंकड़ों रंगों के फूल खिल गए हैं। तेरी रहमत को हज़ारों ज़बानों से भी बयान नहीं किया जा सकता। चाहे मेरा रोम-रोम ज़बान बन जाये और शुकराने से भर जाये तो भी मैं तेरी बख़्शिश को बयान नहीं कर सकता।

243 ईं हस्ती-ए-मौहूम, हबाब अस्त, बिबीं,
ईं बहरे-पुर-आशूब, सराब अस्त, बिबीं।
अज़ दीदा-ए-बातिन ब नज़र जलवागर अस्त,
आलम, हमा आईना ओ आब अस्त, बिबीं।

यह झूठी दुनिया पानी का बुलबुला है। यह देखने में तूफ़ान से भरा समुद्र लगती है लेकिन दर असल यह नज़र का धोखा (मृगतृष्णा) है। दिल की आँख से देखें तो नज़र आता है कि यह दुनिया सिर्फ़ एक शीशा और परछाई है।

(व्याख्या के लिये देखें, पृ. 124)

244 चूं पीर शुदम, गुनाह गरदीद जवां,
बशिगुफ़्त गुले-दाग़, ब हंगामे-ख़जां।
ईं लाला रुखां, तिफ़्ल मिज़ाजम करदंद,
गह मुत्तकी अम, गाह सरापा इस्यां।

मैं बूढ़ा हो गया लेकिन मेरे गुनाह जवान हो गए। बुढ़ापे की ख़िज़ाँ में अब शर्मिन्दगी के फूल खिल उठे हैं। ख़ूबसूरत लाल चेहरों ने मुझे इस तरह दीवाना बना दिया कि मैं कभी भारी गुनाहगार और कभी पारसा (नेक) बन जाता हूँ।

245 ख़्वाही बजहान, नाम बर आरी चू नगीं,
अज़ ख़लक़ गुज़ीं कनारो-तनहा बनशीं।
दीदम दर ईं बादिया अज़ दस्त शुदंद,
बस सर्दी-ए-दुनिया ओ बसे गरमी-ए-दीं!

अगर तू चाहता है कि दुनिया में तू नगीने की तरह पहचाना जाये तो तू दुनिया से किनाराकशी करके एकान्त में जा बैठ। हमने इस एकान्त जंगल में अनेक लोगों को अपना आप गँवाते देखा है। कुछ दुनिया की सर्दी से मारे गए और कुछ दीन (धर्म) की गर्मी से मारे गए।

(व्याख्या के लिये देखें, पृ. 132)

246 यक सू ग़मे-दुनिया ओ दिगर सू ग़मे-दीं,
ईं अस्त किह दीदम आं अस्त न ईं।
जान कंदन ओ दिल दर पए नाम अस्त निशान,
हर नेक गिरिफ़्त अस्त मरा हम चू नगीं।

मेरे एक तरफ़ दुनिया के दु:ख हैं तो दूसरी तरफ़ दीन यानी परलोक की चिन्ता है। न यह ठीक है, न वह ठीक है। ज़िन्दगी का अन्त होने को है लेकिन मन में अब भी प्रसिद्धि की तमन्ना है। हैरानी की बात है कि भले लोग मुझे हीरा या मोती ही समझते रहे।

247 दर दिल चू नमूद मिहरे-जानां, मसकन,
सद रंग शिगुफ़्त ईं गुल ओ गरदीद चमन।
पैदा ओ निहानीम, दर ईं दौरे-कुहन,
मा रा नतवां शिनाख़्त, इल्ला ब सुख़न।

जब मुहब्बत ने मेरे दिल में घर कर लिया तो मेरा मन ऐसा बाग़ बन गया जिसमें रंग-बिरंगे फूल खिल उठे। इस पुरानी दुनिया में हम गुप्त भी हैं और प्रकट भी। बिना हमारे शब्दों के हमें कोई नहीं पहचान सकता।

248 दिल रा बख़याले-ऊ हम-आग़ोश बकुन,
ख़ुद रा बफ़लक ज़ि औज, हमदोश बकुन।
ईं हरफ़, ज़ि मुत्तक़ी फ़रामोश मकुन,
यादे-दो-जहां ज़ि दिल फ़रामोश बकुन!

उस महबूब (ख़ुदा) का ख़याल अपने दिल में बसा ले। इससे तेरा नसीब आसमान तक जा पहुँचेगा। तू फ़क़ीर की यह बात याद रख। दिल से इस दुनिया (लोक) और उस दुनिया (परलोक) का ख़याल निकाल दे।

(व्याख्या के लिये देखें, पृ. 134)

249 सरमद! तू हदीसे-कअबा-ओ-दैर मकुन,
दर वादी-ए-शक, चू गुमरहां, सैर मकुन।
ईं शेवा-ए-बंदगी ज़ि शैतान आमूज़,
यक क़िबला गुज़ीं ओ सजदा बर ग़ैर मकुन!

ऐ सरमद! तू दैरो-काअबा, मन्दिर-मसजिद की बात न कर। तू इस भ्रम की वादी में न भटक। तू शैतान से ख़ुदा की बन्दगी का सबक़ सीख। तू बिना उस एक (ख़ुदा) के किसी और को सिजदा न कर।

(व्याख्या के लिये देखें, पृ. 137)

250 दर कूए-मुग़ां, मौसमे-गुल, मंज़िल कुन,
ख़ुद रा ब दरे-जुनून बज़न, ग़ाफ़िल कुन!
ईं ख़िरक़ा-ए-पशमीना किह् बार अस्त ओ वबाल,
अज़ दोश बुना, फ़राग़ते हासिल कुन!

बहार का मौसम है, तू महबूब रूपी साक़ी की गली में डेरा लगा ले। तू दीवाना और बेख़ुद हो जा। यह ऊन का चोला बोझ है, एक मुसीबत है। इसको कन्धे से उतार फेंक और निश्चिन्त हो जा।

251 बर मन दरे-लुत्फ़ो-जूद, मसदूद मकुन,
मक़बूल तू हर किह् गश्त, मरदूद मकुन।
अज़ ज़ुअफ़, नमी तवां गिरां बार कशीद,
पीराना सरम गुनाह अफ़ज़ूद, मकुन।

मेरे महबूब! तू मुझ पर अपनी रहमत और बख़्शिश का दरवाज़ा बन्द न कर। जिसे तूने अपनी रहमत से अपना लिया है, उसे अपने दरवाज़े से दूर न कर। मैं इतना निर्बल हो चुका हूँ कि ज़िन्दगी का बोझ नहीं उठा सकता। मुझे बुढ़ापे में और गुनाह करने से बचा।

252 ऐ फ़िक्र कज़ीं ख़िदमते-शाहां बगुजीं,
पैवस्ता कसे नमांद बर रूए-ज़मीं।
पेशानी-ए-शाहां हमा पुर चीं दीदम,
दुनिया न बुवद बक़दरे-यक-चीने-जबीं।

जो बादशाहों की नौकरी और ख़िदमत करना चाहता है उसे यह जान लेना चाहिये कि इस दुनिया में कोई हमेशा नहीं रहा। मैंने बादशाहों के माथे पर भी चिन्ता की रेखाएँ देखी हैं।

253 ख़्वाही किह् बदस्ते-तू बुवद नामो-निशां,
मानिंदे-नगीं, ख़ाना नशीं शौ ब जहां।
पैवस्ता चू नक़्शो-पा, बिया सा यक जा,
बे संगे-फ़लाख़न नशवद, रेगे-रवां!

अगर तू नामोनिशान चाहता है तो अँगूठी के नगीने की तरह एक जगह बैठ जा। तू पद-चिन्ह की तरह अपनी जगह से न हिल। रेगिस्तान में आँधी से उड़ने वाली रेत भी होती है और एक जगह स्थिर रहनेवाले पत्थर भी होते हैं।

(व्याख्या के लिये देखें, पृ. 118)

254 दिलख़्वाह न शुद दो चार यारे ब जहां,
ग़मख़्वार न दीदम बकारे ब जहां।
आं गुल किह् दिहद बूए-वफ़ा नायाब अस्त,
कुन सैरे-ख़ज़ानी ओ बहारे ब जहां।

जिसकी चाह मेरे मन में है, मैं उससे न मिल सका, न ही मुझे दोनों जहानों में कोई हमदर्द मिला। दुनिया की बहारों और पतझड़ों को देख लो, वफ़ा की सुगन्ध वाला फूल यानी सच्चा दोस्त दुर्लभ है।

255 या रब्ब! ज़ि करम, ख़स्ता दिलम शाद बकुन,
वीराना-ए-जानो-जिस्म, आबाद बकुन।
ख़्वाहम किह् अरूसे-ऐश, गीरम ब कनार,
अज़ दामे-ग़म ओ मिहनतम आज़ाद बकुन।

ऐ ख़ुदा! अपनी रहमत से मेरे दुःखी दिल को सुखी कर दे। मेरी आत्मा के रेगिस्तान को हरी-भरी धरती बना दे। मैं ख़ुशी की दुलहन को गले लगाना चाहता हूँ। तू मुझे दुःख और चिन्ता के जाल से आज़ाद कर दे।

256 ऐ लाला रुख़ ओ सरव क़द ओ सीमीं तन,
अय्यामे-बहार अस्त, बकुन सैरे-चमन।
चूं ग़ुंचा मकुन हजला नशीनी, सितम अस्त,
गुल मी रवद ओ सुंबुल ओ नसरीन ओ समन।

ऐ गुलाब जैसे चेहरे, सरू जैसे लम्बे क़द और चाँदी जैसे बदन वाले महबूब, बहार का मौसम आ गया है, तू मेरे चमन में आ जा। अफ़सोस कि तू कली की तरह घर में बैठा है जब कि गुलाब, चमेली और चम्पा के फूल मुरझाने लगे हैं।

257 ता मिहरो-ख़यालश बदिलम करद वतन,
सद रंग शिगुफ़्त ईं ओ शुद रश्के-चमन।
फ़िक्रम दिगर ओ राहे-ख़यालम दिगर अस्त,
पै साहिबे-मअना बुर्द ईं जा ब सुख़न।

जब से तेरा इश्क़ और तेरा ख़याल मेरे दिल में समाया है, मेरा दिल खिलकर गुलशन बन गया है। मेरे ख़याल बदल गए हैं, मेरी सोच बदल गई है। जब अर्थ ही न रहा तो शब्द कहाँ रह गया।

(व्याख्या के लिये देखें, पृ. 75)

258 अज़ बहरे-चिह् हुब्बे-जाह बायद करदन?
उम्रे-ख़ुद रा तबाह बायद करदन?
मानिंदे-नगीं, चिह् लाज़िम अस्त अज़ पए नाम,
जान कंदन ओ रूस्याह बायद करदन?

दुनिया में ऊँची पदवियाँ प्राप्त करने के लिये कोशिश क्यों की जाती है? यह अपनी ज़िन्दगी व्यर्थ करने के समान है। ऐसी शोहरत हासिल करने का क्या लाभ जिसके लिये नगीने की तरह दुःख उठाना और मुँह काला करना पड़े।

259 ज़ीं तूले-अमल, आह! चिह् ख़्वाही करदन?
ज़ीं ख़्वाहिशे-जांकाह, चिह् ख़्वाही करदन?
सर रिश्ता-ए-उमर, हर नफ़स दर ताब अस्त,
ज़ीं हिम्मते-कोताह, चिह् ख़्वाही करदन?

तुम्हें इन बड़ी-बड़ी इच्छाओं से क्या मिलेगा? इन लम्बी दुःख-भरी इच्छाओं से क्या लाभ है? ज़िन्दगी का धागा पल-पल उलझता जा रहा है। तुम निर्बल मनोबल द्वारा यहाँ क्या कर सकते हो?

260 ऐ दोस्त! दर ईं दहर, निकोकारी कुन,
बेश अज़ नफ़से नीस्त, कम आज़ारी कुन।
ख़ुशनूदी-ए-अहले-दिल, ग़नीमत बशुमार,
हर जा किह् बुवद ख़स्ता दिली यारी कुन।

ऐ मेरे दोस्त! तू इस दुनिया में नेक काम कर। तेरी ज़िन्दगी पल भर के लिये है, तू किसी को दुःखी न कर। तू नेक-दिल लोगों को ख़ुश करने की कोशिश कर और जहाँ भी दुःखी लोग मिलें, उनके दुःख दूर कर।

261 ख़ुद रा बख़याले-दोस्त, दिल शाद बकुन,
अज़ मिहनतो-अंदोहो-ग़म आज़ाद बकुन।
यारान किह् शबो-रोज़, रफ़ीक़त बूदंद,
अज़ शादी ओ अंदोहे-हमा, याद बकुन।

तू अपने दिल को महबूब की याद से ख़ुश रख। इस तरह तुझे दुःखों और चिन्ताओं से छुटकारा मिल जायेगा। जो दोस्त दिन-रात तेरा साथ निभाएँ, तू ख़ुशी और ग़मी में हमेशा उन्हें याद रख।

(व्याख्या के लिये देखें, पृ.116)

262 दरया-ए-इनायतीश, नदारद पायां,
दर शुकर, ज़बां क़ासिर ओ दिल हम हैरां।
हर चंद गुनाह बेश अज़ ऊ रहमत, बेश,
करदेम शिनावरी ब बहरे-इस्यां!

उसकी रहमत का समुद्र अनन्त और अथाह है। ज़बान उसका शुक्र नहीं कर सकती और मन उसको देखकर हैरान है। गुनाह कितने बड़े क्यों न हों उसकी रहमत उनसे बड़ी है। इसी लिये गुनाहों का समुद्र भी हमें डुबो नहीं सकता।

263 गह मुत्तकी अम, कुनद गहे पीरे-मुग़ां,
अहवाले-जहान, गाह न दीदम यकसां।
चूं नख़्ल, गहे सब्ज़ ओ गहे उरयानम,
बे मौसमे-गुल, बहार हंगामे-ख़ज़ां।

दुनिया मुझे कभी नेक इनसान बना देती है और कभी बज़ुर्ग साक़ी। मैंने कभी दुनिया को एक रंग रहते नहीं देखा। कभी यह हरे-भरे वृक्ष के समान होती है तो कभी पत्तों से रहित वृक्ष के समान हो जाती है। यहाँ कभी पतझड़ में बहार और कभी बहार में पतझड़ दिखाई देती है।

264 बे फ़ज़ले-तू, आसान नशवद मुश्किले-मन,
आसूदगी अज़ रंज न आयद दिले मन।
सरसब्ज़ बकुन किश्ते-मुरादम, या रब्ब!
ता गंजे-फ़राग़त बशवद हासिले-मन,

तेरी रहमत के बिना मेरी मुसीबतों का अन्त नहीं होगा। यही कारण है कि मेरा मन हमेशा दु:खी है। ऐ ख़ुदा! मेरी इच्छाओं की हरी-भरी फ़सल को फल लगा दे ताकि मुझे सुख-शान्ति का ख़ज़ाना मिल जाये।

265 मिहरश बगुज़ीं, ब कामरानी बनशीं,
दीगर न बुवद दौलते-राहत, ब अज़ीं।
बे दोस्ती अश नीस्त मुयस्सर हरगिज़,
गर तालिबे-दुनियाए ओ गर तालिबे दीं।

तुझे सच्चा सुरूर (आनन्द) सिर्फ़ ख़ुदा की मुहब्बत में मिलेगा। उसकी मुहब्बत से बड़ा कोई सुख नहीं। बिना उसकी मुहब्बत के दीन (परलोक) और दुनिया (लोक) दोनों ही नहीं मिलेंगे।

(व्याख्या के लिये देखें, पृ. 55, 134)

266 ख़वाही नकशी रंजो-नजूई दरमां,
दूरी बगुज़ीं ज़ि हमनशीनाने-जहां।
चूं अक़रबो-मार कुन तसव्वुर हमा रा,
अज़ सुहबते-हमदमां, अमां ख़्वाह, अमां।

अगर तू चिन्ता से छुटकारा पाना चाहता है तो दुनिया और दुनियादारों से दूर रह। इन सबको साँपों और बिच्छुओं के समान समझ। ऐसे लोगों की सोहबत से बचकर रह।

(व्याख्या के लिये देखें, पृ. 141-42)

267 अंदेशा-ए-याराने-हसद पेशा बकुन,
संगे किह् बिबीनी, हज़र अज़ शीशा बकुन।
अज़ सुहबते-ईं-ताइफ़ा, दिल शाद मशौ,
अज़ मर्दुमे-रोज़गार अंदेशा बकुन!

तू अपने आपको ईर्ष्यालु दोस्तों से बचाकर रख। ये वे पत्थर हैं जो तेरे शीशे जैसे दिल को तोड़ देंगे। ऐसे लोगों की दोस्ती पर ख़ुश न हो। इनकी सोहबत से बचकर रहने में ही भलाई है।

268 ता चंद तहे-सिपिहर ओ बर रुए-ज़मीं,
अज़ बहरे-ज़रो-सीम, बगर्दी ग़मगीं।
यक जा बिनशीं बिगोशाए हमचू नगीं,
ईं नक़्श बर आब अस्त सराब अस्त, बिबीं!

तू कब तक दुनिया में सोने-चाँदी की तलाश में भटकता रहेगा। यह दुनिया मृगतृष्णा है; यह पानी पर खींची गई लकीर है; तू नगीने की तरह एक कोने में बैठा रह।

(व्याख्या के लिये देखें, पृ. 130)

269 बा तर्के-तअल्लुक़ नफ़सी यार बशौ,
ज़ीं बारे-गिरां दमे, सबुकबार बशौ।
ता चश्म कुनी बाज़, बहम बाज़ नही,
ऐ बेख़बर! अज़ ख़्वेश, ख़बरदार बशौ।

तू अपने आपसे नाता तोड़कर देख; इस भारी बोझ को पटककर हलका हो जा; तू आँखें बन्द न कर, आँखें खोल। ऐ बेख़बर, तू अपने आपसे ख़बरदार हो जा।

(व्याख्या के लिये देखें, पृ. 77)

270 अफ़सुर्दा नशुद ज़ि रंजे-दुनिया दिले-तू,
आगाह नशुद गाह, दिले-गाफ़िले-तू।
गर तुख़्मे-नदामत नफ़िशांदी, आख़िर,
जीं किश्ते-नदामत चिह् बुवद हासिले-तू?

तू दुनिया के दु:खों को देखकर दु:खी न हो, तेरे बेसमझ मन को कभी होश न आया, तूने कभी पश्चात्ताप का बीज न बोया, तुझे इस नफ़रत की फ़सल में से अन्त में क्या हासिल होगा?

271 शुद बर तने-मन ग़र्क़े-गुनाह, हर सरे-मू,
अज़ मन हमा ज़िश्ती अस्त ओ नेकी अस्त ज़ि तू।
ता चंद कुनम, गुनाह ओ ऊ फ़ज़्ल कुनद?
शर्मिंदा-ए-जुर्म ख़ुदम ओ रहमते-ऊ।

मेरे शरीर का रोम-रोम गुनाहों में डूबा हुआ है। ऐ ख़ुदा! मैं गुनाहों का रूप हूँ और तू नेकी का रूप है। मैं कब तक गुनाह करता रहूँगा और तू कब तक रहमत करता रहेगा। मैं अपने गुनाहों और तेरी रहमत को देखकर शर्मिन्दा हूँ।

272 बगुज़र ज़ि ख़ुदी, ज़ि फ़ितनाहा ऐमन शौ,
ता चंद शवी ख़ार, गहे गुलश्न शौ।
बा नफ़्से-सितमगार, ख़ुसूमत बर कुन,
गुफ़्तम बतू ऐ दोस्त, बख़ुद दुश्मन शौ!

तू ख़ुदी (हौंमैं) को छोड़ दे। इस तरह तू जंग (अशान्ति) से अमन (शान्ति) में आ जायेगा। तू काँटा न बना रह, गुलशन बन। तू इस ज़ालिम नफ़्स (मन) को दुश्मन न समझ। ऐ दोस्त, तू ख़ुद अपना दुश्मन बन जा।

(व्याख्या के लिये देखें, पृ. 81)

273 आसान न बुवद ब फ़हम, फ़हमीदने-ऊ,
मुशिकल ब दिलो-दीदा बुवद, दीदने-ऊ।
दीवाना दिलो-दीदा बसे हैरान अस्त,
दरयाफ़्तनो-दीदनो-संजीदने-ऊ।

ख़ुदा को अक़्ल या फ़लसफ़े के ज़रिये समझ पाना नामुमकिन है। उसे दिल से जान सकना और आँखों से देख सकना असम्भव है। दीवाना दिल और दीवानी आँखें उसे ढूँढ़ने में, देखने में और जानने में हैरान-परेशान हैं।

(व्याख्या के लिये देखें, पृ. 120)

274 अज़ मालो-मनाले-ख़्वेश, मग़रूर मशौ,
दर नश्शा-ए-ईं-शराब, मसरूर मशौ।
दर आमदो-रफ़्त ईं, तुफ़ावत नबुवद,
दिलशाद, अज़ ईं मबाश ओ रंजूर मशौ!

धन-दौलत और माल, असबाब का मान न कर। इस शराब के नशे में सुख न ढूँढ़, धन के आने और जाने में देर नहीं लगती। इसके आने पर ख़ुश न हो और जाने पर दुःखी न हो।

275 ईं बाइसे-दिल-ख़स्तगी अम चीस्त? बिगो,
ता चंद ब मिहनत बकुनम ज़ीस्त? बिगो।
हर चंद बदम, अज़ करमे-ख़्वेश ब बख़्श,
ग़ैर अज़ तू बमन रहम कुनद कीस्त? बिगो।

मेरे दुःख का क्या कारण है, मुझे यह तो बता? मुझे कब तक यह दुःख सहना पड़ेगा, यह तो बता? मैं चाहे कितना भी गुनाहगार हूँ, तू मुझे अपनी रहमत से बख़्श दे। तेरे सिवाय और कौन है, जो रहमत करके मेरे गुनाह बख़्श सकता है।

276 मीना-ए-फ़लक किह् संग मी बारद जू,
दर पर्दा-ए-सुलह, जंग मी बारद जू।
ग़ैर अज़ सिपरे-क़दह, गुरेज़त न बुवद,
हर चंद किह् संगे-नंग मी बारद जू!

आसमान के मीना (शीशा) से बेशुमार पत्थर गिर रहे हैं। यहाँ सुलह के पर्दे में जंग हो रही है, दोस्ती के पर्दे में दुश्मनी पल रही है। यहाँ बचाव का एक ही साधन शराब (ख़ुदा के नाम) का जाम है क्योंकि पत्थर जैसा भी हो उसका शराब के प्याले पर कोई असर नहीं होता।

(व्याख्या के लिये देखें, पृ. 108)

277 अज़ वहमो-ख़याले-ख़्वेश, दिलरेश मशौ,
वज़ नेको-बदे-ख़ल्क़, बद-अंदेश मशौ।
सुहबत ब कसे मदार, जुज़ साक़ी-ओ-जाम,
गर यार शवी, बा दो सिह कस बेश मशौ!

तू वहमों-भ्रमों से दुःखी न हो; तू बुरी और भली दुनिया की चिन्ता न कर; तू सिवाय साक़ी (मुर्शिद) और जाम (नाम का प्याला) के किसी को दोस्त न बना। अगर दोस्त बनाने हैं तो दो-तीन से ज़्यादा न बना।

(व्याख्या के लिये देखें, पृ. 100)

278 ख़्वाही किह् बख़ुद दोस्त शवी, दुश्मन शौ!
अज़ आफ़्ते-ख़्वाहिश बजहान, ऐमन शौ।
ईं नफ़्से-सितमगार दिल आज़ार तुरा,
ख़ारीस्त कन अज़ बाग़े-दिले-गुलश्न शौ।

अगर तुझे ख़ुद से प्यार है तो ख़ुद (मन) का दुश्मन बन जा। दिल से दुनिया की ख़्वाहिशों को निकाल दे ताकि दिल में अमन (शान्ति) हो जाये। यह ज़ालिम नफ़्स (मन) तुझ पर ज़ुल्म कर रहा है। तू इस काँटे को निकालकर गुलशन बन जा।

(व्याख्या के लिये देखें, पृ. 83)

279 हर लहज़ा नदामत अस्त, या रब्ब! ज़ि गुनाह,
दर दिल, हमा ख़जलत अस्त ओ बर लब, आह।
ऐ बादे-मुरादे-वसल, वक़्ते-मदद अस्त,
दर बहरे-गुनाह, कश्ती अम गश्त तबाह।

ऐ ख़ुदा! मैं हर पल अपने गुनाहों पर शर्मिन्दा हो रहा हूँ, मेरा मन प्रायश्चित्त से भरा है और मेरे होंठों से आहें निकल रही हैं। गुनाहों के समुद्र में मेरी किश्ती डूब रही है, यही तेरी मदद का वक़्त है। तू इसे अपनी रहमत से बचा ले।

280 जुज़ मिहनत ओ रंज नीस्त, हासिल ज़ि हमा,
फ़ारिग़ शौ ओ आज़ाद बकुन दिल ज़ि हमा।
ख़ुद रा बख़ुदा गुज़ार ओ अंदेशा मकुन,
ईं फ़िक्रो-ख़यालो-वहम, मुश्किल ज़ि हमा!

इस ज़िन्दगी से सिवाय दुःख और चिन्ता के, कुछ नहीं मिलता; दुनिया के मोह को त्यागकर सुखी हो जा। अपने आपको ख़ुदा के हवाले कर दे और दुनिया के वहमों और भ्रमों से न डर।

281 अज़ नेको-बदे-ख़्वेश, न गश्तम आगाह,
बर फ़ज़्ेल-तू, करदम गुनाह ओ नामा स्याह।
अज़ क़ुदरते-तुस्त, ज़ुअफ़ो-कुव्वत, हमा रा,
ला हौल वला कुव्वत इल्ला बिल्ला!

मैंने कभी अपने पुण्यों और पापों की तरफ़ ध्यान न दिया, तुम्हारी रहमत के भरोसे मैं अपना अमालनामा (कर्मों के लेख) काला करता रहा। तू जिसे चाहता है ताक़तवर बना देता है, जिसे चाहता है कमज़ोर बना देता है, यानी ताक़त भी तू ही देता है, कमज़ोरी भी तू ही देता है, क्योंकि तू सर्वशक्तिमान है।

(व्याख्या के लिये देखें, पृ. 41)

282 ग़ैर अज़ तू दरे-रहमतश नदारेम पनाह,
बेचारा-ओ-आजिज़ेम, बा हाल तबाह।
नै ताक़ते-ज़ुहद अस्त, न यारा-ए-गुनाह,
ला हौल वला क़ुव्वत इल्ला बिल्ला!

तेरी रहमत के दरवाज़े के बिना मेरे लिए और कोई सहारा नहीं; मेरे जैसे बेसहारा ग़रीब और बर्बाद लोगों के लिए दूसरा कोई सहारा नहीं; हमारे अन्दर न तो नेक काम करने की ताक़त है और न गुनाह करने की, यानी हम अपनी ताक़त से न अच्छे बन सकते हैं न बुरे, क्योंकि तू ही सर्वशक्तिमान है।

(व्याख्या के लिये देखें, पृ. 41)

283 शोख़ी ज़ि कफ़म रबूद दिल रा ब निगाह,
शुद रोज़ बमन तीरा अज़ीं चश्मे-स्याह।
पीरी-ओ-शबाब, जमअ शुद आख़िरकार,
ला हौल वला क़ुव्वत इल्ला बिल्ला!

उसकी चंचल निगाह मेरा दिल ले गई। उसकी काली आँखों ने मेरे प्रकाशवान दिन को अँधेरी रात में बदल दिया। अन्त में जवानी और बुढ़ापा इकट्ठे हो गए, क्योंकि वह सर्वशक्तिमान है।

(व्याख्या के लिये देखें, पृ. 41)

284 अहवाल किह् अज़ जौरे-फ़लक गश्त तबाह,
ईं बुवद किह् अज़ शाहो-गदा ख़्वास्त पनाह।
दीदम हमा रा ओ आज़मूदम हमा रा,
ला हौल वला क़ुव्वत इल्ला बिल्ला।

हालात के चक्कर ने ज़िन्दगी को तबाह कर दिया क्योंकि मैंने बादशाहों और भिखारियों से मदद माँगी। मैंने उन सबको देखा और आज़माया। अन्त में मुझे यही पता चला कि वह प्रभु ही सर्वशक्तिमान है।

(व्याख्या के लिये देखें, पृ. 41)

285 अफ़सोस! बतक़दीर न बुरदेम पनाह,
ज़ि अंदेशा-ओ-तदबीर, शुद अहवाल, तबाह!
मग़रूर मशौ ब क़ुव्वतो-क़ुदरते-ख़्वेश,
ला हौल वला क़ुव्वत इल्ला बिल्ला!

अफ़सोस कि हमने तक़दीर का आसरा न लिया और अपनी कोशिशों और यत्नों से अपने आपको तबाह कर दिया। तू अपनी ताक़त का भ्रम छोड़ दे, क्योंकि सिर्फ़ प्रभु ही सर्वशक्तिमान है।

(व्याख्या के लिये देखें, पृ. 41-42)

286 अहवाल शुद अज़ ज़िश्ती-ए-आअमाल, तबाह,
जुज़ फ़ज़ले-ख़ुदा नीस्त दिगर जाए-पनाह।
हर चँद किह् मन ज़ईफ़, ओ इबलीस क़वी अस्त,
ला हौल वला क़ुव्वत इल्ला बिल्ला!

मैंने अपने ही गुनाहों से अपने आपको तबाह कर दिया। अब तेरी रहमत के सिवाय मेरे बचाव का कोई और ठिकाना नहीं है। यह ठीक है कि मैं कमज़ोर हूँ और शैतान ताक़तवर है, मगर इस बात की मुझे कोई परवाह नहीं, क्योंकि तू सर्वशक्तिमान है।

(व्याख्या के लिये देखें, पृ. 42)

287 गर मुत्तक़ी अम, ओ गर असीरम बगुनाह,
आनी किह् बहर हाल, दर आरी बपनाह।
नेको-बदे हर कस, ब यदे-क़ुदरते-तुस्त,
ला हौल वला क़ुव्वत इल्ला बिल्ला!

चाहे मैं नेक हूँ या गुनाहों का ग़ुलाम हूँ। तू वह करुणामय है कि हर हाल में अपनी शरण में ले लेता है। हर किसी की अच्छाई-बुराई तेरे ताक़तवर हाथ में है, क्योंकि तू सर्वशक्तिमान है।

(व्याख्या के लिये देखें, पृ. 40)

288 ज़ाहिद, तू चिह् लज़्ज़त ज़ि रिया याफ़्ताए,
सद ख़िरक़ा-ए-पश्मीना बहम ताफ़्ताए।
अज़ रिश्ता-ए-तसबीह किह् बारीक ज़ि मूस्त,
मुहकम रसनी बराए ख़ुद बाफ़्ताए!

ऐ तपस्वी! तुझे इस दम्भ या दिखावे से क्या लाभ? तू ऊन के सैकड़ों चोले क्यों पहनता है। तूने अपनी माला के, बाल से बारीक धागे से अपने गले के लिये मोटा फन्दा तैयार कर लिया है।

289 बेहूदा बसे तुख़्मे-हवस काश्ताए,
हासिल चिह् अज़ ईं काश्ता, अंगाश्ताए।
सौदा-ए-जहान, सूद न बख़्शद आख़िर,
नुक़सान कुनद आंचिह् नफ़ा पिंदाश्ताए।

तूने व्यर्थ में लोभ के बीज बोये हैं। क्या तूने कभी सोचा है कि इनका क्या फल होगा? दुनिया का प्रेम व्यर्थ है, जिसे तुम नफ़ा समझते हो असल में उससे नुक़सान होता है।

290 बा दामे-हवा-ओ-हिर्स ता हम नफ़से,
पाबंदे-ख़ुदी, शामो-सहर दर क़फ़से।
आज़ाद चू सरव बाश, दर गुलशने-दहर,
गर सुबुंलो-नसरीनी-ओ-ख़ारो-ख़से।

जब तक तुम लोभ और कामना में क़ैद हो, तुम दिन-रात ख़ुदी या अहं के पिंजरे में बन्द हो। तुम ज़िन्दगी के बाग़ में सरु की तरह आज़ाद रहो। चाहे तुम फूल हो, काँटा या घास का तिनका।

291 दर दहर, अगर हमसरे-अफ़लाक शवी,
पस्ती बगुज़ीं किह् आक़िबत ख़ाक शवी।
आज़ुरदगी-ए-जहान, नैअरज़द बजूइ,
दामन बफ़िशां ज़ि हिर्स, ता पाक शवी।

तू चाहे आसमान तक ऊँचा क्यों न उठ जाये, नम्रता को अपना क्योंकि आख़िर में तू मिट्टी में समाकर मिट्टी हो जायेगा। दुनिया की चिन्ता करना व्यर्थ है। अपना दामन लोभ से गन्दा न होने दे।

(व्याख्या के लिये देखें, पृ. 136)

292 पैदास्त ज़ि पेशानी-ए-मन इस्यानी,
दारी नज़रे-लुत्फ़ बमन पिनहानी।
असरारे-निहां, बुवद ब पेशे-तू अयां,
गर फ़ास्क़ि ओ गर मुत्तक़ी अम मी दानी।

मेरे पाप मेरे माथे पर साफ़ लिखे हुए हैं; तू अपनी रहमत की नज़र मुझ पर रख। तू सब भेदों को जाननेवाला है। मैं गुनाहगार हूँ या परहेज़गार, तू अच्छी तरह जानता है।

(व्याख्या के लिये देखें, पृ. 44)

293 गर दर तलबे-बादा-ए-राहत हस्ती,
वज़ नश्शा-ए-आज़ादी-ए-दुनिया मस्ती।
दीन हम बगुज़ार दामने-दोस्त बगीर,
दर आलमे-मस्ती, ज़ि दो आलम रस्ती।

अगर तुझे उस नाम की शराब की तलाश है जो तुझे दिली-राहत (चैन) पहुँचाये; अगर तू दुनिया से आज़ादी दिलाने वाली शराब चाहता है तो दीनो-दुनिया छोड़कर दोस्त (मुर्शिद) का दामन थाम ले और जीते-जी किसी भी हालत में उसका दामन न छोड़।

(व्याख्या के लिये देखें, पृ. 97)

294 ता चंद दर अंदेशा-ए-दुनिया बाशी?
आवारा-ए-दश्तो-कोहो-सहरा बाशी?
दामाने-कनाअत अस्त बिस्यार वसीअ,
अज़ दस्त मदिह दर ईं जहान ता बाशी।

तुम कब तक दुनिया के सुखों की आशा करते रहोगे और कब तक जंगलों, पर्वतों और बियाबानों में भटकते रहोगे। सन्तोष का दामन बहुत बड़ा है। जीते-जी कभी इसे हाथ से न जाने दो।

295 तनहा न हमीं जानो-दिल ईमानी,
आनी तू किह् हर लहज़ा बचंदीं आनी!
बेरूँ ज़ि तसव्वुरो-ख़यालत, दीदम,
आं चीज़ किह् दर फ़हम नयायद, आनी।

तू सिर्फ़ मेरे मन और आत्मा के साथ ही नहीं है; तू एक ही समय में सैकड़ों जगहों पर है। तू मेरे ख़याल और कल्पना से ऊपर है, तू वह है जिसे मेरी बुद्धि पकड़ नहीं सकती।

(व्याख्या के लिये देखें, पृ. 42-43)

296 ऐ जाने-गिरामी, तू चिरा नादानी,
बायद किह् बदानी चिह् क़दर मी मानी।
बर हस्ती-ए-मौहूम, अबस मग़रूरी,
पैवस्ता नमानी, दो सिह दम मिहमानी।

ऐ प्यारी आत्मा, तू अज्ञानियों जैसे कर्म क्यों करती है? तुझे यह पता होना चाहिये कि तूने कितने समय के लिये यहाँ रहना है। इस झूठी दुनिया का मान करने का क्या फ़ायदा। तेरा जीवन पल दो पल का खेल है, यह खेल ज़्यादा लम्बा नहीं है।

297 दर दीदा-ओ-दिल, हमेशा दारद गुज़री,
हर लहज़ा पदीदार शवद दर असरी।
कू ख़स्ता दिली किह् सैरे-ईं, जलवा कुनद,
अज़ ख़ुद रवद ओ ज़ि ख़ुद नगीरद ख़बरी।

वह महबूब हमेशा मेरे दिल में और मेरी नज़रों के सामने रहता है। हर पल, हर चीज़ में उसका जलवा दिखाई देता है। कौन ऐसा मुहब्बत का मारा हुआ नहीं है जो तेरे दीदार द्वारा ख़ुद से बेख़बर होकर हमेशा के लिए बाख़बर न हो गया हो।

(व्याख्या के लिये देखें, पृ. 129)

298 ऐ ख़ाना ख़राब! अज़ ख़ुदा बेख़बरी,
ऐ मौजे-सराब! अज़ ख़ुदा बेख़बरी।
ईं हस्ती-ए-मौहूम तू, नक़्श अस्त बर आब,
ऐ जोशे-हबाब! अज़ ख़ुदा बेख़बरी।

ऐ अज्ञानी जीव! तूने ख़ुदा को भुला रखा है। ऐ मृगतृष्णा की लहर! तुझे ख़ुदा का ध्यान नहीं है। तुम्हारा जीवन पानी पर खींची गई लकीर की तरह असत्य है। ऐ पानी के बुलबुले, तूने ख़ुदा को क्यों भुला दिया।

299 बेश अज़ गुनहम, बख़्शिशो-इहसां करदी,
बर ख़्वाने-करम, हमेशा मिहमां करदी।
हर चंद गुनाह बेश शुद, अफ़ज़ूद करम,
ईं तौर ज़ि किरदार, पशेमां करदी।

मेरे अनगिनत पापों के बावजूद तूने मुझ पर रहमत की है। तूने मुझे अपनी बख़्शिश का मेहमान बनाया है। जितने ज़्यादा मैं गुनाह करता हूँ, उतनी ज़्यादा तेरी रहमत बढ़ती जाती है। इस तरह तूने मुझे अपने गुनाहों के प्रति शर्मिन्दा कर दिया।

300 गीरम किह् चू नर्गिस हमा तन सीमो-ज़री,
ता चश्म कशूदी ओ बख़ुद दर निगरी।
अज़ ख़्वाहिशे-मालो-जाह ज़हमत बिबुरी,
ऐ जोशे-बहार अज़ ख़ज़ां बेख़बरी।

माना कि तू नर्गिस के फूल की तरह सोने और चाँदी का रूप है, लेकिन तू अपनी आँख खोल और अन्दर झाँककर देख। तुझे हमेशा धन-दौलत और मान-बड़ाई की इच्छा ने दु:खी कर रखा है। ऐ जवानी की बहार के जोश में मस्त इनसान, तू बुढ़ापे की पतझड़ से अनजान है।

(व्याख्या के लिये देखें, पृ. 126)

301 अज़ मर्दुमे-रोज़गार, ग़ाफ़िल नशवी,
वज़ गरमी-ए-ईं-ताइफ़ा, ख़ुशदिल नशवी।
परवाज़ बकुन हमेशा अज़ सुहबते-शां,
ता दर कफ़से फ़रेब बिस्मिल नशवी!

दुनियादारों का ध्यान रखो। उनके एहसान देखकर ख़ुश न हो। उनकी सोहबत से दूर भागो ताकि तुम्हें धोखे के पिंजरे (दुनिया) में ज़ख़्म न खाने पड़ें।

302 दर पीरी-ओ-ज़ुअफ़, सैरे-गुलशन न कुनी,
सद रंग, गुले-अश्क़, बदामन न कुनी।
चूं ग़ुंचा दरीं बाग़, परेशान करदी,
बे लाला रुख़े, मैले-शिगुफ़्तन न कुनी।

कमज़ोरी और बुढ़ापे की उम्र में बाग़ की सैर न कर। अपने दामन में आँसुओं के फूल इकट्ठे न कर। इस बाग़ में तू कली की तरह परेशान है। उस फूल से चेहरे वाले महबूब के बिना तेरा खिलना असम्भव है।

303 ता चंद ब कोहो-दश्त, ज़हमत बकशी?
अज़ बारे-हवा-ओ-हिर्स, मिहनत बकशी?
ईं जिन्दगी अत बक़दरे ख़्वाहिश न बुवद,
वक़्त अस्त हुनूज़, गर नदामत बकशी।

तू कब तक पर्वतों और बियाबानों में दुःख उठाता रहेगा, तू कब तक लोभ और कामना के बोझ के नीचे दबा रहेगा? तेरा जीवन तेरी इच्छा के अनुसार लम्बा नहीं हो सकता। अब भी समय है कि पश्चात्ताप कर ले।

304 अफ़सोस, ज़ि अहवाले-ख़ुद आगाह नए,
बद-ख़्वाहे-ख़ुदी, वले हवा ख़्वाह नए।
बे-होशी-ए-ग़फ़लतत ख़ुमारी दारद,
हुशियार ज़ि सहबाए-सहरगाह नए।

अफ़सोस की बात है कि तू अपने आपसे आगाह (जानकार) नहीं है। तू अपना बुरा चाहने वाला है। अपना भला चाहने वाला नहीं है। तू ग़फ़लत के ख़ुमार (नशे) से बेहोश है। तू सुबह की शराब यानी ख़ुदा की इबादत से मिलने वाले रस से वाक़िफ़ नहीं है।

(व्याख्या के लिये देखें, पृ. 109, 132)

305 अज़ ख़्वाहिशे-मालो-जाह, ज़हमत बिबुरी,
बा यार बसर बकुन किह राहत बिबुरी।
ग़ाफ़िल नशवी, बसे निदामत बकशी,
आगाह अगर शवी, फ़राग़त बिबुरी।

तू धन-दौलत और पदवी पाने की आशा में परेशान हो रहा है। तू महबूब के साथ सुख-शान्ति से अपना जीवन व्यतीत कर। अज्ञानता को छोड़ दे नहीं तो तुझे बहुत पछताना पड़ेगा। अगर तू इस बात को समझ लेगा तो तुझे आज़ादी मिल जायेगी।

306 या रब्ब! ज़ि मने-ज़ार न आयद कारे,
जुज़ मअसीयत ओ ग़फ़लते-बेहद, कारे।
अज़ कारे-गुज़श्ता कारे-आगाह शुदम,
कारे न शुद अज़ मन, किह् ब आयद कारे।

ऐ ख़ुदा! मेरे जैसा निर्बल और बेसहारा इनसान कुछ नहीं कर सकता। मुझे गुनाह करने और ग़फ़लत (अज्ञानता) में खोए रहने के सिवाय और कुछ नहीं आता। मुझे अपने किये हुए कर्मों से ज्ञान हुआ है कि मैंने जो कुछ भी किया वह किसी काम का नहीं था।

307 गह शहरो-दयार, गह ब-सहरा रफ़्ती,
दर राहे-हवस, बसद तमन्ना रफ़्ती।
ईं क़ाफ़िला, नज़दीक़ सरे-मंज़िल शुद,
अतमाम सफ़र, गश्त कुजाहा रफ़्ती।

तू कभी शहरों, कभी रेगिस्तानों में भटकता रहा। तू ज़िन्दगी भर इच्छा-तृष्णा की राह पर चलता रहा है। अब ये क़ाफ़िला मंज़िल के नज़दीक आ पहुँचा है। जब उम्र ख़त्म हो जायेगी तो फिर क्या करेगा?

(व्याख्या के लिये देखें, पृ. 141-42)

308 ऐ दिल! अबस अज़ दारे-बक़ा मी तरसी,
अंदेशा मकुन किह् अज़ कुजा मी तरसी।
दर राहे-फ़ना, नीस्त तअब, आराम अस्त,
आं ख़ाना अज़ीं जास्त चिरा मी तरसी?

ऐ मेरे मन! तू अमर जीवन के घर से न डर। सोच तो सही कि तू किस बात से डर रहा है। फ़ना के रास्ते पर सुख ही सुख है, दुःख नहीं। वह सुख-शान्ति का घर है तू उससे न डर। जब तू ख़ुदी (अहम्) को ख़ुदा में फ़ना कर देगा तो तुझे अमर जीवन प्राप्त हो जायेगा जिसमें निरन्तर शान्ति है।

309 अज़ मर्दुमे-दुनिया, बुवद अंदेशा बसे,
ईं गुर्गो-पलंग, अंद दरीं बेशा बसे।
मीना-ए-दिल अज़ संगदिलां दर ख़तर अस्त,
अंदेशा बुवद हमेशा जीं शीशा बसे।

दुनियादारों से डरकर रहना ही बेहतर है, क्योंकि वे जंगल के भेड़ियों और शेरों की तरह हैं। दिल के शीशे को इन पत्थर-दिलों से बहुत ख़तरा है। दिल के शीशे को इन पत्थरों से जितना बचाकर रखा जाये उतना ही अच्छा है।

310 अफ़सोस किह् अज़ करदाए ख़ुद बेबाकी,
दर दश्ते-हवस, जेबो-गिरीबान चाकी।
ईं यक दो नफ़स हस्ती-ए-ख़ुद, नीस्त शुमार,
पिंदार किह् बर ख़ाक नए, दर ख़ाकी।

अफ़सोस कि तुम्हें अपने कर्मों के अंजाम का डर नहीं है। लोभ, लालच के इस वीराने (दुनिया) में तुम्हारा दामन फटा हुआ है। यह पल दो पल का जीवन किसी गिनती में नहीं है। याद रखो कि तुम धरती पर नहीं, क़ब्र में हो।

311 दरयास्त दिलत, गर तू शिनाबर बशवी,
ग़व्वासे-मुहीते-हफ़्त किश्वर बशवी।
दर बहरे-वजूदे-तुस्त, मौजूद हमा,
तूफ़ान बकुनी ओ ख़्वाह लंगर बशवी।

तेरा दिल समुद्र है। तूने तैराक बनना है तो इस समुद्र का तैराक बन। इस तरह तू सात समुद्रों का तैराक बन जायेगा। तेरी हस्ती के समुद्र में सबकुछ मौजूद है, तू चाहे तूफ़ान बन जा, चाहे लंगर* बन जा।

(व्याख्या के लिये देखें, पृ. 89)

* लोहे का बहुत भारी काँटा जिसे नाव या जहाज को खड़ा करने के लिये रस्सी या ज़ंजीर से बाँधकर नदी या समुद्र में गिरा देते हैं।

312 ऐ दिल! बख़ुदा किह् अज़ ख़ुदा बेख़बरी,
हर शामो-सहर, दर तलबे-सीमो-ज़री।
अज़ मौजे-सराब ओ अज़ हबाबे कमतर,
मानिंदे-नसीम, हर नफ़स दर गुज़री।

ऐ मेरे मन! ख़ुदा की क़सम तेरा ख़ुदा की तरफ़ ध्यान नहीं है। तू दिन-रात, सोने-चाँदी के पीछे दौड़ता है। तेरी असलियत मृगतृष्णा और बुलबुले जैसी भी नहीं है। तेरी ज़िन्दगी पल भर के हवा के झोंके की तरह है।

313 हर शाम, तू अज़ शराबे-ग़फ़लत, मस्ती,
दर बर रुख़े-फ़ैज़े-होश, मुहकम बस्ती।
मीना-ए-फ़लक, पुर अस्त अज़ बादा-ए-कीं,
हुशियार! कि आख़िर न कुनद बद मस्ती।

हर शाम तू ग़फ़लत (अज्ञानता) में मदहोश है। तूने अपनी अक़्ल का दरवाज़ा बन्द कर रखा है। आसमान का शीशा (प्याला) दुश्मनी की शराब से भरा हुआ है। होशियार हो जा, कहीं तेरा नुक़सान न हो जाये।

314 ख़्वाही किह् रसी बकाम ओ तलख़ी न चशी,
आसूदा शवी, बारे-नदामत न कशी।
बा सबर बसाज़ ओ बा क़नाअत ख़ू कुन,
अज़ दस्ते-हवा-ओ-हिर्स, दर कशमकशी।

अगर तुम्हें कामयाबी की इच्छा है और तुम असफलता के कड़वेपन से बचना चाहते हो; अगर तुम सुख चाहते हो और निराशा के बोझ से बचना चाहते हो तो सब्र-सन्तोष से रहना सीखो। लेकिन तुम लोभ और कामना के हाथों से दुःख ही दुःख उठा रहे हो।

315 हस्ती ब नज़र, चिह् शुद अगर पिनहानी,
ईं राज़े-निहुफ़्ता रा तू हम मी दानी।
चूं शमअ, ज़ि फ़ानूस नुमाई ख़ुद रा,
पैवस्ता दरीं लिबासे-ख़ुद उरयानी!

बेशक तू निगाहों से छिपा हुआ है, फिर भी तू दिखाई देता है। तू इस भेद को भी जानता है। जैसे दीपाधार (फ़ानूस) में शमा जलती दिखाई देती है, उसी तरह तू इनसानी जिस्म रूपी फ़ानूस में छिपा होने के बावजूद दिखाई देता है।

(व्याख्या के लिये देखें, पृ. 129)

316 ऐ यार! दर ईं दयार, ग़मख़्वार तुई,
आगाह बर अहवाले-मने-ज़ार तुई।
दीदम हमा रा ओ आज़मूदम हमा रा,
दर बेकसी अम यारे-वफ़ादार तुई।

ऐ मेरे दोस्त, इस दुनिया में सिर्फ़ तू ही मेरा सच्चा हमदर्द है; तू इस ग़रीब की हालत को ख़ूब जानता है। मैंने सबको आज़माकर देखा है। बेसहारों का तू ही सच्चा साथी और सहारा है।

(व्याख्या के लिये देखें, पृ. 65)

317 बेहूदा दर अंदेशा-ए सीमी-ओ-ज़री,
हासिल ज़ि जहान बजुज़ नदामत न बरी।
बेश अज़ नफ़सी हस्ती-ए-मौहूम तू नीस्त,
मानिंदे-हबाब रफ़्ता ओ दर गुज़री।

ऐ ग़ाफ़िल, तू सोने-चाँदी के लिये व्यर्थ परेशान है। इस दुनिया से सिवाय निराशा के तेरे साथ कुछ नहीं जायेगा। यह झूठी ज़िन्दगी पानी के बुलबुले की तरह है जो पल भर में फूट जायेगा।

(व्याख्या के लिये देखें, पृ. 138)

318 दर बहरे-वुजूद, कमतर अज़ ख़ारो-ख़सी,
मानिंदे-हबाब, यक नफ़स दर क़फ़सी।
आज़ाद बशौ ज़ि दामे-ग़फ़लत गुफ़्तम,
बेहूदा गिरिफ़्तार बक़ैदे-हवसी।

ज़िन्दगी के समुद्र में तुम काँटे और घास के तिनके जैसे भी नहीं हो। तुम बुलबुले की तरह पल भर के मेहमान हो। मेरी बात सुनो और अज्ञानता को छोड़ दो। तुम व्यर्थ में ही लोभ के क़ैदी बन रहे हो।

319 अज़ बहरे-दो रोज़ रंजे-दुनिया न कशी,
ईं बारे-गिरां बदोश बेजा न कशी।
इमरोज़ अगर दस्त ज़ि ख़्वाहिश बकशी,
दर्दो-ग़मो-इनफ़िआल फ़र्दा न कशी।

इस छोटी-सी ज़िन्दगी के लिये दुनिया के दुःख और यह व्यर्थ का बोझ न उठाओ। अगर आज इच्छाओं को कम कर दोगे तो कल दुःख, मुसीबत और चिन्ता से मुक्त हो जाओगे।

320 ऐ बेख़िरदे! किह् अज़ ख़ुदा बेख़बरी,
आशुफ़्ता ओ दीवाना-ए-सीमी-ओ-ज़री।
बेशो-कमे-दुनिया, बकफ़े-जूद ख़ुदा अस्त,
वज़ बख़्शिशे-ऊ हमा कस कीना वरी।

ऐ अज्ञानी! तू ख़ुदा की तरफ़ से ग़ाफ़िल न हो। तू दुनिया की दौलत का दीवाना क्यों बन रहा है? ग़रीबी, अमीरी सबकुछ ख़ुदा के हुक्म या उसकी रज़ा से है। उसकी रहमत के सिवाय दूसरी किसी भी चीज़ की तरफ़ ध्यान न दे।

321 ऐ जाने-गिरामी बख़ुदा नादानी,
दर ख़ाना-ए-मन यक दो सिह मिहमानी।
बर चरख़ अगर रवी ओ ख़ुर्शीद शवी,
आं ज़र्रा किह् दर शुमार न आयद आनी।

ऐ मेरे प्यारे दोस्त, ख़ुदा की क़सम तू बहुत बेसमझ है। तू यहाँ चन्द साँसों का मेहमान है। अगर तू आसमान पर भी पहुँच जाये और सूरज भी बन जाये तो भी तू नाचीज़ (तुच्छ) ज़र्रा है।

(व्याख्या के लिये देखें, पृ. 137)

322 ख़्वाही किह् शवी शाहो-गदाई न कुनी,
बायद किह् ख़याले-पारसाई न कुनी।
अज़ दुर्द कशी साफ़ दिली हासिल कुन,
यक गाम ज़ि मैख़ाना जुदाई न कुनी।

अगर तू चाहता है कि भिखारी न बना रहे और बादशाह बन जाये तो बेहतर है कि तू पारसाई (निर्मलता) का ख़याल छोड़ दे। शराब के आख़िरी क़तरे तेरे दिल को साफ़ कर देंगे। तू मयख़ाने (मुर्शिद के दर) से क़दम बाहर न रख।

(व्याख्या के लिये देखें, पृ. 107)

323 अफ़सोस, किह् ग़ाफ़िल तू ज़ि हस्ती हस्ती,
पैवस्ता ज़ि सहबा-ए-रऊनत मस्ती।
हर चंद शवी बलंद चूं शुअला ख़से,
अज़ शामते सर कशी दर आख़िर पस्ती।

अफ़सोस है कि तू अपनी हस्ती से अनजान है और अहंकार की मदिरा के नशे से मदहोश है। आग के शोले की तरह ऊँचा न उठ, क्योंकि जो जितना ज़्यादा ऊँचा उठता है, उतना ही नीचे गिरता है।

(व्याख्या के लिये देखें, पृ. 139)

324 गह सरव ओ गहे सुंबल ओ गह यासमनी,
गह कोहो-बियाबानी ओ गाहे चमनी।
गह नूरे-चिराग़े ओ गहे बू-ए-गुले,
गह दर चमनी ओ गाह दर अजुंमनी।

कभी तू सरु है तो कभी सिंबल और कभी यासमीन है। कभी तू पर्वत है, कभी रेगिस्तान और कभी गुलशन है। कभी तू चिराग़ की रोशनी है और कभी फूलों की ख़ुशबू है। कभी तू बाग़ में है और कभी महफ़िल में है।

(व्याख्या के लिये देखें, पृ. 42)

325 हर चंद किह् कम लुत्फ़ो-दिल आज़ार तुई,
बेश अज़ हमा ग़मख़्वारो-वफ़ादार तुई।
दर आलमे-इम्तिहान चू गश्तम दीदम,
हर जा किह् बुवद ख़स्ता दिली यार तुई।

(मेरे महबूब) बेशक तू बहुत निर्दयी है और दुःख देनेवाला है फिर भी तू मेरा सबसे ज़्यादा हमदर्द और वफ़ादार है। मैंने दुनिया में पूरी तरह आज़माकर देखा है कि जहाँ भी कोई दुःखी दिल होता है, तू उसका सहारा बन जाता है।

(व्याख्या के लिये देखें, पृ. 67)

326 सरमद! दर दीन अजब शिकस्ती करदी,
ईमान ब फ़िदा-ए-चश्मे-मस्ती करदी।
बा इजज़ो-नियाज़ जुमला नक़दे-ख़ुद रा,
रफ़्ती ओ निसारे-बुत परस्ती करदी।

ऐ सरमद! तूने धर्म में अजीब उलझन पैदा कर दी है। तूने अपना धर्म महबूब की नशीली आँखों को भेंट चढ़ा दिया। तूने बड़े प्रेम और नम्रता से अपनी सारी पूँजी उस बुत-परस्त (मूर्ति-पूजक) काफ़िर पर न्योछावर कर दी।

327 अफ़सोस, ज़ि सर ता बक़दम बुलहवसी,
अंदेशा बकुन, बिबीं चिह् चीज़े चिह् कसी।
आज़ाद बशौ, ज़ि दामे-ग़फ़लत, गुफ़्तम,
ता दर हवसी असीर अंदर क़फ़सी।

अफ़सोस कि तू सिर से पाँव तक हवस (कामना) का रूप बना हुआ है। ज़रा सोचकर देख कि तेरी असलियत क्या है। मैं तुम्हें अज्ञानता के जाल में से निकलने की नसीहत करता हूँ। जब तक तू लोभ में फँसा हुआ है, तू पिंजरे में क़ैद है।

328 ऐ दिल! ज़ि हवा-ओ-हिर्स ग़मगीन बशुदी,
बा बेशो-कमे-जहान ब तस्कीन बशुदी।
ख़ुद रा सबुको-नंगे-दो-आलम करदी,
अज़ बारे-गिरां, ख़स्ता ओ संगीन बशुदी।

ऐ मेरे मन! तू लोभ-लालच के कारण दुःखी हो रहा है। कितना अच्छा होता अगर तू अपनी तक़दीर पर सन्तोष कर लेता! तूने अपने आपको दीन (लोक) और दुनिया (परलोक) दोनों में बदनाम कर लिया है और इस भारी बोझ के कारण तेरी यह दुर्दशा हो गई है।

329 ऐ दिल! तू दर ईं ज़माना गुमराह शुदी,
पाबंदे-हवा-ओ-हिर्स, जांकाह शुदी।
ज़ीं दामे-बला अगर ब-जस्ती आख़िर,
सर ता बक़दम दर्दो-ग़मो-आह शुदी।

ऐ मेरे मन! तू दुनिया में अपना रास्ता खो चुका है। तू बुरी तरह से लोभ-लालच का शिकार हो चुका है और दुःखों, मुसीबतों का ही रूप बन चुका है कितना अच्छा हो अगर तू इस दुःखों के जाल से बाहर निकल आये!

330 फ़ारिग़ ज़ि हवा-ओ-हिर्स, यकदम नशुदी,
अज़ फ़िक्रे-मआले-कार अज़ ग़म नशुदी।
चूं गावो-ख़रे किह् हस्त दर फ़िक्रे-वुजूद,
कमतर तू ज़ि सग शुदी ओ आदम नशुदी।

अफ़सोस कि तुझे पल-भर के लिये भी लोभ-लालच से छुटकारा न मिला। न ही तुझे किए हुए कर्मों के फल की चिन्ता से छुटकारा मिला। हर उस मूर्ख और अज्ञानी की तरह जो सिर्फ़ निजी स्वार्थ में खोया रहता है। तू कुत्ते की तरह कमीना बन गया और इनसान न बन सका।

331 दर ख़्वाबी ओ अज़ ख़्वेश, नदारी ख़बरी,
गफ़लत न दिहद, बजुज़ नदामत समरी।
यारान हमा रफ़्तंद, तू हम दर राही,
बर हस्ती-ए-मौहूम नदारी नज़री।

तू इस तरह गफ़लत की नींद में सोया हुआ है कि तुझे अपने आपकी कोई ख़बर नहीं है। इस ग़फ़लत से अफ़सोस और पश्चात्ताप के अलावा कुछ हासिल नहीं होगा। तेरे सब साथी तुझसे बहुत आगे निकल गए हैं परन्तु तू अभी तक रास्ते में ही अटका हुआ है। तू इस झूठे जीवन की असलियत को समझने की कोशिश नहीं कर रहा है।

332 हर रोज़ बदरया-ए-हवस गिरदाबी,
अज़ ज़ुल्मते-ग़फ़लत हमा शब दर ख़्वाबी।
अय्यामे-जवानी शुद ओ पीरी आमद,
वक़्त अस्त अगर फ़ैज़े-चमन दर याबी।

तू हर रोज़ लोभ-लालच के दरिया के भँवर में फँसा रहता है। तू अज्ञानता की नींद में सोया रहता है। जवानी गुज़र गई है, बुढ़ापा आ पहुँचा है, अब तो ज़िन्दगी के गुलशन (ख़ुदा के नाम) से कुछ लाभ उठा ले।

(व्याख्या के लिये देखें, पृ. 140)

333 सरमद, बजहान बसे निको नाम शुदी,
अज़ मज़हबे-कुफ्र, सूए इस्लाम शुदी।
आख़िर चिह् ख़ता दीदी, ज़ि अल्लाह-ओ-रसूल,
बर गश्ता मुरीदे-लछमन-ओ-राम शुदी।

ऐ सरमद! तूने दुनिया में बहुत नाम पाया है। कुफ्र को छोड़कर इसलाम में दाख़िल हो गया। तूने ख़ुदा और उसके पैग़म्बर में क्या कमी देखी कि तू राम और लक्ष्मण का मुरीद (शिष्य) बन गया!

उद्धरण

जीवन

1. आदि ग्रन्थ, पृ. 272
2. तुलसी साहिब
3. सारबचन वार्तिक, बचन 39
4. असीरी : रुबाईयात-ए-सरमद, पृ. 49
5. आदि ग्रन्थ, पृ. 1076
6. A History of Sufism in India, Vol II, p. 475
7. दबिस्ताने-मज़ाहिब, पृ. 194
8. The Peacock Throne, p. 398
9. A History of Sufism in India, Vol. II, p. 476
10. मसनवी बू अली शाह क़लन्दर, पृ. 41
11. The Peacock Throne, p. 401; असीरी : रुबाईयात-ए-सरमद, पृ. VI
12. मजमअ-उल-अफ़क़ार, पृ. 87
13. दबिस्ताने-मज़ाहिब, पृ. 195
14. असीरी : रुबाईयात-ए-सरमद, पृ. vi, vii
15. नग़्मा-ए-सरमद, पृ. 11
16. The Peacock Throne, p. 402
17. भाई गुरदास, 27:1
18. भाई गुरदास, 27:2
19. भाई गुरदास, 27:4
20. असीरी : रुबाईयात-ए-सरमद, पृ. vii, viii
21. असीरी : रुबाईयात-ए-सरमद, पृ. 50
22. दबिस्ताने मज़ाहिब, पृ. 195; The Peacock Throne, p. 402
23. बरनीअर ट्रेवल्ज़, पृ. 317
24. बरनीअर ट्रेवल्ज़, पृ. 317
25. A History of Sufism in India. Vol. II., p. 122
26. नग़्मा-ए-सरमद, पृ. 16
27. मुआसिरुल-उमरा, 1:226
28. नग़्मा-ए-सरमद, रुबाई III, पृ. 82
29. मुहम्मद क़ुरबान अली बिस्मल : रुबाईयात-ए-सरमद (उर्दू) (मुक़द्दमा- मौलाना अबुल कलाम आज़ाद)

30. The Peacock Throne, p. 408
31. The Peacock Throne, p. 396, 409
32. The Peacock Throne, p. 396, 409
33. The Peacock Throne, p. 396, 409
34. दीवाने-हाफ़िज़, पृ. 171
35. The Peacock Throne, p. 410; A History of Sufism in India, Vol II, p. 479
36. मुआरिफ़, मई, 1946: जे.ए.एम.बी.
37. शेअरुल अजम-1
38. A History of Sufism in India, Vol. II, p. 476
39. साईं बुल्लेशाह, पृ. 281
40. साईं बुल्लेशाह, पृ. 236-37
41. साईं बुल्लेशाह, पृ. 222
42. आदि ग्रन्थ, पृ. 272
43. बरनीअर ट्रेवल्ज़, पृ. 120; अर्श-मलसियानी, नग़्मा-ए सरमद, पृ. 21
44. मुआरिफ़, मई, 1946; जे.ए.एम.बी.
45. मुआरिफ़, मई, 1946; जे.ए.एम.बी.
46. आदि ग्रन्थ, पृ. 353
47. मसनवी मौलाना रूम, दफ़्तर 2, पृ. 174
48. प्राप्त नहीं
49. अबुल कलाम आज़ाद; सवानिह सरमद: शोध-पत्र
50. मुआसिरुल-उमरा, 1:227

रूहानी तालीम

1. कुरान शरीफ़, 112:3
2. आदि ग्रन्थ, पृ. 2
3. फ़ीहि मा फ़ीहि, पृ. 176
4. क़ुरान शरीफ़, 16:70
5. क़ुरान शरीफ़, 7:172
6. क़ुरान शरीफ़, 7:172
7. साईं बुल्लेशाह, पृ. 263
8. आदि ग्रन्थ, पृ. 678
9. क़ुरान शरीफ़, 39:53
10. क़ुरान शरीफ़, 27:88
11. आदि ग्रन्थ, पृ. 1
12. आदि ग्रन्थ, पृ. 98
13. तज़करितुल औलिया, पृ. 46
14. आदि ग्रन्थ, पृ. 1
15. क़ुरान शरीफ़, 13:27
16. आदि ग्रन्थ, पृ. 11
17. कुरान शरीफ़, 16:70
18. कुरान शरीफ़, 16:70
19. आदि ग्रन्थ, पृ. 18
20. क़ुरान शरीफ़, 41:54
21. क़ुरान शरीफ़, 24:35
22. क़ुरान शरीफ़, 22:6
23. आदि ग्रन्थ, पृ. 124
24. आदि ग्रन्थ, पृ. 1075
25. कुरान शरीफ़, 64:4
26. क़ुरान शरीफ़, 3:156
27. मसनवी मौलाना रूम, दफ़्तर 4, पृ. 61

28. मसनवी मौलाना रूम, दफ़्तर 4, पृ. 355
29. आदि ग्रन्थ, पृ. 470
30. क़ुरान शरीफ़, 4:77
31. क़ुरान शरीफ़, 2:173
32. हदीस सही अल-बुख़ारी, 4:54:416
33. मसनवी मौलाना रूम, दफ़्तर 4, पृ. 353
34. साईं बुल्लेशाह, पृ. 54
35. हज़रत सुलतान बाहू, बैत 107
36. मसनवी मौलाना रूम, दफ़्तर 1, पृ. 283
37. क़ुरान शरीफ़, 2:173
38. क़ुरान शरीफ़, 39:53
39. सारबचन संग्रह, 15:14:11
40. आदि ग्रन्थ, पृ. 1384
41. मसनवी मौलाना रूम, दफ़्तर 1, पृ. 311
42. अहादीसे-मसनवी, हदीस 54
43. संतबानी संग्रह, भाग 2, पृ. 57
44. आदि ग्रन्थ, पृ. 378
45. मसनवी मौलाना रूम, दफ़्तर 1, पृ. 84
46. दीवाने-हाफ़िज़, पृ. 86
47. हज़रत सुलतान बाहू, बैत 108
48. आदि ग्रन्थ, पृ. 1342
49. चरनदासजी की बानी, भाग 1, पृ. 11
50. चरनदासजी की बानी, भाग 1, पृ. 38
51. दीवाने-ग़रीब निवाज़, पृ. 64
52. मसनवी मौलाना रूम, दफ़्तर 6, पृ. 261
53. मसनवी बू अली शाह क़लन्दर, पृ. 21
54. क़ुरान शरीफ़, 4:48
55. साईं बुल्लेशाह, पृ. 154
56. दीवाने-हाफ़िज़, पृ. 154
57. क़ुरान शरीफ़, 20:13-14
58. कबीर साखी-संग्रह, पृ. 131
59. आदि ग्रन्थ, पृ. 1368
60. मसनवी बू अली शाह क़लन्दर, पृ. 36
61. नग़मा-ए-सरमद, रुबाई 135
62. दसम ग्रन्थ, पृ. 14
63. मसनवी मौलाना रूम, दफ़्तर 1, पृ. 43
64. दीवाने-हाफ़िज़, पृ. 318
65. क़ुरान शरीफ़, 51:21
66. दीवाने-हाफ़िज़, पृ. 413
67. मसनवी बू अली शाह क़लन्दर, पृ. 37
68. मसनवी बू अली शाह क़लन्दर, पृ. 37
69. मसनवी बू अली शाह क़लन्दर, पृ. 15
70. प्राप्त नहीं
71. क़ुरान शरीफ़, 3:185
72. आदि ग्रन्थ, पृ. 1383
73. आदि ग्रन्थ, पृ. 1383
74. क़ुरान शरीफ़, 28:88
75. क़ुरान शरीफ़, 3:19
76. प्राप्त नहीं
77. मसनवी बू अली शाह क़लन्दर, पृ. 14, 17, 31
78. मसनवी बू अली शाह क़लन्दर, पृ. 25
79. क़ुरान शरीफ़, 51:21
80. दीवाने-हाफ़िज़, पृ. 385
81. हज़रत सुलतान बाहू, बैत 153
82. दीवाने-ग़ौसिया, पृ. 13

83. दीवाने-शम्स तब्रेज़, पृ. 56
84. कुल्लियाते-शम्स तब्रेज़, पृ. 73
85. कुल्लियाते-शम्स तब्रेज़, पृ. 739
86. मसनवी मौलाना रूम, दफ़्तर 5, पृ. 277
87. कुल्लियाते-शम्स तब्रेज़, पृ. 608
88. मसनवी मौलाना रूम, दफ़्तर 6, पृ. 36
89. अहादीस-ए-मसनवी, हदीस 529
90. मसनवी मौलाना रूम, दफ़्तर 1, पृ. 32
91. सारबचन संग्रह, 19:2:8-9
92. सारबचन संग्रह, 19:2:2-7
93. सारबचन संग्रह, 19:2:2-12
94. मसनवी मौलाना रूम, दफ़्तर 2, पृ. 79
95. मसनवी मौलाना रूम, दफ़्तर 2, पृ. 57
96. आदि ग्रन्थ, पृ. 6
97. मसनवी बू अली शाह क़लन्दर, पृ. 18
98. मसनवी बू अली शाह क़लन्दर, पृ. 19
99. हज़रत सुलतान बाहू, बैत 6
100. सारबचन संग्रह, 19:16:20
101. दीवाने-शम्स तब्रेज़, पृ. 297
102. मसनवी मौलाना रूम, दफ़्तर 1, पृ. 33
103. मसनवी मौलाना रूम, दफ़्तर 1, पृ. 291
104. मसनवी मौलाना रूम, दफ़्तर 1, पृ. 291
105. आदि ग्रन्थ, पृ. 1412
106. मसनवी मौलाना रूम, दफ़्तर 3, पृ. 297
107. क़ुरान शरीफ़, 2:243
108. मसनवी मौलाना रूम, दफ़्तर 2, पृ. 85
109. क़ुरान शरीफ़, 20:121-122
110. क़ुरान शरीफ़, 4:60
111. मसनवी मौलाना रूम, दफ़्तर 2, पृ. 84
112. क़ुरान शरीफ़, 7:172
113. कुरान शरीफ़, 4:125
114. प्राप्त नहीं
115. मसनवी बू अली शाह क़लन्दर, पृ. 21
116. दीवाने-हाफ़िज़, पृ. 122
117. क़ुरान शरीफ़, 17:22
118. क़ुरान शरीफ़, 2:115
119. क़ुरान शरीफ़, 2:116
120. भीखा साहिब की बानी, पृ. 71
121. आदि ग्रन्थ, पृ. 1179
122. कुल्लियात भाई नन्दलाल गोया, पृ. 101
123. हज़रत सुलतान बाहू, बैत 74
124. दीवाने-ग़रीब निवाज़, पृ. 187
125. प्राप्त नहीं
126. क़ुरान शरीफ़, 17:85
127. क़ुरान शरीफ़, 76:21
128. हज़रत सुलतान बाहू, बैत 146
129. कुल्लियाते-शम्स तब्रेज़, पृ. 998
130. मसनवी मौलाना रूम, दफ़्तर 1, पृ. 182
131. नुकाते-दीवाने-शम्स तब्रेज़ी, पृ. 26
132. साईं बुल्लेशाह, पृ. 131
133. हज़रत सुलतान बाहू, बैत 45
134. आदि ग्रन्थ, पृ. 394
135. आदि ग्रन्थ, पृ. 1185
136. आदि ग्रन्थ, पृ. 729
137. मसनवी मौलाना रूम, दफ़्तर 1, पृ. 308
138. मसनवी मौलाना रूम, दफ़्तर 2, पृ. 320

139. दीवाने-हाफ़िज़, पृ. 391
140. दीवाने-हाफ़िज़, पृ. 55
141. क़ुरान शरीफ़, 28:88
142. मसनवी मौलाना रूम, दफ़्तर 4, पृ. 258
143. कुल्लियाते-शम्स तब्रेज़, पृ. 858
144. क़ुरान शरीफ़, 76:21
145. हज़रत सुलतान बाहू, बैत 47
146. मसनवी मौलाना रूम, दफ़्तर 1, पृ. 311
147. कुल्लियाते-शम्स तब्रेज़, पृ. 211
148. मसनवी मौलाना रूम, दफ़्तर 1, पृ. 283
149. आदि ग्रन्थ, पृ. 186
150. फ़रीदुद्दीन अत्तार
151. कुल्लियाते-शम्स तब्रेज़, पृ. 843
152. दीवाने-ग़ौसिया, पृ. 26
153. सारबचन संग्रह, 21:2:4
154. दीवाने-नियाज़ बरेलवी, पृ. 91
155. दीवाने-नियाज़ बरेलवी, पृ. 90
156. दीवाने-हाफ़िज़, पृ. 234
157. दीवाने-शम्स तब्रेज़, पृ. 405
158. हदीस सही-अल-बुख़ारी, 1:4:243
159. मसनवी मौलाना रूम, दफ़्तर 1, पृ. 63
160. क़ुरान शरीफ़, 83:25-26
161. मसनवी बू अली शाह क़लन्दर, पृ. 34
162. दीवाने-हाफ़िज़, पृ. 81
163. कुल्लियाते-शम्स तब्रेज़, पृ. 858
164. ज़फ़रनामा, पृ. 134
165. दीवाने-हाफ़िज़, पृ. 254
166. दीवाने-शम्स तब्रेज़, 7:44:36337
167. क़ुरान शरीफ़, 2:243
168. क़ुरान शरीफ़, 24:35
169. अहादीसे-मसनवी, हदीस 352
170. दीवाने-सनाई, पृ. 27
171. शरह गुलशने-राज़, भाग 2, पृ. 388
172. मसनवी मौलाना रूम, दफ़्तर 6, पृ. 87
173. मसनवी मौलाना रूम, दफ़्तर 6, पृ. 86
174. हज़रत सुलतान बाहू, बैत 140
175. क़ुरान शरीफ़, 7:143
176. दीवाने-हाफ़िज़, पृ. 407
177. क़ुरान शरीफ़, 73:6
178. क़ुरान शरीफ़, 73:8
179. मसनवी मौलाना रूम, दफ़्तर 6, पृ. 516
180. मसनवी मौलाना रूम, दफ़्तर 6, पृ. 516
181. क़ुरान शरीफ़, 18:24
182. हज़रत सुलतान बाहू, बैत 200
183. कबीर साखी-संग्रह, पृ. 87
184. क़ुरान शरीफ़, 7:205
185. दीवाने-ग़रीब निवाज़, पृ. 17
186. आदि ग्रन्थ, पृ. 1379
187. आदि ग्रन्थ, पृ. 253
188. मसनवी बू अली शाह क़लन्दर, पृ. 20-21
189. मसनवी बू अली शाह क़लन्दर, पृ. 41
190. साईं बुल्लेशाह, पृ. 254
191. मसनवी बू अली शाह क़लन्दर, पृ. 30
192. साईं बुल्लेशाह, पृ. 91
193. कुल्लियात-बुल्लेशाह, पृ. 292

194. दीवाने–हाफ़िज़, पृ. 59
195. मसनवी बू अली शाह क़लन्दर, पृ. 20
196. क़ुरान शरीफ़, 97:1–3
197. मसनवी मौलाना रूम, दफ़्तर 4, पृ. 321
198. मसनवी बू अली शाह क़लन्दर, पृ. 46
199. दीवाने–हाफ़िज़, पृ. 77
200. मसनवी बू अली शाह क़लन्दर, पृ. 43
201. क़ुरान शरीफ़, 2:115
202. रुबाईयाते–सरमद, रुबाई 300
203. तुलसी साहिब
204. गुलशने–राज़ 440, पृ. 85
205. आदि ग्रन्थ, पृ. 393
206. दीवाने–हाफ़िज़, पृ. 200
207. मसनवी मौलाना रूम, दफ़्तर 1, पृ. 212
208. मसनवी मौलाना रूम, दफ़्तर 2, पृ. 273
209. मसनवी मौलाना रूम, दफ़्तर 1, पृ. 170
210. तुलसी साहिब
211. क़ुरान शरीफ़, 89:28
212. क़ुरान शरीफ़, 1:6
213. क़ुरान शरीफ़, 57:3
214. दीवाने–हाफ़िज़, पृ. 35
215. दीवाने–हाफ़िज़, पृ. 76
216. दीवाने–हाफ़िज़, पृ. 77
217. क़ुरान शरीफ़, 73:6–8
218. प्राप्त नहीं
219. कबीर साखी–संग्रह, पृ. 139
220. क़ुरान शरीफ़, 7:11
221. क़ुरान शरीफ़, 20:8
222. हदीस सही–अल बुख़ारी, 1:4:243
223. प्राप्त नहीं
224. कबीर साखी–संग्रह, पृ. 162
225. हदीस सही–अल बुख़ारी, 8:76:444
226. मसनवी मौलाना रूम, दफ़्तर 1, पृ. 163
227. दीवाने–शम्स तब्रेज़, पृ. 86
228. क़ुरान शरीफ़, 16:70
229. प्राप्त नहीं
230. दीवाने–हाफ़िज़, पृ. 54

सहायक पुस्तकों की सूची

हिन्दी

कबीर साहिब, कबीर साखी-संग्रह, भाग 1-2, इलाहाबाद: बेलवीडियर प्रिंटिंग वर्क्स, 1996

'ख़ाक', कृपाल सिंह, हज़रत सुलतान बाहू, ब्यास: राधास्वामी सत्संग ब्यास, 2002

चरनदासजी, चरनदासजी की बानी, भाग 1-2, इलाहाबाद: बेलवीडियर प्रिंटिंग वर्कस, 1976-1978

पुरी, जे. आर. तुलसी साहिब, ब्यास: राधास्वामी सत्संग ब्यास, 2002

पुरी, जे. आर. साईं बुल्लेशाह, ब्यास: राधास्वामी सत्संग ब्यास, 2002

भीखा साहिब, भीखा साहिब की बानी, इलाहाबाद: बेलवीडियर प्रिंटिंग वर्कस, इलाहाबाद, 1976

राधास्वामी सत्संग ब्यास, सन्तों की बानी, ब्यास: राधास्वामी सत्संग ब्यास, 2000

शिरोमणी गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी, श्री आदि ग्रन्थ, अमृतसर: शिरोमणी गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी, 1997

संत बानी संग्रह, भाग 2, पाँचवाँ संस्करण, इलाहाबाद: बेलवीडियर प्रिंटिंग वर्कस, 1975

सेठी, शान्ति, सन्त कबीर, दसवाँ संस्करण, ब्यास: राधास्वामी सत्संग ब्यास, 2003

स्वामी जी, सारबचन छन्द-बन्द, पन्द्रहवाँ संस्करण, ब्यास: राधास्वामी सत्संग ब्यास, 1997

स्वामी जी, सारबचन वार्तिक, पन्द्रहवाँ संस्करण, ब्यास: राधास्वामी सत्संग ब्यास, 1997

पंजाबी

भाई चतर सिंह जीवन सिंह, ज़फ़रनामा, अमृतसर : भाई चतर सिंह जीवन सिंह, 1992

भाई जवाहर सिंह कृपाल सिंह, दसम ग्रन्थ, अमृतसर : भाई जवाहर सिंह कृपाल सिंह, 1979

वारां भाई गुरदास, अमृतसर : खालसा समाचार, 1977

English

Bernier Travels, Journal Asiatic Society Series 9, Calcutta, (ND)

Ezekiel, I.A., Sarmad, Beas: Radha Soami Satsang Beas, 1988

Rizvi, Saiyid Athar Abbas, A History of Sufism in India, Vol. II, New Delhi: Munshiram Manoharlal Publishers Pvt. Ltd., 1978

Waldemar, Hansen, The Peacock Throne, New Delhi: Motilal Banarsidas, 1996

Persian-English

Asiri, Fazl Mahmud, Rubaiyat-i-Sarmad, Shanti-niketan: Visva-Bharti, 1950

Arabic-English

The Holy Quran (English Translation of the Meanings and Commentary) The Custodian of the Two Holy Mosques King Fahd Complex, Al-Madinah Al-Munawarah, Saudi Arabia. 1413 H.(1992 CE)

Sahih al-Bukhari, 9 Vols, New Delhi: Kitab Bhavan, 1984

Persian

Ahadis-i Masnavi, Packages Ltd. Lahore, 1975

Dabistan-i- Mazahib, Nawal Kishore Press, Lucknow, 1881

Diwan-i-Gharib Nawaz, Kutub Khanah Naziriyah, Delhi, 1958

Diwan-i- Ghausiyah, Nawal Kishore Press, Lucknow, 1371 H, (1950 CE)

Diwan-i- Niyaz Breillvi, Nawal Kishore Press, Lucknow, 1967

Diwan-i-Sanai, Intisharat Amir Kabir, Tehran, 1320. (1941 CE)
Diwan-i Shams-i Tabrez, Nawal Kishore Press, Lucknow, 1924
Gulshan-i-Raz, Mahmud Shabistari, Tehran, Tahuri 1986/87
Kitab Fihi Ma Fihi, Intisharat Amir Kabir, Tehran 1362 H. (1984 CE
Kulliyat-i Shams-i Tabrez, Nawal Kishore Press, Lucknow, 1917
Kulliyat-i Shams-i Tabrez Ya Diwan-i Kabir, 10 vols, Badi al-zaman Furuzanfar, Danishgah, Tehran (Third Edn. 1363 H), (1984 CE)
Majma-ul-Afkar, manuscript : 8 : Tholi 195 B Persian
Masnavi Bu Ali Shah Qalandar, Kutub Khanah Naziriyah, Delhi, 1383 H. (1962 CE)
Ruyaha-i Mard-i Nilofari (Rubaiyat-i Saeed Sarmad Kashani) Imran Salahi Intisharat Nahid, Tehran 1370 H. (1991 CE)
Sharh Gulshan-i Raz. (in 2 Vols) Kitab furushi-i Mahmudi Tehran, 1958

Persian-Urdu

Diwan-i Hafiz, Sabrang Kitab Ghar, Delhi, 1972
Jawahir-Manzum–Urdu Translation–Rubaiyat-i Sarmad, Sayyid Muhammad Qurban Ali Bismil, Shahjahan Press, Delhi, 1340 H, (1919 CE)
Kulliyat Bulleh Shah, Dr. Faqir Mohammad, Intisharat Punjabi Adabi Academy, Lahore, 1970
Masnavi Maulana Rum (6 Books), Sabrang Kitab Ghar, Delhi. 1974-1976
Muarif, May 1946, JAMB
Naghmah-i Sarmad, Markaz Tasnif-o-Talif, Nakodar (ND)
Nukat-i-Diwan-i Shams Tabrezi, Sawan Service Leauge, Beas, (ND)
Tadhkrit al-Auliya, Manzur Book Depot. First edn. (ND)

Arabic-Urdu

Quran Majid, Taj Company, Karachi, 1968

हमारे प्रकाशन

स्वामी जी

सारबचन संग्रह

सारबचन वार्तिक

बाबा जैमल सिंह जी

परमार्थी पत्र, भाग 1

महाराज सावन सिंह जी

परमार्थी पत्र, भाग 2

सन्तमत सिद्धान्त

शब्द की महिमा के शब्द

सन्तमत प्रकाश, भाग 1 से 5

प्रभात का प्रकाश

परमार्थी साखियाँ

गुरुमत सिद्धान्त, भाग 1, 2

गुरुमत सार

महाराज जगत सिंह जी

आत्म-ज्ञान

रूहानी फूल

महाराज चरन सिंह जी

सन्तों की बानी

सन्त-वचन (सन्त-संवाद, भाग 2)

सन्तमत दर्शन

सन्त-मार्ग

दिव्य प्रकाश

जीवत मरिए भवजल तरिए

प्रकाश की खोज

पारस से पारस

सन्त-संवाद

सत्संग संग्रह, भाग 1 से 6

'पूर्व के सन्त-महात्मा' पुस्तक-माला के अन्तर्गत

सन्त नामदेव — जनक पुरी, वीरेन्द्र कुमार सेठी

सन्त कबीर — शान्ति सेठी

परम पारस गुरु रविदास — के. एन. उपाध्याय

गुरु नानक का रूहानी उपदेश	जनक पुरी
गुरु अर्जुन देव	महिन्दर सिंह जोशी
भाई गुरदास	महिन्दर सिंह जोशी
सन्त तुकाराम	चन्द्रावती राजवाडे
नाम-भक्ति : गोस्वामी तुलसीदास	के. एन. उपाध्याय, पंचानन उपाध्याय
मीरा : प्रेम-दीवानी	वीरेन्द्र कुमार सेठी
सन्त दादू दयाल	के. एन. उपाध्याय
पलटू साहिब	राजेन्द्र कुमार सेठी, आर. सी. बहल
सन्त चरनदास	टी. आर. शंगारी
सन्त दरिया (बिहारवाले)	के. एन. उपाध्याय
तुलसी साहिब	जनक पुरी, वीरेन्द्र कुमार सेठी
उपदेश राधास्वामी (स्वामी जी महाराज)	सहगल, शंगारी, 'ख़ाक', भण्डारी
साईं बुल्लेशाह	जनक पुरी, टी. आर. शंगारी
हज़रत सुलतान बाहू	कृपाल सिंह 'ख़ाक'
सरमद शहीद	टी. आर. शंगारी, पी. एस. 'आलम'
बोलै शेख़ फ़रीद	टी. आर. शंगारी
कामिल दरवेश शाह लतीफ़	टी. आर. शंगारी

सतगुरुओं के विषय में

रूहानी डायरी, भाग 1, 2	राय साहिब मुंशीराम
धरती पर स्वर्ग	दरियाईलाल कपूर
अनमोल ख़ज़ाना	शान्ति सेठी
मेरा सतगुरु	जूलियन पी. जॉनसन

सन्तमत के सम्बन्ध में

नाम-सिद्धान्त	शंगारी, 'ख़ाक', भण्डारी, सहगल
सन्तमत विचार	टी. आर. शंगारी, कृपाल सिंह 'ख़ाक़'
सन्त-सन्देश	शान्ति सेठी
सन्त-समागम	दरियाईलाल कपूर
अमृत नाम	महिन्दर सिंह जोशी
अन्तर की आवाज़	सी. डब्लयू. सेंडर्स

मार्ग की खोज में	फ़्लोरा ई. वुड
रामचरितमानस का सन्देश	एस. एम. प्रसाद
हंसा हीरा मोती चुगना	टी. आर. शंगारी
जपुजी साहिब	टी. आर. शंगारी
हउ जीवा नाम धिआए	हेक्टर एस्पॉण्डा डबिन
हक़-हलाल की कमाई	टी. आर. शंगारी
जिज्ञासुओं के लिए	टी. आर. शंगारी
विनती और प्रार्थना के शब्द	संकलित
अमृत वचन	संकलित

बच्चों के लिये पुस्तकें

आत्मा का सफ़र	विक्टोरिया जोन्ज़
एक नूर ते सभ जग उपजआ	विक्टोरिया जोन्ज़

To order books on the internet, please visit: www.rssb.org

भारत में किताबें ख़रीदने के लिए कृपया नीचे लिखे पते पर लिखें:

राधास्वामी सत्संग ब्यास
बी. ए. वी. डिस्ट्रिब्यूशन सेंटर, 5 गुरु रविदास मार्ग
पूसा रोड, नई दिल्ली 110005

21/-

ता नीस्त न गर्दी रहे-हस्तत न दिहंद,
ईं मर्तबा बा हिम्मते-पस्तत न दिहंद ।
चूं शमअ क़रारे-सोख़तन ता न दही,
सर रिश्ताए-रोशनी बदस्तत न दिहंद ।।

भावार्थः
जब तक तू मरना नहीं जानता,
तू असल में ज़िन्दा नहीं है।
लेकिन यह दर्जा कम हिम्मत वालों को
नसीब नहीं होता।
जब तक तू शमा की तरह नहीं जलेगा,
तुझे अन्दरुनी प्रकाश हासिल नहीं होगा।
सरमद, रुबाई 135

Sarmad Shaheed
(Hindi)

ISBN 978-81-8256-298-1